विश्वके धर्म-प्रवर्त्तक

आत्माराम एण्ड संस
प्रकाशक तथा पुस्तक-विक्रेता
काश्मीरी गेट, दिल्ली-६

विश्वके धर्म-प्रवर्त्तक

लेखक
रघुनाथसिंह एम. पी.

उपोद्घात
उच्छंगराय नवलशंकर ढेबर
कांग्रेस अध्यक्ष

भूमिका
डॉक्टर सम्पूर्णानन्द
मुख्य मन्त्री, उत्तर प्रदेश

बनारस
ज्ञानमण्डल लिमिटेड

मूल्य ६)

प्रथम संस्करण, संवत् २०१३

बुद्ध जयन्ती (पचीससौवें वर्षका परिनिर्वाण समारोह)

प्रकाशक—ज्ञानमण्डल लिमिटेड, बनारस.

मुद्रक—ओम् प्रकाश कपूर, ज्ञानमण्डल यन्त्रालय, बनारस. ४८११-१२

स्वर्गीय श्री रफी अहमद किद्वाई
की पुण्य स्मृतिमें

उपोद्घात

मेरे मित्र श्री रघुनाथसिंहजीने यह जो पुस्तक लिखी है, उसके लिए एक उपोद्घात लिख देनेका विशेष गौरव मुझे प्रदान किया गया है। मैंने एक सिरेसे दूसरेतक पूरी पुस्तक पढ़ ली है, जिसके दो कारण हैं। एक तो यह कि धर्मों-मजहबोंका अध्ययन स्वयं एक मनोरंजक विषय है। किन्तु दूसरा कारण इससे अधिक महत्त्वपूर्ण है और वह यह कि मैं अपने सन्तोषके लिए यह देख लेना चाहता था कि लेखकने पुस्तक किस दृष्टि-कोणसे लिखी है। मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि उन्होंने मानवजातिके इन छः महान् पुरुषोंका जीवन चित्रित करनेमें अत्यन्त हितकर भावनासे काम लिया है।

मानवजातिके जो इतने विशाल समूह इन दिव्यात्माओंके प्रति आकृष्ट हुए, आखिर इसका कारण क्या है ? क्या वह मानव समस्याओं-पर विचार करनेका उनका अपना ढंग मात्र है, या उन प्रश्नोंका समाधान ढूँढ़ निकालनेकी उत्कट अभिलाषा, जनसाधारणके साथ उनका भावा-त्मक तादात्म्य (दुःख-सुखमें एक होनेका भाव), उनका जनानुराग, उनका अपूर्व त्याग अथवा अपने पवित्र लक्ष्यके प्रति उनकी निष्ठा ?

ये सब चीजें तो इन महानुभावोंके जीवनचरित्रोंमें देख ही पड़ेंगी। किन्तु हृदयके और बुद्धिके इन विशिष्ट गुणोंके साथ इनमें अपने क्षेत्रकी जनताको क्रान्तिके पथपर ले चलनेकी, उनका नेतृत्व करनेकी असाधारण योग्यता भी दृष्टिगोचर होती है। इस नेतृत्वके कारण जो व्यापक परिवर्तन हुए वे उन विशेष क्षेत्रवालोंके लिए ही, जिनकी कठिनाइयाँ दूर करनेका प्रयत्न उन्होंने किया, वरदान साबित नहीं हुए वरन् मानवमात्रकी उन्नति एवं विकासमें उनसे सहायता मिली। संसारके लोग इनकी उस रचना-त्मक प्रतिभाका महत्त्व शीघ्रतासे समझते जा रहे हैं जिसके कारण उन

सब लोगोंके जीवनमें ही नहीं, जिनके बीचमें उन्होंने काम किया था वरन् मनुष्य मात्रकी विचारधाराओंमें ऐसे मौलिक परिवर्तनोंका होना सम्भव हो सका।

सहस्र-सहस्र नरनारियोंको प्रभावित करने, उन्हें अपनी ओर आकृष्ट करने और उनमें क्रान्ति उत्पन्न कर देनेकी यह अद्‌भुत शक्ति इन महा-पुरुषोंको कहाँसे प्राप्त हुई? उनके इस धार्मिक उत्साहका जीवनस्रोत कहाँ था? उनकी इस (अपूर्व) क्षमताका कारण केवल उनकी विद्वत्ता, केवल उनकी व्यावहारिक बुद्धिमत्ता अथवा मानवके प्रति उनकी सहा-नुभूति मात्र न थी। उसके मूलमें तीनों चीजें विद्यमान थीं किन्तु इनके सिवा एक चीज और जिसका उसमें बड़ा हाथ था, वह निष्ठा थी, चट्टान-की तरह सुदृढ़ निष्ठा,जो बौधिक एवं नैतिक विश्वाससे उत्पन्न होती है। यह वह निष्ठा है जो उन्हें अपने ऊपर थी, जो उन्हें जनतापर थी और जो उन्हें इस बातपर थी कि हमने जो पवित्र कार्य उठाया है वह आव-श्यक रूपसे तथा मूलतः न्यायोचित है। उनका यह विश्वास था कि यह केवल उचित और वांछनीय उपाय ही नहीं है वरन् अपना लक्ष्य पूरा करनेका एकमात्र साधन है।

उस दृष्टिसे विचार करनेपर प्रश्न यह उठता है कि वह कौनसी शिक्षा है जो ये महापुरुष आज हमें प्रदान करते हैं? बुद्धने हमें धर्मका शुभ सन्देश प्रदान किया है। उनका कहना था कि उचित ढंगसे सोचना, उचित ढंगसे बोलना और उचित ढंगसे कार्य करना, यही मुख्य बात है। उचित और अनुचितके बीच संगति नहीं बैठायी जा सकती। वह ऐसी याथार्थिक एवं निष्पक्ष बुद्धि थी जो जातियों तथा धार्मिक कृत्योंसे उत्पन्न उन मूढाग्रहोंसे रहित थी जो कट्टर सिद्धान्तवादियों तथा कर्मकांडी धर्मोपदेष्टाओं द्वारा मनुष्यके मानसके चारो ओर निर्मित कर दिये गये हैं। वह सार्वभौम नियमों द्वारा प्रशासित, स्पष्ट और सुनिर्धारित सर्वव्यापी-काररवाई थी जिसका ऐसी किसी चीजसे मतलब न था जिसका किसी भी तरहकी पूर्व धारणासे सम्बन्ध रहा हो, चाहे वह धार्मिक हो, जातिगत

या सम्प्रदायगत हो अथवा भावगत हो। उनके बाद कनफ्यूशियसका आगमन हुआ। उनकी दृष्टिमें भी सज्जनताका अन्य किसी भी वस्तुसे अधिक मूल्य था। अधिकार, सांसारिक सम्पत्ति तथा ज्ञान, ये सब तो मानव क्रियाकलापकी अस्थायी संवृद्धिमात्र हैं। अच्छे आदमियोंके हाथमें अधिकार सौंप दीजिये तो आप देखेंगे कि अधिकारोंका प्रयोग बिना किसी विशेष कठिनाईके मानवजातिकी सेवाके लिए किया जा सकता है। इसी तरह यदि भले आदमियोंके हाथमें धन दे दिया जाय तो उससे भी उपयोगी सेवाका काम लिया जा सकता है।

बुद्धकी ही तरह जरदस्तु, मूसा, ईसा तथा मुहम्मद भी प्रेम, सेवा तथा बन्धुत्वका सन्देश लेकर पृथ्वीपर अवतरित हुए।

मानवजाति इन महात्माओंकी सहायतासे ही अपने पथपर अग्रसर होती हुई विकासके वर्त्तमान प्रक्रमपर पहुँची है। उन्होंने विशेष स्थलोंके ही मनुष्योंकी क्षेत्रीय उन्नतिकी बात कभी नहीं सोची। उनका सन्देश भौगोलिक सीमाओंको पार कर दूरदूरतक फैल गया।

मुझे इसमें कोई सन्देह नहीं कि श्री रघुनाथसिंह इस दिशामें और अधिक परिश्रम कर अन्यान्य महान् तत्त्वद्रष्टाओंके जीवनका यथार्थ चित्रण प्रस्तुत करनेका प्रयत्न करेंगे।

उ. न. ढेबर

भूमिका

आज सभ्य जगत्‌के कई देश तो अपनी व्यवस्थाको सेक्यूलर, अर्थात् धर्मके प्रति उदासीन, कहते हैं और कुछ खुलकर धर्मका विरोध करते हैं। परन्तु यह मानना ही होगा कि आज भी धर्म उन विषयोंमें है जिनके प्रति अधिकतर मनुष्योंको अभिरुचि है। मरनेके उपरान्त क्या होगा, यह एक ऐसी शंका है जो समय समयपर प्रायः सबके ही मनमें उठती है और यही लोगोंको धर्मकी ओर प्रवृत्त करती है। विज्ञानने बहुतसे धार्मिक बन्धनों और विश्वासोंको ढीला कर दिया है; फिर भी धर्मका स्थान, विश्वास नहीं तो प्रश्न चिन्हके रूपमें ही सही, मनुष्यके चित्तमें बना हुआ है। विदेशी भाषाओंमें ऐसी बहुत-सी पुस्तकें हैं जिनमें विभिन्न धर्मोंके मुख्य-मुख्य सिद्धान्तोंका निरूपण किया होता है परन्तु हिन्दीमें अब भी ऐसी पुस्तकें कम हैं। श्री रघुनाथसिंहकी यह पुस्तक इस कमीको दूर करनेकी दिशामें अच्छा प्रयत्न है। उन्होंने ६ महान् पुरुषोंका जीवन-चरित्र दिया है और उनके बतलाये हुए मुख्य सिद्धान्तोंका भी दिग्दर्शन कराया है। यह सिद्धान्त और उपदेश किस भूमिकामें अवतरित हुए, अर्थात् उपदेष्टाको किन विशेष परिस्थितियोंमें काम करना पड़ा था, यह बात समझनेके लिए आवश्यक ऐतिहासिक और भौगोलिक तथा सांस्कृतिक सामग्री भी दी गयी है।

किसी भी लेखकके मन्तव्यको यथार्थ समझनेके लिए यह जानना आवश्यक है कि उसने पारिभाषिक शब्दोंका किस अर्थमें व्यवहार किया। हिन्दीके "धर्म" शब्दको ही लीजिये। उसकी अनेक प्रकारसे व्याख्या हो सकती है और की गयी है। परन्तु अंग्रेजीके "रिलिजन" और अरबीके "मजहब" शब्दकी अपेक्षा धर्मका अर्थ अधिक व्यापक है। व्यवहारमें उसका जहाँ भी प्रयोग होता है, परलोक सम्बन्धी विचार

उससे पृथक नहीं किया जाता । इस दृष्टिसे कनफ्यूशियसको धर्म प्रवर्तकोंकी सूचीमें रखना कठिन है । उन्होंने इस सम्बन्धमें अपना कोई मत व्यक्त नहीं किया; परन्तु अप्रत्यक्ष रूपसे उनके उपदेशोंसे यही ध्वनि निकलती है कि वह चीनके पुराने धार्मिक विचारोंके समर्थक थे। पूर्वजोंकी पूजा इन विचारोंका प्रमुख अंग थी। बुद्धदेवके सम्बन्धमें भी विचार करते समय कुछ ऐसे शब्दोंका व्यवहार हुआ है जिनका ठीक अर्थ अवगत न होनेसे भ्रम हो सकता है। प्राचीन व्यवहारके अनुसार, वेदको प्रामाणिक न माननेका नाम नास्तिकता है। इस दृष्टिसे ईश्वरकी सत्ताको स्वीकार करनेवाले इस्लाम और ईसाई धर्म नास्तिक हैं और ईश्वरकी सत्ताको स्वीकार न करनेवाला सांख्य मत आस्तिक है। एकेश्वरवाद शब्द भी भ्रामक हो सकता है। यदि एकेश्वरवादका यह अर्थ लिया जाय कि ईश्वरकी सत्ता है और एक ही ईश्वर है तथा वह ईश्वर जगत्का कर्ता, पालयिता और संहर्ता है और इस एक ईश्वरके सिवाय और किसीकी उपासना नहीं की जा सकती तो ऐसा ईश्वर इस्लाम, ईसाई और यहूदी, दूसरों शब्दोंमें सीमेटिक, धर्मोंमें ही पाया जाता है। यही धर्म, इस अर्थमें एकेश्वरवादी, अंग्रेजी शब्दोंमें मोनो-थीस्टिक हैं। सांख्यके अनुयायियोंको छोड़कर अन्य हिन्दू सम्प्रदाय भी ईश्वरकी सत्ता स्वीकार करते हैं परन्तु उनका ईश्वर सीमेटिक ईश्वरके समान शक्तिमान् नहीं है। 'यदि वह जगत्का स्रष्टा माना भी जाय तो भी सृष्टि करना न करना उसकी इच्छकी बात नहीं है। ईश्वरकी ही भाँति जीव भी अनादि हैं और उनके कर्म भी अनादि हैं। और कर्मोंके फलोंका लोप करना ईश्वरकी शक्तिके बाहरकी बात है। जीवोंके कर्मोंके अनुरूप जगत्की रचना करनी ही होगी। ईश्वर है तो एक ही, परन्तु दूसरे उपास्य भी हो सकते हैं। पुराने हिन्दू धर्मको बहुदेववादी कहना भी भ्रामक है। निश्चय ही हिन्दू बहुतसे देव-देवियोंके नाम लेता है और उसके उपास्योंकी संख्या बहुत बड़ी है, परन्तु वह इनको सर्वथा स्वतन्त्र और पृथक नहीं मानता। बहुत गम्भीर दार्शनिक विवेचनामें पड़नेकी

आवश्यकता नहीं है, परन्तु अधिकांश हिन्दू ऐसा ही मानते हैं कि किसी न किसी प्रकार यह विश्व ईश्वरसे अभिन्न है। अतः सभी देव-देवी ईश्वरके ही रूप हैं। तपके प्रभावसे कोई जीव देवपदको प्राप्त कर लेता है। इन धारणाओंको ध्यानमें रखे बिना बुद्धदेवकी शिक्षा यथार्थ रूपसे समझमें नहीं आ सकती। उन्होंने स्वयम् किसी दार्शनिक सिद्धान्तका प्रतिपादन नहीं किया। यह काम तो उनके पीछे उनके व्याख्यानोंका अनुशीलन करके उनके अनुयायियोंने किया। उन्होंने निश्चय ही जीवनकी एक पद्धतिका उपदेश दिया जिसमें वैदिक यज्ञयाग आदि और वर्ण-व्यवस्थाके लिए जगह नहीं थी। परन्तु ऐसा नहीं है कि उन्होंने केवल बुद्धिको धर्मका आश्रय और अन्तिम प्रमाण बताया हो। साधारण गृहस्थके लिए तो मध्यम मार्ग था परन्तु इतनेहीसे परमः पुरुषार्थ अर्थात् निर्वाणकी सिद्धि नहीं हो सकती। उन्होंने इसके लिए तो योगका ही अनुष्ठान करनेका आदेश दिया और उन्होंने अनेक स्थानोंपर तुषित आदि स्वर्गों तथा इन्द्र, ब्रह्मा आदि देवों और दूसरे अलौकिक पुरुषोंकी चर्चा की है। योग-साधनसे उद्भूत सिद्धि-शक्तियोंका भी स्पष्ट उल्लेख है।

ऐसी बातोंका कनफ्यूसस या जरथुष्ट्रके उपदेशोंमें अप्रत्यक्ष रूपसे भी चर्चा नहीं मिलता। सच तो यह है कि जरथुष्ट्रके अध्यात्म सम्बन्धी निजी विचारोंका ठीक-ठीक पता नहीं चलता। उन्होंने अपने समयमें प्रचलित पारसी धर्ममें कई सुधार किये, इस बातका तो प्रमाण मिलता है। इस सम्बन्धकी एक रोचक कथा भी है। उन्होंने होम—वैदिक सोम—का व्यवहार रोक दिया था। सम्भवतः लोगोंमें उसके मादक गुणोंके कारण उसका व्यवहार बहुत बढ़ गया होगा। अनुश्रुति है कि वह एक बार ध्यानावस्थ बैठे थे कि उनको अपने पीछेसे किसीके शब्द सुनाई पड़े। यह शब्द सोमलताके थे। उसकी बातोंका यह प्रभाव पड़ा कि जरथुष्ट्रने उसको फिर से जारी कर दिया। स्पष्ट ही इसका तात्पर्य यह है कि लोकमतने उनको ऐसा करनेके लिए विवश कर दिया।

मूसा, ईसा और मुहम्मद तीनों ही सिमेटिक धर्म-प्रवर्तक थे। मूसा

और जरथुष्टमें एक समता थी। यहूदी और पारसी दोनों ही सम्प्रदाय किसीको अपनेमें मिलाते नहीं। इसलिए इनकी संख्या बढ़ नहीं सकती। ईसाने भी उन्हीं लोगोंको शिष्य बनाया जो उनकी भाँति यहूदी जातिमें पैदा हुए थे। परन्तु उनके बाद सेण्ट पालने यह कहा कि इस धर्मको संकुचित क्षेत्रमें रखना उचित नहीं और उन्होंने सबसे पहले उस रोमन सन्तरीको शिष्य बनाया जो जेलमें उनको पहरेदार था। इस प्रकार ईसाई धर्म सारे जगत्में फैला। इस्लामने तो आरम्भमें ही दूसरोंको अपने सम्प्रदायमें मिलानेकी शैलीको अपना लिया। ईसाई विश्वासके अनुसार कुछ ऐसे ऊँचे चरित्रवाले व्यक्तियोंके लिए भी मुक्ति पानेकी आशा है जो किसी कारणसे ईसाई नहीं हुए। परन्तु इस्लाम और यहूदी धर्मके अनुसार ऐसे लोगोंके लिए मोक्षका द्वार एकदम बन्द है जो इन धर्मों को माननेवाले नहीं हैं। मूसाको अपना पथप्रदर्शक माननेवालोंका तो यह दृढ़ विश्वास है कि वे लोग ईश्वरकी चुनी हुई जाति हैं। इस लोकमें भी अन्तमें उनका सर्वोपरि अभ्युदय होगा और परलोकमें तो उनके सिवा और किसीके लिए स्थान है ही नहीं।

ईसाका चरित्र बड़ा ही उत्कृष्ट था और उनके उपदेश इतने सुन्दर तथा सार्वभौम हैं कि उनके बहुत बड़े अंशको कोई भी मनुष्य निःसंकोच भावसे ग्रहण कर सकता है। यह याद रखनेकी बात है कि उन्होंने केवल अच्छे चालचलन या साधारण पाठ-पूजाको मोक्षके लिए पर्याप्त नहीं समझा है। निश्चय ही निश्छल रूपसे अपने सारे कामोंको भगवानको अर्पित करके भक्ति करनेवालोंपर भगवान प्रसन्न होते हैं और अन्तमें ऐसे लोगोंको स्वर्गमें स्थान मिलता है परन्तु स्वर्गके निवासियोंके भी कई वर्ग हैं। ऊँचे वर्गोंमें वे लोग पहुँचते हैं जो तपस्या करते हैं और योगकी साधनासे शरीर रहते ही दिव्य लोकमें प्रवेश करते हैं। इन बातोंका संकेत बाइ-बलके उन भागोंमें विशेष रूपसे मिलता है जो उनके शिष्य जानके द्वारा प्रकट हुए हैं।

यों तो और भी कई धर्म-प्रवर्त्तक हुए हैं परन्तु श्री रघुनाथसिंहने

जिन लोगोंको चुना है वे मुख्य हैं और सभ्य देशोंमें उन लोगोंको छोड़कर जो हिन्दू धर्म या जापानके शिन्तो धर्मके माननेवाले हैं उन्हीं धर्मोंके अनुयायी अधिक हैं। कनफ्यूशियसके उपदेश तो धार्मिक नहीं, वरन् नैतिक हैं परन्तु बुद्ध और ईसाका प्रभाव ऐसे बहुतसे लोगोंपर पड़ा जो अपनेको बुद्ध और ईसाई नहीं कहते। इन सब लोगोंके उपदेशोंको इस प्रकार संग्रह करनेके लिए मैं श्री रघुनाथसिंहको बधाई देता हूँ। ऐसे महापुरुषोंके जीवनका इतिवृत्त स्वतः रोचक होता है। ऐसा शायद ही कभी हुआ होगा कि दुनियाके सामने नयी चीजें रखी जायँ या पुरानी चीजें नये कलेवरमें रखी जायँ, चाहे वह कितनी ही सत्य क्यों न हों, और जगत् बिना विरोध किये उनको स्वीकार कर ले। ईसाको प्राणोंसे हाथ धोने पड़े, मुहम्मदको कई वर्ष प्रवासमें बिताना पड़ा और भारत जैसे देशमें भी, जहाँ धार्मिक सहिष्णुताका सदासे समादर होता रहा है, बुद्धदेवको काफी आलोचनाका सामना करना पड़ा। इस दृष्टिसे ये जीवनचरित्र रोचक होते हैं और सम सामयिक जगत्की परिस्थितिपर इनसे बहुत प्रकाश पड़ता है। परन्तु इनका महत्त्व केवल ऐतिहासिक ही नहीं है। इन उपदेशोंके पीछे मानव हृदयका स्पन्दन सुनाई पड़ता है। मनुष्यके मूक प्रश्न, उसकी आशंकाएँ, आकांक्षाएँ और आशाएँ इनके द्वारा बोलती हैं। भिन्न-भिन्न देशों और कालोंमें दिये गये उपदेशोंमें जो बहुत-सी समता दिखाई पड़ती है वह इस बातका प्रमाण है कि अनेक भेदोंके होते हुए भी मनुष्य जाति एक है। इसलिए धर्म-प्रवर्तकोंके उपदेशोंका अनुशीलन, भेदके निवारण करने और मानव समाजको एकताके सूत्रमें ग्रथित करनेका बहुत बड़ा साधन है।

सम्पूर्णानन्द

विषय-सूची

विश्वके धर्मप्रवर्त्तक

१. भगवान् बुद्ध

वैदिकधर्मका कोई प्रवर्तक नहीं था। हिन्दूधर्मका कोई प्रवर्तक नहीं है। वे विचारधाराओंके विकास हैं। भारतका यह धर्मविकास विश्वके लिए आश्चर्यकी वस्तु है।

बौद्धधर्म भगवान् बुद्धके नामसे सम्बन्धित है। लोग उन्हें धर्म-प्रवर्तक कहते हैं। धर्मप्रवर्तक, पैगम्बर, नबी तथा मसीहमें अन्तर है। बुद्धने कभी नहीं कहा कि उन्हें किसी दैवी शक्तिने भेजा है। किसी शक्तिके वे सन्देशवाहक बनकर नहीं आये। उन्होंने किसी अलौकिक शक्तिमें विश्वास नहीं किया और न किसीको करनेके लिए कहा। बुद्धिपर विश्वास करनेके लिए लोकको उन्मुख किया। उसे ही उन्होंने श्रेष्ठ माना। उन्होंने विश्वको एक विचारधारा दी। एक दर्शन दिया। वह दर्शन नूतन था, अद्‌भुत था, भारतकी बहुदेव एवं ईश्वरवादी परम्पराके विरुद्ध था। उनके अनुयायियोंने इस दर्शन-प्रवाहको बुद्धसे सम्बन्धित किया। कालान्तरमें वह बौद्धधर्म कहा जाने लगा।

दार्शनिक जगत्‌में भारतने जितना कार्य किया है विश्वमें और कहीं नहीं किया गया। भारतने विश्वके दर्शनको प्रभावित किया और यहूदियोंने संस्कृतिको। यहूदियोंने नबियों, पैगम्बरों एवं रसूलोंकी परम्परा स्थापित की। उन्होंने क्रमबद्ध इतिहास रखा। परिणाम यह हुआ कि दार्शनिक क्षेत्रमें वे बहुत कम कार्य कर सके। सत्यको भारतीयोंने अपरिवर्तनीय माना है। अतएव उनकी दृष्टिमें भौतिक तथा तत्सम्बन्धी क्रिया किंवा प्रक्रिया एवं इतिहासका कम महत्त्व रहा है। पुनर्जन्मके सिद्धान्तने इतिहास एवं साम्राज्योंके उत्थान-पतनको आर्थिक

तथा सामाजिक संघर्षोंका परिणाम न मानकर कर्म-सिद्धान्तकी केवल एक कड़ी माना है।

बहुदेवपूजा एवं बहुदेववादके विरुद्ध मूसा और जरदस्तु जेहाद बोलकर एकेश्वरवादका प्रतिपादन बुद्धके पहले कर चुके थे। भगवान् बुद्धने बहुदेववाद एवं एकेश्वरवाद दोनोंके विरुद्ध आवाज उठायी। ईश्वर एवं देवोंके अस्तित्वको उन्होंने स्वीकार न कर विश्वको एक तृतीय सिद्धान्तसे अवगत कराया। तत्कालीन जगत्में बहुदेववाद, एकेश्वरवादके साथ बुद्धका नास्तिकवाद प्रकाशमें था।

भारतमें धर्मप्रवर्तन प्रथा न थी। किसी एक व्यक्तिने अपने-आपको ईश्वर द्वारा भेजा हुआ कहकर कभी धर्म नहीं चलाया। यह प्रथा सेमेटिक थी। यह कहना तर्कसंगत न होगा कि ईरान, फिलस्तीन आदि स्थानोंके धार्मिक विचारोंसे भारत अछूता रहा। बुद्धने सामाजिक, नैतिक एवं दार्शनिक क्रान्ति की। उस क्रान्तिकी गूँज यूनानी दार्शनिकोंकी विचार-प्रणालीमें मिलती है। बुद्धको भी सेमेटिक-परम्पराकी तरह धर्मप्रवर्तक, धर्मगुरु मानकर तत्कालीन विद्वानोंने प्राच्य एवं प्रतीच्यके विचारोंका विचित्र समन्वय किया था। पूर्वके दर्शनों तथा पश्चिमकी धर्मप्रवर्तक-प्रथा दोनोंके मेलसे भारतने एक अनोखी चीज देखी जो उसके लिए बिलकुल नयी थी। विश्वने इस समन्वयका आदर किया। यहूदी तथा जरदस्तुके अनुयायी फैल न सके, परन्तु बौद्धधर्म समस्त विश्वमें फैल गया। यदि हम इस पीठिकाके साथ भगवान् बुद्धका जीवनचरित्र पढ़नेका प्रयास करें तो वह अधिक बोधगम्य होगा।

बुद्धकालीन भूगोल

मिस्र, यूनान, सुमेर, बेबलोन, असीरिया, ईरान तथा चीनमें भिन्न-भिन्न धर्मप्रणालियाँ प्रचलित थीं। एक देशका दूसरे देशसे व्यापारिक सम्बन्ध था। आवागमन था। एक स्थानकी विचारधारा दूसरे स्थानोंकी यात्रा व्यवसायियोंके कारवाँके साथ करती थी। भारतवर्ष भी तीन महामण्डलोंमें यथा, महा, अन्तर तथा मध्यमें

विभाजित था। मध्यदेश, उत्तरापथ, अपरान्तक, दक्षिणापथ एवं प्राच्य प्रदेशोंमें विभक्त था। सोलह महाजनपद, काशी, कोशल, अंग, मगध, वज्जि, मल्ल, चेदि, वत्स, कुरु, पंचाल, मत्स्य, सूरसेन, अश्वक, अवन्ति मध्यदेशमें तथा शेष दो गान्धार और कम्बोज उत्तरापथमें थे। अपरान्तक प्रदेशमें सिन्ध, गुजरात एवं वल्लभीका राज्य था। अश्वघोषके मतानुसार गंगा एवं नर्मदाके मध्यका भूभाग दक्षिणापथ कहा जाता था। अंग एवं मगध मध्यदेशकी पूर्वी सीमापर थे। उनमें कजंगल, वंग, ताम्रलिप्ति आदि निगम थे।

राजनीतिक स्थिति

भारतकी राजनीतिक परिस्थिति इस दृष्टिसे अच्छी थी कि उसके किसी भूभागपर विदेशियोंका अधिकार नहीं था। पश्चिममें यूनान एवं रोमका उत्कर्ष नहीं हुआ था। ईरान एवं चीनके राज्य अविकसित अवस्थामें थे। मिस्र भारतसे बहुत दूर था। विदेशी आक्रमणके भयाभावके कारण भारतमें कोई केन्द्रीय राज्य किंवा शासन न था। वह अनेक राज एवं गणतन्त्रीय राज्योंमें बँटा था। मगध, कोशल, वत्स एवं अवन्तिके राज्य मुख्य थे। मगधकी राजधानी राजगृह थी। उसका राजा बिम्बिसार था। बिम्बिसारका पुत्र अजातशत्रु था। कोशलकी राजधानी श्रावस्ती थी। राजा प्रसेनजित थे। प्रसेनजितकी बहिनकी शादी बिम्बिसारसे हुई थी। अजातशत्रु प्रसेनजितका भांजा था। काशी राज्य कोशल और अंग मगधके अन्तर्गत था। वत्सकी राजधानी कोशाम्बी तथा राजा उदयन था। चंडप्रद्योत अवन्तिकाका राजा था। उसकी राजधानी उज्जैन थी। भगवान् बुद्ध उक्त राजाओंके समकालीन थे। उनके जीवनकी अनेक घटनाओंसे उनका सम्बन्ध रहा है। लिच्छवी गणराज्य कोशल एवं मगध राज्यके बीच स्थित था। इसकी राजधानी वैशाली थी।

सामाजिक स्थिति

तत्कालीन राज्यव्यवस्था लोक-रंजनात्मक न होकर पारस्परिक द्वेष

एवं महत्वाकांक्षाकी प्रतीक हो गयी थी। साधारण हेतुओंपर जन-संहार होना मामूली बात थी। राजाका अन्तःपुर रानियों एवं दासियोंसे भरा था। वेश्यागमन बुरा न माना जाता था। वेश्या एवं गणिकाका समाजमें विशिष्ट स्थान था। भोग-विलास, मद्य, मांसादिका सेवन प्रचलित था। जनता जाति, उपजाति, गोत्र एवं वंशपरम्पराकी जड़ रूढ़ियोंमें जकड़ी थी। पूँजीपति श्रेष्ठीके रूपमें सर्वत्र वर्तमान थे। वर्गोंमें घोर विषमता थी। एक ओर राजा और श्रेष्ठी थे तो दूसरी ओर अत्यन्त दरिद्र प्राणी। अलंकारों, सुन्दर वस्त्रों, शृंगार-प्रसाधनोंका खूब जोर था। तत्कालीन वर्णनसे प्रतीत होता है कि चाहे समाजमें आर्थिक विषमता रही हो परन्तु भारत आर्थिक दृष्टिसे समृद्धिशाली था।

धार्मिक स्थिति

धार्मिक जगत्में किसी एक विशिष्ट विचारका प्राधान्य न था। शुद्ध वैदिक धर्म अन्धविश्वास और संशयात्मक भावनाके भँवरमें फँसा था। पूर्ण दार्शनिक अराजकता देशमें फैली थी। वैदिक सिद्धान्तोंपर जैन मत आघात कर चुका था। उन दिनों तीन सौ चौसठ मतमतांतर भारतमें प्रमुख थे। क्रियावादियोंके एक सौ अस्सी, अक्रियावादियोंके चौरासी, अज्ञानिकवादियोंके सड़सठ एवं वैनयिकवादियोंके बत्तीस सम्प्रदाय किंवा मतमतान्तर थे। बुद्धकालीन ग्रन्थोंमें बासठ मतोंका वर्णन मिलता है। उनके समयमें अनेक आध्यात्मिक विभूतियाँ उपस्थित थीं। अक्रियावादीके पूर्ण काश्यप, भौतिक किंवा उच्छेदवादीके अजितकेश कम्बल, अकृततावादीके प्रकुद्ध कात्यायन, दैववादके मक्खिल गोशाल, अनिश्चितवादके संजय तथा चतुर्यामसंवरवादके निगण्ठ नातपुत्र आदि प्रमुख थे।

शाश्वत, नित्यता, अनित्यता, अमराविक्षेप, अकारण, निर्वाणादि अनेक परस्पर विरोधी, अर्धविरोधी एवं एक दूसरेके पूरक वाद थे। जनताके सम्मुख इतने मतमतान्तर थे कि किसी एक मतका आश्रय लेना कठिन हो गया था। एक मतावलम्बी दूसरेपर आक्षेप करता था।

लड़ता था। विवाद करता था। दार्शनिक एवं वैचारिक अराजकताका स्वाभाविक प्रभाव यह हुआ कि जनता उद्देश्यविहीन हो गयी। किसी एक सिद्धान्तकी प्रमुखता न होनेके कारण आचारमें शिथिलता आ गयी। मिथ्या एवं कपोलकल्पित बातोंमें लोग मूढ़ हो गये। बहुदेव-पूजा व्याप्त थी। एकेश्वरवाद चाहे कहीं मान्य रहा हो परन्तु बहुदेव-पूजाने स्थान ले लिया था। सिद्धान्तोंके झमेलोंमें लोगोंने कर्मकाण्डकी रूढ़ि को ही धर्म मान लिया था। यज्ञोंमें पशुबलिकी बहुलताने दयालु प्राणियोंका मन विकृत कर दिया था। जनताकी सामाजिक, राज-नीतिक, धार्मिक एवं दार्शनिक स्थिति अत्यन्त दयनीय थी। व्याकुल होकर लोग किसी नवीन पथकी खोजमें थे। कोई साहस कर सामने न आता था। उस कमीकी पूर्ति की भगवान् बुद्धने।

जन्म-स्थान

जनश्रुति है कि सांख्यकार कपिलका आश्रम रोहिणी नदीके पवित्र तटपर था। कालान्तरमें वह स्थान नगरमें परिणत होकर कपिलवस्तु हो गया। भगवान्का जन्म लुम्बिनीमें हुआ था। यह स्थान पूर्वोत्तर रेलवेके नौतनवा स्टेशनसे लगभग बारह मील दूर होगा। स्थानीय लोग उसे रुमिन देई कहते हैं। जिस समय मैं वहाँ गया था, वहाँ एक छोटा मन्दिर था। उसमें देवीकी मूर्ति थी। समीप ही अशोककी लाट थी। बिजली गिरनेसे लाट फट गयी थी। स्थान नेपाल राज्यकी तराईमें है। राज्यकी ओरसे एक अतिथि-भवन है। लोग वहाँ ठहर सकते हैं। आसपास कोई आबादी नहीं है। एक बरगदका पेड़ भी पास ही है। उसके नीचे एक साधु कुछ विद्यार्थियोंको पढ़ा रहे थे। ग्रामीण स्त्रियाँ चावलकी पूड़ी देवीको चढ़ानेके लिए बना रही थीं। स्थानसे कुछ दूरपर आमकी एक बारी है। उसमें सामयिक बाजार लगता है। स्टेशनसे लुम्बिनीतक सड़क नहीं थी। मैं हाथीपर चढ़कर गया था। बौद्ध ग्रन्थोंमें नदीका जैसा वर्णन मिलता है वह प्रत्यक्ष देखनेमें आया। चकवा यहाँ जलमें खूब विहार कर रहे थे। इस स्थानमें

मैंने एक प्रकारकी शान्ति एवं गम्भीरताका अनुभव किया। उसे शायद भूल न सकूँगा।

जाति

सूर्यवंशी महाराज इक्ष्वाकु थे। उन्हींके वंशमें रघु, राम आदि उत्पन्न हुए हैं। इक्ष्वाकुवंशीय एक व्यक्तिने पिताके शापके कारण आश्रममें शरण ली। वंश बढ़ा। शाक वनसे परिवेष्टित होनेके कारण स्थानके रहनेवालोंका नाम शाक्य हुआ।

एक दूसरी कथा भी है। इक्ष्वाकुने अपनी प्रियतमा मनापा रानीके पुत्रको राज देनेकी कामनासे उल्कामुख, करण्ड, हास्थिनिक एवं सिनी-सूर नामक ज्येष्ठ पुत्रोंको राज्यसे निर्वासित कर दिया। वे हिमालयके समीप सरोवरके तटपर निवास करने लगे। जाति न बिगड़ जाय अत-एव अपनी रक्त-शुद्धताके विचारसे अपनी बहिनोंके संग सहवास किया। वे शाल वनमें निवास करते थे। इक्ष्वाकुने एक बार अपने अमात्यों-से कुमारोंके विषयमें जिज्ञासा की। अमात्योंने सब हाल कहा। इक्ष्वाकुके मुखसे निकला कि कुमार बड़े शाक्य अर्थात् समर्थ हैं। उस समयसे उनका सम्बोधन शाक्य नामसे होने लगा।

शाक्य क्षत्रिय थे। कपिलवस्तु, शिलावती, देवदह आदि नगरोंको बसाकर उन्होंने अपने राज्यकी अभिवृद्धि की। शाक्योंकी राज्य-प्रणाली गणतन्त्रीय थी। राजा निर्वाचित होता था। शुद्धोदन कपिलवस्तुके राजा थे। नगरके मध्यमें एक संथागार था। वहाँ शाक्य एकत्र होकर निर्णय एवं विचार करते थे।

वंशावली—पितृपक्ष

पितृकुलमें प्रपितामह शाक्यराज जयसेन हुए। उनके पुत्र सिंहहनु थे। सिंहहनुको शुद्धोदन, शुक्लोदन, अमृतोदन, धौतोदन नामक पुत्र एवं प्रमिता और अमृता कन्याएँ हुईं। शुद्धोदनको सिद्धार्थ और सिद्धार्थ अर्थात् भगवान् बुद्धको राहुल पुत्र हुए। शुद्धोदनका विवाह दो सगी बहिनों महामाया और महाप्रजापति गौतमीसे हुआ था। अनुपम

मायाके समान होनेके कारण बुद्धकी माताका नाम महामाया रखा गया था। उनकी विमाता प्रजापतिसे नन्द तथा रूपानन्द दो सौतेले भाई थे। शुक्लोदनको देवदत्त तथा आनन्द दो पुत्र हुए। दोनोंने बुद्धका शिष्य होकर प्रव्रज्या ली। आनन्द भगवान्‌का प्रिय शिष्य एवं परिचायक हुआ। देवदत्तने संघमें फूट डालने तथा भगवान्‌की हत्याका प्रयत्न किया। बुद्धका द्रोही, उनसे प्रव्रज्या लेनेपर भी हुआ। अमृतोदनके महानाम तथा अनुरुद्ध दो पुत्र हुए। अनिरुद्ध भगवान्‌का शिष्य हुआ। परिनिर्वाणकालतक आनन्द और अनिरुद्ध भगवान्‌के साथ रहकर उनके भक्त बने रहे।

मातृपक्ष

कोलराज देवदहको एक पुत्र अंजन तथा पुत्री कांचना हुई। अंजनको सुप्रबुद्ध, दण्डपाणि पुत्र और महामाया तथा महाप्रजापति गौतमी दो कन्याएँ हुईं। दोनों कन्याओंकी शादी बुद्धके पिता शुद्धोदनके साथ हुई थी। सुप्रबुद्धको देवदत्त पुत्र एवं यशोधरा पुत्री हुई। भगवान् बुद्धकी शादी यशोधरासे अर्थात् ममेरी बहिनसे हुई। यशोधराका नाम गोपा भी था।

गर्भ

कपिलवस्तु नगरमें आषाढ़ोत्सव उद्घोषित हुआ था। पूर्ण शशि-बिम्ब अमृत-वर्षा कर रहा था। माल्य एवं पुष्पों द्वारा शयनकक्ष सुसज्जित था। भीनी सुगंधसे कक्ष जैसे भर उठा था। सुलंकृता, सुरभि-कुसुमधारिणी महामाया देवी सुशोभित पर्यंकपर सोयी थीं। स्वप्नका उदय हुआ। रजत-माल्य तुल्य उज्वल कमल सूड़में लिये पवित्र हाथीने पर्यंककी तीन बार प्रदक्षिणा की। उत्तराषाढ़ नक्षत्रमें बोधिसत्वने दाहिनी कुक्षिसे गर्भमें प्रवेश किया।

स्वप्नकी कथा चली। राजा शुद्धोदनने चौसठ प्रमुख ब्राह्मणोंको आमन्त्रित किया। राजाने स्वप्नका रहस्य पूछा। प्रसन्नमुख उन लोगोंने कहा—महाराज! देवीने पवित्र गर्भ धारण किया है।

जन्म

दस मास हुए महामाया देवीने पतिसे निवेदन किया—पितृगृह देवदह जानेकी आज्ञा प्रदान की जाय। अमात्यों, दासियों एवं राजकीय शोभाके साथ सुवर्ण-शिविकामें देवीने देवदहके लिए प्रस्थान किया।

कपिलवस्तु एवं देवदह मार्गके मध्यमें लुम्बिनीका मंगल शाल-वन था। वनश्री स्मित थी। शाल फूले थे। दिशाएँ स्वच्छ थीं। आकाश निरभ्र था। नदीका जल नीरव था। विहंगम कलरवशील थे। भौंरे पुष्पोंपर गुनगुना रहे थे। देवीकी इच्छा वनश्री देखनेकी हुई। देवीके पवित्र चरणस्पर्शसे अवनी जैसे पवित्र हो उठी। देवीने शाल वृक्षकी एक शाखा पकड़ ली। प्रसववेदना हुई। गर्भोत्थान हुआ। पुष्य नक्षत्रमें भगवान्‌के कमलचरणने पृथ्वीका स्पर्श किया।

देवीकी पवित्र गोदमें भगवान् कपिलवस्तुकी ओर लौटे। पैंतालीस वर्षकी अवस्थामें पुत्रप्राप्तिके अनिवर्चनीय आनन्दमें शुद्धोदनने अन्न एवं रत्नदान मुक्त हस्तसे किया।

गाथा है कि—जिस समय भगवान्‌ने जन्म ग्रहण किया उसी समय राहुलमाता यशोधरा, छन्दक, कन्थक, कालउदापी एवं महाबोधि वृक्ष भी उत्पन्न हुए।

काल देवल

कुलमान्य काल देवल तपस्वीके कर-कमलोंमें पिताने स्नेहसे पुत्रको रखा। तपस्वीने शिशुकी पवित्र मुखकान्ति देखी। मुसकराया और फिर उसकी आँखें भर आयीं। उसने अपने भानजेसे जाकर कहा—शिशु बुद्ध होगा। दुःख है, वह तबतक जीवित न रहेगा, उन्हें बुद्ध न देख सकेगा।

नामकरण

पाँचवें दिन राजाने एकसौ आठ ब्राह्मणोंको आमन्त्रित किया। उनमें लक्षण जाननेवाले आठ ब्राह्मण थे। वे गर्भाधानके दिन स्वप्न विचार करनेके लिए भी आये थे। राजाने नामकरण करनेके लिए कहा।

उनमें सातने दो उँगलियाँ उठाकर दो प्रकारकी भविष्यवाणी की। बोले—गृहस्थावस्थामें रहनेपर शिशु चक्रवर्ती राजा होगा एवं प्रव्रजित होनेपर बुद्ध। कौण्डिन्यने केवल एक उँगली उठाकर कहा—शिशु विवृत कपाट बुद्ध होगा। उसके कारण लोकका सर्वार्थ सिद्ध होगा। अतएव भगवान्‌का सिद्धार्थ नाम रखा गया।

गौतम नाम गोत्रवाचक है। उनकी जाति क्षत्रिय एवं गोत्र गौतम था, अतएव उन्हें गौतम नामकी संज्ञा दी गयी। बुद्ध उपाधिवाचक है। क्राइस्ट शब्द जैसे ईसा मसीहके नामके साथ उपाधिका द्योतक है उसी प्रकार बुद्ध शब्द भी है। भगवान् बुद्धके पूर्व कितने ही बुद्ध हो चुके हैं। गौतम बुद्ध अन्तिम बुद्ध थे।

माताकी मृत्यु

देवी महामायाका अवसान पुत्रोत्पत्तिके सात दिन पश्चात् हो गया। शिशुकी देखरेखका भार मौसी किंवा विमाता महाप्रजापति गौतमीपर पड़ा।

शिशु एवं हंस

भगवान्‌में बालजन्य चंचलता न थी। वे गम्भीर थे। संयत थे। स्वभाव शान्त था। सहनशील थे। एक दिन वे सुन्दर राज्योद्यानमें टहल रहे थे। प्रसन्न हंसपंक्ति नील गगनमें कलरव करती गमनशील थी। सहसा वाणबिद्ध एक हंस उनके सम्मुख आकर गिर पड़ा। व्यथासे फटफटाने लगा।

गौतमके नेत्रोंमें करुणा उतर आयी। हंसको गोदमें ले लिया। उसके शरीरसे धीरे-धीरे तीर निकाला। हंसको कैसी पीड़ा हुई होगी यह जाननेके लिए वाण अपने हाथमें चुभाया। रक्त बह चला। पीड़ा हुई। अनुभव किया कि हंसको कैसी वेदना हुई होगी। वे स्नेहसे उसका उपचार करने लगे।

उनका चचेरा भाई देवदत्त अपना शिकार खोजता आया। शिकार माँगा। हंसपर प्रेमसे हाथ फेरते हुए भगवान्‌ने देना अस्वीकार कर

दिया। बोले—यदि हंस बाणोंसे मर जाता तो उसपर तुम्हारा अधिकार होता। किन्तु इस समय वह मेरी सेवासे बच गया है। अतएव उसपर मेरा ही अधिकार है।

बात बढ़ी। न्यायके लिए विवाद राजाके सम्मुख रखा गया। निर्णय हुआ—जीवित प्राणीपर उसीका अधिकार होता है जो जीवनकी रक्षा करता है।

हलकर्षणोत्सव

भगवान्‌की उम्र ग्यारह वर्षकी थी। हलकर्षणोत्सवका काल आया। उत्सव बड़े उत्साहसे मनाया जाता था। नगर खूब सजाया जाता था। गन्ध, पुष्पमाल्य एवं आभूषणोंसे अलंकृत होकर तथा नवीन वस्त्र धारण कर लोग उत्सवमें सम्मिलित होते थे। राजा भी हल जोतते थे। राजा जनककी परम्पराका निर्वाह होता चला आ रहा था। भगवान्‌को जामुनकी छायामें दासियोंने बैठा दिया। वे भोजन आदि बनाने चली गयीं। राजा हल जोतने लगे।

खेतोंमें हल चल रहे थे। लोग पसीनेसे तर हो गये थे। जोरसे चलनेके लिए बैलोंको मार रहे थे। मिट्टीके साथ न जाने कितने कीड़े-मकोड़े ऊपर आ जाते थे। वे बैलों और मनुष्योंके पैरोंके नीचे अपनी जीवनलीला समाप्त कर रहे थे। मांसभक्षी प्राणियोंमें उन निर्जीवोंके शरीरके लिए भयंकर कोलाहल हो रहा था। भगवान्‌का कोमल हृदय करुणासे भर आया। कमलनेत्र अर्धप्रस्फुटित हो उठे। पद्मासन लग गया। श्वास-प्रश्वासका निरोध हो गया। प्रथम ध्यानावस्थ हो गये। जामुनकी छाया सूर्यकी गतिके साथ न चलकर उनपर स्थिर पड़ती रही। राजा, अमात्य एवं अन्य लोग भगवान्‌का वह रूप देख चकित हो गये।

भवन-निर्माण

ग्रीष्म, वर्षा एवं शीत ऋतुके लिए नव, सात तथा पाँच तलके प्रासादका निर्माण राजाने उनके लिए करवाया। सुखके सभी प्रसाध-

नोंका संग्रह किया गया।

शाक्योंने शिकायत की, कुमार किसी प्रकारकी कला एवं गुणका संचय नहीं कर रहे हैं। समय आया तो उन्होंने दिखा दिया कि वे किसीसे कम नहीं थे। शास्त्रीय पद्धतिसे भगवान्‌ने शास्त्रोंका अध्ययन किया। उन्होंने रणकौशलमें आशातीत सफलता प्राप्त की। उनके जैसा अश्वारोही तथा रथ हाँकनेमें कोई शाक्यकुमार प्रवीण नहीं था।

राजाने उनमें विरक्तिका अंकुर देखा। उनका विवाह कर गृहस्थीमें फँसा देनेका विचार किया। चारों ओर शाक्योंमें उपयुक्त कन्या ढूँढनेके लिए ब्राह्मण भेजे गये। निश्चय हुआ कि सुप्रबुद्धकी कन्या यशोधराके साथ उनका विवाह किया जाय।

विवाह

राजाने एक योजना बनायी। सिद्धार्थ शाक्य कुमारियोंको आभूषण वितरित करेंगे। इसके लिए एक दिन निश्चित किया गया। देवी यशोधरा आयीं। सब कुछ बँट चुका था। कुमारीको दुःख हुआ। उसने कहा—'क्या मुझे कुछ भी देना उचित न समझा गया?'

राजकुमारने कहा—कभी ऐसा सोच भी नहीं सकता।

उन्होंने दूसरा आभूषण मँगाकर देवीको दिया।

कुमारीने पूछा—क्या आभूषण लेना मेरे अनुरूप है?

कुमारने सरलतापूर्वक कहा—आभूषण मेरा है। मैं उन्हें दे सकता हूँ।

गुप्तचरोंने तुरन्त राजाको सूचित किया कि कुमार और कुमारीकी बातचीत हुई। कुमारकी दृष्टि देवी यशोधरापर पड़ी। राजाने देवदह सुप्रबुद्धके पास विवाहके लिए संदेश भेजा। किन्तु सुप्रबुद्धने कहला भेजा—उनकी कन्या उन राजकुमारोंके लिए है जिन्होंने विद्या एवं बलके आधारपर ख्याति प्राप्त की है। कुमारका जीवन प्रासादमें बीतता है।

राजाको धक्का लगा, अपने पुत्रके प्रति लोगोंकी यह धारणा

जानकर। राजाको उदास देखकर गौतमने एक दिन कारण पूछा। हेतु मालूम होते ही कुमारने अपनी शक्ति एवं बलका परिचय देनेके लिए सभी शाक्य राजकुमारोंको एकत्र करनेके लिए कहा। बल, पौरुष-प्रदर्शन-निमित्त सभी आमन्त्रित किये गये। गौतम विजयी हुए। पराजित होनेवालोंमें उनके दोनों चचेरे भाई देवदत्त तथा आनन्द भी थे। आनन्द उनका प्रिय शिष्य एवं परिचायक हुआ। देवदत्त उनसे प्रव्रज्या लेनेपर भी परम शत्रु रहा। सोलह वर्षकी अवस्थामें यशोधराका शुभ पाणिग्रहण संस्कार भगवान्‌के साथ हो गया।

उद्यान-गमन

बाहर उद्यानमें जानेके लिए कुमारकी इच्छा हुई। बसन्त ऋतु थी। जानेका प्रबन्ध किया गया। शुभ्र कमल सदृश चार सैन्धव (अश्व) जोतकर महार्घ सुसज्जित रथ सारथी लाया। मार्ग मालाओंसे सजाया गया था। लोकमें उत्साह था। उज्ज्वल पुष्प पथोंपर बिखेरे गये थे। गन्धसे पथ सुरभित था। पताकाएँ भवनोंपर फहरा रही थीं। अटारियोंपर कुलांगनाएँ सुशोभित थीं। मार्गमें नागरिक जयजयकार, सत्कार करनेके लिए पंक्तिबद्ध खड़े थे। कुमारको देखनेका सभीको कुतूहल था। विकसित शोभनीय नेत्रोंसे किसीने कुमारमें सौम्य गुण देखा। किसीने उनमें पवित्र कान्तिकी झाँकी ली। जनरव उद्घोषित हो रहा था उनकी शुभ-कामनाओंके साथ।

जरादर्शन

रथ बढ़ रहा था। उनकी दृष्टि पड़ी, जरा-जर्जित, भग्नदन्त, श्वेत-केश, वक्रशरीर, लकड़ीके सहारे झुके हुए एक वृद्धपर।

'सौम्य, यह कौन है'—कुमारने साश्चर्य पूछा।

'कुमार! आयुके भारसे दबा जरा-जर्जरित किसी दिनका एक सुन्दर युवक।'

'छन्न! क्या सभी व्यक्ति ऐसे होंगे या केवल यही?'

'भन्ते! युवावस्था प्रत्येक शरीरका त्याग करती है।'

'सौम्य ! क्या मैं भी इसी प्रकार होऊँगा ?'

'अवश्य।'

'धिक्कार है उस जन्मपर जिसने मनुष्यका रूप यह बना दिया है।'

रथ आगे न जा सका। कुमारका मन खिन्न हो गया। वे उदास हो गये। जल्दी लौटनेका कारण मालूम होते ही राजाने आमोद-प्रमोदका प्रबन्ध करवाया। प्रासादके चारों ओर पहरा बैठा दिया गया। कुमार किसी अशोभनीय दृश्यको न देख सकें।

व्याधि

दूसरी बार कुमार रथारूढ़ हो पुनः उद्यानकी ओर चले। मार्गमें व्याधिग्रस्त एक रोगीको देखा। उसका शरीर श्वास-प्रश्वासके साधारण वेगसे कम्पित हो उठता था। स्कन्धप्रदेश शिथिल थे। भुजाएँ सूख गयी थीं। पेट फूला था। रंग पीला पड़ गया था। दूसरेका सहारा लेकर चल रहा था। भगवान्‌ने पूछा—

'सौम्य, यह कौन है ?'

'ज्वरग्रस्त मानव।'

'यह रूप कैसे हुआ ?'

'धातुप्रकोपसे।'

'क्या मेरा शरीर भी ऐसा ही होगा ?'—विषण्ण कुमारने गम्भीरतापूर्वक पूछा।

'अवश्य ! शरीर रोगका कारण है।'

'यदि स्वास्थ्य स्वप्नके तुल्य है तो कौन शरीरके सुख एवं आनन्दका भोग कर सकता है ?'

रथ आगे न बढ़ सका। वे लौट आये।

मृत्यु

तीसरी बार उद्यानकी ओर रथारूढ़ होकर कुमार पुनः निकले। राजपथपर एक अरथी जा रही थी। वह चार मनुष्योंके कन्धोंपर थी। पीछे जानेवाले दीन थे। अरथीके विशेषता-विभूषित होनेपर भी लोग

रो रहे थे। अपने केशोंको नोच रहे थे। अत्यन्त विकल थे। कुमारने पूछा—

'छन्न ! यह व्यक्ति सुसज्जित अरथीपर क्यों सोया है !'

'यह मर गया है। पुनः नहीं उठेगा। अपने माता, पिता, पुत्र, बन्धु-बान्धवसे फिर न मिल सकेगा। दूसरे लोकमें चला गया है। इन्द्रिय एवं प्राणहीन हो गया है। संज्ञाहीन है। प्रियजन न चाहकर भी इसे सर्वदाके लिए छोड़ने जा रहे हैं।

'मैं भी क्या एक दिन इसी प्रकार संज्ञाहीन हो जाऊँगा ?'— कुमारने साश्चर्य पूछा।'

'हाँ।'

'ओह ! उस युवावस्थाको धिक्कार है जो जीवनको सोख जाती है। उस स्वास्थ्यको धिक्कार है जो शरीरको नष्ट कर देता है। उस जीवनको धिक्कार है जो इतने शीघ्र अपना अध्याय बन्द कर देता है। क्या जरा, व्याधि, मृत्यु सर्वदा होती रहेंगी ?'

'हाँ कुमार।'

रथ आगे न बढ़ सका। राजकुमार अन्यमनस्क हो उठे। प्रासाद लौट आये।

भोगाकर्षण

राजकुमारके साथी उदायीसे राजाको समाचार मिला। राजा चिन्तित हुए। कुमारका मन वैराग्यकी ओर उन्मुख हुआ है। उसे वे सहन न कर सकते थे। कुमारका मन लुभानेके लिए कमनीय कामिनियोंका समूह उनके साथ किया गया।

राजप्रासादके उद्यानमें कुमार चले तो उनके पीछे कामपुत्तलिकाएँ चलीं। किसीने अनजाने अपने कठोर पीन पयोधरसे उनका स्पर्श किया। किसीने गिरनेका स्वांग रच उनका आलिंगन कर लिया। गन्धमय मद-मस्त किसी कमनीयाने जिसके मुखसे गन्ध बिखर रही थी, उनके पवित्र मुखके पास मुख ले जाकर बात करनेकी चेष्टा की। नितम्बिनी

युवती अपने वस्त्रोंको अल्हड़पनके साथ उड़ाती उनके सम्मुख घूम गयी। मंजरीमय आमकी शाखासे कोई अपने पयोधरोंको उन्नत करते झूलने लगी। कोई कमलमय जलाशयके समीप पुष्पित कमल-दलपर जल छिड़कते मधुर संगीत-लहरियोंमें झूम उठी। किसीने उनपर परिहाससे सुगन्धित पुष्प छोड़ा। उनके कण्ठका स्पर्श करते हुए किसीने उन्हें सुरभित पुष्पमाल पहनायी। अशोकपर गूँजते भ्रमरको देख कोई गुनगुनाने लगी। आम्र-मंजरियाँ कामके स्वागतमें जैसे सुगन्धिदान-निमित्त झुक गयीं।

किन्तु भगवान्‌के मुखपर न उद्वेग था, न किंचित् विलास-रेखा। वे निर्विकार जैसे उन कामनियोंके बीच कमलपत्रकी तरह निर्लिप्त थे। उनके मानसमें केवल वही तरंगे उठ रही थीं—क्या ये यौवन-मदमत्त नारियाँ सोचती हैं कि यौवन चंचल है? जरा इसे नष्ट कर देगी? मृत्यु शरीर-धातुओंको छिन्न-भिन्न कर मानवके सुन्दर शरीरका अस्तित्व लोप कर देगी? उदायीने मैत्रीभावसे कहा—विश्वके भोगोंका सभीने उपयोग किया है?

कुमार नीरव थे।

'कुमार आपका'—

'उदायी! जरा, रोग एवं मृत्यु यदि न होती तब भी मैं इन मनोज्ञ विषयोंमें आनन्दानुभव न करता। स्त्रियोंका क्या यह रूप नित्य है?'

संन्यासी

चौथी बार उद्यानयात्रा-निमित्त रथ गमनशील था। मार्गमें चीवर-धारी एवं प्रव्रजित व्यक्ति देखकर भगवान्‌ने पूछा—

'छन्न! यह कौन है?'

'संन्यासी!'

'शान्त है। गम्भीर है। मस्तक मुंडा है। हाथमें भिक्षापात्र है। वस्त्र रँगा है। इनका क्या कार्य है?'

'कुमार ! ये प्रव्रजित हैं। संसारका इन्होंने त्याग कर दिया है। तृष्णाका त्याग किया है। कामनाओंसे दूर हैं। द्वेषसे दूर हैं। अपनी भिक्षा नित्य माँगकर ग्रहण करते हैं।

राहुलका जन्म

भगवान्‌का कमलमुख खिल गया। गत तीन दिनोंके समान रथ प्रासादकी ओर लौटा नहीं। मधुर गतिसे रथ उद्यानकी ओर अग्रसर हुआ। उनकी विचारधारा विकसित होने लगी। उद्यानमें प्रसन्नवदन पहुँचे। वहाँ पहुँचते ही उन्हें सन्देशवाहकने प्रसन्नतापूर्वक आकर सन्देश दिया—भगवन् ! पुत्ररत्न उत्पन्न हुआ है।

राहु उत्पन्न हुआ। उनके मुखसे निकल गया।

सन्देशवाहक लौटकर राजाके पास आया। राजाने पूछा—गौतमने सुसमाचार सुनकर क्या कहा ?

बोले—राहु उत्पन्न हुआ।

शुद्धोदनने प्रसन्न होकर पौत्रका नाम राहुल रख दिया।

शान्तिकी झलक

भगवान् उद्यानसे रथारूढ़ लौट रहे थे। उनका मुख कान्तिमय था। उनकी शोभा बढ़ गयी थी। रथने नगरमें प्रवेश किया। लोग उन्हें देखनेके लिए निकल आये। स्त्रियाँ अटारियोंमें आ गयीं। क्षत्रिय-कन्या कृष्णा गौतमी बोल उठी—वे माता-पिता एवं भार्या परम शान्त होंगी जिन्हें गौतम प्राप्त है।

भगवान्‌ने सुना। विचारधारा चली। वह हमारे रूपको देखकर कहती है। इससे हमारे माता-पिता एवं पत्नीका हृदय परम शान्त होता होगा। किन्तु वह कौन-सी वस्तु है जिसके शान्त होनेपर हृदय परम शान्त होता है ?

रागादि-विमुक्त कुमारको प्रज्ञाका उदय हुआ। अन्तर्ध्वनि हुई। रागशान्ति होनेपर दोषाग्नि शान्त होती है। दोषाग्नि शान्त होनेपर मोहाग्नि शान्त होती है। मोहाग्नि शान्त होनेपर अभिमानादिका उप-

शमन होता है। तत्पश्चात् परम शान्ति प्राप्त होती है।

मुखमण्डल प्रसन्न हो उठा। निर्वाणका रेखा-चित्र आँखोंके सम्मुख आ गया। कृष्ण गौतमी सचमुच सत्य कह रही थी। भगवान्ने प्रसन्न होकर अपना मुक्ताहार उसके पास भेजा। मुक्ता-माला पाकर वह प्रसन्न हुई। सोचा—उनके मनमें मेरे प्रति अनुराग उत्पन्न हुआ है।

यशोधराका स्वप्न

रात्रिमें देवीने स्वप्न देखा। भयंकर तूफानसे देश उजड़ गया है। वह स्वयं नग्ना एवं विरूपावस्थामें हैं। सुन्दर अलंकार टूटकर छिन्न-भिन्न हो गये हैं। सूर्य, चंद्र एवं नक्षत्र आकाशसे टूटकर गिर रहे हैं। सुमेरु पर्वत समुद्रमें डूब गया है।

देवीने भगवान्से स्वप्नकी बात कही। उन्होंने स्नेहसे कहा—'भय न करो। स्वप्न जरा, व्याधि, मृत्यु-बन्धनसे मुक्त होनेकी ओर संकेत करता है। अज्ञानान्धकार तिरोहित होगा।'

प्रव्रज्याकी आज्ञा

भगवान्ने पुत्रोत्सवसे जनाकीर्ण प्रासादमें पितासे जाकर निवेदन किया—'जरा, व्याधि एवं मृत्युके कारण प्राणियोंका जीवन दुःखमय हो रहा है। इन महादुःखोंसे मुक्ति हेतु मैं प्रव्रज्या लूँगा।'

पिता सुनकर हतप्रभ हो गये। गृहस्थधर्मका गुणानुवाद करते हुए विरत होनेके लिए कहा। भगवान्ने कहा—'यदि मेरी युवावस्थाको वृद्धावस्था नष्ट न करे, यदि रोग शरीरको नष्ट न करे, यदि मृत्यु मेरा प्राणहरण न करे और यदि विपत्तियाँ मेरी सम्पत्तियोंका अपहरण न करें तो मैं यहाँ रहनेके लिए तैयार हूँ पिता!'

'कुमार! इन प्रश्नोंका समाधान मानवीय साधन एवं सीमाके परे है। असम्भवके पीछे पड़ना बुद्धिमानी नहीं है। प्रव्रज्या-भावना त्याग जीवनसुखका भोग करो।'

'पिता!'—अविचल वाणी मुखरित हुई—'मृत्यु कभी न कभी आयेगी। हमारा-आपका वियोग होगा। अभिमुख होनेवाले घरसे

विलग होना ही श्रेयस्कर है। गृहत्यागके अतिरिक्त मुझे कोई दूसरा मार्ग दिखाई नहीं देता।'

राजाने प्रासादपर प्रतिहारियोंका पहरा कड़ा कर दिया। कुमारका मन आमोद-प्रमोदमें लगानेकी योजना बनायी गयी।

महाभिनिष्क्रमण

सुसज्जित पर्यंकपर कुमार लेट गये। अलंकारयुक्त, नृत्य एवं गीत-प्रवीण कामिनियाँ वाद्योंके साथ शयनकक्षमें प्रविष्ट हुईं। मन बहलानेका विफल प्रयास आरम्भ हुआ, नूपुर बजने लगे। उन्हें उदास देख देवी यशोधराने पूछा—'आप उदास हैं !'

'देवी ! देखकर जो आनन्द होता है वही मेरी उदासीका कारण है।'

भागवान्‌की आँखें झपने लगीं। वे तो सो गये। उन्हें सोते देख कलाविद् युवतियाँ स्वयं अपने वाद्योंके साथ ऊँघते-ऊँघते सो गयीं।

भगवान्‌के कमल-लोचन शनैः शनैः उन्मीलित हुए। सुगन्धित शीतल दीपकका प्रकाश फैला था। मनुष्य नामधारी जीव—कमनीय युवतियाँ शयनकक्षमें जैसे बिखरी पड़ी थीं। उनका विगलित रूप देखकर वैराग्य उदय हुआ। किसीके मुखसे फेन निकल रहा था। किसीकी सुन्दर अंगिया लारसे भींग गयी थी। कोई दाँत कटकटा रही थी। किसीका मुख खुला था, किसीका स्तन। कोई ध्वनिके साथ श्वास-प्रश्वास ले रही थी। किसीका शरीर वस्त्रोंसे ढँका था, किसीपरसे वस्त्र बिलकुल हट गये थे। कोई मृदंगपर गाल रखे सोयी थी। कोई वीणाके तारोंपर उँगलियाँ रखकर सो गयी थी। कोई वीणाका आलिंगन कर अचेत थी। किसीका केशविन्यास खुलकर लटक गया था। किसीका मुख केशोंमें छिप गया था। किसीकी अंगिया ढीली हो गयी थी। किसीकी खुल गयी थी। किसीके नेत्रोंमें लगा काजल फैल गया था। किसीकी मांगमें पड़ा सिंदूर अपने ही हाथोंकी रगड़से पुँछ गया था। भगवान्‌को वह दृश्य कच्चे श्मशान सदृश प्रतीत होने लगा। भोगमय जीवनसे, भोगोंके प्रसाधनोंसे घृणा हो गयी। उन्होंने मानव-जीवनका

वह नग्न रूप देखा जो सुख देनेका गर्व करता था।

भगवान् शय्या त्याग उठे। द्वारके पास पहुँचकर बोले—

'कौन है ?'

'छन्दक'—ड्योढ़ीपर मस्तक रखकर सोये हुए छन्दकने कहा।

'मैं महाभिनिष्क्रमण करूँगा। अश्व लाओ।'

'देव !'

छन्दक अश्वराज कन्थक लाने चला गया। भगवान् देवी यशोधराके शयनगृहकी ओर अग्रसर हुए। शयनद्वार शान्तिपूर्वक अनावृत्त किया।

शयनकक्षमें मधुर दीपक जल रहा था। सुगन्धि उठ रही थी। पुष्पोंसे देवीकी शय्या सुसज्जित थी। देवी राहुलके मस्तकपर हाथ रखकर सो रही थीं। अपनी जीवनश्रीके एकमात्र फल शिशुका भगवान् स्पर्श करना चाहते थे। किन्तु स्पर्श न कर सके। विचार उद्भूत हुआ। यदि देवी जाग जायँ ? ड्योढ़ीपर बढ़ा चरणकमल आगे न बढ़ सका। वैराग्य एवं मोहके संघर्षमें मोहने हथियार डाल दिया। कपाट बन्द हुआ। भगवान् राजप्रासादसे उतरे।

अनोमा

सुसज्जित श्वेत अश्वराज कन्थक लिये छन्दक खड़ा था। अर्धरात्रिके लगभग भगवान् अश्वारूढ़ हुए। महाद्वारकी ओर अश्व बढ़ा। छन्दकने कन्थककी पूँछ पकड़ ली। अश्व शान्त था। उसने किसी प्रकारकी ध्वनि न की। उसकी टापोंसे भी आवाज न निकली थी। कामना-रहित उनतीस वर्षीय सिद्धार्थ राजकुमार अनोमा नदीके पवित्र तटपर पहुँचे। भगवान्‌ने पूछा—

'छन्दक ! इस नदीका क्या नाम है ?'

'अनोमा।'

'सौम्य ! मेरी भी प्रव्रज्या अनोमा होगी।'

छन्दक-विसर्जन

नदीके दूसरे तटपर पहुँचकर भगवान् बोले—

'सौम्य ! मेरे आभूषण एवं कन्थक लेकर लौट जाओ ।'

'देव ?'

'छन्दक ! देहधारियोंके लिए पृथक् होना स्वाभाविक है। स्नेहके कारण यदि आज हम-तुम एक दूसरेको न छोड़ें तो भी एक दिन मृत्यु हमें पृथक् कर देगी। प्राणियोंके मिलनका अन्त वियोग है। कपिलवस्तुके लोगों तथा बन्धु-बान्धवोंसे कहना कि—जरा, व्याधि एवं मृत्युका क्षय कर लौटूँगा, अन्यथा विफल होने पर मृत्युका आलिंगन करूँगा ।'

'राजकुमार !'—छन्दकके नेत्र सजल थे ।

'छन्दक ! मैं प्रव्रजित हूँगा ।'

'देव ! मैं भी प्रव्रजित हूँगा ।'

'सौम्य ! तुम्हें प्रव्रज्या नहीं मिल सकती । तुम लौट जाओ ।'

भगवान्‌ने आभूषण एवं कन्थक छन्दकको दिया। अपनी तलवार निकाली। अपने ही हाथों अपने सुन्दर केशोंको काटा। दो अंगुल परिमाणमें केश रह गये। उन्होंने केश समूहको आकाशमें फेंका। वही चूड़ामणि चैत्य हुआ। छन्दकसे बोले—

'माता-पितासे कुशल कहना ।'

कन्थकके साथ छन्दक चलना ही चाहता था। चल न सका, उसी स्थानपर प्राण-विसर्जन कर दिया। सजल-नयन छन्दक अकेले उदास कपिलवस्तु पहुँचा।

प्रव्रजित गौतमने उसी प्रदेशके अनूपिया आम्रवनमें एक सप्ताह निवास किया। तत्पश्चात् दक्षिण-पूर्वकी ओर राजगृहके लिए प्रस्थान किया।

मार्गके आश्रम

राजगृहके मार्गमें उन्हें तीन आश्रम मिले। एक आश्रमके लोग पक्षियोंके समान खेतोंसे अन्न बीनकर जीवन-निर्वाह करते थे। दूसरेमें लोग पशुओंके समान जीवन-यापन करते थे। तीसरेमें वायु पीकर सर्पकी तरह रहते थे। जिज्ञासापर मालूम हुआ कि इस लोकमें कष्ट

सहने पर परलोकमें सुख मिलेगा। इस लोकके दुःखका सन्तुलन परलोकके सुखसे हो जाता है। पुण्य किंवा कर्म क्षीण होने पर पुनः मृत्यु-लोकमें जन्म ग्रहण करना पड़ता है। अतएव लोग कष्टप्रद तपस्यामें रत हैं।

भिक्षाचार

राजा बिम्बिसार राजगृहमें राज्य करते थे। राजधानीका प्राकृतिक दृश्य अतीव मनोरम था। विन्ध्य पर्वतकी पंचपर्वतीय मालाओंसे नगर परिवेष्टित था—जैसे विन्ध्यकी गोदमें बैठा हो। पर्वतमालाएँ गुफाओंसे गुँथी थीं। नगरकी समीपवर्ती ये गुफाएँ साधकोंकी साधन स्थली थीं। पर्वतका एकान्तवास, भिक्षा निमित्त नगरका सामीप्य, दोनोंने साधकोंके लिए अत्यन्त सुविधा उपस्थित कर दी थी। भगवान्‌ने भी एक स्थान ग्रहण किया।

चीवरधारी भगवान् भिक्षापात्र लेकर भिक्षाचार निमित्त निकले। उनकी अपूर्व प्रतिभा तथा भव्य मूर्तिसे आकर्षित एवं आश्चर्य-चकित होकर राजपुरुषोंने राजासे जाकर कहा—

'राजन्! नगरमें एक अद्‌भुत महापुरुष भिक्षा माँग रहा है।'

राजाने प्रासादपर चढ़कर नीचे राजपथमें भिक्षाचार निमित्त निकले भगवान्‌को देखा। उसने राजपुरुषोंको उन्हें बुलानेकी आज्ञा दी।

भिक्षा लेकर भगवान् नगरद्वारसे बाहर निकले। पाण्डव पर्वत की छायामें पूर्वाभिमुख बैठ गये। संगृहीत भिक्षा थी। ऐसा भोजन उन्होंने आजन्म नहीं किया था। संयम एवं निर्विकार रूपसे उन्होंने भिक्षा ग्रहण की।

राजा स्वयं उनके समीप आया। उनकी सरल चेष्टापर मुग्ध हो उठा। उसने सभी प्राप्य ऐश्वर्य उनको देना चाहा किन्तु भगवान् ने कहा—

'राजाके लिए भी एक जोड़ा वस्त्र, क्षुधा-निवारणार्थ अन्न और शय्या निमित्त आसन चाहिये। इसके अतिरिक्त राजा एवं मनुष्योंकी

अन्य आकांक्षाएँ मद एवं मानके लिए हैं।'

'मेरे साथ…'

'राजन्! मैं अभि-सम्बोधीके लिए निकला हूँ। मैं राजप्रासाद अथवा कहीं और निवास कर क्या करूँगा?'

'प्रतिज्ञा कीजिये कि बुद्धत्व-प्राप्तिके पश्चात् दर्शन देंगे।

भगवान्‌ने मूक सम्मति दी।

अलार कलाम

भगवान् विचरण करते हुए अलार कलामके आश्रममें पहुँचे। अलार कलाम शास्त्रज्ञ ऋषि थे। सांख्य मतके प्रतिपादक थे। हिरण्यवती नदीके शीतल तटपर निवास करते थे। उनके तीन सौ शिष्य थे। भगवान्‌ने वहाँ निवास कर उनके सिद्धान्तोंको समझा। मुक्तिनिमित्त वह मार्ग भी उचित न समझ आगे बढ़े।

उद्दकरामपुत्र

उद्दकरामपुत्रके आश्रममें पहुँचे। वे वैशेषिकके विद्वान् थे। पर्वतकी गुफामें रहते थे। उनके सात सौ शिष्य थे। उन्हें शिक्षा देते थे। भगवान्‌ने वहाँ निवास कर थोड़े ही दिनोंमें अध्ययन पूर्ण कर लिया। उद्दकने उनकी महान् प्रतिभासे प्रभावित होकर उन्हें आश्रममें रहकर विद्यार्थियोंको शिक्षा देनेके लिए कहा। किन्तु उनका अनुरोध उन्होंने विनय-पूर्वक अस्वीकार कर दिया।

उरुवेला

कौण्डिन्य, कण्व, भद्दिप, महानाम एवं अश्वजित पंचवर्गीय भिक्षु भगवान्‌से मिले। उनके साथ तपस्या करने लगे। भगवान्‌ने तिल तण्डुलसे कालक्षेप करते हुए तपस्या आरम्भ की। तत्पश्चात् आहार-ग्रहण भी त्याग दिया। निराहारके कारण शरीर झाँवर हो गया। महापुरुषोंके बत्तीसों लक्षण लुप्तप्राय हो गये। टहलते समय चबूतरेपर गिर पड़ते। अत्यन्त क्लेश हुआ। विचार उत्पन्न हुआ कि दुष्कर तपस्या बुद्धत्वप्राप्तिका मार्ग नहीं। उन्होंने तपस्या त्याग दी।

स्नान

निरंजनाके निर्मल जलमें स्नान किया। शरीर इतना अशक्त हो गया था कि वृक्षकी शाखाका सहारा लेकर जलसे बाहर निकले।

स्वप्न

उन्होंने रात्रिमें स्वप्न देखा। इन्द्र उनके सम्मुख त्रितन्तु तंबूरा लिये खड़े थे। एक तंतु अत्यन्त कसा था। उसपर उँगली रखते ही कर्ण-कटु ध्वनि हुई। तीसरा तार अत्यन्त ढीला था। उससे कोई ध्वनि न निकली। मध्यका तार न ढीला था न कसा। उसपर उँगली पड़ते ही मधुर ध्वनि निकली। मध्य तारसे मध्य मार्गकी ओर संकेत किया। योग एवं कठिन साधनोंके बीचका मार्ग मध्य मार्ग है। वही श्रेयष्कर है। भगवान्‌की बुद्धिने स्पष्ट कहा।

पंचवर्गीय भिक्षु द्वारा बहिष्कार

भगवान्‌ने भिक्षाचार किया। स्थूल आहार ग्रहण किया। भौतिक शरीर भौतिक पदार्थोंके सेवनसे पुनः सुवर्ण-वर्ण हो गया। पंचवर्गीय भिक्षुओंने विचार किया कि बुद्ध तपोभ्रष्ट हो गये, पथभ्रष्ट हो गये, लोभी हैं। लोगोंने बुद्धका साथ त्याग दिया। बुद्धने काशीकी ओर प्रस्थान किया।

सुजाताकी खीर

सेनानी नामक उपनगर उरुवेलामें था। सेनानी-कुलमें सुजाता नामक एक सुन्दर कन्या थी। विवाह होनेपर उसने बरगद वृक्षसे मनौती मानी कि यदि प्रथम गर्भ द्वारा पुत्रकी प्राप्ति होगी तो मैं पूजा करूँगी।

उसे प्रथम गर्भसे पुत्ररत्न हुआ। उसने एक सहस्र गायोंको यष्टि मधुके वनमें चरवाया। उनका दूध पाँच सौ गायोंको पिलाया। पाँच सौ गायोंका दूध ढाई सौको पिलाया। इसी क्रमसे उसने सोलह गायोंका दूध आठ गायोंको पिलाया। वैशाख पूर्णिमाके ब्राह्ममुहूर्तमें गायोंको दुहवाया। दूधकी खीर स्वयं बनाने लगी।

पूर्णा दासीसे उसने पूजा निमित्त स्थान स्वच्छ करनेके लिए कहा। दासी तरु-मूलमें पहुँची। भगवान् प्रातःकृत्यसे निवृत्त होकर बैठे थे। उनकी कान्तिसे स्थान कान्तिमय हो उठा था। पूर्णाने उन्हें साक्षात् वृक्षदेवता समझा।

दासी सुजातासे बोली—वृक्षदेवता स्वयं सशरीर बैठे हैं। सुजाता सुनकर प्रसन्न हुई। स्वलंकृत हुई। सोनेके पात्रमें खीर रखी। सोनेके पात्रसे ढकी। उन्हें शुद्ध वस्त्रोंसे वेष्टित किया। उसकी श्वेत शंख जैसी भुजाएँ सिरपर थाल पकड़े चलीं। वह नीला वस्त्र पहने थी।

उसने भगवान्को वृक्षदेवता समझा। पात्र उतारकर रखा। सुगन्धित जलपात्र लिये उनके समीप पहुँची। उन्होंने दाहिने हाथसे जल ग्रहण किया। भगवान्के राजीवलोचन सुजाताकी ओर उठे। सुजाताने निवेदन किया—

'देव! ग्रहण कीजिये। आपमें उतना ही आनन्द उत्पन्न हो जितना इस समय मुझमें है।'

'मैं देव नहीं देवी!'—भगवान्की पवित्र वाणी मुखरित हुई—'तुम्हारी तरह मनुष्य हूँ। सत्यप्राप्तिमें तुम्हारी खीर सहायक हुई है। तुम्हारा मंगल हो।'

सुजाताने खीर भगवान्को अर्पित की। फिर प्रणाम कर लौटी।

भगवान्ने वृक्षकी प्रदक्षिणा की। खीर पात्र लेकर निरंजना नदीके सुखद तटपर आये। पात्रको भूमिपर रखा। स्नान किया। पूर्वाभिमुख बैठ गये। उनचास ग्रासमें खीर विभाजित की। वे उनके उनचास दिनोंके लिए पर्याप्त हुए। खीर खानेके पश्चात् निरंजना नदीमें सुवर्ण-पात्र प्रवाहित कर दिया। नदीके तटवर्ती शाल-वनमें शेष दिन व्यतीत किया।

बोधि-वृक्ष

सायंकाल भगवान् बोधि-वृक्षके नीचे आये। श्रोत्रिय नामक घास काटनेवाला घास लेकर सामनेसे आ रहा था। उसने उन्हें आठ मुट्ठी

तृण दिया। वे तृण सहित बोधिमण्डपपर चढ़ गये। वृक्षकी प्रदक्षिणा की। पूर्वकी ओर जाकर पश्चिमकी तरफ मुख कर खड़े हो गये। भूमिपर तृण डाला। तृण पड़ते ही आसनके रूपमें परिणत हो गये। उन तृणोंपर, अपराजित आसनपर वृक्षसे पीठ लगाकर पूर्वकी ओर मुख कर भगवान् बैठ गये। निश्चय किया कि जबतक सम्यक् सम्बोधि प्राप्त नहीं हो जाती मैं आसनका त्याग न करूँगा।

बुद्धत्व

निरंजनाके तटपर बोधि-वृक्षके नीचे भगवान् प्रथम अभिसम्बोधिको प्राप्त हुए। एक आसनसे एक सप्ताहतक वे विमुक्तिके असीम आनन्दमें बैठे रहे। रात्रिके प्रथम पादमें प्रतीत समुत्पादके अनुलोम एवं प्रतिलोमका मनन किया—

'अविद्यासे संस्कार होता है। संस्कारके कारण विज्ञान, विज्ञानके कारण नामरूप, नामरूपके कारण छ आयतन, छ आयतनके कारण स्पर्श, स्पर्शके कारण वेदना, वेदनाके कारण तृष्णा, तृष्णाके कारण उपादान, उपादानके कारण भव, भवके कारण जन्म और जन्मके कारण जरा, व्याधि, शोक, दुःख, मृत्यु, चित्तविकार एवं खेद होता है। संसार केवल दुःखोंका पुंज है। अविद्याका अशेष विरागसे होता है। अविद्याका नाश होनेपर संस्कारका नाश होता है। संस्कारका नाश होनेपर विज्ञानका, विज्ञानका होनेपर नामरूपका, नामरूपका होनेपर छ आयतनोंका, छ आयतनोंका होनेपर स्पर्शका, स्पर्शका होनेपर वेदनाका, वेदनाका होनेपर तृष्णाका, तृष्णाका होनेपर उपादानका, उपादानका होनेपर भवका और भवका नाश होनेपर जन्मका नाश होता है। जन्मके नाशसे दुःखादिका नाश होता है।'

रात्रिके मध्य याममें अनुलोम एवं प्रतिलोमसे प्रतीत्य समुत्पादका मनन किया और इसी प्रकार तृतीय याममें भी किया।

ब्राह्मण कौन ?

एक सप्ताह पश्चात् भगवान् बोधि-वृक्षके नीचेसे उठकर बरगदके

नीचे गये। एक सप्ताह विमुक्तिका आनन्द लेते हुए वहाँ बैठे रहे। उस समय एक ब्राह्मणने आकर पूछा—

'गौतम! ब्राह्मण कौन होता है?'

'पापहीन होता है। मलहीन होता है। अभिमानहीन होता है। संयत होता है। ब्रह्मचारी होता है।'

एक सप्ताह अजपालके नीचे रहकर मुचलिन्द वृक्षके नीचे एक सप्ताह एकासन लगाकर बैठे रहे।

प्रथम उपासक

वे एक सप्ताह पश्चात् मुचलिन्दसे उठकर राजपतन वृक्षके नीचे एकासन बैठे रहे। वहाँ उत्कलवासी दो व्यापारी तमस्सुक तथा मल्लिक आये। भगवान्‌के समीप मट्ठा और मधुपिण्ड ले आये। उन्हें श्रद्धा-भक्तिपूर्वक अर्पण किया। वे बोले—'भगवान्‌की शरण जाता हूँ। धर्मकी शरण जाता हूँ।'

भगवान्‌ने उन्हें उपासक-स्वरूप स्वीकार किया। उस समयतक संघकी स्थापना नहीं हुई थी, अतएव संघकी शरण जाता हूँ कहनेका प्रश्न नहीं उपस्थित होता था।

विरोधीको उपदेश

एक सप्ताह वहाँ रहकर पुनः भगवान् अजपाल बरगदके नीचे आये। विहार करने लगे।

उन्हें अपने अनुभूत ज्ञानका उपदेश देनेकी इच्छा हुई। अलार कलामके समीप जानेका विचार किया। मालूम हुआ कि उनका शरीरान्त एक सप्ताह पूर्व हो चुका था।

उद्दकरामपुत्रके पास जानेका विचार किया। उन्हें ज्ञात हुआ कि उनका देहान्त रात्रिमें हो गया।

जिस महान् सत्यकी प्राप्ति हुई है उसका लोकमें प्रचार करना चाहिये। लोकका लाभ होगा। लोग दुःखसे बचेंगे। सोचते हुए उन्होंने निश्चय किया कि पहले उन पंचवर्गीय भिक्षुओंको धर्मका रहस्य

समझाना चाहिए जिन्होंने एक दिन उन्हें पथभ्रष्ट, धर्मभ्रष्ट कहकर उनका साथ त्याग दिया था।

पता चला कि ऋषिपत्तनमें वे विहार कर रहे थे। अतएव भगवान्‌ने वाराणसीकी ओर प्रस्थान किया।

जिन कौन ?

बोधगया और गयाके बीच मार्गमें बुद्धको देखकर उपक आजीवकने पूछा—

'आवुस ! तुम्हारी इन्द्रियाँ प्रसन्न हैं। तुम्हारी कान्ति उज्ज्वल एवं परिशुद्ध है। तुम्हारा शास्ता कौन है ? किस धर्मके अनुवर्ती हो ?'

'आजीवक, मैं धर्मोंसे निर्लिप्त हूँ। सर्वत्यागी हूँ। तृष्णासे विमुक्त हूँ। मेरा कोई आचार्य नहीं है। मैं सम्यक् सम्बुद्ध हूँ। मैंने शान्ति प्राप्त की है। मैं निर्वाणप्राप्त हूँ। धर्मचक्र प्रवर्तनार्थ काशी जा रहा हूँ।'

'क्या आप विश्वविजेता जिन हैं ?'

'जिन वे हैं जिन्होंने अपनेको जीता है। तृष्णापर विजय पायी है। वास्तविक विजेता वे ही हैं, जिन्होंने अपनी तृष्णापर विजय पायी है, पापसे दूर रहते हैं। मैंने अपनेको जीता है। पापोंसे मुक्ति पायी है। इस दृष्टिसे जिन हूँ।'

ऋषिपत्तनमें

भगवान् चारिका करते हुए ऋषिपत्तन पहुँचे। वहाँ पंचवर्गीय भिक्षु थे। भगवान्‌पर दृष्टि पड़ते ही उन लोगोंने कहा—साधनभ्रष्ट, बाहुल्यपरायण, श्रमण गौतम आ रहा है। उसका अभिवादन, प्रत्युत्थान तथा पात्र चीवर नहीं लेना चाहिये। आसन दे दिया जाय अगर वह बैठना चाहे तो बैठे।

भगवान् ज्यों-ज्यों उनके समीप पहुँचते गये, उनका निश्चय शिथिल पड़ने लगा। एकने आगे बढ़कर पात्र ले लिया। दूसरेने चीवर लिया। तीसरेने आसन बिछाया। चौथेने पादोदक दिया। पाँचवेंने पाद

कठलिका लाकर रखी।

भगवान्ने आसन ग्रहण किया। पाद प्रक्षालन किया। आवुस शब्दका प्रयोग भगवान्के लिए करने लगे। भगवान्ने शान्तिपूर्वक कहा—

'मैंने अमृत पाया है। उसका उपदेश करना चाहता हूँ।'

'आवुस ! साधन एवं तपस्या-कालमें दिव्य शक्ति नहीं प्राप्त कर सके तो साधनभ्रष्ट एवं बाहुल्यपरायण होनेपर मनुष्य धर्म क्या प्राप्त कर सकेगा ?'

'भिक्षुओ ! मैं साधनभ्रष्ठ नहीं हूँ। बहुलिक नहीं हूँ।'

'आवुस ! साधनभ्रष्ट हो।'

'क्या मैंने आजके पूर्व भी इस प्रकार की बातें की हैं ?'

'नहीं भन्ते !'

'कठोर साधन एवं भोगोंके मध्यवर्ती मंगलमय मुक्ति-मार्गका मैंने दर्शन किया है। उस अमृतको तुम्हें पिलाना चाहता हूँ।'

भगवान्की विश्वासपूर्ण वाणीका उनपर प्रभाव पड़ा। उनके साथ ऋषिपत्तनके सरोवरके तटपर गये।

'स्नान करो। नित्य जैसा आजका स्नान नहीं है। शरीरके मल-विसर्जन द्वारा ही पूर्णता नहीं होती। मनके मलको भी धोना चाहिये। बाहर और भीतर दोनों स्थानोंके मल दूर होने पर ही मंगलमय धर्म की किरणें हृदयमें प्रस्फुटित होंगी।'

धर्मचक्रप्रवर्तन

स्नान कर चुकने पर वे बैठे। भगवान्के श्रीमुखसे वाणी उच्चरित हुई—

'भिक्षुओ ! प्रव्रजितोंको दो अतियोंका त्याग करना चाहिये। अनार्य अनर्थोंसे युक्त कामवासनाओं एवं क्लेशका। इन दोनों अतियोंके अतिरिक्त मैंने एक मध्यम मार्ग निकाला है। यह अष्टांगिक मार्ग—सम्यक् दृष्टि, संकल्प, वचन, कर्म, जीविका, व्यायाम, स्मृति एवं

समाधि हैं।

'भिक्षुओ ! दुःख आदि सत्य है। जन्म, जरा, व्याधि, मृत्यु दुःख है। अप्रियोंका संयोग एवं प्रियोंका वियोग दुःख है। रूप, वेदना, संज्ञा, संस्कार दुःखके पाँच उपादान स्कन्ध हैं। दुःखसमुदय एवं दुःख-निरोध आर्य सत्य है। दुःखनिरोध गायत्री प्रतिपद् आर्य सत्य है। मैंने ज्ञानका दर्शन किया है। मेरी विमुक्ति अचल है। हमारा यह अन्तिम जन्म है। पुनः आवागमन न होगा।'

कौण्डिन्य बोल उठा—'जान गया।'

'कौण्डिन्य ? तुम्हारा नाम अज्ञात कौण्डिन्य होगा।'

'भन्ते प्रव्रज्या मिले। उपसम्पदा मिले।'

'भिक्षुओ ! धर्म सु-आख्यात है। दुःख-क्षय-निमित्त ब्रह्मचर्य-व्रत धारण करो। सद्धर्ममें तुम्हारा नवीन जन्म हुआ है। सहोदर भाईकी तरह रहो। सत्यके प्रति तुम्हारी अविचल निष्ठा हो। सत्य-साधन-प्रवृत्त व्यक्ति कभी-कभी दुर्बल हो जाता है। उस समय तुम एक दूसरे-के सहायक एवं पूरक होना।'

भगवान् वहाँ निवास करने लगे। पंचवर्गीय भिक्षुओंने प्रव्रज्या ली। तीन भिक्षु जो भिक्षा माँगकर लाते थे उसीपर सब लोग निर्वाह करते थे। पाँचवें दिन भगवान्ने आत्माकी अनित्यतापर उन्हें उप-देश दिया।

यशकी प्रव्रज्या

वाराणसीके श्रेष्ठीका पुत्र यश था। विलास-निमित्त उसके पास हेमन्त, ग्रीष्म एवं वर्षाके तीन प्रासाद थे। वर्षाकालमें युवतियों द्वारा सेवित प्रासादसे नीचे न उतरता था।

एक दिन रात्रिमें कुलपुत्र यशकी निद्रा खुल गयी। तैल-दीपकी ज्योतिका प्रकाश था। कामिनियोंको देखा। किसीके गलेमें मृदंग था। कोई वीणाका आलिंगन किये सो गयी थी। किसीका खुला केश फैला था। कोई बड़बड़ा रही थी। वह दृश्य उसे जीवित श्मशान जैसा लगा।

वैराग्य उत्पन्न हुआ। वह प्रासादसे निकल पड़ा।

ऋषिपत्तन पहुँचा। भगवान् भोरमें टहल रहे थे। उसे आते देख आसनपर बैठ गये। उनके पास पहुँचते ही कह उठा—

'हा, सन्ताप ! हा !! व्यथा !!!'

'बैठो'—करुणामय वाणी मुखरित हुई।

वह बहुमूल्य आभूषण पहने था। उसे अपने आभूषणों एवं सुन्दर वस्त्रोंको देखकर लज्जा मालूम होने लगी। भगवान्‌ने शान्त स्वरसे कहा—

'यश ! धर्मका सम्बन्ध अन्तरसे है। उसका सम्बन्ध तुम्हारे आभूषणों, अलंकारों एवं वस्त्रोंसे नहीं है। अलंकृत कामनापर विजय कर सकता है। श्रमण विचलित होनेपर भोगमें लग सकता है। संन्यासी एवं गृहीमें भेद नहीं है। जिसने अहंभाव तिरोहित किया है, वही संन्यासी है।'

भगवान्‌ने धर्म प्रकाशित किया। जो कुछ समुदाय-धर्म है वही निरोध-धर्म है। धर्म-चक्षु यशको उत्पन्न हुआ।

त्रिवचनीय प्रथम उपासक

यशको न पाकर उसका पिता उसे खोजता हुआ भगवान्‌के पास पहुँचा। उसे देखकर भगवान्‌ने कहा—गृहपति बैठो ! पुत्रका दर्शन यहीं हो जायगा।

उसके बैठनेपर धर्म प्रकाशित किया। सुनते ही वह बोल उठा—'बुद्धकी शरण जाता हूँ। धर्मकी शरण जाता हूँ। संघकी शरण जाता हूँ।'

तीन वचनोंवाला वह विश्वका प्रथम भिक्षु हुआ। उसने यशको देखा। बोला—तुम्हारी माता व्याकुल है, चलो।

'गृहपति, तुमने जैसे धर्मका दर्शन किया है उसी प्रकार यशने भी उसे जाना है। क्या वह गृहस्थोंके समान कामोपभोग-निमित्त जीवन धारण करेगा ?'

'भगवन्! हमारी भिक्षा ग्रहणकर यशको अपना अनुगामी बनाइये।'

गृहपतिके चले जानेपर यशने प्रव्रज्या एवं उपसम्पदा माँगी। भगवान्ने उसे प्रव्रजित किया। विश्वमें उस समय सात अर्हत् हुए।

प्रथम उपासिका

पूर्वाह्ण-काल भगवान् गृहपतिके यहाँ भिक्षा-निमित्त चले। यश उनके साथ था। उसका सिर मुंडा था। काषाय वस्त्र पहिने था। हाथोंमें भिक्षा-पात्र था। अपने पिताके घर भिक्षु रूपमें पहुँचा। भगवान्ने भिक्षाके पश्चात् धर्मोपदेश किया। उनकी वाणी सुनते ही माता और पत्नी दोनोंने तीन वचनोंसे भगवान्के धर्मको स्वीकार किया। विश्वकी वे प्रथम उपासिका थीं।

यशके सखा विमल, सुबाहु, पूर्णजित, गर्वपति आयुष्मान् यशके पास आये। यश अपने गृही मित्रोंको भगवान्के पास ले गया। भगवान्ने धर्म सु-आख्यात है, दुःखक्षय-निमित्त ब्रह्मचर्य पालन करो, कह उन्हें प्रव्रजित किया। इस समयतक विश्वमें ग्यारह अर्हत् हुए।

धर्म-प्रचार

शिष्योंकी संख्या बढ़ने लगी। भगवान्ने भिक्षुओंको बुलाकर कहा—

'भिक्षुओ! बहुजनके हितके लिए, बहुजनके सुखके लिए, लोककी अनुकम्पाके लिए, देव एवं मनुष्योंके हित तथा सुखके लिए चारिका करो। आरम्भ, मध्य एवं अन्त, सभी अवस्थामें कल्याणकारी धर्मका, उनके शब्दों एवं भावों सहित उपदेश करते हुए सर्वांशमें परिपूर्ण परिशुद्ध ब्रह्मचर्यका प्रकाश करो। सज्जनोंको, जिन्हें धर्म-अज्ञानके कारण हानि उठानी पड़ सकती है, उपदेश द्वारा धर्मरत करो। मैं स्वयं उरुवेला, जहाँ सेनानी ग्राम है, धर्मोपदेश-निमित्त प्रस्थान करूँगा।

'भिक्षुओ! सब दिशाओंमें गमनशील हो। दो एक साथ न जाओ। प्रव्रज्या एवं उपसम्पदा दो। उपसम्पदाकी प्रक्रिया यह होगी—सिर एवं दाढ़ीके बाल मुड़वाकर कषाय वस्त्र पहनाओ। एक स्कन्धपर

उपरना रखो। भिक्षुओंकी पदवन्दना करवाओ। वज्रासनसे बैठाकर उनसे प्रतिज्ञा कराओ। बुधकी शरण, धर्मकी शरण एवं संघकी शरण जाता हूँ।'

वाराणसीमें विहार कर भगवान्ने साठ भिक्षुओंको विभिन्न दिशाओंमें धर्मोपदेश निमित्त भेजा। अनन्तर उरुवेलाकी ओर प्रस्थान किया।

कप्पासिप वनखण्ड

कप्पासिप वनखण्डमें भद्रवर्गीय तीस साथी स्त्रियों सहित विहार कर रहे थे। एकके पास स्त्री न थी। उसके लिए गणिका लायी गयी थी। जब वे मदमत्त हुए तो गणिका आभूषण आदि लेकर भाग गयी। वे उसे ढूँढते हुए उस स्थानपर पहुँचे जहाँ भगवान् बैठे थे। उन्होंने विह्वल होकर पूछा—

'क्या आपने किसी स्त्रीको देखा है?'

'कुमारो! तुम्हें स्त्रीसे क्या काम?'

'क्यों?'

'अपनेको ढूँढना अच्छा है या स्त्रीको?'

'अपनेको।'

भगवान्ने उन्हें उपदेश दिया। उन लोगोंने प्रव्रज्या ले ली।

उरुवेला

उरुवेला जटिल सम्प्रदायका प्रमुख स्थान था। अग्निउपासक थे। काश्यप उनके आचार्य थे। भगवान् उनके आश्रममें गये।

जटाधारी साधुओंको जटिल कहा जाता था। जनपदमें पाँच सौ जटिल नदी काश्यप और दो सौ गया काश्यपके साथ रहते थे। भगवान् उरुवेला काश्यपके यहाँ जाकर बोले—

'अग्निशालामें रात्रिपर्यन्त रहनेकी अनुमति दीजिये।'

'उसमें एक अत्यन्त विषधर सर्प रहता है।'

'मेरी कुछ हानि न होगी।'

'अच्छा'—

भगवान् अग्निशालामें तृण बिछाकर स्मृति स्थिर कर आसनस्थ हुए। सर्प अग्निशालामें किसी अनजाने व्यक्तिको देखकर अत्यन्त क्रुद्ध हुआ। जटिलोंने समझा कि सर्प आगन्तुकको काट लेगा। वे तमाशा देखनेके लिए अग्निशालाके चारों ओर एकत्र हो गये। सर्प फुफकार मारता निकला। भगवान्‌की सौम्य स्थिर मूर्ति देखी। उसका विष एवं क्रोध उस करुणामय मूर्तिको देखकर जैसे आपसे आप शांत होने लगा। वह सरल हो गया। प्रातःकाल उसे अपने पात्रमें लिये भगवान्‌ने उरुवेला काश्यपके सम्मुख रख दिया। काश्यपने चकित होकर कहा—'श्रमण! यहाँ निवास करो। भिक्षाका प्रबन्ध हो जायगा।'

भगवान् वहाँ निवास कर वनमें विहार करने लगे।

उरुवेलाके यहाँ महायज्ञकाल आया। मगधके कोने-कोनेसे हजारों यात्री आनेवाले थे। उसने सोचा यदि भगवान् मेरे यहाँ इस समय आयेंगे तो लोग उनकी ओर आकृष्ट होंगे। मेरी महत्ता घट जायगी। भगवान् बात समझकर भिक्षा निमित्त नहीं आये। दूसरे दिन वह भगवान्‌के पास पहुँचा। जान गया कि भगवान् दूसरेकी बात जान लेनेकी शक्ति रखते हैं। फिर भी उसने मनमें कहा कि भगवान् उससे बढ़कर अर्हत् नहीं हैं।

दूसरे दिन फिर उनके यहाँ पहुँचा। उसके आश्चर्यकी सीमा न रही। जहाँ कल कुछ नहीं था वहाँ एक पुष्करिणी थी। शिला रखी थी। कुकुध वृक्षकी शाखा झुकी थी। भगवान् मुस्करा कर बोले—

'काश्यप! मुझे कल कुछ पांशुकूल अर्थात् चिथड़े मिल गये थे। मैंने उन्हें शुद्ध कर टाँगनेकी बात सोची। अतएव यह सब चीजें यहाँ देख रहे हो।'

फिर भी भगवान् मेरे जैसे अर्हत् नहीं हैं, विचार करता वह लौट गया।

घोर वर्षा हुई, बाढ़ आयी चारों ओर जल ही जल था। काश्यप

नाव लेकर भगवान्‌को बचानेकी दृष्टिसे गया। उसने देखा जलमय स्थानपर भी भगवान् सूखी भूमिपर टहल रहे थे। उसे देख उसकी नावपर आ गये। काश्यपने मन ही मन विचार किया कि भगवान् दिव्य शक्तिधारी हो सकते हैं, परन्तु उसके जैसे अर्हत् नहीं हैं।

भगवान् उसकी मूढ़तापर बोले—'काश्यप! आप अर्हत् नहीं। उस मार्गपर आरूढ़ नहीं। आपमें वह प्रज्ञा भी नहीं जिसके द्वारा वह पद पाया जाता है।'

काश्यप उनकी मुखश्रीकी ओर देखने लगा। भगवान्‌ने पुनः कहा—

'तृष्णा, द्वेष एवं मोहाग्निमें सभी जल रहे हैं। जन्म, जरा, व्याधि, दुःख एवं मृत्युकी अग्निमें लोग जल रहे हैं। इस दुःखकी बातसे वैराग्य उत्पन्न होता है। मुक्ति-निमित्त मन उन्मुक्त होता है।'

उसने भगवान्‌के चरणोंपर मस्तक रख दिया। पाँच सौ जटिलोंके साथ प्रव्रज्या ली।

केश, जप-सामग्री, घी-पात्र, अग्निहोत्र-सामग्री नदीमें बहते देखकर काश्यपने समझा शायद उनके भाईका देहावसान हो गया। आपत्तिका सन्देह कर भाई उरुवेला काश्यपके यहाँ दो सौ जटिलोंके साथ चले। वहाँका हाल सुनकर उसने भी प्रव्रज्या ले ली और सामग्री नदीमें प्रवाहित कर दी। गया काश्यप सामग्रियोंको बहते देख चकित हुआ। आपत्तिकी सम्भावनाका अनुमान किया। अपने अनुयायियोंके साथ आया। समाचार सुन और समझकर उसने भी प्रव्रज्या ले ली। भगवान्‌ने एक हजार पुरातन जटिल भिक्षुओंके साथ गयामें प्रवेश किया।

बिम्बिसारको दीक्षा

बुद्धत्वप्राप्तिके पश्चात् बिम्बिसारको दर्शन देनेकी भगवान्‌ने प्रतिज्ञा की थी। वे भिक्षु-संघके साथ राजगृह पहुँचे। लट्ठिवनके सुप्रतिष्ठित चैत्यमें विहार किया। आगमन सुन गृहपतियों तथा ब्राह्मणोंके साथ

राजा उनके दर्शन निमित्त आया। अभिवादन कर एक ओर बैठ गया। काश्यपको देख वे चकित हुए कि कैसे उन लोगोंने प्रव्रज्या ले ली। भगवान्‌ने काश्यपसे पूछा—

'भन्ते ! अग्निहोत्रका विसर्जन क्यों किया ?'

'आवुस ! कामनासे किया गया यज्ञ काम्येष्टि यज्ञ कहा जाता है। रागादि उपाधियाँ मल हैं। उन्हें दूर करनेके लिए दूसरोंकी सहायताकी आवश्यकता नहीं होती। जिसके द्वारा बिना किसीका अवलम्ब लिए प्राणी स्वयं पार होता है उस निर्वाणपदको देखकर मैंने यज्ञका त्याग किया।'

भगवान्‌ने आगन्तुकोंको जो 'समुदय धर्म है वही निरोध धर्म है' का उपदेश किया। बिम्बिसार भगवान्‌का उपासक हुआ। भोजनके लिए आमन्त्रित किया। वेणु वन भगवान्‌को विहार निमित्त दान दिया। भगवान्‌ने भिक्षुओंको आराम करनेकी अनुज्ञा दी। यह बौद्धोंका पहला विहार हुआ।

क्षेमा

क्षेमा अथवा खेमा राजा बिम्बिसारकी रानी थी। उसे रूपका बड़ा गर्व था। वह अतीव लावण्यवती थी। सब लोग भगवान्‌के पास गये। परन्तु अपने भौतिक रूपके अभिमानके कारण वह न जा सकी। संयोगसे राजाने भगवान् तथा रानीकी मुलाकात उद्यानमें करायी। भगवान्‌ने अपने योगबलसे एक अत्यन्त रूपवती युवती उत्पन्न की। वह पूर्ण युवा हुई। प्रौढ़ हुई। अशोभनीय हुई। रोगग्रस्त हुई। और वृद्धा हुई। दुःखोंके भारसे दबी। मर गयी। मानव जीवनका यह चढ़ाव-उतराव एवं उसकी निस्सारता देख खेमा भगवान्‌के चरणोंपर मस्तक रखकर प्रव्रजित हुई।

सारिपुत्त एवं मोग्गलायन

राजगृहमें संजय परिव्राजक दो सौ पचास परिव्राजकोंके साथ रहता था। सारिपुत्त एवं मोग्गलायन उन्हींके यहाँ रहकर ब्रह्मचर्य व्रतका

पालन करते थे। दोनों परस्पर प्रतिज्ञाबद्ध हुए कि जो अमृत प्राप्त करेगा वह एक दूसरेसे कहेगा।

पात्र-चीवर लिये कान्तिमय एक भिक्षुको सारिपुत्तने राजगृहके पथोंमें भिक्षाचार करते देखा। पूर्वाह्न-काल था। भिक्षुकी शान्त दृष्टि नत थी। संयमकी काया थी। इंद्रियाँ प्रसन्न थीं। वर्ण परिशुद्ध था। उस विमल मूर्तिके दर्शनसे सारिपुत्त अत्यन्त प्रभावित हुआ। भिक्षु अश्वजितका अनुगमन करने लगा। सारिपुत्तने उनके स्थानपर पहुँचकर पूछा—'आपका शास्ता कौन हैं?'

'बुद्ध'

'उनका सिद्धान्त क्या है?'

'मैं सब नहीं जानता। मैंने अभी हालमें ही प्रव्रज्या ली है। जो कुछ जानता हूँ, कहूँगा। जो कुछ समुदय धर्म है वही निरोध धर्म है। हेतुसे उत्पन्न सब धर्मोंका हेतु तथागत कहते हैं। उनका जो निरोध है वही उनका वाद है।'

सारिपुत्त प्रसन्न था। कान्ति उज्ज्वल थी। वर्ण परिशुद्ध था। देखते ही मोग्गलायनने पूछा—

'क्या तुमने अमृत पा लिया?'

बात सुनकर मोग्गलायन प्रसन्न हुआ। दोनों संजयके समीप जाकर बोले—'हम शास्ताके पास जाते हैं?'

'न जाओ!'

'क्यों?'

'हम तीनों परिव्राजकोंके महन्त बनेंगे।'

संजयकी बात न मानकर वे दो सौ पचास परिव्राजकोंके साथ वेणु वन गये। जाते ही उन्होंने कहा—

'भगवान् हमें प्रव्रज्या दें।'

'भिक्षुओ! धर्म सु-आख्यात है। दुःख-क्षय-निमित्त ब्रह्मचर्य-व्रत धारण करो।'

काश्यप-संन्यास

मगधमें महातीर्थ नामक एक ग्राम था। वहाँ कपिल ब्राह्मण रहता था। उसकी ज्येष्ठ भार्यासे पिप्पली उत्पन्न हुआ था। उसकी उम्र बीस वर्षकी हुई। माता-पिताने विवाहके लिए कहा। उसने अस्वीकार किया। उसकी इच्छा माता-पिताकी आजन्म सेवा करनेकी थी। तदनन्तर प्रव्रज्या लेना चाहता था।

माता उसे बहुत तंग करने लगी। उसने स्वर्णकी एक मूर्ति बनायी। अलंकारोंसे अलंकृत किया। वस्त्रोंसे सजाया। माँके पास उसे ले जाकर कहा—'यदि मुझे ऐसी कन्या दिला दो तो गृहस्थ धर्म पालन करूँ।'

आठ ब्राह्मणोंको माताने बुलाया। सुसज्जित रथपर मूर्ति रखी गयी। उनसे कहा—'जहाँ कहीं इस रूपकी कन्या मिले, विवाह ठीक कर लेना और प्रतिभूस्वरूप प्रतिमा वहाँ रख देना।'

रथ चक्कर काटता मद्र देश पहुँचा। सागल नगरमें प्रतिमा घाट-पर रखकर वे एक ओर बैठ गये।

भद्रा कापिलयानी कौशिक गोत्रीय ब्राह्मणकी कन्या थी। उसकी उम्र सोलह वर्षकी थी। भद्राकी धात्रीने भद्राको स्नान कराकर श्रीगर्भ में बैठा दिया और स्वयं स्नान करने आयी। सुवर्ण प्रतिमाको भद्रा समझ क्रोधसे उसकी पीठपर चपत जमाती हुई बोली—'तू यहाँ क्यों उठ कर आयी ?'

ब्राह्मण उसके पास आ गये। बोले—'क्या तुम्हारे स्वामीकी कन्या इतनी रूपवती है ?'

'इस प्रतिमासे भी अधिक, उसने गर्वसे कहा।'

वे उसके घर गये। पितासे विवाहका प्रस्ताव किया। जाति, कुलादि समझ उसने प्रतिमा रखकर विवाहकी स्वीकृति दे दी।

पिप्पली माणवकको समाचार मिला। चिंतित हुआ। भद्राके पास पत्र लिखा—'मैं प्रव्रजित होऊँगा। विवाहके पश्चात् दुःख न करना।'

भद्राने भी एक पत्र लिखा—'मैं प्रव्रजित होना चाहती हूँ।' दोनों ओरके पत्र लेकर संदेशवाहक मार्गमें मिले। दोनोंको कौतूहल हुआ। लड़कोंने क्या लिखा है। वे पत्र खोलकर पढ़े। उन्हें हँसी आयी। मूल पत्र फाड़कर फेंक दिया। ब्याहकी स्वीकृतिका दूसरा पत्र लिखा गया। दोनोंकी अनिच्छापूर्वक शादी हुई।

भद्रा और पिप्पली दोनोंने पुष्पकी माला गुथवायी। पलँगके बीच रखा। उसे सीमा मान सो गये। माता-पिता जबतक जीवित थे किसीने एक दूसरेका शरीर स्पर्श नहीं किया। माता-पिताके देहान्तके पश्चात् एक दिन अश्वारूढ़ हो पिप्पली खेतपर गये।

हल चलनेसे कीड़े-मकोड़े ऊपर उभड़ आते थे। पक्षी उनपर झपटते। चोंचोंमें लेकर उड़ भागते थे। उसने समीपस्थ लोगोंसे पूछा—

'इनकी हत्याका भागी कौन है?'

'आप।'

उत्तर सुनकर वह गम्भीर हो गया। उसने विचार किया कि सम्पत्ति उसकी कुछ सहायता न करेगी। उसने प्रव्रज्या लेनेका निश्चय किया।

भद्रा तिल फैलवा रही थी। तिलके कीड़ोंको दूसरे जन्तु खा रहे थे। उसने पूछा—'यह क्या खाते हैं?'

'जीवोंको।'

'पापका भागी कौन होगा?'

'आप।'

उसने सोचा—मुझे चार गज वस्त्र और थोड़ा चावल चाहिये। मैं हत्याकी भागी क्यों बनूँ।

पिप्पली स्नान कर आया। प्रासादमें पलंगपर बैठा। भोजन आया। भद्रा और पिप्पली दोनोंने भोजन किया। पिप्पलीने पूछा—'भद्रा! अपने साथ कितनी सम्पत्ति लायी हो।'

'पचपन सहस्र गाड़ी।'

'मेरे पास सत्तासी करोड़ रुपये तथा साठ तहखाने रुपयोंसे भरे

हैं। मैं इन्हें तुम्हें देता हूँ।'

'और आप ?'

'मैं प्रव्रज्या लूँगा।'

'मैं भी लूँगी।'

उन्होंने वस्त्र और बाजारसे मृत्तिका-पात्र मँगाया। पतिने पत्नीके और पत्नीने पतिके सुन्दर केशोंको काटा। पात्र झोलीमें रखा। झोली कन्धोंसे लटकायी। प्रासाद त्याग बाहर निकले।

उन्हें फूसकी झोपड़ीके समान तीनों लोक जलते दिखाई दे रहे थे। उनको देखनेवाले पौरगण सजलनयन थे।

पिप्पलीने अनुगामिनी भार्याको देखकर कहा—'लोग लांछन लगायेंगे। मन उसकी जैसी सुन्दर नारीसे बिगड़ सकता है। इसका भी त्याग आवश्यक है।

कुछ दूर आगे जानेपर मार्ग दो तरफ हो गये थे। पिप्पली खड़ा हो गया। भद्रा भी खड़ी हो गयी।

'भद्रे ! प्रव्रज्या पश्चात् भी हमारा मन दूषित हो सकता है। जनरव उठेगा। लोग कहेंगे कि हम एक दूसरेका साथ त्यागनेमें असमर्थ हुए हैं। अतएव इन दो भिन्न मार्गोंमें हमें एक-एकका अनुसरण करना चाहिये।'

'आर्य ! लोग दोष देख सकते हैं। प्रव्रजितके लिए स्त्रियाँ बाधक हो सकती हैं। आप पुरुष हैं। मैं स्त्री हूँ। आप दक्षिण तथा मैं वाम पथका अनुसरण करती हूँ।'

भद्रा पतिकी वन्दना एवं नमस्कार कर तुरन्त वाम पथ पकड़ कर चली।

राजगृह और नालन्दाके मध्य भगवान् बरगदके नीचे बैठे थे। पिप्पली काश्यपने उन्हें बत्तीस लक्षणोंयुक्त देखा। वह जान गया कि शास्ता हैं। उन्हें ही गुरु मानकर उसने प्रव्रज्या ली। उसने नमस्कार किया। भगवान् उठकर चले। कुछ दूर आगे जाकर पुनः एक वृक्षके

नीचे बैठने लगे। पिप्पलीने अपनी रेशमी संघाती बिछा दी। भगवान् उसपर बैठ गये। उसे देखते हुए बोले—

'संघाती अत्यन्त कोमल है।'

'भगवान् ग्रहण करें।'

'और तुम'।

'यदि आपका मुझे मिल जाय!'

'हमारा वस्त्र चिथड़ा हो गया है। क्या तुम जीर्ण धारण करोगे?'

प्रसन्नतापूर्वक पिप्पलीने भगवान्का पांशुकूल ले लिया।

महाकात्यायनका संन्यास

उज्जैनके राजा चण्डप्रद्योतने अपने पुरोहितपुत्र कात्यायनको भगवान् बुद्धको उज्जैन लिवा लानेके लिए कहा।

'यदि महाराज प्रव्रज्याकी आज्ञा दें तो?'

'तुम्हारी इच्छा। प्रयोजन तथागतको लाना है।'

सात साथियोंके साथ कात्यायन तथागतके पास चले। पहुँचकर उनका उपदेश सुना। प्रव्रज्या ली। तथागतने उज्जैन जाना स्वीकार न किया!

केश-भिक्षा

उज्जैनके मार्गमें तेलखनाली निगममें पहुँचे। वहाँ दो सेठ रहते थे। उनमें एक दरिद्र हो गया था। एक धनी था। दरिद्रकी कन्याके बाल अतीव सुन्दर थे। धनीकी कन्याके सिरपर बाल न थे। धनी कन्याने दरिद्र कन्याके बालोंको खरीदना चाहा। बाल रुपयोंके लिए बेचनेमें दरिद्र कन्याको अरुचि हुई।

महाकात्यायन भिक्षाचार निमित्त निगममें घूम रहे थे। भिक्षा न मिली। दरिद्र कन्याने खाली पात्र उन्हें लौटते देखा। उसने उन्हें आमन्त्रित किया। श्रद्धापूर्वक बैठाया। घरमें कुछ था नहीं। दाईसे विनयपूर्वक बोली—

"मेरे केशोंको उसके पास बेच आओ। घरमें श्रमण भूखे बैठे हैं।'

दाईने कन्याके सुन्दर लम्बे केशोंकी ओर देखा। उसकी आँखें सजल हो रही थीं। पुत्रीने अपने हाथोंसे अपने केश काट दाईके हाथों-पर रख दिये।

धनी कन्याके सम्मुख मृत और किसीकी सुन्दरताके प्रतीक केश थे। वह मुस्करायी। जिसे वह बहुत कुछ देकर खरीदना चाहती थी उसे अनायास अपने सम्मुख देख उसकी कीमत घट गयी। उसने केवल आठ कार्षापण दिये। उन आठ कार्षापणोंके एक-एक कार्षापणसे एक-एक भिक्षुको उसने भिक्षा करायी।

महाकात्यायन रहस्य समझ गये। उज्जैन पहुँचे। राजाने समाचार पूछा। कन्याके सुन्दर केश-त्यागकी महान कहानी सुनायी। राजाने कन्याको बुलाकर तुरन्त राजमहिषी बनाया। उससे पुत्र हुआ। उसका नाम गोपालकुमार रखा गया। कन्या गोपाल-माता देवीके नामसे प्रख्यात हुई।

कपिलवस्तुमें

'भणे! उनसे कहना, पिताका स्नेह उन्हें बुला रहा है।'

शुद्धोदनने अपने अमात्यसे बुद्धको लिवा लानेके लिए कहा। अमात्यने 'शिरसा नमामि' कहकर आज्ञा ग्रहण की।

सहस्र व्यक्तियों सहित अमात्यने वेणुवनकी ओर प्रस्थान किया। वेणुवन पहुँचा। भगवान् उस समय उपदेश दे रहे थे। उपदेश सुन सबने प्रव्रज्या ले ली।

'भणे! अमात्य न लौटकर आये और न कोई सन्देश भेजा। तुम जाओ।'

दूसरा अमात्य राजगृह पहुँचा। उपदेश सुन प्रव्रज्या ले ली। वह भी जब न लौटा तो राजाने अत्यन्त विश्वासपात्र उदायीसे कहा—

'तात, जीवनका भरोसा नहीं। मृत्युके पूर्व केवल एक बार पुत्रको देखनेकी कामना है।'

'यदि प्रव्रज्याकी आज्ञा मिले तो—'

'पुत्रदर्शनकी कामना है। उसके निमित्त तुम जो उपयुक्त समझो करो।'

उदायी राजगृह पहुँचा। उपदेश सुना। प्रव्रज्या ली। सात-आठ दिन पश्चात् फाल्गुन पूर्णिमा आयी। उदायी समय पाकर यात्राकी प्रशंसा करने लगा। ऋतुका शोभावर्णन किया। भगवान्‌ने सुनकर पूछा—

'यात्राकी प्रशंसाका क्या हेतु है उदायी?'

'पिताका दर्शन।'

भगवान् शान्त थे।

'क्या भगवान् जातिका संग्रह नहीं करेंगे?'

'करूँगा।'

जन्मभूमिमें

प्रतिदिन एक योजन चलकर भगवान् दो मासमें कपिलवस्तु पहुँचे।

कपिलवस्तु प्रसन्न था। नर-नारी प्रसन्न थे। शाक्य प्रसन्न थे। न्यग्रोध प्रसन्न था। पुष्पोंने अपनी सुरभिसे स्थान भर दिया था। आज वह सुरभि आनेवाली थी जिसने शाक्योंको, कपिलवस्तुको, वहाँके नर-नारियोंको अमर कर दिया था।

अलंकारोंसे अलंकृत नगरके कुमार एवं कुमारियाँ आगे-आगे चलीं। उनके हाथोंमें पवित्र गन्ध थी। प्रसन्न पुष्पोंकी माला थी।

उनके पीछे राजकुमार और राजकुमारियाँ चलीं—गन्ध, पुष्प, चूर्णादिके साथ भगवान्‌की पूजाके लिए।

बीस सहस्र अर्हंतोंके साथ आये हुए भगवान्‌पर दृष्टि पड़ी। कितनी ही आँखें सजल हुईं। कितने ही मुख आश्चर्यसे खुल गये। कितनोंने मानो जाग्रत् स्वप्न देखा।

उनका राजकुमार, उनकी आशा, उनका प्रिय, प्रासादका सौन्दर्य हाथोंमें भिक्षापात्र लिये भिखारी जैसा!

पिता-पुत्र

नगरके राजपथमें भिक्षापात्र लिये भगवान्! पुरजनोंकी अट्टालिकाएँ

भर गयीं। गवाक्ष भर गये। राजपथ भर गया। भिक्षा माँग रहा है वह, जिसे वे सबकुछ दे सकते थे। वे उसे क्या दें? कैसे दें? उनकी समझमें न आया। वे किंकर्तव्यविमूढ़ हो गये।

भगवान् भिक्षा माँग रहे हैं। सुनते ही राजप्रासादपर चढ़ गयी यशोधरा। उसे सुनकर विश्वास न हुआ। आँखोंने देखा पतिके हाथोंमें पात्र। शरीरपर काशीके वस्त्रोंके स्थानपर चीवर। वह विह्वल हो उठी। सँभल न सकी। सजल नेत्रोंसे दौड़ी श्वसुर राजा शुद्धोदनके पास। बोली—

'वे भिक्षा माँग रहे हैं।'

'मेरा पुत्र और भिक्षा ?'

राजा व्याकुल हो उठे। आसन त्याग दौड़े। एक हाथसे वे अपनी अस्तव्यस्त धोतीको थामे हुए थे। लोगोंकी आँखोंने देखा घबड़ाये पिताके सम्मुख शान्त पुत्र।

वह न पुत्र कह सके, न बुद्ध। उनकी साँस तेज चल रही थी। आँखें अत्यन्त चंचल होकर पुत्रके मुखमण्डलपर स्थिर हो गयीं। उनमें नीरव जल आ गया। वाणी मूक हो गयी।

'किसलिए भिक्षाचार ?'—पिताकी वाणी खुली।

'हमारी यही परिपाटी है।'

'क्या हम भोजन नहीं दे सकते ? क्या हमारे वंशकी परिपाटी भिक्षा माँगनेकी रही है ?''

'वे राजाओंकी सन्तानें थीं। हममेंसे प्रत्येक अपनी भिक्षा माँगता और खाता है।'

'क्षत्रिय कभी भिक्षाचारी नहीं हुआ।'

पिताने पुत्रके हाथोंसे धीरेसे पात्र ले लिया। वे चले राजप्रासादकी ओर। वहाँ सभी उपस्थित थे। यदि कोई नहीं था तो देवी यशोधरा—राहुल-माता।

कभीके पति

लोगोंने कहा। परिजनोंने कहा—'देवी! भगवान्‌की वन्दना करो।

वहाँ चलो।'

'यदि मुझमें कुछ भी गुण होगा तो वे स्वयं आयेंगे। आनेपर ही वन्दना करूँगी।'

भगवान्‌ने सुना। वे चले। उनके साथ सारिपुत्र, मुग्गलायन चले। उनसे बोले—'उसे कहने देना। कुछ बोलना मत।'

अनेक वर्षों पश्चात् श्रीगर्भका भाग्योदय हुआ था। जहाँ भगवान्‌ने अपने जीवनके अनेक मधुर वर्ष बिताये थे वहीं भिक्षु तुल्य उनके पवित्र चरण पड़े। आसन बिछा था। वे आसनपर शान्त बैठ गये।

देवीका मस्तक भगवान्‌के चरणोंपर गिर पड़ा। पिताकी वाणी मुखरित हुई—

'भन्ते! देवीने जबसे सुना है कि काषाय वस्त्रधारी हो गये हैं, वह भी काषाय वस्त्र पहनती है। एक समय खाना सुन वह भी एक समय खाती है। शय्याका परित्याग किया है, गन्धमालसे विरत हो गयी है।'

राजाकी वाणी पूर्ण होनेके पहले भगवान् आसन त्याग उठ खड़े हुए। न्यग्रोधारामको लौट पड़े।

अभिषेक और प्रव्रज्या

नन्द महाप्रजापति गौतमीका ज्येष्ठ पुत्र था। उनका विमातृ भाई था। तीन दिन पश्चात् उसका युवराज्याभिषेक तथा जनपदकल्याणीसे विवाह निश्चित था।

भगवान्‌ने मंगल मुहूर्तकालमें प्रासादमें प्रवेश किया। फिर चले। नन्द उनके साथ चला। भगवान्‌ने भिक्षापात्र उसके हाथमें थमा दिया। बड़े भाईने पात्र थमाया है इस शीलसे उसने पात्र ले लिया। विचार किया कि सीढ़ी उतरकर भगवान् पात्र ले लेंगे। भगवान्‌ने पात्र न लिया। वे आगे बढ़े। नन्दने सोचा द्वारपर पात्र ले लेंगे। द्वारसे भी वे आगे बढ़े। वह उनके पीछे पात्र लिये चलने लगा। लोग जनपद-कल्याणीके पास दौड़े गये। बोले—'तुम्हें नन्दविहीन कर देंगे।'

वह केशविन्यास कर रही थी। खुले ही केशों गवाक्षपर दौड़ी आयी। चिल्लायी—'आर्यपुत्र !'

किन्तु नन्द भगवान्‌के पीछे चलता रहा। विहारमें पहुँच नन्दके हाथसे पात्र लेकर बोले—

'प्रव्रजित होगे ?'

'हाँ।'

'नन्दको प्रव्रजित करो।'

शास्ताकी गम्भीर ध्वनि गूँजी।

राहुलकी प्रव्रज्या

राजाके यहाँ सातवें दिन भगवान् भिक्षा निमित्त आये। आसनपर बैठे। देवी यशोधराने पुत्रको सिखा दिया। पितासे अपना दाय माँगना। उसे सिखाकर दूरसे उनकी ओर संकेत करते हुए कहा—

'वह तुम्हारे पिता हैं, जाओ।'

'आपका आश्रय सुखमय है—'

राहुलने स्नेहसे कहा।

भगवान्‌के सम्मुख खड़ा हो गया। उनकी आखें राहुलकी ओर उठीं। वे खड़े हो गये।

आसन त्यागकर चले। राहुल उनके पीछे चलता हुआ कहने लगा—

'पिता ! हमारा दाय दो।'

वे चलते गये।

'मेरा दाय दो।'

वे शान्त थे।

'पिताजी ! हमारा दाय दो।'

भगवान्‌ने सारिपुत्रकी ओर मुड़कर कहा—

'राहुलको प्रव्रजित करो।'

लोग चकित हो गये। उनका अपूर्व दाय पुत्रको देते देखकर राजा शुद्धोदन सुनते ही दौड़ा। उनके पास आया।

'मैं एक वर चाहता हूँ ।'

'मैं वरसे दूर हूँ ।'

'किंतु उचित दोषरहित—'

'कहिये ।'

'तुम्हारे प्रव्रजित होनेसे दुःखी था । नन्दके प्रव्रजित होने पर और दुःखी हुआ । आज राहुलके प्रव्रजित होने पर मेरे दुःखोंकी सीमा नहीं है । पुत्रप्रेम मेरी त्वचाको वेध रहा है । त्वचा वेधकर मांस वेध रहा है । मांस वेधकर अस्थियोंको वेध रहा है । अस्थियोंको वेधकर मुझे घायल कर दिया है । क्या यह उचित नहीं है कि बिना माता-पिताकी आज्ञाके कोई प्रव्रजित न हो ?''

भगवान्ने शान्त मुद्रासे कहा—'भिक्षुओ ! माता-पिताकी बिना आज्ञाके अबसे प्रव्रज्या न दी जाय ।'

अनिरुद्धकी प्रव्रज्या

राहुलके प्रव्रजित होते ही भगवान्ने कपिलवस्तु छोड़ दिया । अनूपियाके आम्रवनमें विहार किया । अनूपिया निगमके कुलीन शाक्य प्रव्रज्या ले रहे थे । महानाम शाक्य एवं अनिरुद्ध भाई थे । महानामने अनिरुद्धसे कहा—'शाक्योंके प्रायः सभी कुलोंसे कोई न कोई प्रव्रजित हो रहा है । हम दोनोंमेंसे किसी एकको प्रव्रज्या लेनी चाहिये ।

'तुम्हीं लो ।'

'चलो तुम्हें गृहस्थीका क्रम बता दूँ । पहले खेत बोना चाहिये । फिर सींचना, निराना और काटना ।'

'यह काम समाप्त कब होगा ?'

'प्रियवर ! काम समाप्त नहीं होता । हमारे पिता, पितामह, प्रपितामह आदि सबने बिना काम समाप्त किये ही अपनी जीवन-लीला समाप्त कर दी है ।'

'तात ! तुम्हीं काम देखो, मैं प्रव्रज्या लूँगा ।'

अनिरुद्ध माताके पास जाकर बोला—

'मैं प्रव्रजित हूँगा। आज्ञा दो माँ!'

'जीतेजी मैं आज्ञा न दूँगी', माताने दृढ़तापूर्वक कहा।

अनिरुद्ध निरुत्तर मातासे प्रव्रज्या निमित्त जिद करने लगा। माँने विचार किया कि शाक्यराज भद्दिय प्रव्रज्या कभी न लेगा। बोली—'यदि भद्दिय प्रव्रज्या ले तो तुम भी लेना।'

अनिरुद्ध राजाके पास गया। निवेदन किया—'राजन्! आपके अधीन मेरी प्रव्रज्या है।'

'तुम प्रव्रज्या लो।'

'हम दोनों प्रव्रजित हों—'

'मैं न हूँगा।'

'मेरी प्रव्रज्या आपकी प्रव्रज्यापर मेरी माँने निर्भर की है।'

'सौम्य! तब तुम्हें सात वर्ष ठहरना होगा।'

'राजन्! सात वर्ष बहुत है।'

'पाँच वर्ष।'

'वह भी बहुत है।'

'चार?'

'वह भी।'

'तीन?'

'वह भी।'

'एक?'

'वह भी।'

'एक मास।'

'वह भी।'

'क्यों?'

'मैं इतने काल कैसे ठहर सकूँगा?'

'एक सप्ताह। राज्य सौंप दूँ।'

'ठहरूँगा।'

भद्दिय, अनिरुद्ध, आनन्द, भृगु किम्बिल, देवदत्त, उपालि नाईके साथ चले। दूसरे राज्यमें प्रवेश करते ही अलंकारों आदिको उतारकर गठरी बनायी। उसे उपालिको देकर लौटाया। उपालिने विचार किया कि शाक्य क्रोधी होते हैं। शायद मार डालें। उसने अलंकारोंको वृक्षपर टाँग दिया। राजकुमारोंके पास लौट आया। कारण सुन उन लोगोंने उसे अपने साथ ले लिया।

जातिहीन भिक्षुसंघ

उपालिके साथ वे भगवान्‌के पास पहुँचे। बोले—

'भगवन्! सर्वप्रथम उपालि नाईको प्रव्रज्या दी जाय।'

भगवान्‌की मुद्रा जिज्ञासापूर्ण हुई।

'हम शाक्योंका शाक्य होनेका, क्षत्रिय होनेके गर्वका मानमर्दन होना आवश्यक है। सर्वप्रथम उपालि प्रव्रजित हुआ। तत्पश्चात् कुमार प्रव्रजित हुए। भिक्षुसंघ जाति एवं वर्णहीन बना।

राहुल और शास्ता

राहुल अम्बष्टिकामें रहते थे। भगवान् वेणुवनमें। भगवान् राहुलके पास गये। राहुलने पाद्य, अर्घ्य एवं आसन दिया। पद धोकर कुछ बचा पानी पात्रमें रहने दिया।

पात्रके जलको दिखाकर भगवान्‌ने राहुलसे कहा—

'पात्रमें जिस प्रकार थोड़ा जल है उसी प्रकार उन लोगोंका मिथ्या श्रमण-भाव है जिन्हें जानकर असत्य भाषणमें लज्जा नहीं आती।'

जलको फेंककर कहा—'जानते हुए भी मिथ्या भाषणमें जिन्हें लज्जा नहीं आती उनका श्रमण भाव फेंके हुए जलके समान है।'

पात्रको औंधाकर कहा—'इसी प्रकारका उनका औंधा श्रमण-भाव है, जिन्हें जानकर झूठ बोलनेमें लज्जा नहीं आती।

पात्रको सीधाकर पुन बोले—'उनका श्रमण-भाव खाली पात्र जैसा निरर्थक है जिन्हें जानकर मिथ्या भाषण करनेमें लज्जा नहीं आती।'

'दर्पण किस लिए है जानते हो।

'देखने...

'वचन, मन एवं कायासे देखकर कार्य करना चाहिये। कायासे, वचनसे, मनसे, प्रत्यवेक्षण कर कार्य करो।'

अनाथ पिण्डककी दीक्षा

अनाथ पिण्डकका नाम सुदत्त था। अनाथोंको भिक्षा देनेके कारण उसका नाम अनाथ पिण्डक पड़ गया था।

अनाथ पिण्डक अपने साले राजगृहके श्रेष्ठीके यहाँ आया। भगवान् शीतवनमें विहार कर रहे थे। उषा-कालमें वह शीतवनमें गया।

भगवान् चंक्रमण स्थानपर टहल रहे थे। उसे आते देखकर आसनपर बैठ गये। बोले—'सुदत्त, आओ।'

'भगवन्! निद्रा तो सुखसे आयी थी?'

'सुखसे सोता है निर्वाणप्राप्त, रोषरहित, शान्त। आसक्तियों एवं भयको दूरकर चित्तकी शान्ति प्राप्त करनेपर सुखसे मनुष्य सोता है।'

पवित्र वाणी सुनी। भगवान्को भिक्षा-ग्रहण-निमित्त आमन्त्रित किया। भोजनोपरान्त श्रावस्ती आनेका निमन्त्रण दिया और श्रावस्ती लौट गया।

श्रावस्ती लौटकर अनाथ पिण्डक भगवान्के विहार योग्य स्थान ढूँढ़ने लगा। उसे जेत राजकुमारका जेतवन पसन्द आया। मूल्य पूछा। राजकुमारने कहा—'स्वर्ण-मुद्रासे यदि भूमि भर दी जाय तो उद्यान बिक सकता है।' अनाथ पिण्डकने स्वीकार किया।

स्वर्ण-मुद्राएँ गाड़ियोंपर आने लगीं। मुद्राएँ बिछायी गयीं। कुछ स्थान खाली था। उसने स्वर्णसे उन्हें भी भरनेके लिए कहा। राजकुमारने खाली स्थान दानस्वरूप माँगा। उसे मिल गया। वहाँ राजप्रासाद बनवाया।

श्रावस्तीमें भगवान् आये। जेतवनमें विहार किया। अनाथ पिण्डककी भिक्षा ग्रहण की। उसने जेतवन भिक्षुसंघको दान कर दिया।

माँकी प्रव्रज्या

भगवान् न्यग्रोधाराममें विहार कर रहे थे। विमाता गौतमीने अपने हाथसे काता तथा बीना हुआ धुस्सा भगवान्‌को भेंट किया। उसे लेकर भगवान्‌ने भिक्षुसंघको दे दिया। बोले—'जो भिक्षुसंघको देता है वह मुझे देता है।'

गौतमीने एक दिन भगवान्‌से कहा—'स्त्रियोंको भी प्रव्रज्या मिलनी चाहिये। उन्हें धर्मसे विरत क्यों रखा जाय।'

भगवान्‌ने निवेदन अस्वीकार किया। गौतमी दुःखी हुईं। उनकी आँखें सजल हो गयीं। लौट गयीं। भगवान्‌ने वैशाली प्रस्थान किया।

गौतमीने अपने केशोंको कटवा दिया। काषाय वस्त्र पहना। अनेक शाक्य स्त्रियाँ इस रूपमें वैशालीकी ओर चलीं।

चलते-चलते उन कोमलांगिनियोंका शरीर सूख गया। पैर फूल गये। वे वैशाली पहुँचीं। अपनी चाची एवं भगवान्‌की विमाता तथा धात्रीका रूप देख आनन्दका हृदय भर आया। भगवान्‌से निवेदन किया। उन्होंने प्रव्रजित करना स्वीकार नहीं किया।

आनन्दने गौतमीके उपकार एवं सेवाकी स्मृति दिलायी। आनन्द-ने कहा—'क्या धर्म स्त्रियोंके लिए नहीं है? वे केवल पुरुषोंके लिए उत्पन्न नहीं हैं। निश्चय ही धर्म स्त्रियोंके उपकार निमित्त भी है।'

भगवान्‌ने कहा—'यदि स्त्रियाँ आठ गुणधर्मोंको स्वीकार करें तो उन्हें प्रव्रजित किया जा सकता है।'

गौतमीसे आकर आनन्दने कहा। उन्होंने आठों गुणधर्म स्वीकार किया। गौतमीकी प्रव्रज्या हुई। उन्हें प्रव्रजित करते हुए भगवान्‌ने कहा—'गौतमी! जो धर्म सराग, संयोग, इच्छाजन्य, असन्तोष, अनुद्योग, दुर्भरताके लिए है, वह न तो पूर्णतया धर्म है, न विनय है और न शास्ताका वचन है।'

संघमें संघर्ष

कौशाम्बी घोषिताराममें भगवान् विहार कर रहे थे। भिक्षु परस्पर

झगड़े, वाद-विवाद करने लगे। भगवान् उनके पास गये। झगड़ों एवं विवादोंसे विरत होनेके लिए कहा। वे बोल उठे—'हम आपसमें समझ लेंगे।'

पूर्वाह्णकाल था। भगवान् भिक्षाचार एवं पिण्डपात कर उठे। आसन लिया। पात्र चीवर लेकर बोले—'निंदा, जय, पराजय, आघात, प्रतिघात, त्याग एवं अत्यागकी जो भावना रखते हैं उनकी शत्रुता शांत नहीं होती। इस प्रकारके भावनाविहीन व्यक्तियोंका द्वेष शान्त नहीं होता। शत्रुतासे शत्रुता शान्त नहीं होती। अशत्रुतासे शत्रुताका शमन होता है। यही सनातन धर्म है।

'हिंसकों, हत्यारों, पशुतस्करों राष्ट्रनाशकोंमें भी मित्रता होती है। नम्र, धीर सहायक मिले तो बुद्धिमानी यही है कि विवादोंका त्यागकर उनके साथ मिले तथा विचरण करे। यदि इस प्रकारका सहयोग प्राप्य न हो तो मातंगराज तुल्य हारा राज्य त्यागकर एकाकी रहते हुए पाप न करे।'

खड़े-खड़े कहते हुए भगवान्ने लोण ग्रामकी ओर प्रस्थान किया।

ब्याहका प्रस्ताव

कुरुदेशमें कल्याणदम्य निगम था। वहाँ एक वनखण्डमें भगवान् बैठ गये। वहाँ मांगदिय ब्राह्मण अपनी पत्नीके साथ रहता था। भगवान्का सुवर्ण स्वरूप देखकर उसने अपनी भार्यासे कहा—'सुवर्ण पुरुषके साथ क्यों न अपनी कन्याका विवाह कर दें?'

ब्राह्मणने सुगन्धित जलसे कन्याको स्नान कराया। शृंगार किया। अलंकृत किया। सुन्दर वस्त्र पहनाये। पुष्पोंसे सजाया।

भिक्षाचारका समय हो गया था। भिक्षा निमित्त भगवान् निगम में आये। उसी समय माता-पिता कन्याको लेकर भगवान्के स्थानपर पहुँचे। भार्याने तृणासनोंको देख कर कहा—

'सफलता न होगी।'

'क्यों?'

'आसनका तृण किंचित्मात्र असंयत नहीं है।'

'इससे क्या ?'

'प्रकट होता है कि इसपर सोनेवाला कामविजयी है।'

भगवान्‌के पदचिह्नोंको देखकर बोली—'यह पुरुष कामलिप्त नहीं है।'

'कारण ?'

'भोगीका पद उभड़ा, द्वेषीका निकला, मोहीका दबका और निर्मल जनका पदचिह्न इस प्रकारका होता है'

भगवान् आते दिखाई दिये। पतिने कहा—'वह आ रहे हैं।'

'यही हैं ?'

'हाँ।'

'विवाह असम्भव है।'

भगवान् आकर आसनपर बैठ गये। ब्राह्मण बायें हस्तसे कन्याका हाथ तथा दाहिनेमें जलपूर्ण कमण्डलु लिये उनके पास पहुँचा। बोला—'कन्या ग्रहण कीजिये। इसे भार्या बनाइये। जल सहित स्वीकार कीजिये।'

भगवान्‌ने कहा—'तृष्णा, राग और उदानके कारण भी मुझमें मैथुन भावना उत्पन्न नहीं हुई। यह मलमूत्रपूर्ण कौनसी अच्छी चीज है जिसे कोई पैरसे भी छूना पसन्द करेगा।'

बेरंजामें अकाल

भगवान् बेरंजामें वर्षावास कर रहे थे। वहाँ अकाल और महामारी दोनोंने आक्रमण किया। भिक्षाचार कठिन हो गया। उस समय पाँच सौ घोड़ोंके सहित उत्तरापथके व्यापारी वहाँ ठहरे थे। भिक्षुओंको एक-एक पसर चावल देते थे। आनन्द पीसकर भगवानको पिण्डपातके लिए देता। एक दिन भगवान्‌ने ओखलका शब्द सुना। आनन्दसे पूछ बैठे—'आनन्द यह क्या है।' आनन्दने सब हाल कहा। सुनकर भगवान् बोले—'कर्मशील आनन्द ! तुमने सत्पुरुषोंके लोकोंकी विजय

कर ली है।'

चतुर्वर्णी शुद्धि

भगवान्‌ने चारों वर्णों एवं सभी जातियोंकी शुद्धिकी बात की है। सबको प्रव्रज्याका अधिकार दिया। श्रावस्तीके ब्राह्मण आश्वलायनको अपना नेता बनाकर उनके पास जाकर पूछा—

'गौतम ! ब्राह्मण ही शुद्ध, श्रेष्ठ एवं शुक्लवर्ण हैं। ब्रह्मके औरस पुत्र हैं। उनके मुखसे उनकी उत्पत्ति हुई है। ब्रह्मनिर्मित हैं। उनके उत्तराधिकारी हैं।'

'ब्राह्मणोंकी स्त्रियाँ क्या ऋतुमती नहीं होतीं ? गर्भवती नहीं होतीं ? जनन नहीं करतीं ? दूध नहीं पिलातीं ?'

'हाँ, पिलाती हैं।'

'साधारण जनके समान उत्पन्न होनेपर वे कैसे अपनेको श्रेष्ठ मानते हैं ?'

'किन्तु…'

'यवन, कम्बोज एवं अन्य सीमान्त देशोंमें आर्य एवं दास दो ही वर्ण होते हैं। आर्य दास एवं दास आर्य हो सकता है।'

'सुना है।'

'ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र हत्या, पाप, दोष, दुराचार करनेपर एक समान नरकगामी क्या नहीं होंगे ?'

'होंगे।'

'तो किस अधिकारसे ब्राह्मण अपनेको श्रेष्ठ कहते हैं ?'

आश्वलायन चुप थे।

'क्या हत्या, हिंसा, स्तेय, दुराचारादिसे दूर रहकर ब्राह्मण ही स्वर्ग जाता है, अन्य प्राणी नहीं !'

'सभी पुण्यात्मा स्वर्ग जाते हैं।'

'क्या ब्राह्मण ही अद्वेष, अवैर एवं मित्रताकी भावना कर सकता है, अन्य वर्ण नहीं ?'

'सब कर सकते हैं ।'

'पवित्र नदी-जलमें केवल ब्राह्मण ही मैल धो सकता है ?'

'नहीं, सब ।'

'अभिषिक्त क्षत्रिय राजा, ब्राह्मण, चन्दन, पद्म शाल तथा चांडालादि रेंड आदिकी उत्तराणी लेकर आयें । उनसे अग्नि अलग-अलग उत्पादित करें । क्या प्रभास्वर अग्निमें उनके वर्ण एवं काष्ठ-भेदके कारण अन्तर पड़ेगा ?'

'कोई अन्तर न होगा ।'

'ब्राह्मण क्षत्रिय-कन्याके साथ सहवास करे । पुत्र उत्पन्न हो, तो क्या वह ब्राह्मण कहा जायगा ?'

'हाँ'

'घोड़ा यदि गदहीके साथ सम्भोग करे, तो उससे उत्पन्न सन्ततिको घोड़ा कहा जायगा या गदहा ?'

'नहीं, उसे खच्चर कहेंगे ।'

'दो ब्राह्मण जुड़वे भाई हैं । एक अध्यापक है । उपनीत है । दूसरा कुछ नहीं । ऐसी स्थितिमें तुम यज्ञमें किसको पहले स्थान दोगे ?'

'शीलवान् अध्यापक एवं उपनीतको । दुःशीलको स्थान देनेसे क्या फल मिलेगा ?'

'आश्वलायन, यही चतुर्वर्णी शुद्धि है और मैं इसीका उपदेश देता हूँ ।'

असित देवल और जातिवाद

'बहुत दिन हुए आश्वलायन ! एक अरण्यकी पर्णकुटीमें सात ब्राह्मण रहते थे । उनमें पापदृष्टि उत्पन्न हुई कि ब्राह्मण श्रेष्ठ है ।'

असित देवल ऋषिने सिर और दाढ़ी मुड़ायी । मजीठके रंगका वस्त्र पहना । सुवर्ण एवं चांदीका दण्ड लिया । खड़ाऊँ पर चढ़ सात पर्णकुटियोंके प्रांगणमें आये । सातों ऋषि वहाँ उपस्थित थे ।

'ब्राह्मण ऋषि कहाँ चले गये ?' वे बार-बार पुकारने लगे।

उनके बार-बार कहते रहनेपर उन ऋषियों को बड़ा क्रोध आया। देखकर भी वह क्यों नहीं देख रहा है। उन्होंने शाप दिया—

'वृषल ! भस्म हो जा।'

शापका प्रभाव न हुआ।

वे जितना ही शाप देते जाते थे उतना ही देवलका शरीर कान्तिमय होता जाता था। वे बोले—

'तुम्हारा तप व्यर्थ है। तुम्हारा ब्रह्मचर्य भी व्यर्थ है! तुममें दूषित भावना उत्पन्न हुई है। अतएव तपका, तुम्हारे शापका कुछ प्रभाव न होगा।'

'हम मनोगत दोषका त्याग करते हैं।'

'आपका परिचय ?'

'देवलका नाम सुना है ?'

'हाँ।'

'मैं वही हूँ।'

सबने 'शिरसा नमामि' कहा। देवल चले गये।

'आश्वलायन ! मैं पुनः पूछता हूँ। क्या तुम जानते हो, तुम्हारी माता केवल ब्राह्मणोंके पास गयी थी। अन्यके पास नहीं ?'

'नहीं जानता।'

'क्या तुम जानते हो, तुम्हारे मातृकुलमें स्त्रियाँ सात पीढ़ीतक केवल ब्राह्मणोंके पास गयी थीं ?

'नहीं।'

'क्या तुम जानते हो तुम्हारे पितृकुलमें लोग केवल ब्राह्मणीके पास गये थे ?'

'नहीं।'

'जानते हो गर्भ कैसे रहता है।'

'कहिये।'

'माता ऋतुमती होती है। माता-पिता एकत्र होते हैं। गन्धर्व उपस्थित होता है। तीनोंके एकत्रित होनेपर गर्भाधान होता है। यह गन्धर्व ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र किस वर्गका होता है?'

'नहीं जानता।'

'बोलो तुम कौन हो?'

'मैं अब स्वयं नहीं कह सकता। किस वर्णका हूँ।'

अंजलिबद्ध आश्वलायनने कहा—'भगवन्! मुझे उपासक स्वीकार कीजिये।'

सलोकता

अचिरवती नदीके उत्तर ओर आम्र-वनमें भगवान् विहार कर रहे थे। देश कोशल और ग्राम ब्राह्मणोंका था।

वाशिष्ठ एवं भारद्वाज ब्राह्मणोंमें टहलते हुए विवाद होने लगा। वाशिष्ठने कहा—'पौष्कर द्वारा प्रदर्शित मार्ग ही ब्रह्मलोकके लिए सरल मार्ग है।'

'नहीं, तारुक्कका मार्ग सरल है।' भारद्वाजने कहा।

दोनोंमें विवाद उग्र हुआ। विवाद निर्णयहेतु दोनों ही भगवान्के पास आये। अपनी बातें कहीं। भगवान्ने शान्तिपूर्वक कहा—

'तीनों वेदोंके ज्ञाता क्या किसी त्रिविद् ब्राह्मणने ब्रह्मको देखा है?'

'नहीं।'

'किसी त्रैविद आचार्यने देखा है?'

'नहीं।'

'उन आचार्योंकी सात पीढ़ियोंतक किसीने देखा है?'

'नहीं।'

'उनके पूर्वज, मन्त्रोंके कर्त्ता, प्रवक्ता, अट्टक, वामक, वामदेव, विश्वामित्र, यमदग्नि, अंगिरा, भारद्वाज, वशिष्ठ, कश्यप, भृगु आदि ब्राह्मणोंने ब्रह्माको देखा है?'

'नहीं।'

'जिसको न हम जानते हैं, न देखते हैं, उसकी सलोकताके लिए उपदेश कैसा ? क्या यह अप्रामाणिकतासे भरा नहीं है ?'

'है।'

'क्या वे चन्द्र-सूर्यका उदय-अस्त-स्थान जानते हैं, जिनकी प्रार्थना, स्तुति एवं नमस्कार करते हैं ?'

'नहीं।'

'क्या वे चन्द्र-सूर्यलोककी सलोकताका उपदेश दे सकते हैं ? क्या वे बता सकते हैं कि उनके पास पहुँचनेका कौन पथ सुगम है ?'

'नहीं।'

'यदि कोई बिना देखे हुए, बिना जाने हुए कहे कि अमुक नगरकी जनपदकल्याणीको वह चाहता है, कामना करता है तो क्या उसका भाषण प्रामाणिक माना जायगा ?'

'नहीं।'

'सामने अचिरवती नदी प्रवाहित है। यदि उस पार जानेवाला उस पारके तटका आह्वान करे, याचना करे, प्रार्थना करे, अभिनन्दन करे कि उस पारका तट इस पार आ जाय तो क्या वह आ जायगा ?'

'नहीं।'

'इसी प्रकार लोग इन्द्र, ईशान, प्रजापति, ब्रह्मा, यम आदिका आह्वान करते हैं। क्या मरनेपर उनके लोकोंकी सलोकता उन्हें प्राप्त होगी ?'

'नहीं।'

'नदीका जल कौआ पी सकता है। किन्तु जिसका हाथ नदीके एक तटपर श्रृंखलाबद्ध हो तो क्या वह दूसरे तट जाकर पानी पी सकता है ?'

'नहीं।'

'नदीके तटपर कोई आकर मुख ढककर लेट जाय तो क्या वह नदीके उस पार चला जायगा ?'

'नहीं।'

'क्या ब्राह्मणों एवं आचार्योंको कहते सुना है कि ब्रह्मा परिग्रह है अथवा अपरिग्रह ?'

'अपरिग्रह है।'

'द्वेषी चित्तवाला है या अद्वेषी ?'

'अद्वेषी।'

'द्रोही है या अद्रोही ?'

'अद्रोही।'

'संक्लिष्ट है या असंक्लिष्ट ?'

'असंक्लिष्ट।'

'वशवर्ती है या अवशवर्ती ?'

'वशवर्ती।'

'त्रैविद ब्राह्मण अपरिग्रह है या सपरिग्रह ?'

'सपरिग्रह है। सवैर है, संक्लिष्ट है, अवशवर्ती है।'

'अपरिग्रह क्या सपरिग्रहसे मिल सकता है ?'

'नहीं।'

'सपरिग्रह ब्राह्मण बोलो ! आश्वलायन अपरिग्रह ब्रह्माके साथ कैसे सलोकता प्राप्त करेगा ?'.

इच्छा नंगल ब्राह्मणोंका ग्राम कोशल प्रदेशमें था। वहाँके वनखण्ड में भगवान् विहार कर रहे थे। पौष्कर साति ब्राह्मण वहाँ प्रसन्न चित्त राज्य द्वारा प्रदत्त सम्पत्तिका उपभोग करते थे। अम्बष्ट ब्राह्मणको भगवान्‌के पास वाद-विवादार्थ भेजा। भगवान्‌को रुष्ट करनेके खयालसे अम्बष्ट उनसे बोला—

'गौतम ! शाक्य जाति क्षुद्र, चण्ड एवं बकवादी है।'

'शाक्योंने आपका क्या अपराध किया है ?'

'मैं एक बार कपिलवस्तुमें गया। शाक्य संथागारमें ऊँचे आसनों-पर बैठे परस्पर हँसी मजाक कर रहे थे। मुझे किसीने बैठनेके लिए भी

नहीं कहा ।'

'पक्षी भी अपने घोंसलोंपर आह्लादपूर्वक आलाप करते हैं। केवल इतने कारणपर अमर्ष करना उचित नहीं है ।'

'गौतम ! ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र चार वर्ण हैं। ब्राह्मणोंके सेवक अन्य तीन वर्ण हैं ।'

'आपका गोत्र ।'

'कृष्णायन ।'

'आप शाक्योंके दासीपुत्र हैं ।'

'मैं ?'

'हाँ । राजा इक्ष्वाकुको दिशा नामकी दासी थी । उसीके वंशज कृष्णायन हुए । शाक्य इक्ष्वाकुवंशीय हैं। अतएव अपने ही तर्कसे आप शाक्योंके दासीपुत्र हुए। आपने कभी सुना भी है कि कृष्णायन कौन थे ?'

अम्बष्ट मूक हो गया। उसके साथ वाद-विवाद सुननेके लिए आये माणकोंकी दृष्टि बदल गयी। वे उसे लज्जित करने लगे। सबके नेत्रोंमें घृणा उतर आयी थी।

'अम्बष्ट ! जातिवाद, गोत्रवाद, मानवाद, आवाद-विवादसे जो बद्ध हैं वे चरण-सम्पदासे दूर हैं'—भगवान्‌ने कहा।

शाक्य-कोलिय संघर्ष

रोहिणी नदी कपिलवस्तु एवं कोलिय नगरके मध्य बहती थी। उसे बाँध कर जलका उपयोग दोनों करते थे। जलके प्रश्नपर विवाद होकर संघर्षकी नौबत पहुँच गयी। दोनों जातियाँ अस्त्र-शस्त्र लेकर उतर आयीं। भगवान् सुनकर दोनोंके बीच खड़े हो गये। शाक्योंने उन्हें देख हथियार रख दिया। वन्दना की।'

भगवान्‌ने पूछा—

'विवादका कारण ?'

'हम नहीं जानते।'

'कौन जानता है ?'

दास तथा काम करनेवाले बोले—

'जलके लिए विवाद है।'

'जलकी कीमत ?'

'कुछ नहीं।'

'मनुष्यका मूल्य ?'

'अनमोल।'

'मोलके लिए अनमोलका संहार करोगे ?'

लोगोंके उठे हथियार झुक गये।

परिचायक आनन्द

'भिक्षुओ, मेरी उम्र छप्पन वर्षकी हुई। एक परिचायककी आवश्यकता अनुभव करता हूँ।'

सारिपुत्र एवं मुद्गलायन उठे। भगवान्ने अस्वीकार किया। भिक्षुओंने आनन्दसे कहा। उसने शांतिपूर्वक उत्तर दिया।

मैं यहाँ बैठा हूँ। शास्ता देख रहे हैं। उनकी इच्छा होगी तो कहेंगे।

भगवान्ने आनन्दकी ओर देखा।

आनन्दने विनयपूर्वक कहा—

'यदि मेरे चार परिक्षेप तथा चार याचनाएँ भगवान् स्वीकार करें तो मैं भार उठा सकता हूँ।'

'कहो आनन्द !'

'प्रतिक्षेप यह है कि प्राप्य चीवर, पिण्डपात, गंधकुटीमें निवास तथा निमन्त्रणोंमें सबके साथ ले जानेसे मुझे मुक्ति मिले।'

'और याचनाएँ ?'

'मेरे स्वीकार किये हुए निमन्त्रणमें भगवान् जायँ। अन्य जनपद किंवा राष्ट्रसे आये हुए परिषद्के आते ही उन्हें दर्शन करानेकी आज्ञा हो। अपने इच्छानुसार समीप आ सकूँ। मेरी अनुपस्थितिमें शास्ता जो उपदेश करें वे मुझसे कह दिया करें।'

'स्वीकार है, आनन्द।'

लांछन

बीस वर्ष बीते। भगवान्‌का सत्कार देशमें बढ़ गया। उनकी मान-प्रतिष्ठा तथा उनके प्रति बढ़ती श्रद्धा लोगोंकी ईर्ष्याका विषय बन गयी। अन्य मतावलम्बियोंपरसे लोगोंकी श्रद्धा हटने लगी। तैर्थिकोंने विचार किया अपकीर्ति द्वारा उनका मान घटाया जाय, जनताको उनकी ओरसे विमुख किया जाय। उन लोगोंने अतीव सुन्दरी चिंचा माणविकाके साथ षड्यन्त्रकी रचना की।

श्रावस्तीमें जेतवनसे जब लोग सायंकाल उपदेश सुन लौटने लगते तो चिंचा बीरबहूटीके रंगकी साड़ी पहनकर सुलंकृता निकलती। कामोत्तेजक रूप तथा गन्धमाला, पुष्पादि लेकर जेतवनकी ओर चलती। सभी उलटी ओरसे आनेके कारण उसे देखते। असमय उसे जेतवन जाते देख पाते। उससे कोई पूछता तो वह बिगड़ जाती।

प्रातःकाल लोग जब उपदेश सुननेके लिए जेतवन जाने लगते तो वह विगलित एवं शिथिल रूप बनाकर जेतवनसे लौटती। यदि कोई पूछता कि रात्रिमें कहाँ निवास किया तो क्रोधित होकर बोलती किसीसे क्या मतलब ?

कुछ काल बीत जानेपर तैर्थिकोंने चुपचाप काना-फूँसी करते समाचार फैलाना शुरू किया कि चिंचा रात्रि-पर्यन्त शास्ताके साथ भोग-विलास करती है। लोकमें संशयका सृजन होने लगा।

तीन-चार मास बाद उसने गर्भिणी जैसा रूप बनाया। पूछनेपर चुपचाप कहती श्रमण गौतमका गर्भ है।

आठ-नौ मास पश्चात् भगवान् लोगोंसे घिरे उपदेश दे रहे थे। वहाँ पहुँचकर बोली—

'तुम्हारा यह गर्भ पूर्ण हो गया है। क्या उपदेश ही देते रहोगे ? प्रसूतिगृहकी तथा अन्य व्यवस्था न होगी ?'

सुनते ही भगवान्‌ने शान्तिपूर्वक अपना उपदेश रोक दिया।

उनकी करुणापूर्ण दृष्टि चिंचापर स्थिर हो गयी। बोले—'बहिन! तुम्हारी सत्य एवं असत्य बात केवल हम और तुम ही जान सकते हैं।'

'और कौन जानेगा ?'

हवा बह रही थी। उसका कपड़ा उड़ने लगा। पेटपर बँधी भण्डिका गिर पड़ी। उसका पैर कट गया। भेद खुला। लोग धिक्कारने लगे। वह भागी। पृथ्वीने उसे अपने गर्भमें ले लिया।

रोगीकी सेवा

आनन्दके साथ टहलते हुए भगवान् एक विहारमें गये। वहाँ एक भिक्षु मल-मूत्रमें पड़ा बीमार था। भगवान्ने साश्चर्य पूछा—

'कोई यहाँ नहीं है ?'

'नहीं'—रोगीने कहा।

'क्यों ?'

'मैंने किसीकी सेवा नहीं की।'

'आनन्द ! जल लाओ।'

आनन्द जल लाये। भगवान्ने उसे स्नान कराया। स्वच्छ चार-पाईपर लिटा दिया। उसकी शुश्रूषाका प्रबन्ध कर भिक्षुसंघको आमन्त्रित किया—

'भिक्षुओ ! जो रोगीकी सेवा करता है वह हमारी करता है। यदि परस्पर तुम लोग एक दूसरेकी सेवा न करोगे तो कौन करने आयेगा ? यहाँ तुम्हारी माता नहीं, पिता नहीं, कुल नहीं, सन्तान नहीं, तुम्हारी फिर कौन सेवा करेगा ?'

बुद्धिपर विश्वास

कोशल प्रदेशके केशपुत्त निगममें भगवान् चारिका करते पहुँचे। केशपुत्तीय कालामोंने पूछा—

'भन्ते ! अपने-अपने मतका ही सब प्रतिपादन करते हैं। अपने वादोंको समझाते हैं। दूसरोंका विरोध करते हैं। उनसे रुष्ट हो जाते हैं। आक्षेप करते हैं। निन्दा करते हैं। संशय उत्पन्न होता है कि

क्या ठीक है और क्या नहीं ?'

'कालामो ! तुम्हारा संशय उचित है। श्रुत, परम्परा, मत, पिटक, सम्प्रदान, तर्क, न्याय, वक्ताके रूप, विचार, भव्य स्वरूप, चमत्कार, या गुरु है, श्रेष्ठ है आदिके कारण किसीपर विश्वास न करो। जब तुम्हें स्वयं ज्ञान हो जाय, जब तुम्हारी बुद्धि स्वीकार करे कि कोई धर्म अकुशल, सदोष, विज्ञनिन्दित, अग्राह्य एवं अहितकारक है तो उसे त्याग देना।

'सुनो ! अनुश्रवके कारण किसी मतको न मानो। परम्पराके कारण मत मानो। तर्क द्वारा सिद्ध होता है इसलिए मत मानो। ग्रंथोंमें लिखा है इसलिए न मानो। हमारे जैसा कोई कहता है उसे भी मत मानो। इसलिए भी मत ग्रहण करो कि मैं कहता हूँ। जब तुम्हारी बुद्धि माननेके लिए गवाही दे, तो उसे मानो। स्वीकार करो। ग्रहण करो।'

सुखनिद्रा

सिरसवनमें आलवीके गो-मार्गमें भगवान् पर्ण-शय्यापर विहार करते थे। हस्तक अलावकने भगवान्‌को पर्णासनपर बैठा देखा। उसने साश्चर्य पूछा—

'क्या सुखनिद्रा इन पत्तोंपर आती है ?'

'हाँ।'

'जाड़ेकी ठण्डी रात, माघका अन्तिम सप्ताह, शीतल काषाय वस्त्र, शीतल झोंकेसे बहती वायु और पतली पर्णशय्या—फिर भी ?'

'हाँ।'

'आश्चर्य !'

भगवान्‌ने कहा—'सुन्दर शयनागारमें, मुलायम मोटी शय्यापर, गन्धमय तैल-दीप प्रकाशमें, लावण्यमयी भार्याओंसे सेवित, मानसिक परिदाहसे जलता, दुःखसे क्षुभित क्या कोई गृहपति दुःखसे सोयेगा या नहीं ?'

'सोयेगा।'

'कायिक, मानसिक परिदाह द्वेष एवं मोहावस्थामें वह दुःखसे

सोयेगा या नहीं ?'

'हाँ, सोयेगा ।'

'मुक्त सुखसे सोता है। रागादिसे रहित सुखसे सोता है। आपत्तियोंके बन्धनोंको छिन्न कर भयहीन मनुष्य सुखसे सोता है। उपशान्त सुखसे सोता है।'

सुन्दरीकी हत्या

जेतवनमें भगवान् विहार कर रहे थे। श्रावस्तीमें अन्य पन्थों एवं मतावलम्बियोंका सत्कार, पूजा एवं भिक्षा बन्द हो गयी थी। षड्यन्त्रकी रचना हुई। सुन्दरी परिव्राजिकाके पास विरोधी गये। उससे निवेदन किया कि यदि अपने पन्थ एवं मतानुयायियोंकी भलाई चाहती हो तो प्रतिदिन जेतवन जाया करो।

सुन्दरी जेतवन जाने लगी। वहाँ जानेवाले सभी जान गये कि वह वहाँ आती है। एक दिन तैर्थिकों एवं परिव्राजकोंने उसकी हत्या करवाकर उसे जेतवनकी परिखामें गड़वा दिया।

राजा प्रसेनजितके यहाँ जाकर बोले कि सुन्दरीका पता नहीं चल रहा है। राजाने पूछा—'किसीपर सन्देह है ?' उन्होंने उत्तर दिया—'भिक्षुओंपर।' राजाने कहा—'जेतवनमें जाकर खोजो।'

जेतवनकी परिखासे सुन्दरीकी लाश निकालकर उन लोगोंने एक चारपाईपर रखी। श्रावस्तीमें चारपाई लिये घूमते हुए भिक्षुओंका कुकृत्य कहने लगे। भिक्षाचार निमित्त भिक्षु श्रावस्तीमें पहुँचे तो प्रचार हो रहा था—'बुद्ध मिथ्यावादी है। अब्रह्मचारी है। ब्राह्मण नहीं है। श्रमण नहीं है। पतित है। स्त्री हत्याका दोषी है।' लोगोंने भिक्षुओंको धिक्कारा। बुरा-भला कहा। उन्होंने आकर भगवान्से सब बातें कहीं। भगवान्ने शान्तिपूर्वक कहा—'चिन्ता नहीं, यह मिथ्या है। मिथ्या अधिक दिनतक नहीं चलता।'

राजाने सुन्दरीके हत्यारेका अन्वेषण करनेकी आज्ञा राज्य कर्मचारियोंको दी। एक मदिरालयमें कुछ पियक्कड़ लड़ गये। एक ने कहा

कि उसने सुन्दरीकी कैसे हत्या की। तैर्थिकोंने कितना कार्षापण हत्याके बदलेमें दिया। वे आज उन कार्षापणोंसे मद पीकर कितने मस्त हैं। राज्य कर्मचारियोंने उन्हें पकड़ लिया। राजाके सम्मुख उन्होंने स्वीकार किया कि तैर्थिकोंने उनसे हत्या करायी।

कृशा गौतमी

वह निर्धन थी। उसका सब तिरस्कार करते थे। उसे पुत्र हुआ। लोगोंकी वह प्रिय हुई। शिशु सुन्दर था। मृत्युने उसे एक दिन उठा लिया।

'कोई उसे जिला दे' कहती हुई पुत्रके शवको लिये वह श्रावस्ती-में घूमने लगी। लोगोंने उसे तथागतके यहाँ भेजा। भगवान्‌के पास गयी। उन्होंने शान्तिसे कहा—

'जिस घरमें कोई मरा न हो वहाँसे पीली सरसों माँग लाओ।'

वह श्रावस्तीके द्वार-द्वार गयी। कोई ऐसा घर नहीं मिला जहाँ कोई मरा न हो।

वह पुत्रके सवको छोड़ तथागतके पास आयी। भगवान्‌ने मृदु स्वरसे कहा—

'लाभ-हानि न देखकर सौ वर्षकी अपेक्षा इन्हें जानकर एक दिन-का जीना अच्छा है। ग्राम, नगर, कुल, देव एवं लोक सब अनित्य हैं।'

कृशा गौतमीने समझा जन्म-मृत्युका रहस्य। दुःख दूर हुआ। उसने प्रव्रज्या ले ली।

ब्राह्मण कौन ?

कोशलके महाशाल ब्राह्मणने श्रावस्तीमें भगवान्‌के पास आकर पूछा—

'गौतम ! पुरातन ब्राह्मण धर्मपर ब्राह्मण आरूढ़ दिखाई देते हैं या नहीं ?

'पुराना ब्राह्मण धर्म सुनोगे ?'

'अवश्य गौतम।'

'वे संयतात्मा थे। तपस्वी थे। पशु एवं धन-धान्यहीन थे। ब्रह्म-निधिके पालक थे। लोग उन्हें खोजकर दान देते थे। उनके द्वारपर भोजन रखा रहता था। जनपदीय गण एवं राष्ट्र उन्हें नमस्कार करता था। वे अवध्य थे। अजेय थे। द्वारपर उन्हें कोई रोकता न था। अड़तालीस वर्षतक ब्रह्मचर्यका पालन करते थे। विद्यानुरागी थे। आचरणके श्रेष्ठ थे। परस्त्री उन्हें त्याज्य थी। स्त्री मूल्य देकर मोल नहीं लेते थे। ऋतुकालके अतिरिक्त मैथुन नहीं करते थे।

'गोमेध नहीं करते थे। इस रूपमें जबतक लोकमें रहे, लोक सुखी था। समृद्धि थी। लेकिन एक काल आया। उन्होंने राज्य, सम्पत्ति, अलंकृत स्त्रियाँ, रथ, प्रासादादि सुख-प्रसाधन देखा। उनकी वृत्ति भ्रष्ट हुई। उनमें लोभ आया। भोग आया। मन्त्रोंकी रचना कर इक्ष्वाकुके पास गये। यज्ञ करनेके लिए कहा। उसने अश्वमेध, नरमेध, वाजपेय एवं सर्वमेध कर ब्राह्मणोंको गाय, वस्त्र, धन, अलंकृत स्त्रियाँ, रथ, खण्डयुक्त प्रासाद दिया। उन्होंने धनसंग्रह किया। तृष्णा बढ़ी। वे पुनः इक्ष्वाकुके पास गये। गोमेध करनेके लिए कहा। राजाने सहस्रों गायोंसे गोमेध किया। देवता, असुर, राक्षस सब बिगड़े। गायपर प्रहार हुआ। उस समय इच्छा, क्षुधा एवं जरा तीन ही रोग थे। पशुकी हिंसासे उनकी संख्या अट्ठानबे हो गयी। निर्दोषोंकी हत्यासे धर्म-ध्वंस हुआ। धर्मके बिगड़नेपर चारों वर्ण अलग-अलग हो गये। स्त्रियाँ पतिका अपमान करने लगीं। जातिवादका नाश कर सभी स्वेच्छाचारी हो गये।

'कोई गोत्रके कारण, कोई वंशके कारण, कोई जन्मके कारण, कोई जटाके कारण ब्राह्मण नहीं होता। सत्य और धर्मसे ही लोग ब्राह्मण होते हैं।'

अंगुलिमाल

अंगुलिमाल घोर हिंसक था। जनता त्रस्त हो उठी थी। जनपद जनहीन होने लगा था। जिस ओर वह रहता था लोग जानेका साहस

न करते थे। उसके आतंकका निवारण कठिन मालूम होता था।

भगवान्‌ने श्रावस्तीसे अंगुलिमालके निवासकी ओर प्रस्थान किया। लोगोंने मना किया, सचेत किया। अस्त्र-शस्त्रधारी लोगोंको साथ ले जानेके लिए कहा। करुणामूर्ति शान्त बढ़ती गयी।

उन्हें अकेला आते देख अंगुलिमाल चकित हुआ। धनुषबाण एवं खड्गके साथ भगवान्‌के पीछे चलने लगा। भगवान्‌की अविचलित मुद्रा अग्रसर होती जा रही थी। अंगुलिमालने आश्चर्यपूर्वक कहा—

'श्रमण।'

'अंगुलिमाल! मैं खड़ा हूँ। तुम भी खड़े हो।'

'तुम कैसे खड़े हो और मैं नहीं हूँ।'

'प्राणियोंमें दण्डकी भावना न होनेसे मैं स्थित हूँ। तू असंयमी है। मैं संयमी हूँ। इसलिए स्थित हूँ।'

अंगुलिमाल प्रभावित हुआ। धनुष-बाण एवं खड्ग उसने फेंक दिया। भगवान्‌की वन्दना की। प्रव्रज्या माँगी। भगवान्‌ने प्रेमसे कहा—'आओ भिक्षु।'

नगरमें कोलाहल था। राजा प्रसेनजित पाँच सौ सशस्त्र अश्वारोहियोंके साथ जेतवनमें आये। उन्हें देखकर भगवान्‌ने पूछा—'क्या है राजन्!'

'अंगुलिमालका आतंक दूर करनेके निमित्त प्रस्थान कर रहा हूँ।'

'यदि आप उसे प्रव्रजित देखें तो क्या करेंगे?'

'उसका प्रत्युत्थान करूँगा।'

'यह अंगुलिमाल है।'—भगवान्‌ने उसकी दाहिनी भुजा पकड़कर राजाके सम्मुख करते हुए कहा।

'आश्चर्य!'

अंगुलिमाल भिक्षाचारके लिए श्रावस्ती गया। पुराने दोषोंको याद कर लोगोंने उसपर डंडा फेंका। किसीने उसपर कुछ फेंका और किसीने कुछ। उसकी मुद्रा अविचलित शान्त थी। पात्र टूट गया। संघाती

फट गयी। मस्तक फट गया। रक्तकी त्रिधारा बहने लगी। वह शान्त था और भगवान्के चरणोंमें आकर उसने मस्तक रख दिया।

'आप कौन हैं ?'

भगवान् एक वृक्षकी छायामें बैठे थे। द्रोण ब्राह्मणने उन्हें देखकर पूछा—

'क्या आप देव हैं ?'

'नहीं।'

'गन्धर्व हैं ?'

'नहीं।'

'मनुष्य हैं ?'

'नहीं।'

'आप क्या हैं ?'

'मैं केवल बुद्ध हूँ।'

अध्यात्मज्योति

सिर वस्त्रसे ढका था। भगवान् कोशलमें सुन्दरिका नदीके तटपर वृक्षके नीचे बैठे थे। उसी तटपर भारद्वाज ब्राह्मण हवन कर रहा था। हव्यशेष किसे खानेको दे। चारों तरफ देखने लगा। उसकी दृष्टि भगवान्पर पड़ी। बायें हाथमें शेष हव्य तथा दाहिने हाथमें कमण्डलु लेकर भगवान्के पास आया। पद-ध्वनि सुनाई पड़ी। सिरसे कपड़ा भगवान्ने हटाया। भारद्वाजने उनका रूप देखा। घबड़ाकर कह उठा—

'ओह ! यह तो सिरमुड़ा है।'

वह लौटना चाहता था। ध्यान आया कि ब्राह्मण भी सिर मुड़ाते हैं। उसने पूछा—

'तुम्हारी जाति ?'

'आचरण पूछो। जाति पूछकर क्या करोगे ? सभी काष्ठ द्वारा अग्नि उत्पन्न होती है। नीचकुलावतंश पापहीन भी ऋषि होता है। सत्यवादी, जितेन्द्रिय, ज्ञानी तथा जिसने ब्रह्मचर्य किया है वही यज्ञका

उपनीत है। वह दक्षिणाग्निमें होम करता है।'

'हव्यशेष किसे दूँ ?'

'तृण-रहित स्थान अथवा प्राणिरहित जलमें डाल दो।'

'भन्ते।'

'सुनो! लकड़ियाँ जलानेसे शुद्धि नहीं होती। वह पाखंड है। लकड़ियाँ फूँकना त्याग नहीं है। मैं अध्यात्मज्योति जलाता हूँ। वह बुझती नहीं। वह अखंड ज्योति है। नित्य समाहित है। क्रोध धुँआ है। असत्य भस्म है। जिह्वा श्रुवा है। हृदय वेदी है। अपनी अन्त-ज्योंति ही ज्योति है। धर्म जलाशय है। शील घाट है। सज्जनता ही उसकी निर्मलता है। उसमें ज्ञानी स्नान करते हैं।'

भारद्वाजने जलमें हवि डाल दी। उससे धुँआ निकलने लगा। चिट-चिट ध्वनि उद्‌भूत हुई। वह रोमांचित भगवान्‌के पास आया। भगवान्‌ने कहा—

'निर्मल धर्म सरोवर है। उसमें स्नान कर पार उतरनेका प्रयास करो। सत्य, धर्म, संयम एवं ब्रह्मचर्यपर आधृत है। हवन करनेवालेको मैं दम्भसारथी कहता हूँ।'

कृषि

भगवान् दक्षिण गिरिपर नाला नामक ग्राममें विहार कर रहे थे। खेत बोनेका समय था। कृषि भारद्वाजके पाँच सौ हल खेतोंमें चल रहे थे। प्रात:काल भगवान् पात्र-चीवर लेकर उठे। जहाँ हल चल रहा था वहाँ पहुँचे। उस समय कर्मियोंको भोजन बाँटा जा रहा था। भगवान् भी एक ओर खड़े हो गये। उन्हें भिक्षा निमित्त आया समझ-कर एक बोला—

'मैं जोत-बोकर खाता हूँ। तू भी जोत-बोकर खा।'

'मैं भी वही करता हूँ।'

'लेकिन हल, बैल, खेत कहाँ हैं ?'

'ब्राह्मण, मेरी खेतीका श्रद्धा बीज है। तप वर्षा है। प्रज्ञा हल

और जुआ है। प्रव्रज्या हरिस है। मन जोत है। स्मृति हलका फल है। सत्य निराई है। सौख्य विश्राम है। वीर्य मेरे लादनेवाले बैल हैं। वे निर्वाण पदतक ले जाते हैं। उसमें अमृत उपजता है। इस खेतीका करनेवाला दुःखमुक्त है। धर्मोपदेश देकर भिक्षाके लिए भोजन नहीं लेता। तुम्हारी भिक्षा न लूँगा।'

दुःखका कारण प्रेम

श्रावस्तीके मृगार माताके पूर्वाराममें भगवान् विहार कर रहे थे। गीले केश, भींगे वस्त्रके साथ मध्याह्नमें विशाखा विहारमें आयी। असमय उसे आते देखकर भगवान्ने पूछा—'क्या हुआ है?'

'प्रिय नाती मर गया।'

'श्रावस्तीमें जितने लोग हैं उतने पुत्र तथा नाती तुम चाहती हो?'

'हाँ।'

'यहाँ कितने व्यक्ति नित्य मरते हैं?'

'ठीक नहीं, कभी दस, कभी एक। विना मरे कोई दिन खाली नहीं जाता।'

'क्या हमेशा गीले वस्त्र तथा केश रह सकोगी?'

'नहीं।'

'प्रेम दुःखका कारण है। जिनके सौ प्रियजन होंगे उनके दुःख एक शत होंगे। जिनका एक प्रिय होगा उसे एक दुःख होगा। जिसका प्रेम कहीं नहीं होगा उसे कुछ भी दुःख न होगा।'

वह अवाक् सुनने लगी।

'शोक, परिवेदना, दुःख प्रियके कारण होता है। प्रिय न रहनेपर शोक न होगा। वही शोकरहित है जिसे लोकमें कुछ भी प्रिय नहीं है। अशोक होनेके लिए लोकमें प्रिय न बनाना चाहिये।'

जरा-चिह्न

भगवान् मृगार माताके पूर्वाराममें अपराह्णमें ध्यानसे उठे थे। पृष्ठभागका सहारा लिये धूपमें बैठे थे। आनन्दने उन्हें ध्यानपूर्वक

देखते हुए कहा—'भगवान् ! झुर्रियाँ पड़ रही हैं। गात्र शिथिल हो गया है। त्वचा उतनी परिशुद्ध नहीं है। शरीर झुका है।'

'आनन्द ! यौवनमें वृद्धावस्था, आरोग्यमें व्याधि एवं जीवनमें मरण धर्म छिपा है। शतंजीवी होनेपर भी मृत्यु हमें खाती है। जरा सबका मर्दन करती है। किसीको छोड़ती नहीं।'

हत्याका प्रयास

भगवान् राजगृहमें कलन्दकके वेणुवनमें विहार कर रहे थे। अजातशत्रु देवदत्तके पास जाया करता था। भिक्षुओंने भगवान्से कहा। उत्तर मिला—'उसके सत्कार एवं प्रतिष्ठाकी स्पृहा न करो।'

भगवान् एक दिन भिक्षुसंघको उपदेश दे रहे थे। देवदत्तने कहा—'भिक्षुसंघ मुझे दे दीजिये। आप निश्चिन्त होकर विहार कीजिये।'

'देवदत्त ! सारिपुत्र एवं मुद्गलायनको भी मैं संघ नहीं दे सकता। तुम्हें क्यों दूँ ?'

देवदत्त उठकर अजातशत्रुके पास गया। उनसे बोला—'आप अपने पिताकी हत्या कर राज्य ग्रहण कीजिये और मैं तथागतको समाप्त कर बुद्ध हूँगा।'

अजातशत्रुने छुरा छिपाकर अन्तःपुरमें प्रवेश किया। वह उद्विग्न था। त्रस्त था। शंकित था। उपचारकोंने उसे पकड़ लिया। पूछा—

'आपका प्रयोजन ?'

'पिताकी हत्या।'

'किसने कहा था ?'

'देवदत्तने।'

अमात्य उसे पिता राजा बिम्बिसारके पास ले गये। पुत्रकी करनी सुन पिताने पूछा—

'मेरी हत्यासे तुम्हारा क्या प्रयोजन सिद्ध होता ?'

'राज्य मिलता।'

'राज्य तेरा है, ले ! इतनेके लिए हत्यासे हाथ रँगकर क्या होगा ?'

बिम्बिसारने राज्य अजातशत्रुको देकर उसे राजा बना दिया। स्वयं राज्यसे अलग हो गया।

बिम्बिसारकी हत्या

देवदत्तको ज्ञात हुआ। वह राजा अजातशत्रुके पास आया। बोला—'आपने अपने राजा तथा पिताके प्रति अपराध किया है। उसे जीता छोड़ दिया है। समय आते ही आपको मरवानेका वह प्रयास करेगा।'

'क्या करूँ ?'

'हत्या।'

'वह मेरे पिता हैं।'

'राज्य।'

'वह अवध्य हैं।'

'अन्न-जल बिना भूखा मर जाने दो।'

पिता बिम्बिसारको अजातशत्रुने तापगृहमें कैद कर दिया। आज्ञा दी कि मेरी माताके अतिरिक्त और कोई अन्दर प्रवेश न करने पाये। उन्हें भोजन न दिया जाय।

रानी भोजन उत्संगमें छिपाकर ले जाती। राजा उसे खाकर जीने लगा। पिताको मरते न देखकर अजातशत्रु चिन्तित हुआ। रहस्यका पता लगानेपर आज्ञा दी कि माँ उत्संगके साथ पिताके पास न जाय।

रानी गंधमय जलसे स्नान करती। मधुर रस शरीरपर पोतती। ऊपरसे वस्त्र पहनकर जाने लगी। राजा रानीके शरीरको चाटकर निर्वाह करने लगा। राजाको फिर भी न मरते देखकर अजातशत्रुने कारण जाँचा। पता लगानेपर आज्ञा दी कि माँ अब पिताके पास न जाय।

रानी कारागारके द्वारपर आती। बिलखती थी। रोती थी। फिर चली जाती थी। राजा श्रोतापत्ति सुखसे टहलते हुए जीने लगा।

पिता केवल टहलनेके कारण जीवित है, अतः अजातशत्रुने नापितको बुलाकर आज्ञा दी कि पिताके तलवेको छुरेसे काट दो। नमक और

तेलका लेपकर घाव बाँधकर उसे खैरकी लकड़ीकी आगपर भूनो। नापितने आज्ञानुसार पैर आगमें खूब भूना। राजा बिम्बिसार मर गया।

पिताका जिस समय देहान्त हुआ उसी समय उसको पुत्र उत्पन्न हुआ। पिता मरण और पुत्रोत्पत्ति, दोनों समाचारोंका लेख एक साथ लेकर अमात्य उसके पास गये। पहले पुत्र होनेका लेख दिया। समाचार सुनते ही पुत्रस्नेह उमड़ आया। पिताके स्नेहमय हृदयका भाव उद्भूत हुआ। उसने आज्ञा दी कि पिताको छोड़ दिया जाय। अमात्यने दूसरा लेख उसके हाथमें रख दिया। पिताकी मृत्यु पढ़ते ही रो उठा। दौड़ता माँके पास गया। कौतूहलसे पूछा—'माँ, क्या पिताका मुझपर प्रेम था?'

माँ सजल नयनों बोली—'तेरी उँगलीमें फोड़ा हुआ था। चुप न होता था। तुझे लेकर लोग तेरे पिताके पास विनिश्चयशालामें गये। पिताने स्नेहसे तेरी उँगली मुखमें रख ली। मुखमें ही फोड़ा फूट गया। फूटे फोड़ेकी पीब और खूनको पिता घोंट गये।

अजातशत्रुने पश्चात्ताप करते हुए पिताकी अन्तिम क्रिया की।

भगवान्‌पर प्रहारका प्रयास

देवदत्त अजातशत्रुके पास जाकर बोला—'आज्ञा दीजिये कि गौतमकी हत्या की जाय।'

प्रत्येक मार्गपर सशस्त्र व्यक्ति हत्या करनेके लिए बैठा दिये गये। उनमें एक धनुष-बाण लिये जहाँ भगवान् थे वहाँ गया। उसने सौम्य मूर्तिको निर्विकार बैठे देखा। स्तम्भित हो गया। शरीर शून्यसा होने लगा। भगवान्‌ने प्रेमसे कहा—'भय न करो। यहाँ आओ।'

शस्त्र फेंककर वह उनके चरणोंपर गिर पड़ा। भगवान्‌ने कहा—'निर्भय दूसरे मार्गसे लौट जाओ।'

साथी हत्यारे उस व्यक्तिको न आते देख आगे बढ़े। वृक्षके नीचे बैठी शान्तिमूर्ति उन्होंने देखी। वे उनके सामने जाकर बैठे। उनका साहस टूट गया। भगवान्‌ने उनसे भी कहा—'दूसरे मार्गसे चले जाओ।'

पहला व्यक्ति देवदत्तके पास जाकर बोला—'भन्ते ! मैं उन्हें मार न सका ।'

'अच्छा मैं ही अकेला मारूँगा ।'

भगवान्पर चट्टान

भगवान् गृद्धकूट पर्वतकी छायामें टहल रहे थे । देवदत्त पर्वतपर चढ़ गया । जानसे मार डालनेकी गरजसे एक शिला उनपर फेंकी । शिला न लगी । गिरनेसे टूटी हुई एक पपड़ी भगवान्‌के पैरपर लगी । पैर क्षत हो गया । खून बहने लगा ।

हाथीसे कुचलनेका कुचक्र

राजगृहमें नालगिरि नामक एक हाथी था । वह मनुष्यघातक था । पीलवानको देवदत्तने धनके लोभसे मिलाया । निश्चय हुआ कि भगवान् भिक्षाचार निमित्त राजगृहके राजपथपर ज़ब आयें तो उनपर हाथी छोड़ दिया जाय ।

पूर्वाह्णकाल भगवान् भिक्षाचार निमित्त राजगृह आये । राजपथपर आते ही नालगिरि हाथी उनपर छोड़ा गया । भगवान्‌को सामने देखते ही हाथी चिग्घाड़ता हुआ सूँड़ उठाये उनकी ओर दौड़ा—

'आवुस ! हाथी मनुष्यहन्ता है ।'

भगवान् न हटे ।

'वह चंड है । हट जाइये ।

भगवान् स्थिर थे ।

'भन्ते ! वह नालगिरि आ गया ।'

भगवान् शान्त थे ।

अट्टालिकाएँ भर गयीं । लोग भागकर छिप गये । पथ जनशून्य हो गया । हाथीकी भयंकर दौड़ देखकर लोगोंने समझा कि भगवान्‌की लीला समाप्त हुई । तथागतके मुखमण्डलपर किंचिन्मात्र विचलित भाव न था । मुद्रा सौम्य, शान्त पूर्ववत् बनी रही । मुखमण्डल प्रसन्न था । इन्द्रियाँ संयत थीं । लोचनोंमें असीम करुणा थी । हाथी वेगसे आया ।

अचानक रुका। भगवान्‌के पवित्र करकमल सूँड़पर प्रेमसे जा लगे। हाथी जैसे शान्त हो गया। वह धूल उड़ाता उलटा लौट गया।

देवदत्तकी मृत्यु

देवदत्तने संघसे विद्रोह किया। पाँच सौ भिक्षु लेकर गया। भगवान्‌ने सारिपुत्र एवं मुद्गलायनको भेजा। भिक्षुओंको समझाकर लौटा लायें।

जिस समय सारिपुत्र एवं मुद्गलायन पहुँचे, देवदत्तने भिक्षुओंको आमन्त्रित किया। बोला—हमारा धर्म कितना सुआख्यात है कि सारिपुत्र और मुद्गलायन आकर्षित होकर चले आये। वह धर्मदेशना करते-करते थक गया। सारिपुत्रसे उपदेश देनेके लिए कहकर लेट गया। उसे निद्रा आ गयी। सारिपुत्रने धर्मका सार समझाया। देवदत्तके षड्यन्त्रोंका भण्डाफोड़ किया। पाँचो सौ भिक्षु पुनः लौट आये।

देवदत्तके मुखसे गर्म खून गिरने लगा। नौ मासतक बीमार पड़ा रहा। अपनी बीमारीसे खिन्न हो गया। पूछा—

'शास्ता कहाँ है !'

'जेतवनमें।'

'मुझे ले चलो।'

चारपाईपर उसे लोग, ले चले। जेतवन पुष्करिणीके पास आते-आते उसके प्राणपखेरू उड़ गये। भगवान्‌का दर्शन न कर सका।

प्रसेनजित-अजातशत्रु युद्ध

काशी उन दिनों कोशलके अधीन थी। मगधराज अजातशत्रुने काशीपर आक्रमण किया। प्रसेनजित हार गया। वह श्रावस्ती लौट गया। श्रावस्तीमें पिण्डदानके पश्चात् भिक्षुओंसे हाल सुनकर भगवान्‌ने कहा—

'विजय द्वेष उत्पन्न करती है। पराजितकी शयननिद्रा दुःखमय होती है। जो विजय-पराजयसे परे है वह सुखपूर्वक सोता है। अजातशत्रु पापमित्र और प्रसेनजित कल्याणमित्रवाले हैं।'

पुनः अजातशत्रुसे युद्ध हुआ। प्रसेनजितने अपने भांजे राजा अजातशत्रुको पकड़ लिया। वह अवध्य है। उसके हाथियोंको लेकर उसे मुक्त कर दिया।

अजातशत्रु

राजगृहमें कौमारभृत्यके आम्रवनमें भगवान् विहार कर रहे थे। पूर्णिमा थी। अमृतवर्षा हो रही थी। अजातशत्रुका मन प्रकृति की सुरम्यता देखकर खिल गया। उसकी पूजा करनेकी इच्छा हुई। जीवकने भगवान्के पास चलनेकी सलाह दी। राजा उमंगमें चला। मार्गमें उसे सन्देह एवं भय हुआ कि कहीं उसे कोई मार न दे। जीवकने उसे विश्वास दिलाया। वे आम्रवनमें पहुँचे।

भिक्षुसंघके सम्मुख भगवान् पूर्वाभिमुख बैठे थे। राजा नमस्कार कर एक ओर बैठ गया। भगवान्से प्रश्नोत्तर कर उसे सन्तोष हुआ। अभिवादन कर लौटा। उसके जानेपर भगवान्ने कहा—'भिक्षुओ, यदि अजातशत्रुने परम धार्मिक राजा बिम्बिसारकी हत्या न की होती तो उपदेश सुन उसके विमल चक्षु खुल जाते।'

सारिपुत्रका परिनिर्वाण

'आयु-संस्कार समाप्तप्राय है। निर्वाणकाल आ गया है। भगवान् आज्ञा दें।'

श्रावस्तीमें अनाथ पिण्डकके जेतवनमें सारिपुत्रने भिक्षुसंघके बीच भगवान्से कहा—

'निर्वाणस्थान?'

'जहाँ पैदा हुआ हूँ वहीं। मगध देशके नालक ग्राममें अन्तिम अध्याय बन्द करना चाहता हूँ।'

'कायिक एवं वाचिक तुम्हारा कोई ऐसा कार्य नहीं हुआ जो मुझे अरुचिकर लगा हो सारिपुत्र!'

सारिपुत्रने भगवान्की बन्दना की। प्रदक्षिणा की। भगवान् पहुँचाने बाहर आये। मणिफलकपर खड़े हो गये। सुअंजलिबद्ध भगवान्-

का जबतक दर्शन होता रहा सारिपुत्र पीछे हटते-हटते लोप हो गये। विदा होते महान् शिष्यका पीठ-प्रदेश अन्तिम झलकतक भगवान्की ओर न हुआ। भगवान्ने भिक्षुओंको अनुगमनकी आज्ञा दी। नगरके नर-नारी एवं भिक्षु-संघने सजल नयनों उन्हें विदा किया।

नालक ग्राम पहुँचकर बरगदकी छायामें खड़े हो गये। उपरवेत उनका भांजा उधरसे जा रहा था। वन्दना कर खड़ा हो गया। उन्होंने पूछा—'तुम्हारी नानी कैसी हैं ?'

'अच्छी हैं।'

'उनसे कहो कि मैं एक रात जन्मस्थानमें ठहरूँगा। साथ पाँच सौ भिक्षु हैं, उनके भोजनका प्रबन्ध करो।'

जन्मस्थान साफ हुआ। पाँच सौ भिक्षुओंके साथ वे आये। जन्म-कोष्ठमें प्रवेश किया। बैठ गये। मर्मान्तक पीड़ा उठी। संघको विदा किया। रक्तस्राव हुआ। चीवर खींचकर मुख ढँक लिया। दाहिनी करवट लेट गये। प्रथम ध्यानसे चतुर्थ ध्यान लगाया। चतुर्थ ध्यानसे उठते ही उनका परिनिर्वाण हो गया। माता बन्द द्वारके बाहर बैठी रहीं।

शालका महामण्डप तैयार किया गया। मण्डपके मध्य महाकूटा-गार बनाया गया। गन्धमय चिता रची गयी। चितापर शरीर रखा गया। खसकी ढेरीसे शरीर ढक दिया गया। सात दिनोंतक उत्सव होता रहा। अनुरुद्धने ठण्डे जलसे चिता शान्त की। अस्थियोंका चयन कर उन्हें परिश्रावणमें रखा गया। चुन्दने उनकी धातु, पात्र एवं चीवर लेकर श्रावस्ती प्रस्थान किया।

भगवान्की पवित्र हथेलियोंपर सारिपुत्रकी अस्थियाँ थीं। वे शंख-वर्ण थीं। उन्हें हाथोंमें लिये भिक्षुसंघको आमन्त्रित किया।

(मैंने स्वयं सारिपुत्रकी अस्थियाँ सारनाथमें अत्यन्त निकटसे देखी हैं। उनकी अस्थियाँ देखकर मुझपर यही प्रभाव पड़ा कि वे अत्यन्त निर्मल हैं। बौद्धग्रन्थोंमें शंखवर्णका वर्णन वास्तविकतासे मिलता है। वह प्रमाणित करता है कि जो बुद्ध साहित्य मिलता है वह सत्य है।)

मुद्गलायनकी हत्या

तैर्थिकोंने सोचा कि बुद्धकी लोकप्रियताका कारण मुद्गलायनकी यौगिक क्रियाएँ तथा उनका चमत्कार है। उसीके कारण लोग एकत्र होते हैं। यदि उनकी हत्या कर दी जाय तो भिक्षुसंघ तथा भगवान्का आदर-सत्कार कम हो जायगा।

वे कालशिलामें निवास करते थे। रुपयेके लोभसे आततायी उनकी हत्या करनेके लिए तैयार किये गये। उन्होंने दो मासतक उन्हें मारनेका प्रयास किया पर वे विफल रहे।

समय पाकर घातकोंने उन्हें कुचलकर मार डाला। हड्डियाँ भुरता कर दी गयीं। (मैंने मुद्गलायनकी भी अस्थियाँ देखी हैं। सारिपुत्रकी अपेक्षा उनका साँवरा वर्ण है। टुकड़ोंमें हैं। कुचली हुई प्रतीत होती हैं।)

वज्जी और लिच्छवि

अजातशत्रुने वैदेहीपुत्र वज्जियोंको उच्छिन्न करना चाहा। उसने अपने महामात्य वर्षाकारको भगवान्के पास भेजा।

भगवान् गृद्धकूट पर्वत पर थे। आनन्द पीछे खड़े पंखा झल रहे थे। वर्षाकारने अभिप्राय कहा। भगवान्ने आनन्दसे पूछा—

'वज्जि निरन्तर सन्निपात (बैठक) करते हैं?'

'हाँ।'

'क्या वे एक उत्थान, एक बैठक और एक कर्त्तव्यका निश्चय करते हैं?'

'हाँ।'

'विहितको अविहित, विहितका उच्छेद एवं अपने सनातन वज्जि धर्मका पालन करते हैं?'

'हाँ।'

कुमारियों तथा कुलस्त्रियोंको जबर्दस्ती छीनते तो नहीं?'

'नहीं।'

'चैत्योंका सत्कार, दिये हुए दानका लोप तो नहीं करते ?'

'नहीं ।'

'राज्यमें अर्हत सुखपूर्वक विहार करते हैं ?'

'हाँ ।'

'वर्षाकार ! मैं सानन्द चैत्यमें विहार करता था। पूछनेपर मैंने यही सात बातें उनसे कही थीं । जबतक वे उनका पालन करेंगे उनका पतन न होगा ।'

पाटलिपुत्र-निर्माण

राजगृहसे भगवान् लट्ठिका आये । वहाँसे नालन्दामें प्रावारिक आम्रवनमें विहार किया। पाटलि ग्राम गये । सुनीत तथा वर्षाकार राजा अजातशत्रुके आदेशानुसार वज्जियोंका सामना करनेके लिए नगर बसा रहे थे । पूछनेपर भगवान्ने कहा—'इस नगरके तीन शत्रु आग, पानी और पारस्परिक फूट होंगे ।' जिस नगर-द्वारसे भगवान् बाहर निकले उसका नाम गौतम-द्वार हुआ। गंगा पार जिस घाटसे किया उसका नाम गौतम-तीर्थ हुआ ।

अम्बपालिका भोजन

भगवान् वैशाली पहुँचे। अम्बपालिवनमें विहार किया । अम्ब-पालि वैशालीकी मुख्य गणिका थी । उसने सुना तथागत उसके वनमें विहार कर रहे हैं। सुसज्जित रथपर वनमें पहुँची । भोजन निमित्त आमन्त्रित किया । स्वीकार होनेपर प्रदक्षिणा कर लौटी ।

वह प्रसन्न थी। आह्लादित थी। उमंगमें पूरे अल्हड़पनके साथ रथ हाँकती चली । मार्गमें नीला, पीला, लोहित एवं श्वेत वस्त्र पहने अपने-अपने यानोंपर लिच्छवीकुमार भगवान्के यहाँ जा रहे थे । अम्ब-पालि अपने रथके धुरेसे कुमारोंके धुरोंको लड़ाती चली। उसे अत्यन्त प्रसन्न देख उन्होंने पूछा—'यह क्या करती हो ।'

'तथागत भिक्षुसंघके साथ कल हमारे यहाँ भोजन करेंगे ।'

कुमार अवाक् हो गये । लज्जित हुए । बोले—'एक लाख कार्षापण

लेकर कल हमारे यहाँ भगवान्‌को खाने दो।'

'वैशाली जनपद मिलनेपर भी नहीं।' उसने अपना रथ उत्साहसे बढ़ाया।

अपनी पराजय अनुभव करते कुमारगण अम्बपालि वनमें गये। उन्हें देख भगवान्‌ने भिक्षु-परिषद् आमन्त्रित की। लिच्छवी एक ओर बैठ गये। वे बोले—

'भगवान् कल हमारा निमन्त्रण स्वीकार करें।'

'अम्बपालिका स्वीकार कर चुका हूँ।'

'हम वंचित हो गये।' कहते हुए उन्होंने अभिनन्दन किया। प्रदक्षिणा की। लौट गये।

उत्तम भोजन बन जानेपर अम्बपालिने भगवान्‌को सूचित किया। भोजनोपरान्त उसने निवेदन किया—'अम्बपालिवन भिक्षुसंघको देनेकी अनुमति दी जाय।'

बीमारी

वेणुग्राममें भगवान्‌ने वर्षावास किया। उन्हें मर्मान्तक पीड़ा हुई। बीमार हुए। मनोबलसे उन्होंने शरीर ठीक किया। विहारसे निकल विहारकी छायामें बैठे थे। आनन्दसे बोले—'मैं वृद्ध हुआ। अस्सी वर्षकी आयु हुई। पुरानी गाड़ी जैसे मरम्मत कर चलायी जाती है वैसे ही यह शरीर भी चलाया जा रहा है।'

'आनन्द! स्वयं अपने अवलंब बनो दूसरोंकी सहायताकी आशा करना निरर्थक है। तुम स्वयं अपने लिए खुद दीपशिखा बनो। धर्म ही वह दीपशिखा है। दीपकको शक्तिपूर्वक पकड़ो। सत्यको अपना सखा पथिक बनाओ और फिर मुक्तिपथ खोजो।'

वैशालीमें पिण्डपात कर भगवान् आनन्दसे बोले—'आसन उठा लो। चापाल चैत्य चलो। वहीं विहार करेंगे'

आनन्दसे अपने परिनिर्वाणका संकेत किया। आनन्दने कहा—'भगवान् बहुजनहिताय, बहुजनसुखाय, लोकानुकम्पाय, देव एवं

मनुष्योंके हित एवं सुखके लिए जगत्में ठहरें।'

'जिसका काल हो करो—' भगवान्‌ने शान्तिपूर्वक कहा।

निर्वाण-उपक्रम

भगवान्‌ने चापाल चैत्यमें अपनी जीवनशक्तिका त्याग किया। आनन्दसे बोले—'आनन्द! आजसे तीन मास पश्चात् परिनिर्वाण प्राप्त करूँगा। जो उत्पन्न हुआ है वह नाशमान है। उसका नाश न हो यह असम्भव है।'

भगवान् महावन कूटागार-शालामें गये। आनन्दको आदेश किया कि वैशालीके भिक्षुओंको उपस्थानशालामें आमन्त्रित करो। उनके आ जानेपर भगवान्‌ने कहा—

'जिस धर्मका आदेश किया है उसका अनुकरण, अभिवृद्धि एवं भावना करना। ब्रह्मचर्य चिरस्थायी रहे।'

'भिक्षुओ! कृत वस्तु नाशमान है। प्रसादरहित आदर्शोंका सम्पादन करो। मेरी आयु पूर्ण हो गयी है। तुम्हें त्यागकर प्रस्थान करूँगा। अपने करने योग्य सब कर लिया है। आलस्यरहित, सुशील एवं सावधान रहो। संकल्पका समाधान कर चित्तकी रक्षा करो।'

वैशालीसे भण्डुग्रामकी ओर चले। वैशालीने उनका अन्तिम दर्शन किया। विहार करते हुए बोले—'आर्य शील, आर्य समाधि, आर्य प्रज्ञा एवं आर्य विमुक्ति न होनेके कारण आवागमन होता है।'

अम्बग्राम, जम्बूग्राम होते भोगनगर आये। सानन्द चैत्यमें विहार करते हुए पावा पहुँचे।

अन्तिम भोजन

पावामें भगवान्‌ने चुन्द सोनार के आम्रवनमें विहार किया। भगवान्‌को भोजन निमित्त आमन्त्रित कर उसने उन्हें शूकर मार्दव खिलाया।

भोजनके पश्चात् भगवान्‌को रक्तस्राव होने लगा। बीमारी बढ़ गयी। आनन्दको बुलाकर भगवान्‌ने कहा—'कुशीनगर चलो।'

भगवान् चले। मार्गमें एक वृक्षके नीचे चौपेती संघाती बिछानेके

लिए कहा। बिछानेपर बैठ गये। बोले—'आनन्द, प्यास लगी है।'

'कुकुत्था नदी समीप है, जल लाता हूँ।'

भगवान्ने जल पिया। आलरकलामका शिष्य पुक्कुम कुशीनगर और पावाके मार्गपर जा रहा था। भगवान्को वृक्षके नीचे बैठे हुए देखकर कहा—'भगवान् एक बार इसी प्रकार······।'

गुरु वृक्षके नीचे बैठ गये। उनके सामनेसे पाँच सौ गाड़ियाँ निकल गयीं। उन गाड़ियोंके पीछे आते हुए एक आदमीने पूछा कि क्या आपने गाड़ियाँ जाती देखी थीं?

'न देखा और न ध्वनि सुनी।'

'क्या आप निद्रित थे?'

'नहीं।'

'होशमें थे?'

'हाँ'

उसे आश्चर्य हुआ। उनके प्रति श्रद्धा प्रकट कर वह चला गया।

भगवान् बोले—'जाग्रत् बोधावस्थामें गाड़ियोंका आना, जाना, सुनना, देखना कठिन है या होशमें, जागते हुए, पानी बरसते हुए, बादल गरजते हुए, बिजली कड़कते हुए और बिजली गिरते हुए न देखना, न सुनना और न जानना?'

'आपने जो कहा वही कठिन है?'

भगवान्ने कहा—'एक बार मैं आतुमाके भुसागारमें विहार कर रहा था। उस समय घोर वर्षा हुई। बादल गरजे। बिजली चमकी। वज्रपात हुआ। दो किसान भाई तथा चार बैल मर गये। वहाँ भीड़ पहुँची। मैं भुसागारसे निकला। द्वारपर टहल रहा था। भीड़से एक व्यक्ति निकलकर मेरे पास आया। उसने पूछा—'आपने क्या देखा? क्या सुना?' मैंने कहा—'कुछ नहीं।' उसने आश्चर्यसे पूछा—'क्या आप सोये थे? होशमें नहीं थे?' मैंने कहा—''नहीं।' उसे आश्चर्य हुआ, मैंने कहा—'इसमें आश्चर्यकी क्या बात? प्रव्रजित शान्तिसे

विहार करते हैं।'

पुक्कुम बोल उठा—'मैं बुद्ध, धर्म एवं संघकी शरण जाता हूँ।'

उसने ईंगुर रंगका एक जोड़ा शाल भगवान्से लेनेका विशेष आग्रह किया। भगवान्ने कहा—'एक मुझे उढ़ा दो और दूसरा आनन्दको।' वह शाल दे चला गया। आनन्दने शाल भगवान्के शरीरपर फैला दिया। भगवान्ने कहा—

'आनन्द! रात्रिके अन्तिम प्रहरमें मल्लोंके शालवनमें जोड़े शालवृक्षके मध्य कुशीनगरके उपवर्तनमें मैं परिनिवृत्त हूँगा।'

अन्तिम स्नान

कुकुत्था नदीमें अक्लान्त मन भगवान्ने स्नान किया। वे चले। चुन्दक आगे चला, भगवान् भिक्षु-संघके मध्यमें चले। आम्रवनमें पहुँचे। चुन्दकसे चौपेती संघाती बिछानेके लिए कहा। उसने बिछा दी। भगवान्ने पैरपर पैर रख लिया। स्मृति संप्रजन्यके साथ उत्थान संज्ञा की। दाहिनी करवट बैठ गये। आनन्दसे बोले—

'आनन्द! चुन्द करमारको इस चिन्तासे दूर करना कि उसके पिण्डपातके कारण मेरा परिनिर्वाण हुआ है। सुजाताका पायस खाकर बुद्धत्व और तुम्हारा अन्तिम आहार पाकर परिनिर्वाण प्राप्त किया है। उससे मेरा नाम लेकर कहना कि मैंने उसे यही सन्देश दिया है।'

अन्तिम कुछ घड़ियाँ

'आनन्द! हिरण्यवती नदीके उस पार चलो! वहाँ मल्लोंका शालवन है।'

शालवनमें पहुँचकर भगवान्ने आनन्दसे कहा—'दोनों शालोंके बीच उत्तर दिशाकी ओर मस्तक कर मंचक बिछा दो।'

आनन्दने मंचक बिछा दिया। भगवान् दाहिनी करवट सिंहशय्या से लेट गये। आयुष्मान् उपवान धीरे-धीरे पंखा झलने लगे। भगवान्ने कहा—'रहने दो उपवान।'

वाणी मुखरित हुई—'आनन्द! संस्कृत अनित्य है, श्रद्धालु कुल-

पुत्रोंके लिए लुम्बिनी, बोधगया, सारनाथ एवं कुशीनगर दर्शनीय एवं वैराग्यप्रद हैं।'

'स्त्रियोंके प्रति'—आनन्दने पूछा।

'अदर्शन।'

'दर्शन होनेपर?'

'असम्भाषण।'

'सम्भाषण होनेपर?'

'स्मृति स्थिर रखकर व्यवहार करना चाहिये।'

दाहकी अनुज्ञा

'भगवान्‌के शरीरका—?'

'आनन्द! शरीरकी चिन्ता न करो।'

'शरीरकी क्रिया—?'

'चक्रवर्तीके शरीरकी जो क्रिया होती है वही करना।'

'किस प्रकार?'

'इस मिथ्या कायाको नये वस्त्रसे वेष्ठित करना। पुनः धुनी रूईसे लपेटना। नवीन वस्त्रोंसे पुनः वेष्टित करना। तेलकी द्रोणीमें रखकर दूसरीसे ढक देना। सुगन्धित काष्ठकी चिता रचना, भस्म कर देना।'

आनन्द-विलाप

आनन्द अपनेको सम्हाल न सका। विहारकी खूँटी पकड़कर रोने लगा। भगवान्‌ने भिक्षुओंको आमन्त्रित किया। आनन्दको न देखकर बोले—'आनन्द?'

'विहारमें रो रहे हैं।'

'कहो—शास्ता बुलाते हैं।'

'अच्छा।'

आनन्द सिसकता एक ओर बैठ गया।

भगवान्‌ने कहा—'शोक न करो आनन्द! प्रियसे दुःख होता है। उत्पन्नका नाश होगा। उसका नाश न हो यह असम्भव है।'

कुशीनगर

'भगवान् ! इस क्षुद्र नगरमें क्यों परिनिर्वाण करते हैं ? बहुतसे महानगर—चम्पा, श्रावस्ती, साकेत, कौशाम्बी, वाराणसी—'

'आनन्द ! कुशीनगर चक्रवर्ती राजा महासुदर्शनकी राजधानी थी। इसका नाम कुशावती था। समृद्धिशाली थी। जनाकीर्ण थी। सुभिक्ष थी। हस्ति, अश्व, रथ, भेरी, मृदंग, वीणा, गीत, शंखादिकी ध्वनिसे कभी शून्य नहीं होती थी।'

भगवान्ने पुनः कहा—

'आनन्द ! कुशीनगरमें मल्लोंसे जाकर कहो कि रात्रिके अन्तिम प्रहरमें भगवान्का परिनिर्वाण होगा।'

आनन्द पात्र चीवर लेकर कुशीनगरमें गये। मल्लगण संथागारमें एकत्रित थे। आनन्दने भगवान्का सन्देश कहा।

सुनते ही मल्ल दुःखी हो गये। नारियाँ विलख उठीं। केश खुल गये। सब उपवन शालवनकी ओर चले। एक-एक वंशके लोगोंने क्रमसे भगवान्की वन्दना की।

अन्तिम शिष्य

सुभद्र परिव्राजक कुशीनगरमें निवास करता था। उसने समाचार सुना। वह शालवनमें आया। आनन्दसे भगवान्के पास जानेकी अनुमति माँगी। आनन्दने कहा—'थके हैं। उन्हें कष्ट मत दो।'

भगवान्ने बात सुन ली। बोले—'आनन्द ! सुभद्रको आने दो। वह मुझे कष्ट नहीं देना चाहते। अपने प्रश्नोंका उत्तर वह तुरत समझ जायेंगे।'

सुभद्र भगवान्के पास गया। सुभद्रने गम्भीरतापूर्वक पूछा—'सभी अपने-अपने मतोंका दावा करते हैं कि उनका ही कहना सत्य है।'

'सुभद्र ! जिन धर्मोंमें आर्यअष्टांगिक मार्ग उपलब्ध होता है वहीं श्रमण होते हैं, दूसरे वाद श्रमणशून्य हैं।'

'भन्ते।'

'सुभद्र! उनतीस वर्षकी वयमें प्रव्रजित हुआ। प्रव्रज्या लिये इक्यावन वर्ष हो गये।'

'भगवान्! मुझे प्रव्रज्या उपसम्पदा मिले।'

'सुभद्र! अन्य पथावलम्बियोंके लिए प्रव्रज्या एवं उपसम्पदा निमित्त चार मास परिवास करना चाहिये। चार मास पश्चात् विचार स्थिर हो जानेपर आरब्धचित्त भिक्षु प्रव्रजित करते हैं।'

'भन्ते! मैं चार वर्ष परिवास करूँगा।'

'आनन्द।'

'आवुस।'

'सुभद्रको प्रव्रजित करो।'

अन्तिम वचन

'आनन्द! जिस धर्म, जिस विनयका उपदेश दिया है। मेरे पश्चात् वही तुम्हारा शास्ता होगा। भिक्षुगण परस्पर सम्बोधन आवुस कहकर करते हैं। मेरे पश्चात् आयुष्मान् अथवा भन्तेका प्रयोग करेंगे। इच्छानुसार संघ क्षुद्र, अक्षुद्र शिकायतोंका परित्याग कर दे। मेरे पश्चात् छन्न भिक्षुओंको ब्रह्मदण्ड करना चाहिये।'

'ब्रह्मदण्ड क्या?'

'भिक्षु तुम्हें चाहे जो कुछ कहें किन्तु उपदेश तथा उनसे सम्भाषण न करना।'

'आनन्द! भिक्षुओंको आमन्त्रित करो।'

भिक्षुओंके आ जानेपर भगवान्‌ने कहा—'किसीकी शंका हो तो प्रश्न कर लो।' सब नीरव थे।

अन्तिम वाणी मुखरित हुई।

'हन्द दानि भिक्खवे! अमन्तयामि, वो वय धम्मा सरवारा, अप्पमादेन सम्पादियाति।'

(भिक्षुओ! संस्कार व्ययधर्मा है। अप्रमादके साथ सम्पादन करो

यही तथागतका अन्तिम वचन है ।)

निर्वाण

प्रथमसे द्वितीय, द्वितीयसे तृतीय और तृतीयसे चतुर्थ ध्यानको भगवान् प्राप्त हुए ।

आकाश नन्त्यायन, विज्ञान नन्त्यायन, आकिंचन नन्त्यायन, नैव संज्ञायतन संग संज्ञा वेदमितन निरोधको क्रमशः प्राप्त हुए ।

भगवान् परिनिवृत्त हुए ।

आनन्दने अनिरुद्धसे पूछा—'अनिरुद्ध ? तथागतका श्वासप्रश्वास शेष हो गया । वे शान्त एवं निष्कम्प हैं ।'

भगवान्‌के परिनिवृत्त होते ही अवीतराग भिक्षु बिलखने लगे । एक दूसरेसे लिपटकर चिल्लाने लगे । कितने मूर्च्छित होकर गिर गये । किन्तु वीतराग भिक्षुओंने कहा—'संस्कार अनित्य है ।'

आयुष्मान् अनिरुद्धने कहा—'शोक न करो, रुदन न करो, सभी प्रियसे बिदाई अवश्यम्भावी है ।'

शेष रात्रि आयुष्मान् अनिरुद्ध तथा आनन्दने भगवान्‌के शवके पास धर्मकथामें व्यतीत की । प्रातः होते ही अनिरुद्धने आनन्दसे कहा—'आनन्द ! कुशीनगर जाकर मल्लगणको सूचित करो ।'

पात्र चीवर लेकर आनन्दने कुशीनगर प्रवेश किया । मल्ल संघागारमें एकत्रित थे । वहाँ जाकर बोले—

'वाशिष्ठो ! भगवान् परिनिवृत्त हुए । कालानुसार कार्य करो !'

मल्लोंने आज्ञा प्रसारित की, गन्ध, पुष्प, माल्य, वाद्य आदि एकत्र करनेकी ।

एक सप्ताह

कुशीनगरके मल्ल पुष्प, माला, गन्ध, वाद्य, वस्त्रादि लेकर आये । भगवान्‌के शवका वाद्य, नृत्य, गन्ध, पुष्पादिसे सत्कार किया । गुरुकार किया । मान किया । पूजन किया । वस्त्रोंका मण्डप आदि बनाते वह दिन समाप्त किया । भगवान्‌की पूजा, सत्कार, नृत्य एवं गान करते

हुए एक सप्ताह बीत गये।

शवयात्रा

सातवें दिन नगरके दक्षिण दिशामें शवदाहका प्रबन्ध किया गया।

आठ प्रमुख मल्लोंने स्नान किया। नवीन वस्त्र धारण किया। मन्दार पुष्पकी वर्षा हुई। दिव्य मानवीय नृत्यके साथ शवको उठाना चाहा। न उठा सके। मल्लोंने आश्चर्यित होकर अनिरुद्धकी ओर देखा। वे बोले—

'भगवान्के शरीरको नगरके उत्तर ले जाओ। उत्तर द्वारसे नगरमें प्रवेश करो। नगरके मध्यमें ले जाओ। पूर्व द्वारसे निकलो। वहाँ मुकुटबन्ध नामक चैत्य है, वहीं दाह क्रिया करो।'

'ऐसा ही होगा। अब हम क्या करें?'

'चक्रवर्ती राजाकी जैसे अन्त्येष्टि की जाती है उसी अनुसार।'

मल्लोंने धुनी रूई एकत्र करवायी शरीरको नवीन वस्त्रमें लपेटा गया। धुनी रूईमें लपेटा गया: पुनः नवीन वस्त्रोंसे वेष्टित किया गया। द्रोणीमें रख दूसरी द्रोणीसे ढक दिया गया।

शव मल्लोंने उठाया। उत्तर द्वारसे प्रवेश कर मध्यनगर होते हुए पूर्व द्वारसे निकल मणिबन्ध चैत्यके पास गये। वहाँ सुगन्धित काष्ठकी चिता रची गयी। द्रोणी चितापर रखी गयी।

चार प्रमुख मल्लोंने स्नान कर नवीन वस्त्र धारण किया। वे अग्नि लगाना चाहते थे किन्तु न लगी। उसी समय महाकाश्यप पाँच सौ भिक्षुओंके साथ वहाँ पहुँचे। उन्हें पावा एवं कुशीनगरके मार्गमें एक आजीवकने भगवान्के परिनिर्वाणका समाचार दिया था। चिताके समीप पहुँचे। एक कन्धेपर चीवर रखा। अंजलिबद्ध तीन बार चिताकी परिक्रमा कर चरणोंकी वन्दना की। चिता जलने लगी।

चिता जल जानेपर आकाशमें मेघ उठे। मेघ-जलसे चिता ठण्डी हुई। मल्लोंने भी गन्धमय जलसे चिता शान्त की।

भगवान्की धातु अथवा अस्थियोंका चयन कर संथागारमें मल्लोंने

रखा। सात दिनतक पूजा, सत्कार, गीत, नृत्य, वाद्य द्वारा मल्लोंने उत्सव मनाया।

स्तूप-निर्माण

राजा अजातशत्रुने, वैशालीके लिच्छवियोंने, कपिलवस्तुके शाक्योंने, अल्लकप्पके बुलियोंने, रामग्रामके कोलियोंने, विष्णुद्वीपके ब्राह्मणोंने, पावाके मल्लोंने सुना। उन्होंने स्तूप-निर्माण निमित्त धातु माँगी।

मल्लोंने अस्वीकार किया। द्रोण ब्राह्मणने समझाया। बुद्ध शांति-वादी थे। यह अनुचित होगा कि शांतिमय पुरुषके धातु-विभाजनके प्रश्नपर विवाद खड़ा हो। धातु आठ भागोंमें विभाजित कर बाँट दीजिये।

मल्लोंने विभाजनका भार द्रोणपर ही छोड़ा। द्रोणने धातु विभाजित कर कहा—'जिस तुम्बमें भगवान्की धातु रखी है मुझे दे दो।' उसे तुम्ब मिल गया। तुम्बपर उसने स्तूप बनवाया।

पिप्पली वनके मोरियोंने धातु न पाकर कोयला माँगकर उसपर अंगार-स्तूप बनाया।

अजातशत्रु, वैशालीके लिच्छवियों, कपिलवस्तुके शाक्यों, अल्ल-कप्पके बुलियों, रामग्रामके कोलियों, विष्णुद्वीपके ब्राह्मणों, पावाके मल्लों, कुशीनगरके मल्लोंने आठ धातु स्तूपोंका निर्माण किया। तुम्ब एवं अंगार स्तूप सहित दस स्तूपोंकी पूजा होने लगी।

२. कनफ्यूशियस

चीन यूरोप महाद्वीपसे बड़ा है। उसकी जनसंख्या विश्वकी समस्त जनसंख्याका चतुर्थांश है। उसमें लगभग पचीस करोड़ कनफ्यूस हैं। दो करोड़ मुसलमान हैं। दस लाख ईसाई हैं। बौद्ध, मुसलिम एवं ईसाई धर्म बाहरसे चीनमें आये हैं। बौद्ध धर्म लोगोंके हृदयमें स्थान कर गया है। लोग प्रायः भूल गये हैं। बौद्ध धर्म बाहरसे आया था।

चीनका क्रमबद्ध इतिहास चार हजार वर्षोंसे मिलता है। प्राचीन आलेख प्रायः हड्डियों तथा पत्थरोंपर मिले हैं। उसका ज्ञानभण्डार अति पूर्ण है। यंग-चूका व्यष्टिवाद, मोहत्जेका सम भ्रातृत्व, अनाक्रमणवाद, अनेक दार्शनिक सिद्धान्त जिन्हें आधुनिक सिद्धान्त कहते हैं, आजसे दो सहस्र वर्ष पूर्व चीन की उर्वरा भूमिमें पनप चुके थे।

सृष्टिरचना

चीनी गाथा है कि सृष्टिरचनाके पूर्व कुछ नहीं था। यह स्थिति बहुत दिनोंतक रही। तत्पश्चात् कुछ उत्पन्न हुआ। उस कुछसे पान-कू उत्पन्न हुआ। 'पान-कू' महाकाय था। बहुत कालतक जीवित रहा। कब मरा, कहा नहीं जा सकता। लेकिन वह मरा। वह कराहा। उसका कराहना बिजली हुई। अन्तिम श्वास मरुत हुआ। बायीं आँख सूर्य हुई। दाहिनी आँख चन्द्रमा हुई। उसकी शिराओंके रक्तसे सरिताएँ हुईं। रोमावली जंगल हुई। मांस भूमि हुआ। सृष्टिरचनाके पश्चात् मानव उत्पन्न हुआ। चीनकी सृष्टिरचना कल्पना हिन्दू, मिस्र, बेबिलोन, बाइबिल आदिकी कल्पनासे सर्वथा भिन्न है।

आकाश

सहस्रों वर्ष पूर्व चीनी लोग वैदिक आर्योंके समान प्राकृतिक शक्ति-

योंके उपासक थे। वे विश्वास करते थे कि सूर्य, चन्द्रमा, अग्नि, वायु, बिजली, पर्वत एवं नदियोंमें जीव होता है। इन सब जीवोंके ऊपर भी एक जीव था। उसका नाम शंग था। वह बड़ा न्यायी था। उसके ऊपर भी एक देवोंका देव था। उसे तेज कहते थे। वह आकाश अर्थात् स्वर्गमें रहता था।

आकाशमें नक्षत्र उदय-अस्त होते हैं। आकाशसे पानी बरसता है। आकाशमें इन्द्रधनुष उत्पन्न होता है। विलीन होता है। आकाशमें वायु बहता है। आकाशमें आँधी आती है। आकाशमें बिजली चमकती है। अतएव चीनके लोगोंकी धारणा हो गयी कि शक्तिका केन्द्र आकाश है। जगत्‌की सब शक्तियोंका उद्‌गम आकाश है। योगवाशिष्ठकारने आत्मा-को चिदाकाश कहा है। आकाशको तीन विभागोंमें अर्थात् चिदाकाश, आकाश एवं भूताकाशमें विभाजित किया है। आकाशको ही उत्पत्ति एवं लय स्थान माना है। चीनने आकाशके इस सिद्धान्तको वैज्ञानिक ढंगसे उस प्रकार नहीं रखा है जैसा कि योगवाशिष्ठकारने।

आत्मा

मरनेपर आत्मा कहीं चली जाती है। शरीर पृथ्वीपर रह जाता है। आत्मा आकाशमें रहती है। स्वर्गमें रहती है। कहीं रहती है। उसके अस्तित्वका लोप नहीं होता। हिन्दुओंके समान चीनी भी आत्माको अविनाशी मानते हैं। अतएव चीनी लोग दिवंगत आत्माकी पूजा करने लगे। पूजा उनके दैनिक जीवनका अंग हो गया। पितृश्राद्ध किंवा पितृतर्पणमें वे हिन्दुओंके समान अटूट विश्वास करते हैं। प्रत्येक वंश अपने पितरोंकी पूजा करता है। उन्हें अपने बीच अनुभव करता है।

लगभग पाँच हजार वर्ष पूर्व चीनके पीत सम्राट्‌ने अपनी राज-धानीमें पर्वत एवं नदियोंकी आत्माके लिए मंदिर बनवाया। अनन्तर अनेक आत्माओंके लिए अनेक मन्दिर बनने लगे। चीनके एक सम्राट्‌ने कहा देवताको संगीत प्रिय हैं। मन्दिरोंमें संगीत होने लगे उनकी प्रसन्नताके निमित्त बलि भी दी जाने लगी।

भौगोलिक स्थिति

चीनपर बाहरी सभ्यता, संस्कृति, धर्म एवं विचारधाराओंका बहुत कम असर पड़ा है। उसका विकास अपने ढंगका अनोखा, मौलिक है। इसका कारण उसकी भौगोलिक स्थिति है। पूर्वमें प्रशान्त महासागर है। पश्चिममें गोबीकी मरुभूमि एवं साइबेरियाका जनहीन भूखण्ड। उत्तरमें वनस्पति शून्य एवं हिमाच्छादित साइबेरिया और दक्षिणमें हिमालय पर्वत तथा बर्माका जंगलमय पर्वतीय प्रदेश है।

उसमें तिब्बत, सिकियांग तथा मंगोलिया जनहीन मरु प्रदेश हैं। वह तीन प्राकृतिक भूखण्डोंमें विभाजित है। ह्वांगहो नदी पचीस सौ मील लम्बी है। उसका शाब्दिक अर्थ पीत नदी होता है। वह पश्चिमी पर्वतमालासे निकलकर पीत सागरमें गिरती है। यह पीली मिट्टी बहाकर लाती है अतएव उसका नाम पीत अर्थात् पीली नदी पड़ गया है। इसके परिवेष्टक प्रदेशको उत्तरी चीन कहते हैं। चीन ही नहीं एशियाकी सबसे बड़ी नदी यांगसीक्यांग तिब्बत और सीकांगके ऊँचे प्रदेश से निकलकर नानकिंग नगरका स्पर्श करती समुद्रमें गिरती है। शांघाई महानगरी इसके संगमसे थोड़े ही दूरपर है। इसकी लम्बाई तीन हजार मील है। इसे चंगकियांग अर्थात् लम्बी नदी या ताकियांग अर्थात् महानद कहते हैं। इसमें सोलह सौ मीलतक छोटे जहाज चल सकते हैं। इसकी घाटीको मध्यचीन कहते हैं। चीनकी तीसरी नदी सिकियांग है। वह यून्नानकी अधित्यकासे निकलकर पूर्व और दक्षिणी चीन सागरमें हांगकांगके पास मिलती है। इसकी लम्बाई साढ़े बारह सौ मील है। इसकी उपत्यकाको दक्षिणी चीन नामसे सम्बोधित करते हैं।

उसकी भौगोलिक स्थितिने उसे प्राचीन सभ्यताओंसे दूर रखा। उसपर बाहरी आक्रमण न हुआ। आक्रमणोंके भयके अभावमें अविच्छिन्न गतिसे एक दिशामें बहता गया। वह दशा चीनकी अपनी अनोखी विचारधारा है। उसे उसकी सभ्यता, संस्कृति, साहित्य, धर्म, कलादिमें पाते हैं। उसे समझनेके लिए किंचित् परिश्रमकी आवश्यकता है। हम

जिन विचारधाराओंके सम्पर्कमें आये हैं अथवा जो अपनी हैं उससे सर्वथा भिन्न दिशा चीनकी है।

जाति

मानवजगत्‌में आर्य, मंगोल, हब्शी, सेमेटिक तथा अमेरिकाके रेड इण्डियनोंकी ही मुख्य जातियाँ मानी गयी हैं। कहा जाता है कि अन्य जातियाँ इन्हींके मिश्रणोंके फल हैं।

आर्य जातिने वैदिक, जरदस्तु, यूनान, रोम, बेबिलोन, असुर, अक्कद, मिस्र आदिकी धर्मपरम्पराएँ चलायी हैं। सेमेटिक जातिने यहूदी, ईसाई एवं मुसलिम धर्म उत्पन्न किया है। आर्य एवं सेमेटिक दोनों परम्पराएँ ईश्वरकी शक्तिमें विश्वास करती हैं। आर्योंने एकेश्वरवादके साथ ही बहुदेव पूजावादको भी स्थान दिया है। सेमेटिक धर्मोंने केवल एकेश्वर-वादको स्वीकार किया है।

मंगोल जातिकी परम्परा विचित्र है। ईश्वरका रूप उसमें स्पष्ट नहीं है। कतिपय विद्वान् उन्हें नास्तिक मानते हैं। कतिपय उन्हें दैव-वादी मानते हैं। कुछ उन्हें दोनोंके बीचका स्थान देते हैं।

मंगोलियन जाति चीन, जापान, प्रशान्त महासागरके द्वीपों एवं दक्षिण पूर्व एशियामें आबाद है। वह रेड इण्डियनोंके समान विश्वसे प्रायः अलग रही है। हब्शी तथा रेड इण्डियन जातियाँ विचारोंके आदान-प्रदान एवं साहित्य न होनेके कारण चाहे कभी सुसंस्कृत रही हों परन्तु जंगली सभ्यतासे वे ऊपर न उठ सकीं। आर्य और सेमेटिक जातियोंका पारस्परिक सम्बन्ध, आवागमन एवं संघर्ष होता रहा है। उनका विकास हुआ। उस विकासमें दोनोंने एक दूसरेको प्रभावित किया। वे अछूती नहीं रही हैं।

चीनका विकास

चीन एक विचित्र नकशा सामने रखता है। उसका विकास अनोखा है। उसने सर्वथा स्वतन्त्र मार्गका अनुसरण किया है। वह मार्ग स्वयं उसके द्वारा ही सदियोंसे प्रशस्त किया जाता रहा है।

अतएव बुद्धधर्मके प्रवेशके पूर्वका चीन विशेष प्रकारकी कला, संस्कृति एवं धर्मव्यवस्थाको विश्वके सम्मुख रखता है, उनके अध्ययनसे स्पष्ट प्रकट होगा कि चीनवाले आर्य एवं सेमेटिक विचारधाराओंसे अपनी भौगोलिक स्थितिके कारण अछूते रहे हैं।

चीनमें लिपि नहीं है। शब्दोंके लिए चिह्नका प्रयोग किया जाता है। उनका उच्चारण मूलमें क्या था, कहना कठिन है। बहुतसे चिह्नोंका मूल उच्चारण लोप हो गया है। वे सर्वदाके लिए लुप्त ही समझे जायँगे। प्रस्तुत लेखकी सामग्री अंग्रेजीमें लिखित पुस्तकें अथवा अन्वेषण हैं। चीनी दूतावासको भी हमने लिखा था। उन्होंने कन्फ्यूशियस के सम्बन्धमें प्रामाणिक पुस्तकें अंग्रेजीमें देनेमें असमर्थता प्रकट की। किसी देशकी भाषाका जबतक ज्ञान न हो तबतक प्रामाणिक रूपसे कुछ कहना कठिन होता है। यह कठिनाई जरदस्तु, मूसा, बुद्ध, ईसा तथा मुहम्मदकी जीवनीके लेखनके समय महसूस नहीं हुई। जिस अधिकारके साथ उनकी प्रामाणिकताके सम्बन्धमें मैं कह सकता हूँ वही बात इस जीवनीके सम्बन्धमें कहनेमें कठिनाई है। हमारा ज्ञान अंग्रेजी अनुवादोंपर आधृत है। अतएव साधिकार कुछ कहनेमें हिचक होती है।

बीसवीं शताब्दीमें चीनमें भी कुछ खनन कार्य हुआ है। पीकिंगमें अत्यन्त प्राचीन मानव शव पाया गया है। प्राप्त अन्य सामग्रियोंसे प्रमाणित होता है कि चीनमें मानव उतना ही सक्रिय था जितना कि विश्वके किसी सभ्य देशमें। नियोलिथिक संस्कृति आजसे चार हजार वर्ष पूर्व चीनमें विकसित थी। उत्तरपूर्व तथा उत्तर-पश्चिम चीनमें उसी प्रकारके मिट्टीके बर्तन मिले हैं जैसे साढ़े पाँच हजार वर्ष पूर्वके बेबिलोनके खननमें प्राप्त हुए हैं। चीनकी सभ्यता किसी भी प्राचीन देशसे कम पुरानी नहीं मालूम होती। यातायातके अभाव एवं भौगोलिक स्थिति के कारण उसका सम्पर्क मिस्र, भारत आदिसे न हो सका। वे एक दूसरेको प्रभावित नहीं कर सके।

इतिहास

चीनका प्रामाणिक इतिहास ईसा पूर्व चौदहवीं शताब्दीसे मिलता है। हड्डियों तथा पत्थरोंपर लिखे आलेख खनन कार्यों द्वारा प्राप्त हुए हैं। शंग राजाका वर्णन मिलता है। उसकी राजधानी उत्तरी होनान प्रदेशमें थी। वहाँके खनन अन्वेषणोंसे सिद्ध हुआ है कि तत्कालीन सभ्यता काफी विकसित हो चुकी थी। ताँबेके प्राप्त पात्र विश्वमें अपना सानी नहीं रखते। यह सभ्यता नष्ट नहीं हुई।

ईसा पूर्व ग्यारह सौ बाइसमें पश्चिमके शेन्सी प्रदेशके लोगोंने उनपर आक्रमण किया। वे पराजित हुए। आक्रामक नेताने विजयके पश्चात् चाओ राज्यवंश स्थापित किया। विजयानन्तर सामन्तशाही प्रथाने जोर पकड़ा। प्रत्येक सामन्त अपने क्षेत्रोंका स्वतन्त्र शासक परवर्ती मुगलकालीन जिलेदारों एवं नवाबोंकी तरह बन गया। यह प्रथा राजपूतानेके जागीरदारों तथा अवधके ताल्लुकदारोंके तुल्य थी। ब्रिटिशकालीन भारतीय रियासतोंसे भी उनकी तुलना की जा सकती है। उनका एकमात्र काम यही रह गया था कि जब राजाको सेना अथवा धनकी आवश्यकता होती थी तो वे उसे सहायता देते थे। चाओ काल चीनका स्वर्णयुग कहा जाता है। वह चीनकी एकता, शान्ति एवं संस्कृतिके विकासका आदर्शकाल था।

समयकी गतिके साथ चाओ वंशका भी सितारा ढला। सामन्त लोग प्रबल हो गये। राजाकी बातोंकी उपेक्षा उसी प्रकार होने लगी जैसे अठारहवीं तथा उन्नीसवीं शताब्दीके पेशवाकी बातोंका मराठा सरदार, राजे और दिल्लीके मुगल बादशाहोंके सूबेदार और नवाब करते थे।

केन्द्रीय शासनके दुर्बल होनेके कारण सामन्त आपसमें लड़ने लगे। बली सामन्त निर्बलोंको हजम करने लगे। कन्फ्यूशियसके पैदा होनेके दो सौ बीस वर्ष पूर्व अर्थात् ईसा पूर्व सात सौ इकहत्तरमें सामन्तोंने एक संयुक्त मोर्चा अभद्र चीनियोंके विरुद्ध कायम किया।

पाश्चात्य लेखकोंने अभद्र चीनियोंको 'बारबेरियन' के नामसे सम्बोधित किया है। वे बारबेरियन किंवा अभद्र इस अर्थमें थे कि चीनी जातिके होते हुए भी वे चीनियोंके सदृश सुसंस्कृत नहीं थे।

उन लोगोंने चाओकी पश्चिमी राजधानीपर आक्रमण किया। राजा मारा गया। पश्चिमी चाओ राज्यका अन्त हो गया। होनान प्रदेशके लोयेगमें पूर्वी चाओकी राजधानी थी। राजा दिल्लीके सैयद बन्धुओंके समान सामन्तोंके हाथोंकी कठपुतली मात्र रह गया था।

ईसा पूर्व छः सौ सत्तानबेमें चाओकी रियासतोंका एक संघ स्थापित हुआ। उनमें सबसे शक्तिशाली और सुप्रतिष्ठको 'पा' की उपाधि दी गयी। लगभग दो शताब्दीतक वे राजाका सभी कार्य देखते रहे। उनका पद नेपालके राणाओंके समान हो गया था। राजाके जिम्मे केवल धार्मिक कृत्य रह गया था। रियासतोंकी सीमाएँ बदलती रहती थीं। पारस्परिक संघर्ष भी हो जाया करता था। फिर भी पीत नदीके समीप चीनकी प्राचीन संस्कृति एवं परम्परा अक्षुण्ण बनी रही।

चाओ राजाका सुंगराज प्रधान था। इसके उत्तरपूर्व कन्फ्यूशियसकी जन्मभूमि लू थी। इस क्षेत्रने चीनमें बहुतसे दार्शनिक एवं मनीषी उत्पन्न किये हैं। उन लोगोंने शान्ति एवं मानवीय सुखपर विशेष जोर दिया है।

दक्षिणका चू राज्य शक्तिशाली था जिसका यांगत्जे घाटीपर प्रभुत्व था। आकस्मिक युद्धों एवं संघर्षोंके कारण महत्त्वहीन हो गया था। चूका राज्य असांस्कृतिक कहा जाता था। धीरे-धीरे वह बृहद् चीनमें विलीन हो गया। यही अवस्था पश्चिमके राज्य चिनके विषयमें भी कही जा सकती है। उसकी राजधानी शेन्सी थी। वह पुराने चाओका प्राचीन राज्य था। चीनकी संस्कृति केन्द्रीय चीनसे भिन्न थी। उत्तरके असंस्कृत लोगोंको ती कहते थे। उन्होंने भी चीनके राज्योंके लिए खतरा उत्पन्न कर दिया था।

सन्धि-प्रथा

चीन अराजकताकी स्थितिमें था। अनेक राज्यों, रियासतों, ताल्लुकेदारियों आदिमें वह विभाजित था। संघर्ष होता था। सन्धियाँ होती थीं। लोग मरते थे। मारते थे। संधि धार्मिक कृत्य तुल्य पवित्र संस्कार मानी जाती थी। संधि लिखी जाती थी। एक पशु बलि किया जाता था। बलि-पशुके रक्तमें सन्धिपत्र डुबाया जाता था। प्रत्येक पक्ष सन्धिको ऊँची आवाजसे पढ़ता था। सब लोग सुनते थे। पढ़नेके पश्चात् पढ़नेवाला अपना ओठ बलिपशुके रक्तमें डुबाता था। सन्धिपत्रकी एक प्रति बलिपशुके साथ भूमिमें गाड़ दी जाती थी। इतनी प्रक्रियाओंके पश्चात् भी सन्धियाँ किंचित् मात्र विक्षोभ होनेपर तोड़ दी जाती थीं। धार्मिक कृत्योंके साथ की गयी सन्धियोंका इस प्रकार तोड़ना प्रमाणित करता है कि नैतिकता गिर चुकी थी। चंगने इसी प्रकारकी सन्धि की। परन्तु दो मास पश्चात् उससे विमुख हो गया। चीनमें मनुके शब्दोंमें मत्स्य न्यायका ही बोलबाला हो गया था।

अराजकता

कनफ्यूशियसकी जन्मभूमि लू रियासतमें थी। लू बहुत छोटी एवं शक्तिहीन रियासत थी। उसे शक्तिशाली समीपवर्ती राज्य हजम कर सकते थे, उसकी स्थापना चाओके भाईने की थी। उसका धार्मिक आदर ही उसके अस्तित्वका कारण था। ईसा पूर्व सात सौ बरससे चार सौ इक्कासीके बीच उसपर इक्कीस बार सैनिक आक्रमण हुए थे। शक्तिसम्पन्न राज्य ची लूकी सीमापर था। चीके साथ सर्वदा संघर्ष होता रहता था। कमजोर होनेके कारण लू बाहरी रियासतोंसे मदद लेता था। ईसा पूर्व छ सौ चौंतीसमें लूने दक्षिणी असंस्कृत राज्यसे सहायता ली थी। ईसा पूर्व छ सौ नौमें चीने लूके एक मन्त्रीकी सहायतासे उसके उत्तराधिकारियोंकी हत्या करवा डाली। राजाकी दूसरी स्त्री द्वारा उत्पन्न सन्तानोंको गद्दीपर बैठाया। जबतक लूका यह कठपुतली राजा जीवित रहा चीका वास्तविक अधिकार लूपर कायम

रहा। लूने चीसे छुटकारा पानेके लिए चिनसे मदद ली। किन्तु साथ ही लू अपनेसे दुर्बल छोटी रियासतोंको स्वयं लूटता था। उन्हें अपने राज्यमें मिला लेता था। ईसा पूर्व आठ सौ एकतालीससे दो सौ एकसठका काल चीनका सामन्तशाही काल कहा जाता है। चारों ओर अराजकता एवं बेचैनी थी। सामाजिक उथल-पुथल एवं सामाजिक विघटनका अशान्त काल था। लेकिन कहना न होगा कि चीनके बौद्धिक विकास एवं दर्शनका सर्वश्रेष्ठ काल भी वही था।

तीन वंश

ईसा पूर्व सात सौ ग्यारहसे छः सौ सत्तानबेतक लूपर हौनका राज्य था। उसे तीन पुत्र थे। उन पुत्रोंसे मांग, शू तथा ची, तीन वंश चले। इन शब्दोंका शाब्दिक अर्थ है ज्येष्ठ, तृतीय एवं कनिष्ठ। कनिष्ठ पुत्र ची ने अपने ज्येष्ठ भ्राताकी, लू राज्य हड़पनेकी योजनाको पसन्द नहीं किया। लूके वास्तविक उत्तराकारीकी रक्षा की। फलस्वरूप उसे प्रधान मन्त्रित्व मिला। चीनके वंशमें ही नेपालके राणाओंके समान प्रधान मन्त्रिपद उत्तराधिकारके अनुरूप चलता रहा। कन्फ्यूशियसके जन्मके एक सौ पचास वर्ष पूर्वतक इन्हीं वंशोंमें लूकी राज्यव्यवस्था रही।

ईसा पूर्व ६०९ में दो वंशोंने मिलकर लूके वास्तविक उत्तराधिकारीकी हत्या की। अपनी रुचिके व्यक्तिको राजसिंहासनपर बैठाया। ईसा पूर्व पाँच सौ बासठमें उन लोगोंने राज्यको आपसमें बाँट लिया। लूके राजाके पास नेपालके राजाके समान राजकीय सम्मानके अतिरिक्त और कुछ न रह गया। ईसापूर्व पाँच सौ सैंतीसमें कनफ्यूशियसकी उम्र पन्द्रह वर्षकी थी। उस समय ची वंशने आधा लू राज्य स्वयं ले लिया। शेष आधेको यँग तथा शू वंशोंमें बराबर बराबर बाँट दिया। उक्त वंशवाले दया कर जो दिया करते थे लूका राजा उसीपर गुजारा करता था।

समाज

सामन्त लोग स्त्रियोंके लिए लड़ते थे। छोटी-छोटी बातोंपर संघर्ष

हो जाता था। कौटुम्बिक षड्यन्त्रोंका प्राबल्य था। कुलीनोंके लिए परस्त्रीगमन साधारण बात हो गयी थी। एक बार लूका राजा चीके यहाँ गया। चीने उसे तबतक रोक रखा जबतक कि उसने अपनी दूसरी कन्याकी शादी चीके मन्त्रीके साथ न कर दी। चूके राजाने सुना कि छोटी रियासत ह्सीके स्वामीकी स्त्री सुन्दरी है। चू दावत देनेके बहाने ह्सीके यहाँ आया। उसकी हत्या की। रियासतको अपने राज्यमें मिला लिया। उसकी स्त्रीको अन्तःपुरमें डाल दिया।

कुलीन वर्ग

कुलीन वर्ग अत्याचारी था। उसे स्वयं अपनी रक्षाका भरोसा नहीं था। फिर भी मानव प्रकृतिके अनुसार वह दुर्बलोंपर अत्याचार करनेमें अपने गौरव एवं शक्तिका प्रदर्शन समझता था। जनता पूर्णतया अरक्षित थी। कृषकोंकी प्रधानता थी। नामके लिए स्वाधीनता थी। कुलीन वर्ग उनपर कर लगाता था। बेगार लेता था। उन्हें इस सीमातक सताया जाता था कि न वे मर सकें और न विद्रोही बन जायँ। असफल विद्रोह-का दण्ड अत्यन्त ताड़नामय मृत्युदण्ड था।

कुलीन लोग अपने क्षेत्रकी सीमाके बाहर चलते तो मानो अराजकता उनके आगे नाचती चलती थी। वे पेड़ काट डालते थे। फसल नष्ट कर देते थे। जिस मकानमें रहते थे उसे नष्ट कर देते थे। तलवारोंके जोर से लोगोंसे सहायता लेते थे। सुंगराजकी राजधानीपर एक बार घेरा डाल दिया। वह घेरा तबतक पड़ा रहा जबतक लोग अपनी सन्तानोंका मांस न खाने लगे। वे अपनी सन्तानोंका मांस स्वयं नहीं खा सकते थे, अतएव दूसरेकी सन्तानोंसे बदलकर उन्हें मारते थे।

यूनान तथा चीन

बहुपत्नी प्रथा प्रचलित थी। प्रत्येक रियासतका मालिक राजा तुल्य प्रासाद बनाकर रहना चाहता था। जनतापर बोझ बढ़ता जाता था। जनता त्रस्त होने लगी। यूनानके नगर-राज्योंके समान चीनमें छोटे-छोटे राज्योंका बाहुल्य हो गया। यूनानके समान चीनमें भी इस

भावनाने जोर पकड़ लिया कि छोटे राज्य यूनानी हेलासकें समान चू हूसीगके अविभाज्य अंग हैं। इस कालमें इन दोनोंमें जो भी विद्वान् एवं सुधारक उत्पन्न हुए वे केवल यही सोचते रहे कि किस प्रकार छोटे-छोटे राज्योंको मिलाकर उन्हें एक आदर्श राज्यके रूपमें परिणत कर दिया जाय। दोनों ही देशोंकी इस विचारधाराका स्वाभाविक परिणाम यह हुआ कि मानव-जीवनके मूल स्रोतकी ओर लोगोंकी अन्तरदृष्टि उन्मुख हुई। वे जगत्‌के अस्तित्व, रचना एवं विनाशकी ओर विचार करने लगे।

राजनीतिक एकीकरणकी भावनाने दोनों देशोंमें दर्शन एवं धर्मके मौलिक सिद्धान्तोंकी ओर लोगोंको आकृष्ट किया। दोनों ही देशोंके दार्शनिकोंने जगत्‌के इतिहासको प्रभावित किया। वे प्रतिक्रियावादी नहीं थे। उनका उद्देश्य आदर्श सनातन था। वे परम्परागत कुलीनता-का विसर्जन चाहते थे। उन्होंने सामाजिक एवं राजनीतिक सुधारकी बातें कहीं। वे महान् क्रान्तिकारी थे। उनकी क्रान्तिकी चिनगारी उनके महाप्रयाणके शताब्दियों पश्चात् उठी। परम्परागत कुलीनताका उनमें लोप हो गया। कनफ्यूशियस इन्हीं दार्शनिकोंकी सुमिरिनीके एक दाने थे। उन्होंने लोगोंसे माँगी बुद्धि और परिश्रम। उसने सशस्त्र क्रान्तिका स्वप्न नहीं देखा। उसने बुद्धि बदलकर राष्ट्रकी जनताको बदलना चाहा। वह रक्तहीन क्रान्तिका उपासक था। मूसा, मुहम्मद एवं गांधी-की क्रान्तिसे उसकी क्रान्तिका रंग निराला था। उसने जनताके विचार-को जनताकी अध्ययनशील बुद्धि द्वारा बदल दिया। उसने कहा—शासनका उद्देश्य प्रजाका कल्याण एवं सुख है।

क्या चीनमें धर्म है ?

अनेक विद्वानोंका मत है कि चीनका अपना कोई धर्म नहीं है। धर्मके स्थानपर उसके पास एक पद्धति है। वह पद्धति आचारकी है। आचार-पद्धति ही उसका धर्म है।

कनफ्यूशियसने, जिसके धर्मको चीन मानता है, किसी प्रकारकी

प्रार्थना, याजक प्रक्रिया एवं पुरोहित-व्यवस्थाका उल्लेख नहीं किया है। वह ईश्वरके विषयमें कुछ नहीं कहता। उसने मानव कर्त्तव्य एवं आचारपर ध्यान दिया है। वह भविष्यलोकके स्थानपर भविष्यकी सन्तानपर प्रकाश डालता है। उसने स्वयं अपनेको विशिष्ट मानव नहीं कहा है। वह साधारण मृत्युशील प्राणी कहानेमें ही सन्तोष करता था।

कुछ विद्वान् चीनके लोगोंको मूर्तिपूजक कहते हैं। कुछ उन्हें अर्ध सभ्य कहते हैं। किन्तु बर्ट्रेण्ड रसेलने कहा है—'चीनी लोग विश्वके वे मानव हैं जिन्होंने रत्नकी अपेक्षा गुणोंको अधिक मूल्यवान् आँका है। शायद पश्चिम इसीलिए उन्हें असभ्य समझता है।

चीन और भारत विश्वके सर्वशक्तिसम्पन्न दो राष्ट्र हैं। उन्होंने कभी किसी देशपर शासन करनेका विचार स्वप्नमें भी नहीं किया। किसी जातिको गुलाम नहीं बनाया। किसी वर्ग किंवा जातिपर अपना धर्म एवं विचार जबरदस्ती नहीं लादा। किसीके घरको उजाड़कर अपना घर सजानेका ख्याल नहीं किया। धार्मिक युद्ध उनके दिमागमें आ नहीं सकता था। उन्होंने प्रज्ञाको जगत्‌की किसी भी वस्तु एवं सुखसे ऊपर माना है।

धार्मिक काल

चीनके धार्मिक जीवनको तीन वर्गोंमें बाँट सकते हैं। सिनिटिक, बौद्ध एवं कनफ्यूशियस काल। सिनिटिक काल चार हजार वर्ष पूर्वसे लेकर तेरह सौ वर्ष पूर्वतक था। यह काल पूर्वी अर्थात् शंग तथा पश्चिमी अर्थात् चाओ सभ्यताके मिलनका फल है।

शंग सभ्यताके धर्मका मुख्य अंग पितृपूजा एवं मृतक-कर्मकाण्ड किंवा अर्चना है। चाओ शंग-ती अथवा हाओ तेन पूजा स्वीकार करता है। यह एकेश्वरवाद नहीं है। ये एक प्रकारके आकाशीय देवता थे। यह धर्मव्यवस्था कनफ्यूशियस कालतक चलती रही।

बलि-प्रथा

प्राचीन संस्कार पुस्तक ली-कीमें मुख्य चार प्रकारकी बलिप्रथाका

वर्णन है। किपाओ शंग-त्तीको बलि दी जाती है—स्वर्गपुत्र होनेके कारण सर्वदा सम्राट् ही बलि करता था। चीन सम्राट्के स्वर्गपुत्रका सिद्धान्त तत्कालीन यूनानी स्वर्गपुत्र ह्यूस ओसे मिलता है। कालान्तर-में रोमन सम्राटोंने भी अपनेको स्वर्गपुत्र कहना आरम्भ किया था। इस संस्कारका दर्शन ताम्रयुगमें मिलता है।

विश्वास किया जाता है कि उस समय स्वर्गकी अनेक वेदियाँ चीन-में थीं। मुख्य वेदी पीकिंगकी है। कहना न होगा कि विश्वकी अक्षुण्ण रूपसे चली आती यह सबसे प्राचीन वेदी, किंवा पूजास्थान है। वेदीके समीप ही बलिपशुके लिए वधस्थल तथा बलि हविके लिए यज्ञस्थान बना रहता है। चीनकी यह धर्म-व्यवस्था पाँच हजार वर्ष पूर्वसे लेकर ३२ सौ वर्ष पूर्व अर्थात् १८ सौ वर्षतक कायम रही। यह धर्म विश्वके अन्य ताम्रयुगीय अनेक देवतावादसे मिलता है। महाकवि होमर वर्णित यूनानियोंसे चीनी विशेष भिन्न नहीं प्रतीत होते। वे विवाहित स्त्री रखते थे। दासी रखते थे। वेश्या रखते थे। कन्याकी अपेक्षा पुत्र होना अधिक पसन्द करते थे। शिकार खेलते थे। मछली मारते थे। कृषक थे। सामन्तशाही प्रथामें संघटित थे। युद्ध करते थे। द्वैतवादी थे। स्वर्ग, पृथ्वी एवं मृतकोंकी आत्मामें विश्वास करते थे। सूखे और अन्धड़ोंके दानवोंमें उनका विश्वास था। प्लेटोने जिस समय यूनानमें युथाक्रो लिखा था और यूनानियोंका जो सम्बन्ध देवता और मनुष्यसे था प्रायः वैसा ही सम्बन्ध मनुष्य और देवताका चीनमें था।

संक्रमण काल

आजसे ३२ सौ वर्ष पूर्वसे २३ सौ वर्ष पूर्वका काल चीनमें दार्शनिक संक्रमण काल कहा जाता है। कन्फ्यूशियस कालमें चीन अपने प्राचीन जीवनसे निकलकर जैसे नवजीवनमें प्रवेश करना चाहता था।

तीन धर्म

यदि किसी चीनी से पूछा जाय कि चीनमें कितने धर्म हैं तो वह

तीन धर्मोंका नाम लेगा—यू जि आ ओ, जिसका शाब्दिक अर्थ है विद्वान् एवं पण्डितोंका धर्म (यह धर्म कनफ्यूशियसके उपदेशोंपर आधृत है); शी जिआओ अर्थात् बौद्ध धर्म; ताओ जिआओ अर्थात् पंथीय किंवा तर्कसंगत धर्म। यह धर्म लाओत्जके उपदेशोंपर आधृत है।

कनफ्यूशियस धर्म

कनफ्यूशियस धर्म चीनके तीन बड़े धर्मोंमेंसे एक है। वस्तुतः यह कोई धर्म नहीं है, एक विचारधारा मात्र है। इसका महत्व बड़ा। यह राज्यधर्म हन वंशीय सम्राट् यू ती (ईसा पूर्व १४१-४७) द्वारा घोषित किया गया था। रोमन सम्राट् जस्टिनीयन्ने भी इसी प्रकार ईसाई धर्मको रोमन साम्राज्यका राजधर्म घोषित किया था।

इस धर्मकी तीन विचारधाराएँ मुख्य हैं। विद्वान् एवं गुणी व्यक्तियोंके हाथमें शासनसूत्र देना, अध्ययन द्वारा मनुष्योंको प्रज्ञावान बनाना, एवं अध्ययनके लिए कनफ्यूशियस द्वारा लिखित पाँच पुस्तकोंको पढ़ना।

कनफ्यूशियसका उपदेश धार्मिककी अपेक्षा आचारप्रधान अधिक है। नैतिक दर्शन है, धार्मिक विश्वास नहीं। स्वर्ग देवता शंग-ती की पूजा तथा उनका आशीर्वाद प्राप्त करना वृद्धि एवं रक्षाके निमित्त अनिवार्य माना गया है। उसके सम्प्रदायको शत सम्प्रदाय कहते हैं। कुछ लोग उसे धर्मप्रवर्तक एवं अज्ञेयवादी कहते हैं, परन्तु वह दोनोंमेंसे एक भी न था।

विश्वकी बौद्धिक क्रांति

वह उस समय उत्पन्न हुआ था जब यहूदी जगत्के पैगम्बरों एवं नबियोंका स्वर्णयुग था। यूनानमें दार्शनिक विचार उन्मुख हो रहे थे। भारतमें भगवान् बुद्ध उपदेश दे रहे थे। विश्वकी प्रायः सभी जातियों एवं देशोंमें बौद्धिक विकास हो रहा था। विश्व बौद्धिक क्रांतिके चौराहे पर खड़ा था।

इस महान् कालमें यूनानमें दर्शन एवं विज्ञान, यहूदियोंमें नैतिक एवं वैयक्तिक धर्म, भारतमें बौद्धदर्शन, निगूढ़ एवं गुह्य सम्प्रदायवाद तथा चीनमें नैतिक एवं राजनीतिक विचारधाराओंसे मानव-मस्तिष्क

उर्वरित हो रहा था। कनफ्यूशियसके सम्प्रदायके कारण चीनमें महान् चेतना उत्पन्न हुई। उसने देखा कि राजामें गुण तथा मानवमें पितृनिष्ठा चीनकी समस्याओंका निराकरण कर सकती है।

उसकी विचारधारा मानवके दैनिक एवं व्यावहारिक जीवनसे घनिष्ठ सम्बन्ध रखती है। कनफ्यूशियसके व्यष्टिवादी धर्म और कालान्तरमें उसके नामसे जिस कनफ्यूशियस धर्मका बोध होने लगा है उनमें अन्तर है। उसके समयमें चीनमें जो धर्म मौजूद था वही आज भी चीनमें प्रकृति एवं पितृपूजाके रूपमें वर्तमान है।

धर्मप्रवर्तक नहीं

कनफ्यूशियस धार्मिक नेता नहीं था। उपदेशक भी नहीं था। उसने बुद्धके समान नवीन दर्शन, जरदस्तु-तुल्य संस्कार, यहूदियोंके समान व्यवस्था, ईसामसीहकी तरह नवीन धर्म एवं पैगम्बर मुहम्मदकी तरह इलहामी बातें विश्वके सन्मुख नहीं रखी हैं।

उसने कभी नहीं कहा कि वह कोई विशेष सन्देश लेकर आया है, उसका किसी देवदूतसे सम्पर्क है, उसे ईश्वरने किसी उद्देश्यसे भेजा है। उसने कभी ईश्वर किंवा देवताकी वाणी सुनी है। स्वप्नमें उसे किसी शक्तिके द्वारा किसी कार्यके करने अथवा उपदेश देनेके लिए कहा गया है। उसने धर्म चलानेकी बात कभी नहीं कही। उसने यह भी नहीं कहा कि वह कोई नवीन विचारधारा दे रहा है। उसने कभी अपनेको पैगम्बर, नबी, ईश्वरदूत, विशिष्ट पुरुष एवं देवता नहीं कहा। परन्तु दुर्भाग्य है कि उसके मरनेके हजारों वर्ष बाद लोग उसे देवता मान बैठे। उसकी पूजा होने लगी।

उसने मानवीय गुण एवं अध्ययनपर जोर दिया। वह सनातनी था। उसने चीनके सनातनधर्मके विरुद्ध एक शब्द नहीं कहा। उसने महान् सहिष्णुता एवं करुणाकी ओर लोगोंका ध्यान आकर्षित किया। उसने स्वर्ग-देवता, शंग-तीमें विश्वास किया। शायद इसलिए विश्वास किया कि उसके नैतिक और राजनीतिक अध्ययन एवं विचारोंमें उसका

मान लेना सहायक सिद्ध होता।

उसने भगवान्‌के विषयमें एक शब्द नहीं कहा। उसके रूप, गुण, शक्ति एवं विशेषणोंके सम्बन्धमें जबानतक न खोली। उसने कहा और जोर दिया पाँच बातोंपर। वे हैं—प्रज्ञा, औचित्य, सारल्य किंवा सत्य, सार्वजनिक जीवनमें परहित-निष्ठा, सद्‌वृत्ति तथा ज्ञान।

नाम

कान-फूशी यस चीनी मूल शब्द कुंग फुत्जेका लैटिन अपभ्रंश है। कनफ्यूशियस शब्द लैटिन मूल शब्द कान फूशीयसका अंग्रेजी अपभ्रंश है। कनफ्यूशियसका चीनी नाम कुंग फुत्जे है।

उनका जन्म ईसापूर्व ५५१ में लू प्रदेशके त्सौ नगरमें हुआ था। यह नगर चू फूमें है। शातुंग प्रदेशके दक्षिण-पश्चिम चीनकी प्रसिद्ध नदी ह्वांग-होसे अधिक दूर नहीं है। गाथा है कि उनका गोत्र शंग राजवंशीय था।

कुल

अत्यन्त पुरातन साहित्यमें भी उनके माता-पिताका नाम नहीं मिलता। कुछ लोगोंकी धारणा है कि वे अनाथ थे। उनके कुटुम्बके विषयमें केवल यही ज्ञात है कि उन्हें एक पुत्र एवं दो कन्याएँ थीं। पुत्रकी मृत्यु उनके जीवनकालमें ही हो गयी थी। उनकी पत्नीके विषयमें कुछ लिखा नहीं मिलता। प्रपौत्र विद्वान् हुआ जिसने उनके विचारोंको फैलाया।

कालान्तरमें साहित्य-रचना हुई। उससे प्रकट होता है कि तीन पीढ़ी पूर्व उनके वंशवाले लूमें आकर बसे थे। लू जिला चंगपिंगका भूभाग था। उनके वंशका नाम कुंग था। प्रपितामहका नाम कुंग फांग-शू था। पितामह कायोहिसा था। पिताका नाम कुंगसांतियांग हो था, माताका नाम चिंगात्साई था। वह एनकी कन्या थी। पुत्रका नाम च्यू था। प्रपौत्रका नाम केह था।

गाथा है कि उनके पिता भीमकाय थे। सात फुट लम्बा कद था।

चौड़ा कन्धा था। राज्य कर्मचारी थे। त्सौके प्रशासक थे। अत्यन्त बली थे। कहावत है कि त्सौके शत्रुका दुर्ग उन्होंने घेर लिया था। दुर्गका द्वार अचानक खुल गया। उनके बहुतसे सैनिक भीतर चले गये। साथियोंके जाते ही फाटक बन्द होने लगा। शत्रुकी चातुरी वे समझ गये। दौड़कर फाटक पकड़ लिया। फाटक तबतक बन्द नहीं हो सका जबतक उनके सब सैनिक बाहर नहीं निकल आये।

पिताका दुःख

पिता दुःखी रहते थे। उन्हें नौ कन्याएँ थीं, पुत्र न था। भारतके समान चीनमें भी धार्मिक संस्कार करनेका अधिकार पुत्रको ही होता है। कन्याएँ विवाहिता होनेपर अपनी ससुराल चली जाती हैं। पतिके गोत्रमें मिल जाती हैं। माताके गोत्रमें उनके अस्तित्वका लोप हो जाता है। भारतमें भी यही प्रथा है। कन्याका गोत्र उनके पतिका होता है, न कि पिताका। इसी सिद्धान्तके आधारपर भारतमें पुत्रका होना पितृ और श्राद्धकर्मके लिए आवश्यक है। न होनेपर दत्तक पुत्र लेकर लोग कमी पूरी करते हैं। मृत्युके पश्चात् श्राद्ध और तर्पण न हो सकेगा इसलिए पिताका मन खिन्न रहता था।

उनकी माताने पुत्र कामनासे पर्वत नीं (Ni) की पूजा की। लीके राजा हिस्यांग (Hsiang) के बाइसवें वर्षमें कनफ्यूशियसका जन्म हुआ था। उस समय उनके पिताकी उम्र सत्तर वर्षकी थी। जन्मके समय घरकी आर्थिक स्थिति ठीक नहीं थी।

पिताकी मृत्यु

तीन वर्षकी उम्र होते ही पिताका देहान्त हो गया। उन्हें लोग कुंग फुत्जे कहते थे। कुंग गोत्रबोधक है। फुत्जेका अर्थ होता है दार्शनिक या गुरु।

शिक्षा

आर्थिक स्थिति ठीक न होते हुए भी माताने उनकी शिक्षाकी व्यवस्था की। उसे यह सुनकर अपार हर्ष हुआ जब पण्डितोंने कहा कि

तुम्हारा पुत्र कुशाग्रबुद्धि है। उसकी ख्याति बढ़ गयी। लोग उससे विचार-विनिमय करनेके लिए आते थे। एक कुलीनवंशीय बालक तुल्य उसकी शिक्षा हुई। संगीत तथा धनुष-बाण चलाना सीखा। शिक्षाकी व्यवस्थासे हम इस परिणामपर पहुँच सकते हैं कि चाहे उसका कुटुम्ब धनी न रहा हो, परन्तु कुलीन अवश्य था।

महान् व्यक्तियोंकी महत्ता बढ़ानेके लिए कुछ लेखक उनके सम्बन्ध में किम्वदन्तियाँ जोड़ देते हैं। उनके विषयमें कहा गया है कि उन्होंने अपनी शिक्षा स्वयं प्राप्त की। यह निर्विवाद है कि १५ वर्षकी अवस्थामें उनका विद्यानुराग दृढ़ हो गया था।

राज्य-कर्मचारी

उन्नीस वर्षकी अवस्थामें उन्होंने राजकीय सेवावृत्ति स्वीकार की। वे अनाज बाजारके निरीक्षक नियुक्त हुए। महत्वाकांक्षी थे। समाजमें कुटुम्बका प्रभाव न था, अतः उन्हें स्वयं ऊपर उठना था। राजकीय उन्नतिके निमित्त जिस चाटुकारिता और दरबारदारीकी आवश्यकता पड़ती थी उसका उनमें सर्वथा अभाव था। व्यवहारकुशलताका आश्रय लेकर राजा तथा अमात्योंकी कृपादृष्टिमें न आ सके। उनकी सहज मनोवृत्ति दार्शनिक और शिक्षककी थी।

विवाह

उन्नीस वर्षकी अवस्थामें, नौकरी मिल जानेके पश्चात् उन्होंने विवाह किया। उनकी धर्मपत्नी उनके पितृदेश शुङ्गकी थी। विवाहोपरान्त एक मकान बनवाया। एक वर्ष पश्चात् उन्हें एक पुत्र उत्पन्न हुआ।

भांडारिक

बीस वर्षकी उम्रमें त्सौके सामन्तके यहाँ स्टोरकीपर अर्थात् भाण्डारिकके स्थानपर उनकी नियुक्ति हुई। उनका कार्य इतना अच्छा हुआ कि मन्त्रीने उन्हें खेतोंके निरीक्षक पदपर नियुक्त कर दिया।

इतिहास, कविता और संगीतका अध्ययन नौकरी करते हुए जारी

रखा। अध्ययन गम्भीर होता गया। विद्वान्‌के रूपमें उनकी प्रसिद्धि होती गयी।

गोष्ठी

सायंकाल बाल, युवा, प्रौढ़, वृद्धादि उनके निवास स्थानपर एकत्र होते थे। लोग प्रश्न पूछते थे। वे सरलतापूर्वक सुबोध भाषामें उत्तर देते थे। उचित अनुचितका विवेचन होता था। जो कुछ जानते या समझते थे, उन्हें बतानेमें हिचक न होती थी। मालूम न होनेपर निःसंकोच अपनी असमर्थता प्रकट करते थे। उनके यहाँ आनेवाले उन्हें कुंगफुत्जे अर्थात् कुं ग दार्शनिक नामसे पुकारने लगे। कालान्तरमें यही विशेषण उनका नाम हो गया।

माताका देहांत एवं पदत्याग

तेईस वर्षकी अवस्थामें माताका देहान्त हो गया। तत्कालीन प्रथानुसार माता-पिताकी मृत्युपर तीन वर्ष शोक मनाया जाता था। माताके प्रति अटूट स्नेह होने और पुत्र-कर्तव्य पूरा करने निमित्त भाण्डारिकके पदसे उन्होंने त्यागपत्र दे दिया। तेईस वर्षसे छब्बीस वर्षकी उम्रतक मातृशोक मनाते रहे।

सफल अध्यापक

शोककाल समाप्त होनेपर भी सरकारी नौकरी नहीं की। अध्ययन जारी रखा। जीवन-निर्वाह निमित्त शिक्षक वृत्तिका अवलम्बन किया। यही उनकी जीविका हो गयी।

दार्शनिक योजना

इकतीस वर्षकी अवस्थामें अपने दार्शनिक विचारोंकी एक योजना बनायी। तत्कालीन प्राप्य दार्शनिक पुस्तकोंका गम्भीर अध्ययन किया। स्वानुभूति और ज्ञानार्जित बुद्धि द्वारा अपने विचारोंकी रूपरेखा बनाना आरम्भ किया।

विद्यालयकी स्थापना

चौंतीस वर्षकी उम्रमें विद्यालय आरम्भ करनेका विचार किया।

विद्यालयका उद्देश्य सत्य विचार और शासकीय ज्ञानकी शिक्षा देना था। उनके विद्यालयमें लगभग तीन हजार विद्यार्थी थे। विद्यालयमें विद्यार्थीसे लेकर विद्वान्‌तक थे।

लाओत्जेसे भेंट

ताओ धर्मप्रवर्तक लाओ त्जेसे इसी कालमें कनफ्यूशियसकी भेंट हुई। चीनके दो धर्मोंके आचार्योंकी भेंट बड़ी मधुर थी। विचारोंका खूब आदान-प्रदान हुआ। फिर भी दोनोंकी विचारधारा मिलकर न बह सकी। जब कनफ्यूशियस चलने लगे तो संत लाओने कहा—मैंने सुना है कि धनी लोग मित्रोंकी विदाईके अवसरपर सौगात देते हैं। सज्जन शुभ वचनोंसे विदाई देते हैं। मैं न तो सज्जन हूँ न अमीर। कुछ लोग मुझे अच्छा आदमी कहते हैं। अतएव मैं आपके प्रस्थानकाल-के इस अवसरपर कुछ कहना चाहता हूँ। विलक्षण एवं चतुर लोग मृत्युके निकट हैं, क्योंकि वे दूसरेके विषयमें अपनी राय दिया करते हैं। जो लोग बहुत कुछ जानते हैं और बड़े पैमानेपर काम करते हैं और क्रोधित होते हैं वे मानव जीवनकी त्रुटियोंको प्रकट करते हैं। जो दूसरेका लड़का है वह अपने लिए कुछ नहीं है। जो दूसरेका अधिकारी है उसे भी अपने लिए कुछ नहीं है। लगभग पन्द्रह वर्षतक वे गम्भीर अध्ययन करते रहे।

लूका मरणासन्न मन्त्री

लूका प्रधान मन्त्री मिंग हिसत्जे (Hsitze) मरणासन्न हुआ। उसने अपने पुत्र इत्जे तथा भैतीजे नन-चंग-चिंग शी को बुलाया। बोला—

'पुत्रो, युवाकालमें मैं कुछ पढ़ न सका। मुझे आजीवन इसका दुःख रहा।'

'आज्ञा?'

'तुम गम्भीर अध्ययन कर विद्वान् बन जाओ।'

'कैसे बनें?'

'मैंने सुना है, कनफ्यूशियस आचार एवं विद्यामें प्रवीण हैं : गुणी हैं। उनसे शिक्षा प्राप्त करो।'

'करेंगे।'

मन्त्रीकी मृत्युके पश्चात् लूके राजाने दोनों युवकोंको कनफ्यूशियस-के पास जानेके लिए एक रथ, दो घोड़े तथा एक नौकर दिया।

वे कनफ्यूशियसके पास आये। अध्ययन करने लगे। उनके माध्यम से लूका राजा कनफ्यूशियसका मित्र हो गया। कनफ्यूशियसकी ख्याति देशमें बढ़ने लगी।

प्रधान शासक

बावन वर्षकी उम्रमें चुंग तूके लोग कनफ्यूशियसके पास आये। उनसे निवेदन किया—

'आपके गुणोंकी बातें हमने सुनी हैं। हम लोगोंकी इच्छा है कि आप हमारे नगरके प्रधान शासक बन जायँ।'

'क्यों ?'

'आप जैसा गुणी हम चाहते हैं।'

कनफ्यूशियसने कुछ काल पश्चात् पद स्वीकार किया। एक ही वर्षके अन्दर चुंग तू नगर लू प्रदेशमें प्रसिद्ध हो गया। वहाँकी प्रसिद्धि लूके राजाने सुनी। उसने कनफ्यूशियसको बुलवाया।

अपराध-मन्त्री

लूके राजाने उनके आनेपर पूछा—

'मैंने सुना है कि आप जबसे चुंग तूके शासक हुए हैं, वहाँकी व्यवस्था सुधर गयी है। प्रजा प्रसन्न है। नगर धनधान्यपूर्ण है। यह सब कैसे हुआ ?

'शासन-व्यवस्थामें मैंने वांछित परिवर्त्तन किया। शासनको शास-कीय प्रभावमात्र रखकर उसे जनोपयोगी बनाया है।'

'तो मुझे ठीक ही मालूम हुआ है ?'

'हाँ राजन् !'

'थोड़े समयके अन्दर आपने जनताको कैसे गुणी, न्यायप्रिय एवं राजभक्त बना लिया है ?'

'मैंने अच्छोंको पुरस्कृत किया और बुरोंको दण्डित ।'

'अच्छा !'

'हाँ ! लोगोंने समझा अच्छा होना अच्छा है और बुरा होना बुरा। अतएव बुरे भी अच्छे हो गये। अच्छे लोग एक दूसरेके प्रति निष्ठावान् हो गये। उनकी वह निष्ठा देशके प्रति उन्मुख हुई। फल यह हुआ कि प्रत्येक व्यक्ति देशके प्रति निष्ठा रखता हुआ देशभक्त हो गया।'

'लोगोंको सुखी कैसे बनाया ?'

'गुणियोंका संग्रह किया। उन्हें जनताके पास शिक्षा देनेके लिए भेजा। उसने कहा—शिक्षार्थियोंके साथ पुत्रवत् व्यवहार करना। लोग सर्वदा सब बात नहीं समझ सकते। न समझकर भी अनुकरण कर ही सकते हैं। लोगोंने गुणियोंका अनुकरण किया। वे स्वयं सुखी हो गये। हमें उन्हें सुख देना न पड़ा। राज्यका एक बहुत बड़ा बोझ हल्का हो गया।'

'क्या प्रदेशका भी शासन इसी प्रकार किया जा सकता है ?'

'प्रदेश ही क्यों, साम्राज्यका भी शासन इसी प्रकार किया जा सकता है।'

'क्या आप एक पद स्वीकार करेंगे ?'

'कौन सा ?'

'मानव-चरित्र सुधरेगा।'

'सुनूँ ?'

'आपराधिक मन्त्रित्व। क्या वह दिन आ सकेगा कि लू अपराध एवं अपराधीविहीन हो जाय ?'

'प्रयास करूँगा'—दार्शनिकने गम्भीरतापूर्वक कहा।

मन्त्रित्व

पदग्रहण करते ही उसने प्रदेशके कारागारोंका निरीक्षण किया।

अनुभव प्राप्त किया। अपराधियोंकी मनोवृत्तिका अध्ययन किया। अपराधोंका मनोवैज्ञानिक विश्लेषण किया। अधीनस्थ न्यायाधीशों, वकीलों एवं संरक्षकोंको बुलाया। उनसे कहा—

'मैंने कारागारोंका अध्ययन किया।'

'निष्कर्ष क्या निकला?'

'उनमेंके सभी अपराधी गरीब हैं। यदि वे स्वयं गरीब नहीं हैं तो गरीबोंके लड़के हैं।'

'और'

'सुनो! वे सभी अज्ञ हैं अथवा अज्ञोंकी सन्तानें हैं। गरीबी और अज्ञता लोगोंको अपराध करनेके लिए प्रेरित करती है। देशसे गरीबी तथा अज्ञता दूर हो जाय तो देश अपराध तथा अपराधीविहीन हो जायगा।'

'किन्तु उपाय।'

'अज्ञताका निराकरण ज्ञान द्वारा हो सकता है। यदि सभी लोग शिक्षित हो जायँ तो अज्ञता अभिशाप स्वतः मिट जायगा।'

'और गरीबी?'

'दरिद्रताका नाश उद्योगधन्धों, कलाओं एवं अनेक प्रकारके कार्योंके करनेकी शिक्षा देकर किया जा सकता है। प्रत्येक व्यक्ति प्रयास करेगा कि अपने परिश्रम द्वारा अर्जित ईमानदारीकी रोटी खायँ।'

'होगा कैसे?'

'आप लोग उनके शासक हैं। आपका कर्तव्य है उन्हें अच्छे बनानेके पहले स्वयं अच्छे बनें। जनता ऐसे शासकोंको पसन्द करती है जिनका वह अनुकरण कर सके। यदि शासक भ्रष्टाचारी होगा तो जनता भी भ्रष्टाचारी होगी। यदि शासक अच्छे होंगे तो जनता उनका अनुकरण करेगी। स्वयं अच्छी हो जायगी।

'हम अच्छे कैसे बनें।'

'केवल एक बात याद रखिये—दूसरोंके लिए वह काम न कीजिये

जो आप अपने लिए न कर सकें।

दो वर्ष बाद

कनफ्यूशियसके शासनका परिणाम हुआ कि जेलखाने खाली हो गये। अदालतोंमें सियापा पड़ गया। जजोंके पास कोई काम न रहा। वकील बैठे-बैठे मक्खी मारने लगे। संरक्षकोंके लिए अपराधी पकड़ने, जाँच करने, उन्हें जेल भेजने आदिका कोई काम न रह गया। लू प्रदेश अपराध एवं अपराधियोंसे विहीन हो गया।

षड्यन्त्र

लूका राजा युवक था जिसका नाम तिंग था। उसने कनफ्यूशियसकी अद्भुत व्यवस्था देखी तो उसका भक्त हो गया। उसके आदेशानुसार कार्य करने लगा। उसने उन्हें चुंग तूका शासक बनाया। एक वर्षके अन्दर ही उसे लोग आदर्श शासकका प्रतीक मानने लगे।

लू प्रदेश शीघ्र ही धनधान्य पूर्ण एवं शक्तिसम्पन्न हो गया। अन्य प्रदेशोंके राजा तथा मन्त्री लोग ईर्ष्या करने लगे। वे एकत्र हुए। निश्चय किया कि युवक राजाको कनफ्यूशियसकी सलाहसे विरत किया जाय।

षड्यन्त्र किया गया कि राजा तिंगके पास अस्सी नर्तकियाँ तथा एक सौ बीस अत्युत्तम घुड़दौड़के घोड़े भेजे जायँ। राजा उनमें फँसकर कनफ्यूशियससे दूर होता जायगा।

कनफ्यूशियस बात समझ गया। राजा नर्तकियों, वेश्याओं एवं घुड़-दौड़में फँसता गया। राज-कार्य उपेक्षित होने लगा। वह जब कभी राजासे भेंट करने आता तो राजा या तो राजप्रासादमें न होता या उससे भेंट करना न चाहता।

मन्त्रित्वत्याग

लूकी व्यवस्था बिगड़ने लगी। जेलखाने पुनः भरने लगे। कनफ्यू-शियसको हार्दिक दुःख हुआ। उसका किया-कराया कार्य नष्ट हो गया। पदपर बने रहनेमें उसने अपनी कोई उपयोगिता न समझी। पदत्याग कर दिया। उस समय उसकी उम्र पचपन वर्षकी थी। कुछ

लेखक पचास वर्षकी भी कहते हैं। पूछनेपर कहा—'यदि कोई राजा मुझे ऐसा मिलता कि वह मेरी बात एक वर्षतक सुनता तो आदर्श राज्यकी कल्पना पूरी हो जाती। लोग सुखी तथा चरित्रवान् हो जाते।'

योग्य राजाकी खोज

पदत्यागके पश्चात् कनफ्यूशियस तेरह वर्षोंतक देशका भ्रमण करता रहा। न्यायप्रिय राजाकी खोजमें अनुयायियों सहित घूमने लगा। वह अपनी बुद्धिका प्रयोग कर आदर्श राज्य बनाना चाहता था। उसे कोई राजा न मिल सका। उसकी बुद्धिका, उसके व्यावहारिक ज्ञानका, लाभ लोग न उठा सके।

उसने लू त्याग दिया। चू के लोगों ने पूछा नहीं। शुंग और वीसे हटना पड़ा। चैन तथा त्सै (Tsai) में साधन हीन हो गया। वह पुनः लौट कर लू आया। लू ने उसका आदर किया।

शेर और राजा

एक बार ताई पर्वतपर जा रहा था। मार्गमें एक स्त्री विलाप कर रही थी। उसे दुःखी देखकर पूछा—

'क्यों रोती हो बहिन ?'

'यहाँ मेरे श्वशुरको शेर खा गया है।'

'ओह !'

'पतिको भी यहीं खा गया।'

'फिर भी…'

'मेरे पुत्रको भी यहीं खा गया।'

'इस स्थानको त्याग क्यों नहीं देती ?'

'यहाँका राजा अत्याचारी नहीं है।'

'लेकिन शेर फिर किसीको खा सकता है।'

'नहीं स्थान त्याग न सकूँगी।'

'क्यों ?'

'यही रहूँगी।'

'अच्छे राजाको आदमखोर शेरसे अच्छा समझती हो ?'

'हाँ।'

कनफ्यूशियस गम्भीर हो गया। बोला—

'बहिन तुम ठीक कहती हो।'

कायरता

नदी पार जाना चाहता था। नदीपर पुल नहीं था। उसका प्रिय शिष्य त्जू लू साथ था। उससे कहा—

'खेतमें देखो एक आदमी काम कर रहा है। उससे पूछ आओ कि उस पार जानेके लिए नाव कहाँ मिलेगी ?'

उन दिनों अराजकता फैली थी और राज्यव्यवस्था बुरी थी, इसी कारण बहुतसे लोग नगर तथा राज्य छोड़ कर चले गये थे। गाँव भी खाली हो गये थे। लोग उथल-पुथलसे दूर रहकर सरल जीवनयापन करते थे। त्जू लू उस व्यक्तिके पास आया तो मालूम हुआ कि वह व्यक्ति तपस्वी चंगचू था। समीप पहुँचकर उसने नम्रतापूर्वक पूछा—

'महात्मन् !'

'क्या है ?'

'मेरा नाम त्जू लू है।'

'कनफ्यूशियसके अनुयायी हो।'

'हाँ।'

'क्या तुम्हें यह अच्छा नहीं लगता कि कहीं आबाद हो जाओ ? कनफ्यूशियसके साथ एक स्थानसे दूसरे स्थान, घूमते-फिरते रहनेसे क्या लाभ ?'

तपस्वी खेतमें काम करने लगा। त्जू लूने पुनः नम्रतापूर्वक पूछा—

'नाव कहाँ मिलेगी ?'

तपस्वीने कुछ ध्यान नहीं दिया। त्जू लूने गुरुके पास आकर सब हाल कहा। कनफ्यूशियसने विचारपूर्वक कहा—

'उसने ठीक नहीं कहा। बुराईसे दूर भागनेसे बुराई अच्छी नहीं हो जाती। यदि सभी लोग सुखी हो जायँ तो हमें क्या आवश्यकता कि हम घूमते फिरें? खतरेसे भागना कायरता है। किसी कार्यको उचित समझकर भी न करना कायरता है।

स्त्रीका स्वर्गवास

भ्रमणकालमें ही कनफ्यूशियसकी स्त्रीका स्वर्गवास हो गया। वे तेरह वर्षका भ्रमणकाल समाप्त कर लू लौट आये। उस समय उनकी उम्र ६९ वर्षकी थी।

पद अस्वीकार

लूके राजाने उन्हें प्रधान परामर्शदाताका पद देना चाहा, परन्तु उन्होंने कार्य करनेमें असमर्थता प्रकट की। उन्होंने स्पष्ट देखा कि सर्वोच्च कर्मचारीसे लेकर निम्न कर्मचारीतक अधिकसे अधिक राज्य-शक्ति अपने हाथमें रखनेका प्रयास कर रहा है। सब ही पदलोलुप हैं। पदलोभने उन्हें गिरा दिया है। सन्मार्गका त्याग कर दिया गया है।

उनका जीवन शुद्ध दार्शनिक एवं अध्ययनशील हो गया था। लूके इतिहास, प्राचीन कविताओंके संग्रह, कर्मकाण्ड एवं कविता-संकलनमें समय बिताने लगे। अपने विचारों द्वारा वे चीनका नकशा बदलना चाहते थे। उन्होंने पुस्तक लिखना आरम्भ किया। उनके शिष्य उनकी पुस्तकोंका अध्ययन करने लगे। उनमें कितने ही महान् दार्शनिक एवं मनीषी हो गये हैं। उनके शिष्योंकी संख्या बढ़ती ही गयी।

ज्ञानानुराग

विश्वके वे सबसे बड़े शिक्षक एवं अध्यापक हुए हैं। उनका विद्यानुराग अनुपमेय है। विद्याके लिए उन्होंने अपना जीवन दे दिया। विद्याको उन्होंने धर्म, कर्म आदिसे श्रेष्ठ माना। उनकी दृष्टिमें ज्ञान ही जगत्की सबसे बड़ी वस्तु थी। उनके शिष्योंने पूछा—

'क्या शिक्षा सबके लिए अच्छी चीज है?'

'यदि कोई तीन वर्ष गम्भीर अध्ययन करनेके पश्चात् भी गुणी न

हो तो इस प्रकारका मनुष्य जगत्‌में पाना कठिन है।'

'सर्वदा अध्ययन करना ठीक है ?'

'हाँ, किन्तु यह और अच्छा है कि युवावस्थामें ही अध्ययन कर लिया जाय।'

'क्या यह अच्छा होगा कि कोई अपने सब पड़ोसियोंका प्रिय हो ?'

'नहीं।'

'क्यों ?'

'यह अच्छा होगा कि अच्छे पड़ोसी उससे प्रेम करें और बुरे घृणा।'

'बुराईका बदला भलाईसे देना ठीक है ?'

'नहीं।'

'कारण ?'

'फिर तुम भलाईका बदला किससे दोगे ! भलाईका बदला भलाई और बुराईका बदला न्यायसे दो।'

पुत्रकी मृत्यु

कनफ्यूशियसका पुत्र ली मूर्ख था। उसके अध्ययनशील न होनेके कारण वे दुःखी रहते थे। एक दिन उन्होंने पुत्रसे पूछा—

'ली ! क्या तुम कविता पढ़ते हो ?'

'नहीं।'

'क्यों ?'

पुत्र निरुत्तर हो गया।

'पुत्र ! कविता न पढ़नेवालेका मुख दुनियाकी ओर न होकर खड़ी दीवालकी तरफ होता है।'

'पिताजी !'

'सुनो ! ली !! क्या दीवालकी तरफ खड़ा हुआ व्यक्ति विश्वकी सुन्दर वस्तुओंको देख सकता है ?'

किन्तु पुत्रपर कुछ असर न हुआ। वह मूर्ख ही रहा। उसकी मृत्यु हो गयी। उस समय कनफ्यूशियसकी उम्र सत्तर वर्षकी थी।

चीनमें फैली गरीबी और पुत्रकी मृत्युके पश्चात् वह दुःखी रहते थे।

पौत्र

लीको एक पौत्र था। उसका नाम केह था। पौत्र अपने प्रपिता कनफ्यूशियसके साथ रहता था। उनके साथ अध्ययन करता था। उसके अध्ययनसे वे प्रसन्न हो गये।

एक दिन वह अध्ययन कर रहे थे। केह चुपचाप पाँव दबाये कमरेमें आया। सतर्क था कि पितामहके ध्यानमें बाधा न पहुँचे। कनफ्यूशियस कुछ कालतक लिखते रहे। लिख चुकनेपर उन्होंने दीर्घ-निश्वास त्याग किया।

'आपने निश्वास क्यों लिया ?'

कनफ्यूशियसकी दृष्टि पौत्रके जिज्ञासा भरे मुखपर फैल गयी। उसने फिर पूछा—'क्या आप दुःखी हैं कि आपकी सन्तति आपके अनुपयुक्त है ?'

पितामह नीरव थे।

'क्या आप इसलिए चिन्तित है कि पूर्व सन्तों एवं तपस्वियोंकी तुलनामें आप बहुत छोटे हैं ?'

'वत्स !'

'पितामह !'

'तुमने मेरा विचार कैसे समझा ?'

'आपसे कहते सुना है कि यदि पिता लकड़ी इकट्ठा करे और पुत्र लकड़ीका बण्डल न उठा सके तो वह पुत्र अपने पिताका अयोग्य पुत्र है।'

'तो।'

'मेरे मनमें विचार उठता है, कहीं मैं अयोग्य न साबित हूँ।'

'मुझे अब कोई दुःख नहीं है वत्स ?'

'क्यों ?'

'मेरी शिक्षा व्यर्थ न होगी। वह फैलेगी, बढ़ेगी।'

'कैसे ?'

'सुनो ।'

केह् स्नेहसे पितामहके समीप आ गया। कनफ्यूशियस बोले—

'नगर जनाकीर्ण है। उनमें बहुतसे मेरे जैसे बुद्धिवाले हैं। किंतु मुझसे जब कोई प्रश्न पूछा जाता है, तो सर्वप्रथम मैं प्रश्नकी तहतक पहुँचनेका प्रयास करता हूँ। प्रश्न समझनेपर निश्छल जवाब देता हूँ। मेरे जैसे यहाँ बहुतसे ज्ञानी हैं। किन्तु जिन्हें विद्याका शौक है वे थोड़े हैं।'

केह् ध्यानपूर्वक दादाकी बातें सुन रहा था। दादाने फिर पूछा—

'धनुष विद्यामें धनुषधारी प्रवीण कब कहा जायगा ?'

'निशानेका वेध करनेपर।'

'विद्याके विषयमें ठीक यही बात है। निशानेवाली वस्तुका भेद करना महत्त्वपूर्ण नहीं है। महत्त्व है वस्तुपर लगे निशानके वेध करनेमें।'

'बुद्धिमान कौन है ?'

'वही बुद्धिमान है जो शुद्ध आचरण एवं ज्ञानका निशान वेध करता है।

'दादाजी—'

'सुनो वत्स !'

'कहीं नहीं जाना ठीक नहीं है। बहुत दूर जाना भी ठीक नहीं है। वही मनुष्य बुद्धिमान है जो दोनों अतियोंके बीच मध्यम मार्गका अवलम्बन करता है।'

'अच्छा जीवन कैसे व्यतीत होगा।'

'बेटा ! उचितकी कामना, भलाईका अनुकरण, प्रेममें आश्रय एवं कला जगत्में विचरण—यही वे मार्ग हैं। इनपर चलकर मानव सुमार्गगामी हो सकता है।'

'सत्य है दादाजी।'

'हाँ—इसीका विचार करो वत्स।'

कनफ्यूशियसकी लेखनी पुनः चलने लगी।

गृह युद्ध

लू प्रदेशमें गृहयुद्ध आरम्भ हो गया। प्राणरक्षा निमित्त लूका राजा प्रदेश छोड़कर भागा। कनफ्यूशियस राजाके साथी समझे जाते थे। वह भी प्रदेश त्यागकर त्सीमें चले गये। गृहयुद्ध समाप्त होते ही पुनः लौट आये। उन्होंने अपना अध्ययन एवं अध्यापन जारी रखा।

आदर्श आचरण

गाथा है कि वे नौ फुट तीन इंच लम्बे थे। दैनिक जीवनमें शान्त रहते थे। कम बोलते थे। किन्तु पितृ मन्दिर एवं राज्य दरबारमें परिष्कृत शुद्ध वाणीका प्रयोग करते थे। ठीक नपे तुले और सीधे शब्दोंका प्रयोग करते थे। उन्हें देखने से ही उनकी ओर लोग आकर्षित हो जाते थे। राजा उन्हें जब राज्यकार्य निमित्त बुलाता तो वे बिना वाहन एवं घोड़ेकी प्रतीक्षाके ही पैदल चल देते थे।

कनफ्यूशियसका व्यवहार सरल था। मुद्रा प्रसन्न रहती थी। सुशील परन्तु दृढ़ थे। आदेशात्मक भाव होते हुए भी उसमें कठोरता न थी। व्यक्तित्व सम्मानित होते हुए भी प्रिय था। सबके प्रति आदर प्रकट करते थे। उन्हें देखकर स्वतः आदरकी भावना उद्भूत होती थी। उनके अनेक सहृदय मित्र थे। वे सर्वप्रिय न थे। वे अत्यन्त गम्भीर थे। स्पष्ट वक्ता थे।

वे कहते थे—मनमें विरोध एवं कुटिलता रखते हुए भी उन लोगोंसे छिपाया जाय जिनसे मित्रताका दावा किया जाता है तो इस प्रकारके आचरणपर लज्जा आनी चाहिये।

वाक्यपटुता पसन्द नहीं करते थे। स्वयं वक्तृत्वका अभ्यास नहीं किया था। स्पष्ट कहते थे—मुझमें व्याख्यान देनेकी मेधा नहीं है। कृत्रिमतासे घोर घृणा करते थे। सादा, सरल जीवन उन्हें प्रिय था।

बातोंसे मुक्त

पहलेसे ही किसी परिणामपर नहीं पहुँचते थे। पहलेसे ही कोई धारणा नहीं बना लेते थे। खुले दिमागसे हमेशा बात सुनते, कहते और राय देते थे।

किसी विषयपर अत्यन्त निश्चित नहीं हो जाते थे। कभी जिद नहीं करते थे। उनकी बातें लोग मान लें इसका कभी प्रयास नहीं किया। किसीकी बात यदि उचित हुई तो अपनी बात त्यागकर तुरत स्वीकार कर लेते थे।

अपने ही दृष्टिकोणसे किसी बातको नहीं देखते थे। दूसरेके दृष्टिकोणका भी आदर करते थे। अपनी बात समझाने और दूसरेकी समझनेका प्रयास करते थे।

वे पूर्व निश्चयसे परे थे। औचित्य एवं न्याय ये ही दो मापदण्ड उनके पास थे। इन्हींकी तुलापर सब बातोंको वे तौलते थे।

वे कहते थे—गलती करनेपर गलतीका सुधार करना गलती है। सज्जनोंकी गलती सूर्य एवं चन्द्रमाके ग्रहणके समान है। वे गलती करते हैं तो दुनिया देखती है। यदि गलती ठीक कर लेते हैं तो दुनिया उनकी ओर आश्चर्यसे ताकने लगती है।

विरक्त नहीं

वे विरक्त नहीं थे। वैराग्यका कहीं उन्होंने समर्थन नहीं किया। भौतिक प्रसाधन एवं धनको महत्त्व नहीं देते थे। वे कहते थे—मानव का उद्देश्य भौतिक चमक-दमकमें अपनेको भूलना नहीं है। यदि सम्पत्ति हमारी होती तो हम उसे येन-केन प्रकारेण प्राप्त करनेका प्रयास करते। उस प्रयासका परिणाम संघर्ष एवं अवगुण आचरण होता। सम्पत्ति प्राप्त करना हमारा उद्देश्य नहीं है। मैं उसे प्राप्त करूँगा जिससे प्रेम करता हूँ।

प्रेम

एक शिष्यने पूछा—

'गुरु ! प्रेम क्या है ?'

'मानवसे प्रेम करना ही प्रेम है।'

'लेकिन है क्या ?'

'फलकी अपेक्षा कर्मसे अधिक प्रेम करना ही प्रेम है।'

'यह कैसे ?'

'किसी कार्य करनेकी प्रसन्नतामें ही प्रेम है। उस प्रसन्नताके लिए कार्य करना ही प्रेम है। परिणामकी प्रसन्नतामें ही प्रेम है। उचित कार्यको इसलिए करना चाहिये कि उसे हमें करना है। इसलिए नहीं कि उसका फल इस जन्म या उस जन्ममें मिलेगा। अच्छे काम करने की प्रसन्नता ही अच्छेमें प्रेम करना है।'

'प्रेमका फल ?'

'प्रेम ही अपना स्वयं पुरस्कार है। प्रेममें शान्ति है। यदि प्रेमकी बाजी लगी हो तो महान् सेनाके सम्मुख भी मत झुको।'

'प्रेमका हृदय—।'

'सुनो ! वह हृदय जो प्रेममें लगा रहता है, कभी बुरा नहीं कर सकता। जो दूसरोंसे प्रेम करता है उससे दूसरे भी प्रेम करते हैं। दुनियामें ऐसी कौन-सी चीज है जो अच्छी होने पर भी उपयोगी न हो ?'

सन्त प्रकृति

वे महात्मा थे। सन्त थे। वैरागी नहीं थे। वैराग्यका उपदेश नहीं दिया। उन भौतिक सुखोंको भोगनेके लिए कहते हैं, जो मानव गुणों एवं आचारमें बाधक नहीं होते।

आनन्दका स्रोत अध्ययनको माना है। वृन्द-संगीतके प्रेमी थे। स्वयं बंशी बजाते थे। वृन्द-संगीतमें भाग लेते थे। सुखको मानव-जीवनका आवश्यक अंग मानते थे। युवकोंके प्रति आदर-भावना रखते थे। कहते थे—आजका युवक कलका श्रेष्ठ व्यक्ति हो सकता है। उसका आदर करना चाहिये। कनफ्यूशियस उच्चकोटिके संयमी हुए हैं।

अध्यापक

असंख्य लोग विश्वमें अध्यापक हुए हैं। होते रहेंगे। किन्तु कनफ्यूशियस जैसा कोई अध्यापक न होगा। उस एक अध्यापकने केवल अपने अध्यापन कार्यसे चीनमें महान् क्रान्तिकी नींव डाली थी। उन्होंने राष्ट्रकी विचारधारा बदल दी। जो कार्य वे स्वयं पूरा नहीं कर सके उसे वे अपने विद्यार्थियोंके लिए छोड़ गये। उनकी शिक्षाका उद्देश्य व्यावहारिक था। उन्होंने व्यावहारिक ज्ञान एवं आचरणकी शिक्षा दी। उन्होंने गुणी, शिक्षित एवं आचारवान शासक वर्ग उत्पन्न करनेका विचार किया।

वे काल्पनिक, सैद्धान्तिक एवं तार्किक शिक्षामें विश्वास नहीं करते थे। वे कहते थे—अनुशासनहीन दूसरोंको अनुशासनमें कैसे रख सकता है। उन्होंने अपने निर्धन शिष्योंको शासन करने योग्य बनाया था।

प्लेटोके दार्शनिक सिद्धान्तको उन्होंने व्यावहारिक रूप दिया। प्लेटोके आदर्श राजनीतिक सिद्धान्त केवल पुस्तकोंमें लिखे सिद्धान्त रह गये किन्तु कनफ्यूशियसने अपनी व्यावहारिक ज्ञानमय शिक्षा द्वारा चीनके राजा-रंक सभीकी काया पलट दी। कहना न होगा कि इस क्षेत्रमें वे प्लेटोसे अधिक सफल साबित हुए।

अध्ययन-पद्धति

उनकी अध्ययन-पद्धति भारतके गुरुकुलों एवं काशीके पण्डितों जैसी थी। शिष्य उनके स्थानपर एकत्र होते थे। उनके साथ रहते। उनसे प्रश्नोत्तर होता। शंका समाधान करते। आचरणको वे शिक्षासे भी अधिक महत्त्व देते थे।

उनकी शिक्षाका उद्देश्य सज्जन नागरिक उत्पन्न करना था। वे कहते थे—मनुष्यको अध्यापककी बातकी अपेक्षा अपनी बुद्धिकी बात माननी चाहिये। अध्यापक सर्वदा साथ नहीं रहेगा। बुद्धि कभी साथ न छोड़ेगी।

वे अन्ध-विश्वासके घोर विरोधी थे। उन्होंने उसकी निन्दा की है।

कभी भरोसा नहीं किया। कहते हैं—मुझे पूर्ण सत्यका ज्ञान नहीं है। आत्मविश्वास एवं स्वतन्त्रता ही सूत्र है। उनपर ही भरोसा किया जा सकता है। सज्जन अपने अन्दर खोजता है। छोटा मनुष्य दूसरोंमें खोजता है। बाहर खोजता है। इसका विचार मत करो कि तुम्हारी ख्याति है कि नहीं। विचार इस बातका करो कि तुम ख्याति योग्य हो कि नहीं ?

अध्ययनकी पहली सीढ़ी सत्य का अध्ययन है। यह अध्ययन मनुष्यको उसके गुणोंका परिचय करा देता है। नैतिक पूर्णता (चिःशन) मानवका ध्येय है। नैतिक तथा सामाजिक आचार (ली) समाजका प्राण है।

पांडित्य

अध्ययनका अर्थ केवल पुस्तक पढ़ना नहीं है। उनका कहना था —बिना विचार अध्ययन निरर्थक है। अध्ययनहीन ज्ञान खतरा है। महा बुद्धिमान एवं मूर्ख जगत्के प्राणी है, जिनमें परिवर्तन लाना कठिन है।

आचरणका विकास अध्ययनका जीवन है। चाणक्यने भी ज्ञानके साथ व्यावहारिक आचरणपर जोर दिया है। चाणक्य भी कहता है उस ज्ञानका कोई तुक नहीं है जिसका व्यावहारिक जीवनमें उपयोग न किया जाय। चाणक्यके समान ही कनफ्यूशियसने पुस्तकीय ज्ञानके साथ-ही-साथ आचरणीय एवं व्यावहारिक ज्ञानको प्रमुख स्थान दिया है। अपनी इस विचारधाराके द्वारा उन्होंने चीनी जीवनको अत्यधिक प्रभावित किया है। उन्हें वैचारिक क्रान्ति करनेका श्रेय प्राप्त है।

उन्होंने प्राप्य चीनी साहित्यका संग्रह किया। उसे बोधगम्य बनाया। उसे वर्गविशेषकी वस्तु न बनाकर सार्वजनिक बनाया। विद्या एवं ज्ञानको सार्वजनिक रूप देनेका परिणाम यह हुआ कि वे चीनके हृदयमें श्रद्धास्पद रूपमें बैठ गये।

दार्शनिक

समाजमें समय-समयपर संकट उत्पन्न होते रहे हैं। ईसा पूर्व दो हजार एक सौ वर्षमें मिस्र तथा प्राचीन यूनानने उनका सामना किया है। यूनानमें सुकरात द्वारा ऐसे ही काममें दार्शनिक विचारोंका उदय हुआ। मिस्रमें सुधारवाद आन्दोलनका श्रीगणेश हुआ। चीनमें कनफ्यूशियस विचारधारा फैली।

धार्मिक क्षेत्रमें उनका दृष्टिकोण मिला-जुला था। उन्होंने परम्परागत सनातन धर्मकी कुछ चीजोंको स्वीकार किया। उनपर जोर दिया। कुछको हटाना चाहा। कुछका सुधार किया।

आध्यात्मिक बातोंके स्थानपर सामाजिक एवं राजनीतिक सुधारोंको श्रेष्ठता दी। मानव जीवनको श्रीसम्पन्न करनेके लिए लोगोंको उन्मुख किया। मानवको देवत्व तथा परलोककी आशा देकर उन्हें काल्पनिक जगत्में घुमाया नहीं। जीवनको समाज तथा देशोपयोगी बनाना ही उनका उद्देश्य था। उनकी समस्त विचार-शृंखलाओंका यही केन्द्र-बिन्दु है।

उन्होंने धार्मिक संस्कार एवं कर्मकाण्डोंमें बालकोंके समान सुखका अनुभव किया। पितृपूजाके सम्बन्धमें पूछनेपर कहा—मानवकी सेवा करने योग्य हुए नहीं, मृतात्माकी क्या पूजा करोगे ?.

प्रार्थनामें अविश्वास

प्रार्थनामें विश्वास नहीं करते थे। एक बार बीमार पड़े तो लोगोंने प्रार्थना करनेके लिए कहा। बोले—मैंने अपनी प्रार्थना बहुत पहले कर ली है। बातोंकी अपेक्षा कर्मोंसे प्रार्थना कर चुका हूँ।

स्वर्ग

चीनमें मृतात्माओंका सामूहिक नाम स्वर्ग है। वे ऊपर अर्थात् आकाशमें रहती हैं। वहाँसे जगत्के कार्योंको देखती हैं। लोगोंको उनके कर्मानुसार पुरस्कार एवं दण्ड देती हैं। कनफ्यूशियस स्वर्ग पथके विषयमें जोर नहीं देते। उनकी दृष्टिमें स्वर्ग अवैयक्तिक नैतिक

शक्ति थी। मानव जगत्की नैतिकता, स्वर्गीय नैतिकताका दूसरा रूप था। उनके एक शिष्यने पूछा—

'गुरु! क्या स्वर्ग है?'

'नहीं।'

'मृत्युके पश्चात् क्या आत्मा स्वर्ग जाती है?

'नहीं।'

'कैसे?'

'जब तुम जीवनके विषयमें नहीं जानते तो स्वर्गके विषयमें क्या जानोगे?'

नरबलि

चीनमें नरबलिकी प्रथा थी। कनफ्यूशियसने इस प्रथाका घोर विरोध किया। शंगकालमें अनेक नरबलियाँ दी जाती थीं।

यह प्रथा चाओ कालतक प्रचलित थी। उनके जीवनकालमें तीन नरबलियाँ दी गयी थीं। एक उन्हींके प्रदेश लूमें हुई थी।

सम्राट्के मरनेपर बहुतसे लोगोंको मारकर उसके साथ गाड़ दिया जाता था। कल्पना यह थी कि परलोकमें जाकर सम्राट्की वे सेवा करेंगे।

चिन वंशका प्रथम सम्राट् जब मरा तो उसके अन्तःपुरकी अनेक स्त्रियाँ बलि चढ़ा दी गयीं। भ्रान्ति फैली थी कि पृथ्वीके समान स्वर्गमें भी सेवा करनेवालोंकी आवश्यकता पड़ती है। अतएव सम्राट्के साथ परलोकमें जाकर इस जगत्की तरह वे सेवारत होंगी। सम्राट्को वहाँ किसी प्रकारका कष्ट न होगा।

हन वंशके एक राजाने अपनी मृत्युपश्चात् प्रसिद्ध संगीतज्ञोंको बलि करनेकी आज्ञा दी थी। उसे संगीत बड़ा प्रिय था। कोई यह आश्वासन न दे सकता था कि स्वर्गमें अर्थात् मरनेके पश्चात् जहाँ आत्मा जाती है उसे संगीतज्ञ मिल जायेंगे। सुभीतेकी दृष्टिसे उसे यही अच्छा प्रतीत हुआ कि पृथ्वीपरके उसके प्रिय संगीतज्ञ उसके साथ

जायँ। एतदर्थं एक संगीतज्ञ बलि चढ़ाया गया। सोलह संगीतज्ञोंने आत्महत्या की।

जहाँ नरबलि नहीं दी जा सकती थी वहाँ बलिके प्रतीक स्वरूप मानव मूर्तियाँ गाड़ दी जाती थीं। कनफ्यूशियसने इस प्रथाका भी विरोध इस दृष्टिसे किया कि कल्पनाका मूल ही त्याज्य है।

भाग्य

भाग्यपर विश्वास नहीं करते थे। कहते थे मनुष्यका कर्म ही उसका भाग्य है। परिश्रमका फल भाग्य है। भाग्यपर विश्वास करनेकी प्रवृत्ति जड़ बना देती है। भाग्यवादी निष्क्रिय हो जाते हैं। वे जड़वादी मनुष्यकी कल्पना स्वप्नमें भी नहीं कर सकते थे।

ताओ

ताओका अर्थ मार्ग किंवा पथ होता है। उसका एक सिद्धान्त है। व्यष्टि-समष्टि, समाज एवं राज्यके लिए आदर्श जीवन-पथमें ही मानवीय गुणोंका समावेश होता है। वह अनुशासन, नियम एवं संगीतपर जोर देते हैं। उनका कहना था कि वे मानवमें आचरण एवं शक्ति उत्पन्न करते थे।

वे कहते हैं—मकानके बाहर जानेका मार्ग होता है। बिना उस मार्गके दरवाजेके कौन बाहर जा सकता है। क्या विश्वमें कोई ऐसा है जो किसी मार्गका अनुकरण नहीं करता? यदि कोई मेरे मार्गके विषयमें प्रातःकाल सुने और सायंकाल मर जाय तो उसे किंचिन्मात्र क्लेश नहीं होगा। महाजनो येन गतः स पंथाः—भारतीय सिद्धान्त ही ताओका सिद्धान्त है। महाजनके पथका अनुकरण करना ही धर्म है। वह स्पष्ट कहते हैं—यदि साधारण वर्ग मार्गका अध्ययन न करे तो उन्हें सरलतापूर्वक एक ओर चलाया जा सकता है। अशिक्षित मनुष्योंको युद्धमें नेतृत्व देना उन्हें बाहर फेंकना है। मनुष्य यदि अपनी अन्तर्ध्वनिसे सर्वदा पूछता न रहे कि क्या करना उचित अथवा अनुचित है तो मैं नहीं कह सकता कि ऐसे मनुष्यके बारेमें क्या किया जाय।

अमरत्व

पुण्य करनेसे स्वर्ग मिलता है। अमरत्वकी प्राप्ति होती है। परलोकमें आनन्द मिलता है। यह लोक बनता है। परलोक बनता है। विश्वके सभी धर्म प्रायः यही कहते हैं। कनफ्यूशियस इनके विषयमें सोचते तक नहीं। वे कहते हैं—जो व्यक्ति सद्‌गुणोंका आश्रय लेता है, आचारका अनुकरण करता है, सन्मार्गसे प्रेम करता है, जगत्‌में उन्हें प्राप्त करनेका प्रयास करता है, वह मानवीय कर्त्तव्योंको पूरा करता है।

आनन्द

कितना सुन्दर वर्णन कनफ्यूशियसने किया है—खानेके लिए मोटा अन्न, पीनेके लिए पानी, तकियेके स्थानपर मुड़ी हुई केहुनी हो तो मुझे इन्हींमें आनन्द मिलेगा। मनुष्योंके सत्कर्मोंका पुरस्कार उस आत्म-सन्तोषमें है जो उसे अपने मानवीय कर्तव्योंके पूरा करनेमें मिलता है। यह करनेकी प्रसन्नता ही आनन्द है। स्वर्ग है। सब कुछ है।

महान् जर्मन दार्शनिक कैंटने भी यही कहा है—दो उद्देश्योंके निमित्त हमें नैतिक दृष्टिसे प्रयास करना चाहिये—अपनी पूर्णता और दूसरोंका आनन्द। कनफ्यूशियसने यही बात कैंटसे चौबीस सौ वर्ष पूर्व कही थी। पूर्णता प्राप्त करनेपर स्वर्ग, नरक सभी कुछ एक पूर्णतामें ही तिरोहित हो जाते हैं। वह पूर्णता प्राप्त होती है सन्मार्गके अनुकरणसे।

मध्यमार्ग

वे अतिवादमें विश्वास नहीं करते थे। मध्यमार्गके पक्षपाती थे। बुद्धके माध्यमिक दर्शनके कुछ सिद्धान्त उनके सिद्धान्तोंसे मिलते-जुलते हैं। मानव अपनी दशा मध्यमार्गका अनुसरण कर ही सुधार सकता है। वे कहते थे—बहुत दूर जाना खराब है। परन्तु जानेसे भी कम जाना और खराब है। मध्यमार्ग उच्चतर सद्‌गुणी मार्ग है। किन्तु जनता इनका अनुकरण बहुत कम करती है। वह अपने सामनेके उदाहरणोंसे अधिक प्रभावित होती है।

राज्यका रूप

राज्य-विज्ञानके सम्बन्धमें प्लेटो, अरस्तू एवं कनफ्यूशियस बहुत कुछ सामग्री छोड़ गये हैं। प्लेटो एवं अरस्तूने वैज्ञानिक एवं संतुलित ढंगसे राज्य विज्ञानपर लिखा है। कनफ्यूशियसके ग्रन्थोंमें राज्य सिद्धान्त बिखरे मिलते हैं।

प्लेटोका आदर्श नगर-राज्य था। प्लेटोने नगरके मकानोंकी संख्या पाँच हजार चालीस निश्चित की थी। किन्तु कनफ्यूशियसने समस्त चीन साम्राज्यकी एक इकाईके रूपमें कल्पना की है।

प्लेटो तथा अरस्तूने राज्य सिद्धान्तपर खूब लिखा है। आदर्श राज्यकी कल्पना की है। कनफ्यूशियसने सिद्धान्तकी अपेक्षा राज्यके सुधार एवं उसके व्यवहार पर अधिक लिखा है। वह काल्पनिक दार्शनिक नहीं था। व्यावहारिक प्राणी था, उसकी कल्पना व्यवहारपर आधारित थी। उन्होंने अपने समयमें राज्यकी जैसी व्यवस्था देखी उसमें सुधार कर उसे आदर्श बनानेका सुझाव लोगोंके सम्मुख रखा।

उन्होंने अपना आदर्श भविष्यमें नहीं परन्तु पुरातन कालमें देखा। उसकी दृष्टिमें आदर्श राजाओंका प्राचीन काल चीनका स्वर्णयुग था। प्लेटो और अरस्तूने भविष्यकी ओर आँखें उठायीं। उसका आदर्श आनेवाला था। कनफ्यूशियसका आदर्श आकर जा चुका था। उन्होंने प्राचीन कालको आदर्श मानकर कहा—हसीयाकी दिनचर्या, इनके रथ एवं चाओ राजाके मुकुटका प्रयोग करो। देशकी भौतिक उन्नति उसके भौतिक विकासमें नहीं बल्कि उसके सद्गुणोंमें है।

क्रान्तिका अधिकार

क्रान्तिका अधिकार वे स्वीकार करते हैं। यदि शासक बुरा है, स्वार्थी है, आत्मश्लाघी है, राज्यकोषका उपयोग अपने लिये करता है तो जनताका अधिकार ही नहीं पवित्र कर्तव्य है कि राजा किंवा शासनव्यवस्थाको उलट दे। राजा एवं शासकवर्ग जनताके संरक्षक हैं। राज्यके प्रत्येक कर्मचारीका यह पवित्र कर्तव्य है कि वह उसे एक

उत्तम ट्रस्ट समझे।

एक शिष्यने पूछा—

'शासक अच्छा न हो तो ?'

'यदि सरकार जनताका कल्याण नहीं करती तो शासकको नियमतः शासन करनेका अधिकार नहीं है।'

'उनके साथ क्या व्यवहार किया जाय ?

'यदि राजा लोक-कल्याणमें असफल होता है तो जनता उसे सिंहासनसे उतार दे। उससे विद्रोह करे।'

'राजाका शरीर—'

'राजाका व्यक्तित्व तभीतक पवित्र है जबतक वह राजकीय पदके योग्य है।'

शासन

'उत्तम शासन क्या है ?'—कनफ्यूशियसके शिष्य त्जू तिंगने पूछा—

'प्रभावशाली सरकार', कनफ्यूशियसने उत्तर दिया।

'कैसे होगी।'

'पर्याप्त भोजन, अस्त्र-शस्त्र एवं जनताका विश्वास प्राप्त होनेपर ही सरकार प्रभावशाली कही जायगी। '

'यदि तीनमेंसे किसीको छोड़ना पड़े तो किसका त्याग किया जाय ?'

'शस्त्रास्त्र।'

'यदि शेष दोनोंमेंसे एक त्यागना पड़े ?'

'भोजन।'

'क्यों ?'

'अनन्तकालसे मृत्यु मानवको खाती आयी है। यदि भोजन न होगा तो कुछ लोग मृत्यु-मुखमें होंगे।'

'यदि तीसरा न हो तो ?'

'सर्वनाश होगा। जनताका विश्वास यदि सरकारको प्राप्त न हुआ तो सरकार टिक नहीं सकती।'

'अच्छे शासनसे क्या होगा?'

'यदि शासन अच्छा होगा तो जनता सुखी रहेगी। जो दूर हैं वे समीप आ जायेंगे।'

'और'

'दूसरे लोग अपने बच्चोंको पीठपर लादे आयेंगे। उनके आनेसे राज्यकी शक्ति बढ़ेगी।'

'शासनका उद्देश्य क्या है?'

'जनताका कल्याण, जनताकी समृद्धि। जनता साध्य है, साधन नहीं। राज्य जनताके लिए है। जनता राज्यके लिए नहीं है। शिक्षा एवं सद्गुणोंके आश्रयमें शासक एवं शासितोंका भेद मिट जाता है।'

'मनुष्य कब अच्छा शासक हो सकता है?'

'कोई तबतक शासक एवं शिक्षक नहीं हो सकता जबतक उसमें अपने कुटुम्बपर शासन करनेकी क्षमता न आ जाय।'

लूके राजा चिंगचीकी शासन-व्यवस्थाके विषयपर वे बोले—'राजाको राजा, कर्मचारीको कर्मचारी, पिताको पिता और पुत्रको केवल पुत्र रहने दो। सब व्यवस्था स्वतः ठीक हो जायगी। साधनोंकी सीमा ही शासनका रूप निश्चित करती है।'

दण्ड

'दण्ड-व्यवस्थाका रूप क्या है?'—शिष्यने कनफ्यूशियससे पूछा।

'जनता केवल कानूनसे नहीं चलती।'

'क्यों?'

'यदि कोई दण्डसे शान्ति कायम रखना चाहता है तो जनता नैतिकताका किंचित् मात्र विचार किये बिना दण्डसे बचना चाहेगी।'

'क्या करना उचित है?'

'सद्गुणोंसे जनताका नेतृत्व करनेपर जनता नैतिकताका आभार

मानेगी। वह स्वयं अपनेको सुधार लेगी। दण्डकी आवश्यकता ही न होगी।'

वे निषेधात्मक दण्डकी अपेक्षा ठोस उदाहरणोंमें विश्वास करते थे। शिक्षित जनतामें दण्डकी आवश्यकता न होगी। वे कहते थे—'अशिक्षितको फाँसीकी सजा देना अत्याचार है, क्योंकि अज्ञको ज्ञान नहीं होता कि वह जो कर रहा है वह उचित है अथवा अनुचित। यदि वह अनुचित कार्य करता है तो उसके लिए वे भी दोषी हैं जिन्होंने उसे अज्ञ किंवा मूर्ख रखा। जानते हुए अपराध करनेवालेको दण्ड देना उचित है।' उनकी दृष्टिमें कपटसे बढ़कर और कोई घृणित अपराध नहीं था।

जनता

प्लेटोको लोग दार्शनिक कहते हैं, कनफ्यूशियसको धार्मिक उपदेशक। प्लेटोने एक बार कहा था—'मानवीय मामलोंमें बहुत शीघ्रतापूर्वक विचार करनेकी आवश्यकता नहीं है।' कनफ्यूशियस मानवीय मामलोंमें तुरन्त विचार करनेके पक्षपाती थे। उन्होंने पारलौकिक जीवनपर विचार ही नहीं किया। वे चाहते थे कि मनुष्यका जीवन उसके जीवनकालमें, यहीं, इस लोकमें सुधर जाय।

'सद्‌गुण क्या है?'—फानचीहने पूछा।

'मानव-स्नेह।'

'ज्ञान?'

'मानवको जानना।'

'जनताके लिए पहला कार्य क्या करना चाहिये।'

'धनार्जन।'

'सज्जन कौन है।'

'आवश्यकता पड़नेपर जो सहायक होता है। लेकिन अमीरको और अधिक अमीर नहीं बनाता।'

'किसके लिए शासन किया जाय?'

'जनताके लिए। यदि राज्य सन्मार्गगामी है तो दरिद्रता, एवं दुर्बोध्यता लज्जाकी वस्तु है। ऐसा नहीं है तो यह लज्जाकी बात होगी कि पद एवं धन प्राप्त किया जाय।'

'जनतापर शासन करना क्यों कठिन है?'

'इसलिए कि जनता बहुत कुछ जानती है।'

'राज्यका सबसे प्रमुख अंग क्या है?'

'जनता।'

'क्यों?'

'उसका कल्याण ही राज्यका महान् उद्देश्य है।'

महान् लोकतान्त्रिक रोमन वक्ता सिसरोने कहा था—'जनता मूढ़ है। वह अनभिज्ञ है।' कनफ्यूशियसने कभी जनताको दोष नहीं दिया है। वे कहते थे—'शिक्षा जनताको ऊपर उठा देती है। अनभिज्ञ जनता अनभिज्ञ शासकसे बुरी नहीं होती।'

दासता

दासत्वप्रथा चीनमें नहीं थी। यूनानी और इटालियन दार्शनिक दासविहीन समाजकी कल्पना नहीं कर सकते थे। कनफ्यूशियसने कहीं दासत्वप्रथाका समर्थन नहीं किया है। वे मानवसमानताके पक्षपाती थे—चारों समुद्रोंके बीच रहनेवाला प्रत्येक मानव प्राणी समान है। उनकी शिक्षाका ही यह प्रभाव था कि चीनमें दासत्वप्रथा फैल न सकी। दासों एवं दासत्वप्रथाका वर्णन प्राचीन चीन साहित्यमें नहीं मिलता।

लोकतन्त्र

सुधारवादी आन्दोलनसे सत्रहवीं तथा अठारहवीं शताब्दीमें पश्चिमके राष्ट्रोंका दृष्टिकोण बदला। इसी प्रकार कनफ्यूशियस कालीन चीनका काल दार्शनिक सुधारवादी काल कहा जा सकता है। पश्चिमके राष्ट्रोंने अमेरिका तथा फ्रांसकी राज्यक्रान्तिके पश्चात् उन्नतिकी होड़ लगा दी। सर्वतोन्मुखी जनजीवनमें क्रान्ति एवं विकास हुआ।

चीनके राजनीतिक सिद्धान्तोंने गौण रूपसे पश्चिमको प्रभावित किया था। लेवन तथा वाल्टेयरने स्वीकार किया है कि शासकीय कलामें चीन विश्वका सिरमौर रहा है। कनफ्यूशियसका व्यावहारिक, राजनीतिक सिद्धान्त अपने क्षेत्रमें अप्रतिम है। फ्रेन्सिश्रोने चीनकी प्रशासकीय व्यवस्थाको किसी भी देशके लिए उदाहरण माना है। एडोल्फ रिचवेने स्वीकार किया है—पचीस सौ वर्ष पहले कनफ्यूशियसने उसी प्रकार सोचा था जैसा हम आज सोच रहे हैं। कनफ्यूशियस कितनी दूरकी बात कहता है—'यदि मनुष्य अपने शब्दोंसे समझा जा सके तो कहना न होगा कि उसने अपना आदर्श प्राप्त कर लिया है।'

वाल्टेयर कहता है—'विश्वका आनन्दमय समय वह था जब कनफ्यूशियसके सिद्धान्तोंका अनुसरण किया गया था।' महान् राजनीतिविशारद दार्शनिक माण्टसकूने कहा है—'चीनका राज्य कौटुम्बिक शासनकी भूमिपर आधृत किया गया है। चीन सम्राट् जानता है कि यदि मेरा शासन न्यायप्रिय न होगा तो मुझे अपने जीवन एवं राज्य दोनोंसे हाथ धोना पड़ेगा।'

स्वर्ग और मानव

ताउ ची ताउ काशी आ चुके हैं। उनका स्थान च्यांग काई शेकके शासनमें द्वितीय था। उन्होंने कहा था—'चीनकी क्रान्तिके नेता डाक्टर सनयात्सेन कनफ्यूशियस दर्शनके आधुनिक अनुगामी हैं।' चीनी राष्ट्रपिता डाक्टर सनयात्सेनने कहा था—'कनफ्यूशियस लोकतन्त्रके पक्षपाती थे।'

कनफ्यूशियसने चाओ तथा शनका सर्वदा उदाहरण दिया है। वे राज्यको अपने उत्तराधिकारमें मिली सम्पत्ति न मानकर लोकका ट्रस्ट मानते थे। उनकी राज्यव्यवस्था नामके लिए राजतन्त्रीय थी। वास्तवमें वे लोकतन्त्रीय थे। डाक्टर सनयात्सेनने कहा था—'जहाँतक राजनीतिक दर्शनका सम्बन्ध है यूरोप चीनसे बहुत कुछ सीख सकता है।'

मानव

दार्शनिक हाब्सके समान मानवको कनफ्यूशियसने क्रूर, स्वार्थी, मायावी, कपटी, द्वेषी, हिंस्र प्राणीतुल्य नहीं माना है। उन्होंने मनुष्यको सद्भावयुक्त, अनुग्रही एवं प्रज्ञाशील कहा है। उनके गुणोंके विकासपर जोर दिया है। गुणोंके विकसित होनेपर मानव स्वयं विकसित होता है। उसके साथ विकसित होता है कुटुम्ब, समाज एवं राज्य। नैतिक नियमोंके विकासका ही नाम संस्कृति है। पूर्ण नैतिकता ही अमृतत्व है। पृथ्वीके जीवधारियोंमें मानव सर्वश्रेष्ठ है। सद्‌गुण मानवको उसके जन्मके कारण प्राप्त होते हैं। यदि उन्हें वह खोता है तो खतरेमें पड़ता है।

धर्म-परिवर्त्तन

धर्म-परिवर्तन मुसलिम और ईसाई धर्मोंका मुख्य अंग है। हिन्दू तथा बौद्धोंके समान कनफ्यूशियसने शुद्धि सिद्धान्तमें विश्वास नहीं किया। धर्म-परिवर्तनके लिए कभी कहा ही नहीं। उन्होंने धर्म-परिवर्तनके स्थानपर ज्ञान द्वारा मानव बुद्धिमें परिवर्तन करना चाहा था। उसने गुणपर जोर दिया है, संख्यापर नहीं।

उन्होंने कहा—'गुणी एवं शिक्षित होनेपर मनुष्य पथ स्वयं ढूँढ़ लेगा। धर्मपरिवर्तन केवल नामपरिवर्तन है।' उन्होंने कितनी अच्छी बात कही है—'मनुष्यकी तौल मनुष्य स्वयं है।'

कुटुम्ब

पश्चिममें समाजकी इकाई व्यक्ति है। चीनमें कुटुम्ब है। कनफ्यूशियसका कहना है—'साम्राज्यका मूल राज्यमें, राज्यका कुटुम्बमें और कुटुम्बका व्यक्तिमें है।' चीनी सर्वदा साम्राज्य, राज्य एवं कुटुम्बकी भाषामें बात करते हैं।

रोम साम्राज्य-कालमें कुटुम्बका विशिष्ट स्थान था। चीनकी कौटुम्बिक प्रणाली रोमन पोटेस्टासे भिन्न है। पोटेस्टामें पेट्रिया अर्थात् कर्ता खान्दानको बहुत अधिकार था। चीनमें इस प्रकारका अधिकार

कुटुम्बपतिको नहीं है। रोममें पिताका स्थान श्रेष्ठ था। चीनमें माता-पिता दोनोंका स्थान श्रेष्ठ है। रोममें पिताको मातासे बड़ा माना जाता था। चीनमें माता-पिता दोनोंका स्थान कुटुम्बमें बराबर है। कनफ्यूशियसका कथन है—'चीनकी सभ्यता सन्तानीय पितृनिष्ठासे आरम्भ होती है। सन्तानकी पितृनिष्ठा मनुष्यके सब सुखोंका आधार है।' यह सिद्धान्त ईसा पूर्व दो हजार तीनसौ सत्तावन वर्ष अर्थात् सम्राट् शुनके समयसे ही स्थापित है। उसे कनफ्यूशियसने माना है। वह आज भी चीनी जीवनका मूलाधार है।

पितृनिष्ठा माता-पिताके स्नेहसे आरम्भ होती है। राज्य अपनी पूर्णता सेवामें प्राप्त करता है। उसका अन्त अपनेमें स्वयं सत्य एवं सद्गुण स्थापित करनेसे होता है। पितृ-निष्ठा अनुग्रह किया एहसानका प्रारम्भिक रूप है।

कुटुम्बमें पतोहू सासकी दासी तुल्य नहीं। उसकी समानता उसके पतिमें लीन हो जाती है। कनफ्यूशियसने कहा है—'सन्तान एवं पत्नीका स्नेह वीणा एवं बाँसुरीकी तरह मीठा होता है। भाइयोंके स्नेहसे जीवन मधुर होता है।'

पितृगणोंको स्मृति-पटलसे भुलाना अग्राह्य है। वह मनुष्यको एक ओर प्रसन्न और दूसरी ओर सशंकित रखता है—उन्हें भी एक दिन वृद्ध होना है, मरना है। उनके सम्मुख जीवनका कठोर सत्य रखता है। चीनमें कुटुम्ब सामाजिक आधार-शिला है। प्रत्येक व्यक्ति चाहता है कि उसका कुटुम्ब प्रसन्न रहे। अतएव कोई युद्धके विषयमें नहीं सोचता। यही सबसे बड़ा कारण है कि चीन राष्ट्र अपने जीवनमें कभी आक्रमक राष्ट्र नहीं रहा है।

पाँच कर्तव्य

मनुष्यके पाँच कर्तव्य हैं। राजा प्रजाके बीच, सन्तान तथा माता-पिताके बीच, पति-पत्नीके बीच, ज्येष्ठ एवं कनिष्ठ भ्राताके बीच तथा मित्रोंके बीच। उन्हें पूर्ण करनेके लिए तीन गुणोंकी आवश्यकता होती

है—प्रज्ञा; शुभेच्छा एवं साहस।

महिलाएँ पवित्र

कहावत है कि पति गाता है, पत्नी दुहराती है। पति-पत्नी पारस्परिक स्नेहसूत्रमें बँधे रहते हैं। चीनमें स्त्रियोंने तंग एवं चिंग कालमें सुन्दर शासन किया है। चीनके लोग स्त्रियोंको पवित्र समझते हैं। वे भविष्यकी सन्तानोंकी जननी हैं। यदि वे अशुद्ध तथा अपवित्र होंगी तो सन्तानपर बुरा प्रभाव पड़ेगा, परिणाम स्वरूप समस्त राष्ट्र अशुद्ध एवं अपवित्र हो जायगा। चीनमें नाजायज सन्तानें नहीं हैं। उन्हें कोई जानता भी नहीं।

विवाह-विच्छेद

विवाह-विच्छेद चीनमें जायज है, परन्तु अज्ञात-सा है। चीन विश्वास करता है कि प्रत्येक पुरुषकी पत्नी एवं प्रत्येक स्त्रीका पति होना आवश्यक है। एकाकी जीवन नापसन्द किया जाता है। उनका विश्वास है कि ईमानदार आदमी विवाह कर जगत्‌की अधिक सेवा कर सकता है। उनकी धारणा है कि अविवाहित लोग राज्य एवं समाजके लिए सर्वथा अनुपयुक्त हैं।

विवाह

स्त्री-पुरुषका सम्बन्ध पवित्र एवं अनिवार्य माना गया है। उसे धार्मिक, सांस्कारिक रूप विवाह द्वारा दिया जाता है।

भारतके समान अभिभावककी अनुमति एवं आशीर्वाद पाना आवश्यक है। माता-पिता किंवा सम्बन्धी विवाह ठीक करते हैं। भारतकी तरह विवाह-सम्बन्ध ठीक करनेके लिए बिचवई तथा अगुआ होता है। वह दोनों पक्षोंसे बातचीत करता है। उसीके द्वारा विवाहका सब काम ठीक किया जाता है।

विवाहके पूर्व वर-कन्याका मिलना, प्रेमालाप, स्वयं विवाह ठीक कर लेना, आदि पश्चिमी सभ्यताकी झलक चीनमें नहीं मिलेगी। पाश्चात्य सभ्यताका जिनपर रंग चढ़ गया है वे पाश्चात्य ढंगपर सामाजिक

विवाह ठीक कर लेते हैं। परन्तु यह अच्छी दृष्टिसे नहीं देखा जाता। भारत और चीनकी भावना इस सम्बन्धमें एक जैसी है।

विवाह-संस्कार

दोनों पक्षोंकी स्वीकृति मिल जानेके पश्चात् तीन पीढ़ियोंतककी वंशावली देखी जाती है। दोनों कुलोंकी बीमारी आदिकी जाँच की जाती है। गुलाबी पत्रपर लग्न-पत्रिका भारतकी तरह बनायी जाती है। उसमें मुहूर्त आदि लिखा रहता है।

विवाहके दो भाग होते हैं। कन्या पक्षके लोग वरके पहनने योग्य वस्त्र देते हैं। तिलक उत्सवसे वह बहुत कुछ मिलता है। जिस प्रकार यहाँ तिलक और विवाहके बीच काफी समय दिया जाता है, उसी प्रकार चीनमें भी दोनों संस्कारोंके बीच समय दिया जाता है।

विवाहकी तिथि आदि निश्चित हो जानेपर वरपक्ष एक विशेष प्रकारका सांस्कारिक पत्र कन्या पक्षके पास भेजता है। विवाह-संस्कार-की प्रक्रिया लम्बी है। मुख्य संस्कारमें वर-वधू एक दूसरेके होंठका मधुप्याला पीते हैं। विवाहके अवसरपर दावत होती है। दावतमें पड़ोसी, मित्र, सम्बन्धी एवं परिचित लोग आमन्त्रित किये जाते हैं। विवाह-संस्कार दो या तीन दिनोंमें समाप्त होता है।

मित्रता

चीनमें मित्रताको महत्त्व दिया जाता है। मित्रतासे मानवीय संस्कृतिका विकास होता है। राजनीतिमें अच्छा-से-अच्छा मित्र कठोर शत्रु बन जाता है। कनफ्यूशियसने कहा है—'एक मित्रको दूसरे मित्रके गुणोंकी रक्षा, विकास एवं प्रोत्साहनमें सहायक होना चाहिये।'

मित्रताका आधार रक्षा एवं समानता है। कनफ्यूशियस मित्रोंके बीच कभी अरक्षित नहीं रहे। वे गर्वसे कहा करते थे कि क्या मैं दस मित्रोंके बीच भी अरक्षित कहा जा सकता हूँ ? मित्रके साथ सत्य-व्यवहार अपेक्षित है। मित्र चाहे दूर रहे या समीप, उसके प्रति अप-शब्दोंका प्रयोग निषिद्ध किया गया है। किसी मित्रसे मित्रताका रहस्य

उसका गुण है। उसमें वय, धन एवं पदका व्यवधान उत्पन्न नहीं होता।

धर्म

कनफ्यूशियस-धर्ममें कोई बाइबिल या कुरान नहीं है। याजक नहीं हैं। पुरोहित नहीं हैं। धर्म-परिवर्तन या शुद्धि नहीं है। देवताओंके सम्बन्धमें कोई निश्चित कुरान नहीं है।

बौद्ध तथा ताओ धर्मानुयायियोंके समान कोई व्यक्ति कनफ्यूशियस धर्मावलम्बी नहीं कहा जा सकता। कनफ्यूशियसवादी वही है जो उनके विचारानुसार जीवनमार्गका अनुसरण करता है। जिस प्रकार प्रत्येक पाश्चात्य व्यक्ति अरस्तूवादी कहा जा सकता है, उसी अर्थमें प्रत्येक चीनी कनफ्यूशियसवादी है। ठेठ चीनी वही है जो सभी धर्मों-का समन्वय करता हुआ सभी धर्मोंको गन्तव्य स्थानपर पहुँचानेका केवलमात्र एक मार्ग मानता है। स्वर्ग, पितृ एवं कनफ्यूशियस पूजाकी परम्परा ही धार्मिक परम्परा कही जा सकती है। पृथ्वी और स्वर्ग जीवनके मूल स्रोत हैं। पितृगण मानवशरीरके मूलस्रोत हैं। पितृगणोंके ही कारण हमारा जन्म हुआ है। चीनमें कनफ्यूशियसकी उसी प्रकार पूजा होती है जैसे किसी श्रेष्ठ पितर किंवा अभिभावक-की होनी चाहिये। सन् १९५ में इन वंशके संस्थापक प्रथम सम्राट्ने कनफ्यूशियसकी पूजा स्वयं की। उनकी समाधिके सम्मुख बलि दी। उसी कालसे कनफ्यूसियसकी पूजा आरम्भ हो गयी।

नवीन कनफ्यूशियसवाद

बुद्ध धर्मने चीनमें प्रवेश किया। धर्म नामका जिससे बोध होता है, उसकी एक सुस्पष्ट रूपरेखा रखी। नवीन दर्शन दिया। नवीन जीवन दिया। नवीन दृष्टिकोण रखा। कनफ्यूशियस तथा बौद्ध सिद्धान्तोंमें बहुत कुछ साम्य था। दोनों विचारधाराओंके मिलनके परिणामस्वरूप एक नयी विचारधाराका आविर्भाव हुआ। उसी

विचारधाराका नाम नवीन कनफ्यूशियसवाद है। दोनों वादोंका कभी संघर्ष नहीं हुआ। दोनों एक-दूसरेके पूरक हो गये।

मुसलिम एवं ईसाई धर्म भी चीनमें आये। वे चीनमें चीनियोंकी बौद्धिक परिपक्वता एवं सहिष्णुताके कारण अपना प्रभाव स्थापित न कर सके। चीनकी इस बौद्धिक परिपक्वता एवं सहिष्णुताका सबसे बड़ा उदाहरण है कि एक ही कुलमें ईसाई, मुसलिम, बौद्ध, ताओ एवं कनफ्यूशियस धर्मानुयायी व्यक्ति होते हैं। वे लड़ते नहीं। इसका कारण कनफ्यूशियसकी वह देन है जो व्यावहारिक जगत्में मानवको ज्ञानी, तार्किक एवं दार्शनिक बना देती है।

अन्तिम समय

उनके अन्तिम दिन दुःखपूर्ण ही रहे। उन्होंने दुःखपूर्वक कहा था—'खेद है, मुझे कोई जान न सका।'

लोगोंने कारण पूछा। उस महान् मानवने कहा—'मुझे स्वर्गसे कोई असंतोष नहीं है। मनुष्योंके विरूद्ध कुछ असंतोष नहीं है। मैंने अपना अध्ययन इस पृथ्वीपर जारी रखा। ऊपरी स्वर्गसे सम्बन्ध रखा। वह स्वर्ग ही मुझे वास्तवमें जानता है।'

मृत्युकी उपछायामें उन्होंने कहा—'शान्तुगके पवित्र ताई शानकी गुफाओंकी कड़ियाँ मरमराकर टूटेंगी और मैं उनमें खो जाऊँगा।'

उन्होंने त्जे Tze कुंगसे भरे हृदयसे कहा—'बहुत दिनों तक विश्व अनियंन्त्रित रहा है। किसीने नहीं समझा कि मेरा किस प्रकार अनुकरण करना चाहिये। हिसाके लोगोंने पूर्वपर तथा चाओके लोगोंने पश्चिमकी सीढ़ियोंपर तथा यिनके लोगोंने दोनों स्तम्भोंके बीच कफन रख दिया। मैंने गत रात्रिमें स्वप्न देखा है कि दो खम्भोंके बीच रखी हुई बलिके सम्मुख बैठा हूँ। क्या इसका अर्थ यह नहीं है कि मैं यिनका आदमी हूँ?'

सात दिनोंकी बीमारीके पश्चात् सन्तकी आँखें सर्वदाके लिए बन्द हो गयीं।

मृत्यु

चीनके इस महान् प्रथम सन्तकी मृत्यु पचहत्तर (कुछ लोग यह उम्र तिहत्तर वर्ष भी बताते हैं) वर्षकी वयमें याने ईसापूर्व ४७८ में हुई। उन्होंने मरते दमतक कहा कि किसी चतुर राजाने मुझे अपना परामर्शदाता न बनाया। समय आ गया है कि अब मैं मरूँ। उनके भौतिक शरीरकी समाधि चू-कौ जिसे कू-की भी कहते हैं नगरके उत्तरमें दी गयी। वह स्थान स्जू नदीके तटपर है। उक्त समाधि आज भी मौजूद है। समाधिके पीछे मिट्टीका ऊँचा टीला है। उनकी समाधिका विस्तार प्रायः एकसौ एकड़में होगा। समाधिके पत्थरपर लिखा है—अत्यन्त पवित्र प्राचीन अध्यापक।

मृत्युका समाचार मिलते ही चीनमें सर्वत्र शोक मनाया गया। किन्तु राजकीय शोक न मनाया गया। उनके शिष्य उनकी समाधिपर झोपड़ी लगाकर तीन वर्ष तक शोक मनाते रहे। उन्होंने उन्हें अपना पिता समझा। वे उनकी समाधिपर उनकी पुस्तकों तथा उपदेशोंका अध्ययन करते रहे। त्जे कुंग उनकी समाधिपर छः वर्ष तक कुटी लगाकर पड़ा रहा। लगभग एकसौ कुटुम्ब उनकी समाधिके चारो ओर कुटी बनाकर रहने लगे। उस स्थानका नाम कनफ्यूशियसका उपग्राम पड़ गया। समाधि स्थानपर हरेभरे वृक्षोंकी छायामें वह महान् व्यक्ति जैसे विश्व-जीवनकी गति देखता चुपचाप पड़ा है।

कनफ्यूशियस काल्पनिक व्यक्ति नहीं थे। वे ऐतिहासिक व्यक्ति थे। उनकी भौतिक अस्थि बुद्ध तथा मुहम्मदके समान जगत्में वर्तमान है। उनकी कब्र मौजूद है। वहाँ अब भी सुगन्धित दीप जलता हुआ उस महान् आत्माकी सुरभि फैलाता रहता है।

मृत्युके पश्चात् पूजा

शताब्दियोंतक उनके वंशज उनकी पितृपूजा करते रहे। ईसा-पूर्व १९५ में उन्हें प्रथम बार राजकीय सम्मान प्राप्त हुआ। हन राजवंशके संस्थापकने प्रथम बार उनकी पूजा की। समाधिके सम्मुख उनकी

आत्माकी शान्तिके लिए बलि चढ़ायी।

राजकीय सम्मानके पश्चात् उनका सार्वजनिक सम्मान साधिकार स्वीकार किया गया। उन्हें देवजन्य सम्मान प्राप्त हो गया।

ईसा पूर्व १२५ में सम्राट्ने राजकीय शासन-व्यवस्था परीक्षा-निमित्त उनके ग्रंथोंको पाठ्यक्रममें रखा। ईसा पूर्व आठमें उन्हें राजकीय पद दिया गया। उनके वंशजोंको राज्यकी ओरसे जागीरें मिलीं। सन् १ में उन्हें राजाकी उपाधि दी गयी।

सन् ५९ में सभी नगर तथा स्कूलोंमें उनके सम्मानमें बलि करने का आदेश दिया गया। सन् १७५ में सम्राट्के आदेशानुसार राजधानीमें उनका मन्दिर बनाया गया। मन्दिरमें उनके पाँचों ग्रंथोंको पत्थरपर खुदवाकर लगाया गया।

सन् ४४२ में उनकी जन्मभूमिमें उनके सम्मानमें मन्दिर निर्माण किया गया। सन् ६०९ में सम्राट्ने उन्हें सर्वश्रेष्ठ अध्यापकके सम्मानसे विभूषित किया। सन् ६३० में सभी क्षत्रपों तथा शासकोंको आदेश दिया गया कि अपने-अपने स्थानोंपर कनफ्यूशियसका मन्दिर बनवायें। सन् ६३७ में सभी स्कूलोंमें राजाज्ञा द्वारा उनके चित्रों या मूर्त्तियोंका अनावरण किया गया। सन् ७३९ में उन्हें वेग अर्थात् राजाकी उपाधि-से विभूषित किया गया। सन् १०१२ में सर्वश्रेष्ठ सन्त और राजा दोनों उपाधियाँ एकमें मिला दी गयीं। सन् १३०७ में राजा वेन इसूनने उन्हें महान् और पूर्ण सन्तकी उपाधि दी तथा अन्य देवताओं तथा कनफ्यूशियसके अतिरिक्त किसीको दी गयी सब उपाधियाँ वापस ले लीं। सन् १७४७ में सम्राट्के सम्मुख जिस प्रकारका संगीत होता था तथा जो सम्मान था उसे कनफ्यूशियसको देनेकी घोषणा की गयी। उनके मन्दिरोंमें संगीत होने लगा। सन् १७०६ में उनकी समाधिके सम्मुख वही बलि दी गयी जो स्वर्गके लिए गत चार हजार वर्षोंसे चीनमें दी जाती रही है। कनफ्यूशियसकी पूजा राजकीय प्रथा हो गयी। उनकी श्रेष्ठता उनके विद्यानुराग और ज्ञानके कारण मानी गयी, न कि

उसे अलौकिक व्यक्ति मानकर। इस महान् व्यक्तिने विद्या और ज्ञानसे चीनमें महान् क्रांतिकी सहिष्णुताको जीवनका अंग बनाया। उन्हें हठधर्मी न बनाकर विचारशील जातिके रूपमें परिणत किया। वह महान् थे, महान् रहेंगे विश्व उनके कारण सम्भव है महान् बन सके।

३. जरदस्तु

विश्व जरदस्तुके विषयमें बहुत कम जानता है; किन्तु यह सत्य है कि वे काल्पनिक व्यक्ति नहीं थे। उनके अस्तित्वका साक्ष्य इतिहास देता है। पश्चिमी आद्य इतिहासकार यूनानी हीरोडोटसने उन्हें जोरोस्टर-के नामसे सम्बोधित किया है। जरदस्तुका अपभ्रंश जोरोस्टर है। रोमन इतिहासकारोंने यूनानियोंका अनुकरण कर जोरोस्टर शब्दका ही प्रयोग किया है। अतएव प्रतीच्य उन्हें जोरोस्टर, प्राच्य जरदस्तु और अर्वाचीन पर्शिया जरदूशीके नामसे सम्बोधन करता है।

प्राचीन ईरान—उसकी परम्परा

प्राचीन ईरानको ऐर्य्यनवैजा कहते थे। ईरानका नाम ऐर्य्यन था। ईरान शब्द ऐर्य्यन अर्थात् आर्यनका अपभ्रंश है। ईरानियोंको ऐर्य्यन दान्हवीं कहते थे। शुद्ध संस्कृत नाम होगा आर्य दानव। दानव शब्द महत्त्वपूर्ण है। दानवका पर्यायवाची असुर शब्द है। ईरानी असुरपूजक थे।

ऐर्य्यन देश वर्त्तमान पूर्वी पर्शिया, अफगानिस्तान, पश्चिमी तथा उत्तरी पर्शिया एवं पामीरसे पश्चिमतक फैला था। पुराने ईरानी कथानकके अनुसार आर्य जातिने गयमर्तन राजर्षि उत्पन्न किया था। वह प्रथम आर्य थे जिन्होंने एकेश्वरवादका प्रथम सन्देश विश्वको दिया था। पहेलकी अर्थात् पुरानी ईरानी भाषाके अनुसार इनका नाम गयो-मर्द था। इस राज्यवंशका नाम पेशिदियन था। पेशिदियनका अर्थ प्रथम संहिताकार किंवा कानून बनाने अथवा देनेवाला है। वैदिक गाथाके अनुसार प्रथम आर्य राजा पृथु हुए थे, तत्पश्चात् इसी वंशमें इमा सहैप्पा हुए। इमा ही वेदमें पयके नामसे सम्बोधित किये गये हैं।

ईरानी आर्य हैं

भारतकी पारसी जाति आर्य है। उसके और हमारे पूर्वपुरुष एक थे। ईरानसे पारसी जातिने धर्मरक्षार्थ भारतमें आकर उपनिवेश बसाया। पारसी जाति जरदस्तु द्वारा प्रचारित धर्मको मानती है। इसी जातिने इस धर्मको जीवित रखा है। इसी जातिके कारण जरदस्तु एवं तत्कालीन इतिहास, धर्म, रीति-रिवाजका हमें किंचित ज्ञान प्राप्त होता है।

विद्वानोंका मत है कि आर्य धुर उत्तरके निवासी थे। वहाँ अत्यन्त शीत पड़ता है। वर्षमें दस मास शीत एवं केवल दो मास ग्रीष्मकाल होता है। प्रकृतिकी विषमता एवं क्रूरतासे त्राण पानेके लिए आर्य दक्षिणकी ओर बढ़े। उनकी एक शाखा यूरोपकी ओर चली गयी। उसी शाखाके लोगों द्वारा अमेरिका, कनाडा, आस्ट्रेलिया आदि गोरे देश आबाद हैं। दूसरी शाखा भारत और ईरानमें आयी। इसका नाम भारत ईरान शाखा पड़ा। अतएव ईरानियों और हिन्दुओंका मूल स्रोत एक है। उनका धर्म एक था। उनकी भाषा एक थी। उनकी संस्कृति एक थी।

कालान्तरमें भौगोलिक एवं प्राकृतिक विभिन्नताओं एवं आवागमनकी असुविधाओंके कारण उनकी दो विभिन्न विचारधाराएँ हो गयीं। एक शाखाने अर्थात् ईरानियोंने अहुर किंवा असुरको अपना देवता माना। असुर वरुण स्वर्गके परम देवता एवं अहुर पिता हुए। वरुण वैदिक साहित्यमें जलदेवता एवं पश्चिमके दिक्पाल कहे गये हैं। स्मरण रखना चाहिये कि ईरान भी भारतके पश्चिममें ही पड़ता है। वरुण एकेश्वरवादके प्रतीक थे।

सुर और असुर

दूसरी भारतीय शाखाने इन्द्रादि बहुदेव प्रथाका अनुकरण किया। भारतीय पुराण-साहित्य सुरों एवं असुरोंके संघर्षसे भरा पड़ा है। भगवान्को बार-बार असुरोंसे सुरोंके रक्षा निमित्त अवतार लेना पड़ा।

प्रतीत होता है कि आर्योंकी भारतीय शाखा सुरों एवं ईरानी शाखा असुरोंसे सम्बन्धित हुई। इन्हीं दो विचारधाराओंके संघर्षको प्रतीत होता है कि कवियों एवं कलाकारोंने सुर-असुर संग्रामका रूप दे दिया हो।

भाषाओंका मूलस्रोत

यदि आर्योंका मूलस्रोत एक है तो उनकी भाषाओंका भी मूलस्रोत एक ही होना चाहिये। यही उनके एक होनेका सबसे बड़ा प्रमाण हो सकता है। संस्कृत, यूनानी, लैटिन, पहेलवी एवं ईरानी भाषाओंका मूलस्रोत ऋग्वेद है। आर्योंकी यूरोपीय शाखा भारत तथा ईरानसे इतनी दूर हो गयी कि उनके निकट-सम्बन्ध तथा विचारोंके आदान-प्रदानका कोई साधन ही नहीं रह गया था। उनका स्वतन्त्र विकास एक विशिष्ट देशमें होने लगा। देश, काल, भौगोलिक एवं लौकिक परिस्थितियों तथा प्राकृतिक विभिन्नताओं, स्वरों एवं शब्दोंके उच्चारण एवं लिपियोंकी विभिन्नताके कारण अन्तर पड़ने लगा। उनकी एक आत्मा होनेपर भी शरीरमें भिन्नता आ गयी। इसका सबसे ज्वलन्त उदाहरण हिन्दी, बँगला, महाराष्ट्री, मैथिल, नेपाली, पंजाबी एवं गुजराती भाषाएँ हैं जिनका मूल स्रोत संस्कृत है। आत्मा एक है परन्तु शरीर भिन्न हो गया है। स्वयं यूरोपीय आर्योंकी भी यही दशा हुई और यूरोप कई भाषाओंका देश हो गया।

निम्नलिखित पदसे स्पष्ट प्रतीत होता है कि संस्कृत तथा गाथाकी भाषामें कितना साम्य है—

यथा अहू वभियों ३
अथा रतुश् आशात्-चीत् ह चा।

× × ×

अशम् वोह वहिश्तम्
अस्ती उस्ता अस्ती।
अंश्ता अह्माअि ह्यत्

अशाअि वहिश्ताअि अशम् ॥

× × ×

येङ्हे हाताम्

आअत् येस्ने पअिति,

वङ्हो ३ मज्दो

अहुरो ३ वओ ३ था ।

आर्योंकी भारतीय ईरानी शाखाका सम्बन्ध जरदस्तुके जीवनसे है, उनके धर्म एवं भाषासे है, उनके पवित्र ग्रन्थ गाथासे है, जिसमें आर्य-जीवन अविच्छिन्न गतिसे प्रवाहित दिखाई पड़ता है।

गाथाकी भाषा

गाथाकी भाषा वैदिक संस्कृत भाषा है। लुथेनियन एवं स्लेवोनिक भाषाके अतिरिक्त संस्कृतके सबसे निकट है। स्वरों एवं शब्दोंके रूपमें साधारण अन्तर आ गया है। जैसे संस्कृतका 'क्ष' ईरानीमें 'ह' में परिवर्तित हो गया है। उनके मूलस्रोत एवं प्राण एक हैं। गाथाकी भाषा विश्वकी प्राचीनतम भाषा है। इसका लेखनस्थान मरवा तथा हेरात भूक्षेत्र है। जिन्दावेस्ताका उत्तरार्ध मालूम होता है कि सीस्तानमें लिखा गया था।

ईश्वरका यह आशीर्वाद है कि ऋग्वेद अपने मूल रूपमें भारतमें विद्यमान है। बिना ऋग्वेदिक भाषा तथा भारतीय पौराणिक गाथाओंका पूर्ण ज्ञान हुए जिन्दावेस्ता तथा गाथाका अर्थ समझना कठिन है।

गाथाकालके पूर्वकी स्थिति

गाथाकालके पूर्व ईरानी इतिहास, रीति-रिवाज, संस्कृत एवं धर्मका कुछ पता नहीं चलता। या तो उनका लोप हो गया है अथवा किसी प्राचीन भग्नावशेषमें किसी अन्वेषकके अन्वेषणार्थ अभीतक विश्राम कर रहे हैं। अतीतकी एक धुँधली छायामात्र गाथा एवं जिन्दावेस्तामें विद्वानोंके अनुमानके लिए मिलती है।

जिन्दावेस्ताका लोप

जनश्रुति है कि मूल जिन्दावेस्तामें बीस लाख पंक्तियाँ थीं। सिकन्दर महान्‌के जीवनकी वह सबसे अधिक कलंकमय घटना है जब उसने जिन्दावेस्ताकी प्रतियोंको जहाँ कहीं मिलीं फूँकनेकी आज्ञा आजसे तेइस सौ वर्ष पूर्व प्रदान की थी। पारसी जातिके सरल हृदयमें सिकन्दरके प्रति उदात्त भावनाका अभाव होनेका यही कारण हो सकता है। बीस लाख पंक्तियोंके जिन्दावेस्ताका सदा-सर्वदाके लिए लोप हो गया है और वह हमारे लिए केवल अतीतकी कहानी मात्र रह गया है।

जब ईरान पददलित हुआ

ईरान प्राचीनकालमें अत्यन्त शक्तिसम्पन्न एवं समृद्धशाली देश था। कुरुष अर्थात् सारास किंवा कादूरसका साम्राज्य एजियन सागर एवं मिस्रकी सीमाका चुम्बन करता था। यूनानके उत्थानके कारण कुरुष साम्राज्यको धक्का लगना स्वाभाविक था। कुरुष सम्राट् प्रथम दाराने यूनानको दबानेका प्रयास किया। दाराके पश्चात् उसके पुत्र एक्सरसीजने यूनानपर ईसासे ४८० वर्ष पूर्व एक लाख सैनिकोंकी प्रबल सेनाके साथ आक्रमण किया। इस सेनामें भारतीय धनुषधारी भी थे। थर्मापोलीका जगत् प्रसिद्ध युद्ध हुआ। यूनानियोंकी भीषण पराजय हुई। यूनानी जाति थर्मापोलीकी गाथा भूल न सकी। सिकन्दरको पुरानी बात याद थी। प्रतिहिंसाकी भावना हुई। आजसे २२८७ वर्ष पूर्व उसने दाराका साम्राज्य नष्ट किया। फुरात नदीके पश्चिमका भूभाग देकर दाराने सन्धिकी प्रार्थना की। प्रार्थना ठुकरा दी गयी। दजला नदीके तटपर दाराका अन्तिम युद्ध हुआ। वह भागा। मारा गया। पर्शियन साम्राज्य सिकन्दरके चरणोंपर प्रणत हुआ।

सिकन्दरने ईरानी साम्राज्यके साथ-ही-साथ ईरानी ग्रन्थोंको भी नष्ट किया। अतएव जरदस्तु-कालकी मूल एवं वास्तविक सामग्री प्राप्य नहीं हैं। ये सामग्रियाँ पारसी ग्रन्थ गाथा, जिन्दावेस्ता, प्रथम सम्राट् दाराके वेहस्तुनके शिलालेख तथा यूनानी इतिहासकार हिरोडोट्स और

रोमन इतिहासज्ञ प्लुटार्कके स्फुट लेखोंतक ही सीमित हैं। प्लुटार्कने जरदस्तुकी तुलना यूनानी तत्ववेत्ता एवं लोकनेता लाइकरगससे की है। प्लेटोके शिष्योंने अपने गुरु प्लेटोसे जरदस्तुकी तुलना करनेमें किंचित् संकोच नहीं किया है।

ईरानका पाँच सौ वर्षोंका इतिहास अर्थात् ईसासे ३०० वर्ष पूर्वसे २०० ईसवीतकका बिलकुल नहीं मिलता है। यूनानियोंने ईरानको रौंद डाला था। ससोनियन कालके पूर्व पार्थियन और यूनानी साम्राज्यों-की पराधीनताके लम्बे कालमें उसकी जीवनश्री समाप्त हो गयी। उसकी अपनी परम्परा नष्ट हो गयी थी। इस अन्धकारमय कालमें कितनी ही बातें कालके अमांगलिक एवं भयंकर तिमिरमें सर्वदाके लिए लुप्त हो गयी हैं।

मुसलमानोंके उत्थानमें पर्शियाका बचा-खुचा साहित्य तथा धर्म पूर्णतया नष्ट हो गया। समस्त ईरानने इस्लाम कबूल कर लिया। ईरा-नियोंके लिए उनके प्राचीन धर्म, धार्मिक गाथाओं, पुराने इतिहास एवं परम्पराका कोई मूल्य नहीं रह गया था। उनके लिए कोई आदर शेष नहीं रह गया था। वे सब उनके पूर्वज विधर्मियोंकी चीजें थीं। नये धर्मपरिवर्तनकी उमंगमें नवीन परम्परा, नवीन इतिहास, नवीन साहित्यका कायम करना जरूरी था ताकि लोग पुरानी बातें भूल जायँ। ईरानने अपने जीवनका पुरातन अध्याय बन्द कर नवीन साहित्य एवं परम्पराकी रचनाके लिए कदम उठाया। पराधीनता एवं नवीन धर्मके कारण ईरानने अपना सब कुछ पुराना खो दिया है। परन्तु भारतने बचा लिया। उसका कारण दोनों देशोंकी भौगोलिक स्थिति है। भारत इतना विशाल देश है कि इसे नष्ट करनेका प्रयास करनेपर भी प्राचीन ग्रन्थ एवं साहित्य किसी उपत्यका, किसी गुफा या किसी अरण्यस्थलीमें छिपकर रह जाते थे। कालान्तरमें वे पुनः फैलनेका प्रयास करते थे। ईरानमें यह सम्भव नहीं था।

जरदस्तुके जीवनोदयकालके समाजमें बिना किसी विशेष मौलिक

परिवर्तनके वैदिक देवताओंकी पूजा होती थी। प्राकृतिक शक्तियोंके अधिपतियोंकी उपासनाकी परम्परा थी। यम, मित्र, वरुण, इन्द्रादि देवताओंका आवाहन किया जाता था। बहुदेवपूजा, मूर्तिपूजा, पितृ-पूजाका प्राबल्य था। उपासना किंवा पूजा निमित्त मन्दिर नहीं बनाये जाते थे। पर्वतपर खुली पूजा होती थी।

एक प्रकारके सैमिन धर्मका भी प्रचार था। सैमिन धर्म अत्यन्त अविकसित प्रारम्भिक कालका धर्म था। इसका प्रचार उत्तरी एशिया, यूरोप, अमेरिकाके इण्डियन तथा इस्किमो लोगोंमें था।

सोमपानका जोर था। सोमपान द्वारा समझा जाता था कि अमृतत्वकी प्राप्ति होती है। उसके बनानेकी एक विशेष प्रथा थी। वह धार्मिक कृत्य समझा जाता था। सभी देवता सामूहिक रूपसे देव कहे जाते थे। भारतमें देवताओंके लिए देव शब्द प्रयुक्त होता है। प्राचीन रोमन लोग 'देउ' और यूनानी ईश (जीसस) नामसे उन्हें सम्बोधित करते थे। ईरानियोंमें देवका अर्थ होता था ज्योतिर्मय। देवताओंको प्रसन्न करनेके लिए देवबलिकी प्रथा प्रचलित थी।

तत्कालीन समाजमें लाठीका जोर था। सज्जन तथा निर्धन ताना-शाहीके शिकार होते थे। विकासमय जीवननिर्वाह निमित्त प्राणी स्वतन्त्र नहीं था। शान्ति, समृद्धिका अभाव था। समाजकी कोई निश्चित सुव्यवस्था न थी। सर्वतोन्मुखी विषमता स्पष्ट दिखाई पड़ती थी। लोग रूढ़िवादी हो गये थे। शुद्ध आध्यात्मिक आदर्शके स्थानपर विवेकहीन कर्मकाण्डका महत्त्व था। लोगोंका स्थिर जीवन न था। लोग भवनोंकी अपेक्षा डेरा, तम्बू तथा अस्थायी झोपड़ियोंमें रहते थे। एकमात्र उद्यम पशुपालन एवं कृषि था। चलती-फिरती आबादी थी। उनकी प्राणहीन परम्परामें किसीको अनुप्राणित करनेकी शक्ति नहीं रह गयी थी।

इस प्रकारके अव्यवस्थित कालमें जरदस्तुने जन्म लिया था। उनके जीवनको काल्पनिक एवं पौराणिक अलौकिक कथाओंसे विभूषित करनेका प्रयत्न लोगोंने नहीं किया है। उनके जीवनके साथ चमत्कारिक घटनाओं-

को जोड़कर उन्हें व्यर्थ महान् बनानेका महाप्रयास नहीं किया गया है। उनके जीवनकी जो कुछ झाँकी मिलती है वास्तविकतासे मेल खाती है।

विश्वके वह प्रथम धर्मप्रवर्तक थे। आर्य जातिके ऋषी थे। एशियाके प्रथम धर्मदूत थे। एशियाके प्रथम आध्यात्मिक उपदेशक थे। विश्वधर्म प्रचारकोंके पिता थे।

उनके पूर्व किसी एक व्यक्तिने धर्मदूतत्वका दावा नहीं किया था। उनके पहले ईश्वरी आज्ञाओंके सन्देशवाहकके रूपमें किसीने आत्म-विश्वासके साथ अपनी घोषणा नहीं की थी। उनके पूर्वकी परम्परा समष्टिरूपेण धर्मके विकासकी थी। हिन्दू धर्म इसका ज्वलन्त उदाहरण है। उन्होंने धर्मदूतत्व एवं सन्देशवाहकत्व परम्पराओंकी नींव डाली। इसी परम्पराकी कड़ीसे हजरत मूसा, ईसा एवं पैगम्बर आते हैं।

किन्तु भारतीय एवं आर्यप्रथा सर्वथा इस परम्पराके विरुद्ध रही है। भगवान् बुद्धने धर्मचक्र प्रवर्तन किया किन्तु उन्होंने कभी इसका दावा नहीं किया कि वे धर्मदूत किंवा ईश्वरी सन्देशवाहक हैं। उन्होंने कभी नहीं कहा कि ईश्वरीय वाणी उनके मुखसे मुखरित हुई है अथवा उनकी स्थिति भगवान और लोकके बीच माध्यमकी है। विश्वके सभी सेमेटिक परम्परावादी धर्म यथा ईसाई, यहूदी एवं इस्लाम ईश्वर दूतत्व एवं इल्हामपर आधारित हैं। इस इलहाम प्रथाके जनक निस्संदेह जरदस्तु हैं। उनका प्रमाणित धर्म निराकार उपासनाके सिद्धांतका प्रतिपादन करते हुए पूर्णतया दार्शनिक है।

भगवान् बुद्धने महाभिनिष्क्रमण द्वारा गृह परित्याग किया। ईसा अविवाहित रहे। मुहम्मदने बहु-विवाह किया। जरदस्तुने कनफ्यू-शियसके समान एक नगरसे दूसरे नगर, एक प्रदेशसे दूसरे प्रदेशमें वैदिक श्रोत्रिय तुल्य भ्रमण करते हुए ज्ञानमय पाण्डित्यके बोधगम्य सूत्रोंका सन्देश दिया है।

अरिस्टाटल अर्थात् अरस्तूके समान जरदस्तुने समाजसे विद्रोह नहीं किया। उनमें अराजकता एवं सामाजिक नियमोंके उल्लंघनकी

भावना नहीं उत्पन्न हुई। वह समाजको तोड़ना नहीं चाहते थे। वह समाजका कल्याण समाजके पारम्परिक ढाँचेके अन्दर ही करना चाहते थे। वह कुरीतियों तथा अव्यावहारिक बातोंका विद्रोही तुल्य नहीं बल्कि एक सुधारवादीकी तरह सामना करना चाहते थे। यदि कुरीतियोंके विरुद्ध आवाज बुलन्द करना विद्रोह कहा जायेगा तो वे निःसन्देह विद्रोही कहे जा सकते हैं। जनताको खानाबदोशोंकी जिन्दगीसे मोड़कर उन्हें शांतिमय, कृषिजीवनकी ओर लगाना उनका महाप्रयास था।

सामाजिक प्राणीतुल्य वे समाजमें रहे। उन्होंने विवाह किया। एक पत्नीव्रतका पालन किया। पुत्र उत्पन्न किया। कन्या उत्पन्न की। वे घर त्यागकर, पत्नीव्रत त्यागकर केवल धर्मप्रवर्तक नहीं बने। उन्होंने साधारण मानव-जीवनको सरल जीवनके रूपमें देखा। काल्पनिक जगत्की अपेक्षा दैनिक जीवनकी सत्यता, गहराई एवं व्यावहारिकताकी ओर अधिक ध्यान दिया ताकि मानव सचमुच सीधा-सादा मानव बनकर अपनी दैनिक समस्याओंको हल करनेमें समर्थ हो सके।

प्रतीच्यमें सुनाई पड़नेवाली धर्मप्रवर्तककी उनकी पहली वाणी थी। ईसासे लगभग ६ सौ वर्ष पूर्व उनकी पवित्र वाणीका श्रवण प्रतीच्यने किया था। उनकी वाणीके प्रभावसे यूनानी, रोमन, यहूदी तथा ईसाई न बच सके थे। बाइबिलमें उनके उपदेशोंकी झलक मिलती है। यूनानी दार्शनिकोंकी दार्शनिक भावनामें जरदस्तुकी गाथाकी छाप है।

वे आर्य थे। उनकी परम्परा वैदिक थी। उस परम्परामें उन्होंने धर्मप्रवर्तनकी कड़ी जोड़ी। प्रतीच्यने अपनाया। पैगम्बरों, रसूलों, नबियोंको इस परम्परामें गुथा। किन्तु प्राच्य अपनी रूढ़िको त्याग न सका। उनके पश्चात् बुद्ध हुए, अनेक तीर्थंकर हुए, शंकर हुए, उन्होंने नवीन धार्मिक विचार दिये, किन्तु भारतीय आर्य परम्परासे हटकर नहीं। इसी स्थानसे प्राच्य एवं प्रतीच्यके धार्मिक स्रोतोंमें मौलिक अन्तर प्रारम्भ होता है।

जरदस्तुने ईश्वरी आदेश अर्थात् श्रवाओं परम्परा चलाकर मानवीय

तर्क एवं कल्पनाको एक हदतक सीमाबद्ध कर दिया। भारतीय, हिन्दू, बौद्धादिको छोड़कर सभीने इस परम्पराका अनुकरण किया है। अर्थात् ईश्वरकी आज्ञा है, उसे मानना ही होगा चाहे वह बोधगम्य किंवा तर्क-सम्मत हो अथवा न हो।

माडिया एक जाति थी। वह पूर्वी ईरान और कास्पियन सागर अर्थात् लवण सागरके दक्षिण-पश्चिम आबाद थी। उसीमें एक गोत्र था। उसे मगी कहते थे। वह पुरोहितकर्मा भारतीय ब्राह्मण जातिसे मिलता-जुलता था। उसका अपना रीति-रवाज तथा विश्वास था। इस जातिका इतिहास लुप्त हो गया है। इसी मगी गोत्रमें जरदस्तु ने जन्म लिया था। पाश्चात्य विद्वानोंने उनकी वंशपरम्परा पुरोहितोंकी मानी है। उनके सम्बन्धमें जोतर शब्दका प्रयोग किया गया है जो संस्कृतका होत्रि अर्थात् यज्ञ करानेवाले पुरोहितका अपभ्रंश है।

उनके वंशका नाम स्पितमा था। स्पितमाका शब्दार्थ श्वेत होता है। उनका पूरा नाम जरदस्तु स्पितमा था। पिताका नाम पौरुशास्प था। स्पितमाका अर्थ ज्योतिर्मय भी होता है। उनके पितामहका नाम हेचतस्पा था। जरदस्तु दो शब्दोंसे बना है जरद उष्ट्र। उष्ट्र शब्द संस्कृतका है जिसका अर्थ ऊंट होता है। अस्प शब्द भी संस्कृतका है जिसका अर्थ अश्व होता है। इस प्रकार उनके तथा उनके पिता, पिता-महके नामोंमें संस्कृत शब्द लगे हैं जो पशुवाचक हैं। उनके पिताका निवासस्थान जवरा पर्वताभूत दर्जाही श्रोतस्विनीके पवित्र तटपर था। कालान्तरमें इस नदीका नाम अर्स पड़ गया था। उनका जन्म अपने पिताके इसी मकानमें हुआ था।

जन्मतिथिके सम्बन्धमें भिन्न-भिन्न मत हैं। जनश्रुतियोंके साथ ही ऐतिहासिक सूत्र भी मिलता है। यदि ऋग्वेदके कालका निर्णय हो जाय तो भाषाके आधारपर उनके कालका निर्णय हो सकता है। गाथाका काल ही उनका काल है। किंवदंतीके आधारपर उनका जन्म आजसे ६ या ७ हजार वर्ष पूर्व माना जाता है। किंतु प्रामाणिक

रूपसे हम कह सकते हैं कि उनका जन्म ईसाके पूर्व ६०० से लेकर ५८८ के बीच हुआ होगा। ६२८ से ६३० वर्ष ईसाके पूर्व उनका जन्म कुछ विद्वानोंने माना है। पारसी वर्षके प्रथम मासके छठे खोरदादके दिन उनका जन्म हुआ था।

जन्मके समय साधारण शिशुओंकी तरह रोनेकी अपेक्षा वे हँसे थे। जलाशयोंमें जल तथा वनस्पतियोंकी वृद्धि हो गयी थी। उनका नाम जनदुष्ट्र किंवा जरदस्तु रखा गया।

बालकालसे युवाकालके ३० वर्षतकका पूरा वर्णन नहीं मिलता। इसी कालमें उनका विवाह हुआ था। उनके ससुरका नाम फ्रसास्ट्र तथा धर्मपत्नीका ह्वोव्वा था। ह्वोव्वा एक गोत्रका नाम था। उसका अर्थ उत्तम पशुवाला होता है। उनके तीन पुत्र तथा तीन कन्याएं ह्वेचतस्या, पौरसिष्ट आदि थे। चचेरे भाईका नाम मैद्यो माओन्हा तथा चाचाका अरास्त्य था।

उनकी मुद्रा गम्भीर एवं सौम्य थी। युवाकालमें द्रोण पर्वतपर ध्यान निमित्त चले गये। वहां उन्होंने पनीर पान कर जीवनयापन किया। भगवान् एवं जीवन रहस्य जाननेका वे प्रयास करने लगे। पर्वत एक बार पूर्णतया अग्निज्वालाकी लपटमें आकर जल गया परन्तु उनका कुछ न बिगड़ सका।

तीस वर्षकी वयमें उन्हें प्रथम भगवद्वाणी मिली। गाथामें उन्होंने स्वयं कहा है—'ओ ! अहुर यज्द !! तुम सर्वोच्च हो। वहु यानों द्वारा तुम्हारे पवित्र शब्दोंको जब मैंने सुना तो मैंने उनका रहस्य जाना। किन्तु मैं अनुभव कर रहा हूँ कि मानव जातिको तुम्हारा सन्देश पहुँचानेमें कठिनता होगी यद्यपि तुमने कहा है कि मेरे लिए यही सर्वश्रेष्ठ कार्य है।'

जरदस्तुमें आत्मविश्वासका उदय होने लगा। आगे चलकर यासना अट्ठाइसमें वे कहते हैं—'सत्यके प्रचारसे मैं तबतक विरत न हूँगा जबतक मुझमें शक्ति है।' गाथामें अध्याय इकतीसमें पूर्ण आत्मविश्वास

के साथ कहा गया है—'मैं भगवान्का हूँ। मैं उनकी इच्छाकी पूर्ति करूँगा। मैं धर्मका तत्वज्ञान लोगोंको सुनाऊँगा।' जरदस्तुने स्पष्ट कहा है—'यह उपदेश किसी एक जाति, किसी एक देशकी सम्पत्ति नहीं है। यह विश्वका है। विश्वका उसपर अधिकार है। धर्मका आदर्श जीवनके पवित्र उद्देश्यों एवं नियमोंको लोगोंको बताना है। लोग स्वयं आनन्दमय होकर दूसरोंको आनन्दमय करनेका प्रयास करें'।

उनके धर्मका नाम जारदोस्ती मजद्यस्नी दीन है। गाथा सामवेद तुल्य उनकी पवित्र पुस्तक है। गाथामें इलहामी सत्यको अवाओ तथा मन्त्रोंको मन्थ्रा कहते हैं। दीसे दीन शब्द ईरानी भाषामें बना है जिसका अर्थ देखना अथवा दर्शन है। गायत्रीका धी ही दी है। गायत्रीके धी शब्दका अर्थ प्रज्ञा, ज्ञान एवं बुद्धि है। ईरानी साहित्यमें उसे अन्तर्दृष्टि कहा गया है। दीन शब्द ही अनन्तर चिश्ती अर्थमें प्रयुक्त होने लगा जिसका अर्थ आध्यात्मिक ज्ञान होता है।

धर्म भगवान्की वाणी है। हम उसका अनुभव अपनी चेतना द्वारा करते हैं। धर्मका रूप भगवान्की बाहरी वाणीका रूप है। उसी धर्मकी अन्तरध्वनि चेतना द्वारा अनुभूत होती है। सत्यका दर्शन आध्यात्मिक दृष्टि द्वारा होता है। आत्मा स्वयं अपने कर्मोंका निर्णय करती है। अपने अभिप्रायोंका ज्ञान रखती है। वही श्रेष्ठ एवं दुष्ट कर्मोंका फल एवं दण्ड देती है। इस अन्तरध्वनिको न सुननेवालोंके लिए करपार किंवा कर्पण अथवा संस्कृतका कृपण शब्द प्रयुक्त किया गया है। सत्यको न देखनेवालोंके लिए गाथामें कवि शब्दका प्रयोग हुआ है।

जरदस्तुने वेह दीन अर्थात् श्रेष्ठ धर्म पामीरके पश्चिमी भागोंमें फैलानेमें सफलता प्राप्त की। मजद्यास्नीका अर्थ मज्द अर्थात् भगवान्की पूजा करना है। मजद्यास्नी धर्म दैवस्नी अर्थात् देवपूजाका विरोधी है। वैदिक आर्योंके बहुदेव पूजा सिद्धान्तोंके विपरीत है। वे बहुदेवपूजामें विश्वास न कर एकेश्वरवादके सिद्धान्तका प्रतिपादन करते हैं। मजद्यास्वी जरदस्तुका वही भावार्थ है जो इसलामी कलमा का इलाह

इल्लिल्लाहका है।

जरदस्तुने भगवान्‌को अहुरमज्दके नामसे सम्बोधित किया है। अहुर वास्तवमें असुर शब्द है। उसका अर्थ है चेतन जगत्। मज्द का अर्थ है जड़ जगत् अर्थात् ईश्वर जड़ एवं चेतन दोनोंका स्वामी एवं सृजक है। एक ही नाममें उन्होंने प्रभुकी जड़, चेतन दोनों शक्तियों-का सुन्दर समन्वय किया है।

इस शब्दका एक दूसरा अर्थ भी होता है। अहका अर्थ है अस्तित्व किंवा जीवन। उरका अर्थ है जीवन प्रभु। यजका अर्थ बड़ा है। दाका अर्थ है देनेवाला अर्थात् सृजक। सबका मिलाकर अर्थ हुआ महान् सृजक जीवनस्वामी। महादेव किंवा अल्लाहो अकबरकी भावना इस शब्दके भावके अत्यन्त निकटतक पहुँचती है। असीरियन लोगोंके भग-वान्‌की नामावलीकी तालिकामें अहुरमज्द शब्द मिलता है।

प्रथम इलहामसे दस वर्षतक उन्हें अनुभूतियाँ होती रहीं। चालीस अथवा बयालीस वर्षके पश्चात् उनका जीनव संघर्षमय हो जाता है। इस महान धर्मप्रवर्तकने पहला उपदेश तुरुकी राज्यसभामें दिया था। अपने निवासस्थानसे वे तुरुके यहां जाने लगे तो मार्गमें कुमिसमें ठहरे। वहां एक पर्शियनने उन्हें अपने भवनमें ठहरानेसे इनकार कर दिया। उनके उपदेशके कारण सनातनी उशिसवंशीय लोग उनकी हत्या करने-पर कटिबद्ध हो गये थे। तुरुके हस्तक्षेपके कारण उनकी रक्षा हुई।

उनका उपदेशक्षेत्र ग्रामीण एवं पशुपालित समाज था। उनके विचार प्रारम्भिक कालके समाजकी अपेक्षा मानवकी साधारण सचाईसे अधिक सम्बन्ध रखते हैं। भगवान्‌से आत्मनिवेदन करते हुए भी उन्होंने यही कहा है कि मित्र जैसे एक मित्रसे बात करता है प्रभु तू भी मुझसे उसी प्रकार बात कर। एक मित्र जैसे एक मित्रकी सहायता करता है तू भी उसी प्रकार हमारी सहायता कर।

जरदस्तुने लोकोपकार निमित्त सामाजिक कुरीतियोंसे लोगोंको मुक्ति दिलानी चाही है। उनकी जाति मूढ़ हो गयी थी। उनका सन्देश सुनने-

के लिए तैयार न थी। दस वर्षके लम्बे कालमें उनका केवल एक शिष्य उनका चचाजात भाई मेदो मान्ह हो सका। किंतु वे विचलित न हुए। बहुदेवपूजाके विरुद्ध जेहाद बोला। अहुर अर्थात् असुर-पूजाकी घोषणा की। देवपूजक अर्यमा उनके विरुद्ध उठ खड़े हुए।

कर्पण, कात्या, वो आदि गोत्रीय लोगोंने उनके विरुद्ध झण्डा बुलन्द किया। दुरौशा तथा तुरा गोत्रीय रूढ़िवादी तथा सनातनियोंने विरोध किया। उन्हें नवीन सन्देशके प्रति आस्था न हो सकी। दवाश्रिन, विवानुशो, दुस्साखी, उसथी एवं वेन्दवा लोगोंसे सहयोगके स्थानपर उन्हें विरोध ही मिला।

मीडियाके राघा, मख, जिसे अब राया कहते हैं, बलख तथा सीस्तानमें उपदेश देना उन्होंने आरम्भ किया। उनकी मातृभूमि तथा राया आदि स्थानोंमें उनके वचनामृतका स्वागत न हुआ। विरोधाग्नि सुलग उठी। अपनी जन्मभूमिका उन्होंने उसी प्रकार त्याग किया जैसे पैगम्बर मुहम्मदने अपनी जन्मभूमि मक्काका त्याग अपने ही गोत्रीय बन्धुओं कुरैशोंके विरोधके कारण किया था। प्रभु ईसाको पैदा करनेवाली यहूदी जातिको ही उन्हें सूलीपर चढ़ानेके कलंकका भागी होना पड़ा था। पश्चिमके तीनों ही धर्मप्रचारकों जरदस्तु, ईसा एवं मुहम्मदका प्रारम्भिक जीवन अपने ही लोगोंके विरोधसे आरम्भ होता है। इतिहासकी इतनी सुन्दर पुनरावृत्ति एक ही क्षेत्रमें शायद ही कहीं और देखनेको मिल सकेगी।

संस्कृतके बाल्हीक अथवा बलख प्रदेशमें क्षत्रप वितस्पा शासन करता था। कुछ पाश्चात्य लेखकोंने इस वितस्पाको सम्राट् द्वारा प्रथमका पिता मानकर गलती की है। वितस्पाकी राज्यसभामें जरदस्तुने अपने धर्मकी पवित्र वाणी सुनायी। जनश्रुति है कि राजपार्षद अपने पुरातन धर्मके विरुद्ध आवाज उठती देखकर जल उठे। जरदस्तुको कारावासका दण्ड दिलवाया। किन्तु वे अपने सिद्धान्तपर जमे रहे। उनकी सचाई एवं निष्ठाका क्षत्रपपर प्रभाव पड़ा। उसने उनसे धर्मदीक्षा ली। प्रधान

मन्त्री जापास्पाने भी धर्म स्वीकार किया। उनके मुख्य अनुयायियोंमें कवि विस्तास्प, फ्रसोस्त्रा, जामास्प एवं रानी हतौशी मुख्य थीं।

पाश्चात्य विद्वान् श्री हर्जफेल्डने जरदस्तुका सम्बन्ध राजवंशसे जोड़ा है। उसके अनुसार जरदस्तुका जन्म कुरुष एवं दाराके कालमें हुआ था। अस्त्यजो मीडियाका अन्तिम राजा था। उसे कुरुष अर्थात् काशम किंवा साररसने राज्यच्युत किया। अस्त्यजोने अपनी कन्याका विवाह मीडियन कुलीन वंशीय स्पितमासे किया था। कन्यासे दो पुत्र स्पितेक तथा मेगावर्ण हुए। कुरुषने जब स्पितमाको पराजित किया तो उसे मार डाला। उसकी विधवा अमातिससे उसने शादी कर ली। उसे दो पुत्र कुरुषसे कम्बाइम तथा वर्दिया हुए। अनन्तर कुरुषका दरवाइकके साथ संघर्ष हुआ। उसमें उसे सांघातिक चोट लगी। अपनी मृत्युशय्यापर कुरुषने कम्बाइमको अपना उत्तराधिकारी तथा वर्दियाको बेक्टरियाका क्षत्रप बनाया। कुरुषने जरदस्तुकी प्रपितामहीसे शादी की थी। इस प्रकार कुरुषकी कन्या अतोस्मा जरदस्तुकी अर्धभगिनी लगती थी। अतोस्माका विवाह दानसे हुआ था। अतोस्माके सम्बन्धसे सम्राट् प्रथम दारा जरदस्तुके बहनोई लगते थे। इस लेखककी इस जीवनकथाको फोनेग आदि विद्वानोंने साधार नहीं माना है।

जरदस्तुने जिस धर्मकी नींव डाली है उसे बहुतसे विद्वानोंने द्वैत कहा है। यदि तर्ककी कसौटीपर उनके सिद्धान्तोंको कसा जाय तो निःसन्देह उन्होंने एकेश्वरवादका ही प्रतिपादन किया है। बहुदेव प्रथाके विरुद्ध उन्होंने विद्रोह किया था, यह निर्विवाद है। उन्होंने अहुर मज्दको केन्द्र मानकर एकेश्वरवादकी दुन्दुभी बजायी थी। देव पूजाका विरोध किया। उसमें उन्हें हिंसाकी गन्ध मालूम हुई। उनके अनुसार देवताओंने सतपथका त्यागकर भौतिक जीवन अपना लिया था। देवपूजकोंने जरदस्तुके सिद्धान्तोंको स्वीकार नहीं किया। वे लोग पाखण्डी एवं दुष्ट कहे गये हैं। जरदस्तुने बलि एवं सोम दोनों प्रथाओंका विरोध किया था।

जरदस्तुने एक नवीन सिद्धान्तका प्रतिपादन किया है। उनका कहना है कि पशु-पक्षी एवं प्राणियोंमें जिस प्रकार आत्मा है उसी प्रकार विश्वकी भी एक आत्मा है। इस आत्माको गावो नामसे सम्बोधित किया है। वह शब्द वास्तवमें वैदिक शब्द गोआत्मासे मेल खाता है जिसका अर्थ भी जगत् किंवा विश्वकी आत्मा ही होता है। उसे विश्वात्मा कहा जा सकता है।

उन्होंने एक और नवीन सिद्धान्त दुनियाके सामने रखा। जिस प्रकार पशु-पक्षी एवं प्राणियोंको जीवन-यापन निमित्त कुछ आहार तत्त्वकी आवश्यकता पड़ती है, उसी प्रकार प्रकृति यथा पृथ्वी, जल, वायु, तेज आदि शक्तियोंको अपने जीवन-यापन निमित्त आहार तत्त्वकी आवश्यकता होती है। एतदर्थ उनकी दृष्टिसे विश्व स्वयं एक यज्ञ-वेदीके अतिरिक्त और कुछ नहीं है।

विश्वात्मा किंवा गोआत्मा आनन्दमय हो, आध्यात्मिक सांस्कृतिक जगत्का विकास हो यही उनका आदर्श था। उन्होंने वास्तविकताके ठोस आधारपर अपनी तर्कशैली लोगोंके सम्मुख रखी। जिन लोगोंने प्रारम्भमें उनका विरोध किया वे ही उनका अनुकरण कर उत्तम धर्मका आश्रय लेकर आनन्दमय जीवन व्यतीत करने लगे।

जरदस्तुने विचारस्वातंत्र्यको बड़ी महत्ता दी है। विचार, बुद्धि एवं मनकी शुद्धतापर बहुत जोर दिया है। मानवपर प्रकाश डाला गया है कि उनके विचार, बुद्धि एवं मन ही उनके त्राता हो सकते हैं। उनकी पवित्र शुद्धता ही उन्हें विकास-मार्गकी ओर प्रगतिशील बना सकती है। मानवको अपने विचार-स्वातंत्र्यका पूर्ण उपयोग करना चाहिये। उक्त विचार स्वतः मानवको प्राकृतिक विकासपथकी ओर लेजाकर पूर्णता एवं अमरत्व दिलानेमें सफल होगा।

जरदस्तुका परमेश्वर केवल करुणामय नहीं है। वह न्यायमय है। वह न्याय-तुला सन्तुलित रखता है। वह सर्वश्रेष्ठ न्यायकर्त्ता एवं घटनाओंकी तालिकाओंका संग्राहक है वही मानव एवं देवोंकी की हुई

भौतिककालकी घटनाओंके निर्णयकी क्षमता रखता है। बाहरी शक्तियाँ या साधन हमें इस न्याय-तुलाके पलड़ेसे बचा नहीं सकतीं।

अपने कर्मका भोग करना ही पड़ेगा। उससे बच नहीं सकते। चिन वतो येतु अर्थात् न्यायसेतुको पार करना ही होगा। हमारे कर्मोंका निर्णय न्याय-तुलाधारी भगवान् ही करेगा। यह सिद्धान्त कटु सत्य है। तथ्यपूर्ण है। उनका धर्म कर्ममय है। केवल आशीर्वादात्मक नहीं है। किया कर्म भोगना ही होगा। उसके लिए क्षमा, करुणा एवं आशीर्वाद कैसा? जिन स्पष्ट शब्दोंमें जरदस्तुने इस सत्यको रखा है वे शायद कहीं अन्यत्र नहीं मिल सकेंगे। उन्होंने खुलकर कहा है कि पवित्रताका आश्रय लो। उसका अनुकरण करो। तुम्हें आनन्द स्वयं प्राप्त होगा। पवित्रात्मा एवं शुद्धचित्त व्यक्तियोंको आनन्द तथा दुष्टात्माओंको दुःख मिलना अनिवार्य है। जरदस्तु हमें यहाँ एक वीर एवं निर्भीक व्यक्ति रूपमें प्रकट होते हैं। उन्होंने अपना धर्म स्वीकार करनेके लिए लोगोंको स्वर्गादिका प्रलोभन नहीं दिया है। आधुनिक पेशेवर स्मार्ट पादड़ियोंकी तरह उन्होंने सड़कोंपर मुक्ति बाँटते फिरनेमें कभी विश्वास नहीं किया।

जरदस्तुका धार्मिक तत्वज्ञान सात प्रमुख सिद्धान्तोंपर आधारित है। इन्हें अहुरमज्दकी सात स्थितियाँ एवं रूप कह सकते हैं। इन्हें गाथामें सप्त अपेशा स्पेन्ता कहा गया है। उन्हें पवित्र सातकी संज्ञा भी दी गयी है। उन्हें अमर कहा गया है, गाथामें ज्ञान, भक्ति एवं कर्म मार्गका निरूपण मिलता है।

पितृ एवं मातृ पक्षमें सातोंको विभाजित किया गया है। सृष्टिको, आत्माको मातृपक्ष तथा सृष्टिको मूर्तस्वरूप देनेवाले सृष्टिकर्ताको पितृ पक्ष कहा गया है। जरदस्तुके धर्मका पूरा ढाँचा इन्हीं सातों सिद्धांतोंपर आधारित है।

आशा, वहुमानो, क्षत्र-वैरया पितृ तथा स्पेन्ता अरमेति, होर्वतत एवं अमर—तीन मातृपक्षमें आते हैं। मध्यमें स्वयं अहुरमज्द है।

है। धार्मिक जगत्में प्रायः दो दृष्टिकोण हुआ करते हैं। मानव या तो समूहका उपासक होकर समष्टिवादी दृष्टिको अपनाता है अथवा पृथक् रहकर एकाकी उपासना करता हुआ व्यष्टिवादी होता है। वह जगत्को ब्रह्ममय मानकर अद्वैतवादी होता है अथवा आत्मसंयममय कठोर तपस्वी जीवन व्यतीत करता है।

जरदस्तुने मानव जीवनका एक नवीन तीसरा दृष्टिकोण और रखा है अर्थात् मानव दो वर्गोंमें विभाजित हैं, सज्जन या दुर्जन। मानव भले और बुरेमें एक चुनता है। यह चुनाव वह आशा अर्थात् सत्य एवं द्रुज किंवा मिथ्याके बीच करता है। आशा पथको अश्वान्तो अर्थात् सत् पथ और द्रुजको दगवन्तो अर्थात असत् पथ कहा गया है। इन पथोंको चुनकर मानव अपना स्वयं मार्ग निश्चय करता है।

द्रुज संस्कृतका दुर्जन शब्द है—द्रुज शब्दका प्रयोग बाइबिलमें प्रभु ईसा मसीहने भी किया है। भौतिक जीवनमें विक्षोभ उत्पन्न द्रुज हैं—सज्जन अहुरमज्दकी उपासना करनेवाले हैं। उनका कहना है कि सज्जन तथा दुर्जन अथवा सुर तथा असुर वही दो वर्ग हैं। इन दो वर्गोंमें एकको चुनना अथवा एकका अनुकरण अनिवार्य है। असुर किंवा सज्जन वर्गमें धर्मका स्थान है। उसे ही प्राप्त करनेवाला अमृतत्व प्राप्त करता है।

प्रश्न उठता है कि भले-बुरेका विवेक कौन करेगा? उत्तर यह देते हैं कि सत् दृष्टिकोण ही इनका निर्णय करता है। दुनियामें इन दोनों गुणोंका संघर्ष होता रहता है। वे मानवके मानसिक, आध्यात्मिक एवं भौतिक बातोंमें दृश्यगत होते हैं। जगत्में मन एवं आत्मतत्त्व दोनों हैं। मानव उन्हें शुद्ध विवेक द्वारा जान सकता है।

अवगुणका अस्तित्व कैसे हुआ, इसका बड़ा सुन्दर उत्तर मिलता है। सृष्टिकी रचना बुरे और भले अर्थात् सद्गुणी एवं दुर्गुणी समान शक्तिशाली शक्तियों द्वारा की जाती है। दुर्गुणी शक्तिका कार्य सद्गुणोंको नष्ट करना है। दोनों ही शास्वत है। दोनोंका अस्तित्व है, दोनों कार्य

करती रहती हैं। जरदस्तु इस विचारधाराके मौलिक विचारक थे। उन्होंने एकेश्वरवादके समर्थनमें तर्कका आश्रय लिया है।

पाश्चात्य विद्वानोंने उन्हें द्वैतवादी कहा है। भारतीय दर्शनमें द्वैत-का जिस अर्थमें प्रयोग किया गया है उसका अर्थ जरदस्तुका द्वैत नहीं है। उनका द्वैत मौलिक है। उन्होंने एक नये सिद्धान्त तथा दर्शनका प्रतिपादन किया है। जरदस्तुके इस दार्शनिक तत्त्वज्ञानपर अबतक बहुत ही कम प्रकाश डाला गया है।

वे कहते हैं कि मानवकी दो भिन्न स्थितियाँ हैं। एकका नाम है स्पेत्ता मैन्यु तथा दूसरा है अग्रामैन्यु। मैन्युकी व्याख्या कुछ लोग आत्मासे करते हैं। मैन्युका अर्थ है मनसा, मन या माइण्ड। स्पेत्ता मैन्युका अर्थ है शुद्धात्मा और अग्रामैन्युका अर्थ है दुष्टात्मा। उसे श्रेष्ठ मन तथा दुष्ट मन कह सकते हैं। अहुरमज्द तथा स्पेत्ता मैन्युको मिलाकर गोआत्मा किंवा विश्वात्मा बनी है।

एक ओर अहुरमज्द तथा स्पेत्ता मैन्यु अर्थात् पवित्रात्मा है तो दूसरी ओर अग्रा मैन्यु अर्थात् अपवित्र आत्मा है। स्पेत्ता मैन्युका ठीक विरोधी अग्रा मैन्यु है। प्रश्न उपस्थित होता है अहुरमज्द अर्थात् परमेश्वरका विरोधी कौन है? जिस प्रकार सद्‌गुणोंके कारण लोग राम-का नाम स्मरण रखनेकी और दुर्गुणके कारण रावणके नामको भूलनेकी कोशिश करते हैं, उसी प्रकार एककी सत्ता स्वीकार की गयी थी जो अग्रा मैन्युसे ऊँचा और अहुरमज्दका घोर विरोधी था। उसके नामका अब लोप हो गया है। लोग न याद रखनेकी सामग्री समझकर भूल गये हैं। यह कहना अप्रासंगिक न होगा कि बेबिलोनका जखेनिज्म धर्म जरदस्तुके धार्मिक सिद्धान्तोंकी देन है।

इस धर्मके सहांग सिद्धान्तको समझ लेना आवश्यक है। आशाका अर्थ है सत्य। भगवद् प्राप्तिका ज्ञान मार्ग। आशा वैदिक ऋतके अर्थमें प्रयुक्त होता है। (ऋतं च सत्यं) हमारा श्लोक आशासे सर्वथा मिलता है। ऋत एवं सत्य ही आशा है। आशा है सत् पथ। ऋतके ही कारण

विश्व चलता है। सत्यके कारण विश्व स्थिर है। गाथाके अनुसार आशायुक्त ही भगवान्‌का सान्निध्य प्राप्त कर सकता है। द्रुज आशाका विरोधी है। द्रुज मिथ्या एवं पाखण्डका प्रतिरूप है। अतएव सत्पथ-का ज्ञान नहीं हो सकता।

बहुमानो भक्तिमार्ग है। भगवान्‌की प्राप्ति श्रद्धा-भक्ति द्वारा होती है। ईसाने इसीको कहा है कि भगवान् प्रेम है। बहुमानोका अर्थ है श्रेष्ठ मन किंवा मनसा। शुद्ध मनसासे ही दैवी मनसे मिला जा सकता है। यह पूर्ण भक्ति है जो असुर मज्दसे मिलाती है।

क्षत्र वैरपा कर्ममार्ग है। यह भगवान्‌की रचना किंवा सृष्टिशक्ति है। भगवान्‌की प्राप्ति गीताके शब्दोंमें निष्काम कर्म द्वारा होती है। क्षत्र वैरपा निष्काम कर्मके तत्त्वज्ञानको अपनाता है। अहुरमज्दके उक्त तीनों स्वरूप गीता दर्शनसे मिलते हैं। हम ज्ञान, भक्ति, कर्म किंवा योगमार्ग कह सकते हैं।

मातृपक्षमें प्रथम स्पेन्ता अरमेति है। इसका अर्थ है विश्वास। वह मानवको सत्पथकी ओर अग्रसर करता है, बिना श्रद्धा एवं विश्वासके धर्मका प्रयोजन व्यर्थ हो जाता है। बिना विश्वास भगवद्प्राप्ति नहीं होती। योगसूत्र इस सिद्धान्तका प्रतिपादन करता है।

हौर्वततका अर्थ है पूर्णता। उपनिषदका वचन—पूर्ण मिदः पूर्ण मिदं—इस सिद्धान्तके अन्तर्गत आ जाता है। भगवान् पूर्ण है। पूर्णता भगवान्‌का एक गुण है। पूर्णता शुद्ध विवेक द्वारा प्राप्त होती है। शुद्ध मनसाका विवेक एवं आत्मासे घनिष्ठ सम्बन्ध है। उनके द्वारा ही पूर्णता प्राप्त की जाती है। पूर्णता मानव जीवनका चरम लक्ष्य है। पूर्णताके पश्चात् कुछ अवशेष नहीं रहता।

अमरतत्‌का अर्थ है अमृतत्व। मृतोर्माऽमृतम् गमय—वेदका पुराना सिद्धान्त है। मृत्युके पश्चात् भी हमें अमृतत्व प्राप्त हो। अमर-तत् अमृतत्वके मूल सिद्धान्तका प्रतीक है।

अन्तिम सिद्धान्त स्वयं अहुरमज्द है। मातृपक्ष, पितृपक्ष एवं

अहुरमज्दकी त्रिवेणी किंवा संगम भगवान् स्वयं है। उसमें सभी रूप लीन होते हैं।

जरदस्तु धर्ममें एक और आध्यात्मिक शक्ति है जिसे श्रओशा कहते हैं। इस शब्दकी व्युत्पत्ति संस्कृत शब्द श्रुसे हुई है जिसका अर्थ सुनना है। यह अन्तर्ध्वनि है। आध्यात्म श्रवण है। सुननेकी आध्यात्मिक शक्ति है। दूसरे शब्दोंमें इसे शब्दयोग कहा जा सकता है। इसीकी पूर्णता प्राप्त करनेपर लोग नादब्रह्म किंवा आध्यात्मिक ध्वनि सुनते हैं। श्रओशाका साकार रूप सन्देशवाहकके रूपमें किया गया है। वह अहुरमज्द तथा उनके मध्य कार्य करता है जो भगवान्की ध्वनि सुनना चाहते हैं। श्रओशा निर्णय सेतु पार करनेमें सहायक होता है जो उच्च एवं निम्न मनसाके बीच है।

मृत्यूपरान्त स्वर्गीय शान्ति किंवा विश्रान्ति दिलानेमें सहायक होता है। मृत्युके पश्चात् जरदस्तु धर्मावलम्बी श्रओशा सम्बन्धी कुछ क्रिया करते हैं, क्योंकि उसका भौतिक एवं मानसिक दोनों स्थानोंमें अस्तित्व है।

मानव जीवनका लक्ष्य हिन्दुओंके अनुसार मुक्ति, बौद्धोंके अनुसार निर्वाण, इस्लामके अनुसार कयामत तथा ईसाइयोंके अनुसार जगद्से उद्धार पाना है। जरदस्तुने जीवनका उद्देश्य हौरवतत् तथा अमरतत् कहा है। उनका अर्थ है पूर्णता एवं अमरत्व। यह आदर्श वैदिक आदर्श है। मनुष्य पूर्णता प्राप्त करनेपर ही अमरत्व प्राप्त करता है। यह अमरत्व मृत्युसे भी परे है। मृत्यु, पूर्णता एवं अमरत्वमें किसी प्रकार-का विक्षेप उत्पन्न नहीं करती। अमरत्व पूर्णात्माका पुरस्कार है।

सद्गुणी अथवा सत्पथका अनुसरण करता हुआ व्यक्ति गरोदमन अर्थात् स्वर्गमें जाता है। इसे वन्धुशादेयना मानवो भी कहते हैं। इसका अर्थ है उच्चतर उत्तम मनसाके स्थानमें जाना। जरदस्तुके अनु-सार मालूम होता है कि स्वर्ग एवं नर्क मानवके उत्तम एवं निम्न मानसिक क्षेत्र हैं। दुजो दमनाका अर्थ मानसिक नरक है। जबतक

किसीका मानस बुरे विचारोंमें प्रवृत्त रहता है वह तिमिराच्छन्न मानसमें घूमता रहता है। करपन एवं कविस अन्तर्ध्वनि नहीं सुनते, अतएव वे द्रुजो दमनामें रहते हैं। जरदस्तुने दुर्जनोंके लिए अनन्त निराशामय जगत्की कल्पना नहीं की है। वे कहते हैं कि यदि कोई अपने अनुचित कार्योंपर पश्चात्ताप करता है तो वह पुनः सत्पथकी ओर लौट सकता है।

इस महानात्माकी मृत्यु सतहत्तर वर्षकी अवस्थामें पारसी वर्षके दसवें मासके ग्यारहवें खुरशेदके दिन हुई थी। मन्दिरकी वेदीपर मन्दिरकी रक्षा करते हुए बलखमें तुरानियों द्वारा वे मारे गये थे। वे एक मिशन लेकर आये थे। उन्होंने आत्मविश्वासके साथ अपने मिशनका प्रचार किया, भगवान्का सन्देश लोगोंको सुनाया। भगवान्के पवित्र सन्देशके कारण ही जब लोग उनकी हत्या करनेपर तुल गये तो उन्होंने प्रसन्नतापूर्वक भगवान्के मिशन निमित्त उनके चरणोंपर आत्मबलि दे दी।

---

४. हजरत मूसा

मूसा काल्पनिक व्यक्ति नहीं हैं। वे एक महान् ऐतिहासिक व्यक्ति थे। उनके जैसा महान् क्रांतिकारी नेता आजतक उत्पन्न ही नहीं हुआ। एक अभूतपूर्व विशाल सफल क्रांतिका उन्होंने नेतृत्व किया था। उन्होंने तत्कालीन विश्वके विराट् शक्तिशाली साम्राज्य मिस्रके विरुद्ध विद्रोह किया था। उनकी क्रान्ति आदर्श क्रांति थी, अहिंसामय थी। उनकी इस अहिंसक क्रांतिने मुझे अनुप्राणित किया कि मैं उनका पवित्र घटनामय जीवनचरित्र लिखूँ।

महात्मा गांधी और मूसाकी क्रांतिमें प्रतिक्रियाका साम्य देखकर आश्चर्य होता है। विश्वमें दो महान् आत्माएँ आती हैं। दोनोंके जीवन-कालमें तीन हजार वर्षोंसे भी अधिकका अन्तर है। दोनों अपने जीवन-कालके विशाल साम्राज्यके विरुद्ध उठते हैं। दोनों अपनी जातिको दासतासे मुक्त करते हैं। दोनों सन्त हैं। दोनोंका जीवन राजनीतिक घटनाबहुल है। दोनों ईश्वरोपासक हैं परन्तु दोनों अपनी जातिपर होनेवाले निर्मम अत्याचारसे क्षुब्ध हो उठते हैं। वे ईश्वरोपासक ही रहकर सन्तोष नहीं करते। ईश्वरको अपने आन्दोलनका अभिन्न अंग मानते हैं। दोनोंने राजनीति एवं धर्मको एक दूसरेका विरोधी नहीं, पूरक माना है।

महान् व्यक्तियोंकी तुलना करना ठीक नहीं। परन्तु मैं यह कहनेमें संकोच नहीं कर सकता कि मूसाके जीवनका घटनाक्रम उन्हें बहुत ऊपर उठा देता है।

किसी क्रांतिकारी नेताके लिए देशको स्वतन्त्रता प्राप्त करा देना एक बात है लेकिन स्वातन्त्र्यप्राप्त पैंतीस लाख व्यक्तियोंका मानव-कारवाँ लिये चालीस वर्षोंतक जंगलोंमें भटकते रहना दूसरी बात है।

स्वाधीनताके लिए फाँसीपर झूलना एक बात है, लेकिन अन्न-जल रहित चालीस वर्षोंतक उसकी उपासना करना दूसरी बात है। पीढ़ीकी पीढ़ी रेगिस्तानके गर्भमें इसलिए सौंप देना कि आजाद हवामें साँस ली हुई पीढ़ी ही आजाद देशका निर्माण करेगी, विश्व-इतिहासकी बेमिसाल घटना है।

विचार-स्वतन्त्रताके लिए, राजनीतिक स्वतन्त्रताके लिए, धार्मिक स्वतन्त्रताके लिए शताब्दियोंके पुराने आवासको एक रातमें ही छोड़कर चले जाना साधारण बात नहीं है। अमेरिकाको आबाद करनेवाले विचारस्वातन्त्र्यके प्रेमियोंने मूसाके उसी पथका अनुकरण किया है जिसे उन्होंने विश्वको तीन सहस्र वर्ष पहले दिखलाया था। 'मेफेयर' जहाज में अमेरिका जानेवाले स्वाधीनता-प्रेमियोंके लिए आशा थी कि वहाँ उन्हें स्थान मिलेगा, नया घर आबाद करेंगे, नयी दुनिया बसायेंगे। परन्तु मूसाने गोशेन प्रदेशका त्याग किया उस स्थितिमें जब पैंतीसलाख मानव कारवाँके लिए कहीं जगह नहीं थी। एक आशा थी। वह आशा भी संघर्षोंसे खाली नहीं थी।

मूसा जननेता थे। सिद्ध पुरुष थे। याजक थे। संहिताकार थे। ओजस्वी लेखक थे। उनकी महत्ता ही इसराइल जातिका इतिहास है। उन्होंने बिखरी यहूदी जातिकी एक सुमिरनी बनायी। याजक संस्था एवं तत्त्ववादके सिद्धान्तोंमें एकरूपता लाकर मानव जातिको पूर्ण बनानेका अद्‌भुत प्रयास किया। अनेक देवतावाद, पूजावाद, अद्वैतवाद की त्रिवेणी बना सुरसरिकी पवित्र धारा बहायी, शक्ति एवं भक्तिको एक सूत्रमें पिरोया। ईश्वरके सत्य, न्याय, मानवकी मानवता एवं उनके गुणोंमें विश्वास किया। सार्वभौम ईश्वरीय राजकी कल्पना इसी सिद्धान्तके आधारपर की कि ब्रह्म किंवा यहोवा इसराइलका ईश्वर है और इसराइल ईश्वरकी सन्तान हैं।

उस महान् पुरुषके जीवनसे भारतकी विषम समस्याएँ सुलझानेमें हमें सहायता मिल सकती है। उनका तत्कालीन अनुभव हमारा पथ

प्रदर्शन कर सकता है। उनके जीवनको पढ़कर पाठक कुछ खोयेंगे नहीं, पायेंगे, ऐसा हमारा विश्वास है। प्रस्तुत जीवन चरित्र लगभग एक हजार वर्षोंके घटनाक्रमोंका इतिहास है। उनमें आधुनिक अन्वेषणोंका भी आश्रय लिया गया है। जो पाठक केवल मूसाका जीवन चरित्र पढ़ना चाहें वे 'चार सौ साल बीते' शीर्षकसे आरम्भ कर सकते हैं। किंतु विश्वकी चार हजार वर्षोंसे अविच्छिन्न रूपसे प्रवाहित विचारधाराओंको जाननेके लिए प्रारंभसे ही पढ़ना अच्छा होगा। हमारा विश्व आज उनसे प्रभावित है जो बाइबिलको आर्ष वचन मानते हैं।

प्रस्तुत जीवनकी सामग्री मैंने मुख्यतया बाइबिलसे ही ली है। जहाँ गाथाके आधारपर लिखा गया है वहाँ गाथा शब्दका प्रयोग किया गया है। मिस्र, बेबीलोन आदि स्थानोंके खनन कार्योंके कारण इतिहासपर बहुत प्रकाश पड़ा है। उनका भी आश्रय लिया गया है। लगभग दो हजार वर्षोंके पश्चात् इसराइल जाति अपने मूल स्थानपर लौटी है। उसका एक राष्ट्र भी कायम हुआ है। आशा है कि अन्वेषणकी दिशामें अब अधिक प्रयास किया जायगा। मैंने किसी सिद्धांतका प्रतिपादन अथवा खण्डन नहीं किया है। न यह मेरा काम है। वे जैसे वर्णित हैं उन्हें उसी प्रकार रख दिया है।

बाइबिल

'बाइबिल'का अर्थ है संग्रह। बाइबिल शब्द यूनानी है। छाछठ पुस्तकोंका संकलन है। उनतालीस पुस्तकें प्राचीन श्रुति तथा सत्ताइस नवीन श्रुतिमें संकलित हैं। ओल्ड टेस्टामेण्ट तथा न्यू टेस्टामेण्ट का अनुवाद प्राचीन तथा नवीन श्रुति मैंने देना अधिक अच्छा समझा है। श्रुतिका अर्थ यदि अपौरुषेय वचन है तो बाइबिल भी ईसाइयों तथा यहूदियोंके लिए श्रुतिवाक्य ही है। वे भी सुने गये थे। पुनः कालान्तरमें लिखे गये।

बाइबिलकी प्रथम पाँच पुस्तकें मूसाकी कही जाती हैं। उन्हें

मूसाकी आत्मकथा कह सकते हैं। गाथा है कि मूल बाइबिल मूसाको नीलाम्बरमें लिखी मिली थी। उसकी भाषा ईश्वरीय थी। इसराइल जब नन्दीकी उपासना करने लगे तो मूल बाइबिल नष्ट हो गयी। मानवीय भाषामें भगवान्ने दूसरी आज्ञाएँ तथा आदेशादि दिये। उन्हें मूसाने बिल्लौरी पत्थरपर लिखा। उसी बाइबिलका सम्बन्ध प्रस्तुत जीवन-चरित्रसे है।

विद्वानोंका मत है कि गद्यका विकास अधिक प्रौढ़ मस्तिष्क तथा विकसित सभ्यता एवं संस्कृतिका द्योतक है। यदि इस कसौटीपर कसा जाय तो कहना पड़ेगा कि बेबीलोन तथा मिस्रके सम्बन्धमें जो कुछ लेखादि प्राप्त हुए हैं वे गद्यमें हैं। अतएव स्पष्ट है कि वे अधिक सुसंस्कृत एवं सभ्य थे। बाइबिल तथा प्रारम्भिक ग्रीक साहित्य पद्यमें लिखे मिलते हैं। उनका विकास उस समय आरम्भ होता है जब मिस्र और बेबीलोनका सूर्य अस्त होता है। मूसाकी जीवनी बाइबिलमें है। वही प्रामाणिक है। तालमुड, रवि तथा जोसीफस आदि ग्रन्थ मूसाके चरित्रपर प्रकाश डालते हैं। परन्तु बाइबिलके सम्मुख हम उन्हें प्रामाणिक नहीं मान सकते। बाइबिल, कहा जाता है कि, मूसाकी मृत्युके लगभग चार सौ से लेकर छः सौ वर्षों पश्चात् लिपिबद्ध की गयी है। उसकी प्राचीनता कम-से-कम दो हजार छः सौ वर्ष पुरानी माननी ही होगी। कुछ लोगोंको बाइबिलकी घटनाओंमें सन्देह था। आधुनिक अन्वेषणोंने सिद्ध किया है मूल घटनाएं सत्य हैं। देश, काल तथा पात्रके अनुसार पाठान्तर होना स्वाभाविक है। उनमें क्षेपकोंका समावेश व्यक्तियोंको महान् बनानेके लिए किया गया होगा। सरल मानव-जीवनके आकर्षण निमित्त गाथाकी रचना की गयी होगी। यह मानना ही पड़ेगा कि बाइबिल महान् धार्मिक कथानक है। वह महान् व्यक्तियोंके स्वप्न, कर्म एवं उपदेशकी जाग्रत कहानी है।

प्राचीन श्रुति चमड़ोंपर लिखी गयी थी। वह पुस्तक रूपमें नहीं थी। जन्मपत्री जैसी, लम्बे गोले खरेंकी तरह, बनाकर रखी जाती थी।

वही बाइबिलकी विभिन्न पुस्तकोंका रूप था। आज भी यहूदी उन्हें चमड़ोंपर लिखना पवित्र मानते हैं। नवश्रुति पेपाइरस अर्थात् पश्चिमीय भोजपत्र द्वारा निर्मित कागजपर लिखी गयी थी। नवश्रुति उस समय लिखी गयी थी जब दुनिया ग्रीक और रोमकालीन सभ्यतामें बहुत आगे बढ़ चुकी थी। लेखनकलाका विकास हो चुका था। बेबीलोनमें लोग मिट्टीके थपुओं एवं टुकड़ोंपर लिखते थे।

प्राचीन श्रुतिकी मूलभाषा इब्रानी है। कहा जा सकता है कि जिस भाषामें प्राचीन श्रुतिको नबियोंने लिखा वह उनकी भाषामें ही हमारे सामने है। नवीन श्रुतिकी भाषा इब्रानी नहीं है, यद्यपि प्रभु ईसामसीहने इब्रानी भाषामें ही प्रवचन किया था। उनके भाषण एवं गाथाओंका जो रूप प्रभुके भक्त मत्ती, मर्कुस, लूका और यहुन्नाने ग्रीक या लैटिन भाषामें लिखा वही नवीन श्रुति है। अतएव भाषाशास्त्र एवं अन्वेषणकी दृष्टिसे प्राचीन श्रुतिका अधिक महत्त्व है।

यहूदी, ईसाई एवं मुसलमान धर्मकी परम्परा एक ही है। इन तीनों धर्मोंको समझनेके लिए मूसाकी पाँचों पुस्तकें, जो वास्तवमें उनकी आत्मकथा है, आधारशिला है। उनके धार्मिक विचारोंके उद्गम-स्रोत हैं। यदि पाठक उन्हें समझ सकें तो तीनों धर्मोंके सिद्धान्त एवं गाथादिके समझनेमें सरलता होगी। इस दृष्टिसे मूसाकी वास्तविक जीवन-घटनाओंसे उनका सीधा सम्बन्ध न होनेपर भी उन्हें यहाँ लिखना उचित समझा गया है।

आर्य और सेमेटिक

यदि प्रतीचीमें आर्योंकी गौरव-वृद्धि, जरदस्तु, सोफोक्लीज, यूरिपिडाइस, फिदियोस, सुकरात, प्लेटो, अरस्तू आदि तत्त्वज्ञानियोंके कारण हुई है तो सेमेटिक जातिने मूसा, योशुआ, इशियाह, जरमेहा, इजकील, ईसामसीह एवं मुहम्मदको उत्पन्न किया है। यहूदी, ईसाई, बुद्ध तथा इसलाम विश्वधर्म हैं। वे विश्वमें देशोंकी सीमा, अर्थात् अपने जन्म-स्थानकी सीमा पार कर फैले हैं। यहूदी, पारसी, ईसाई एवं मुसलिम

धर्म एकेश्वरवादी हैं। वे बहुदेव पूजाके विरुद्ध अपने समयके धार्मिक सुधारक थे। साकार उपासनाके विरोधी थे। निराकार उपासनाके समर्थक थे, उनकी विद्रोहाग्निमें मूर्तियाँ किंवा देवप्रतिमाएँ गल गयीं। उन्होंने साकार एवं निराकार उपासनाका समन्वय नहीं किया। उन्होंने मध्य मार्गका वरण नहीं किया। अतएव उनमें धार्मिक सहिष्णुता उदार न हो सकी। मूर्तिखण्डन उनके धर्मका प्रमुख अंग था।

आर्य परम्पराका आरम्भ वेदसे होता है। वैदिक भाषा आर्योंकी मूल भाषा थी। उसीसे जरदस्तुकी गाथाकी भाषा, ग्रीक, लैटिन, इरानी संस्कृत आदि भाषाएँ निकली हैं।

वैदिकधर्म बहुदेववादी था। वैदिक जीवन वेदीके चारों ओर केन्द्रित था। उस कालमें मन्दिरका प्रादुर्भाव नहीं हुआ था। वैदिक जीवन व्यष्टिवादी था। उसने मानव विकासकी अविच्छिन्न धारा बहने दी। परन्तु सेमेटिक धर्म प्रारम्भसे ही समष्टिवादी था। उसने अपना संघटन एवं समाजीकरण एक नये साँचेमें किया। उसी साँचेके अनुसार मानव जीवन एवं जगत्की कल्पना की। उसने शक्ति एवं भक्ति दोनोंको साथ लिया। वे एक तुलाके दो पलड़े थे। आर्य इस दिशामें न जा सके। यही कारण है कि आज आर्योंकी अस्सी प्रतिशत सन्तान उस धर्मको मानती है जो सेमेटिक है।

मानव वर्ग

विश्वका जनसमुदाय दो वर्गोंमें विभाजित किया जा सकता है। खतना करानेवाले तथा बिना खतना अर्थात् शिश्नके अग्रभागका चमड़ा न कटानेवाले। विश्वमें यहूदी और मुसलमानोंके लिए खतना कराना अनिवार्य है। बिना खतना कोई यहूदी या मुसलमान उसी प्रकार नहीं हो सकता जैसे बिना यज्ञोपवीत संस्कार हुए द्विज।

सेमेटिक शब्दका प्रयोग बेबीलोनिया, असीरिया, केनानाइट, हिब्रू, आर्मीनियन, फोनीसियन, अरब और अबीसीनियावालोंके लिए

साधारणतया होता है। सेमेटिक जातिमें पन्द्रह उपजातियाँ हैं। परन्तु भाषा तथा जातिकी दृष्टिसे उक्त आठों जातियोंमें पन्द्रह जातियोंका समावेश हो जाता है। बाइबिलकी गाथाके अनुसार नूहके ज्येष्ठ पुत्र शेमकी सन्तानें ही सेमेटिक जातियाँ हैं।

प्रत्येक जाति, देश, गोत्र एवं वंश अपनी श्रेष्ठता कायम रखना चाहता है। इसके लिए वह अपना एक संघ बनाता है। उसे दूसरेसे श्रेष्ठ मानता है। खतना कराकर सेमेटिक जातिने अपनेको शेष मानव जातिसे अलग कर लिया है। उसने आर्योंसे अपनेको अलग किया। वर्ण एवं जातिका संघर्ष अनादिकालसे चला आता है। इसी जाति-संघर्षके आधारपर हिटलरने आर्योंकी श्रेष्ठताका नारा बुलन्द किया। सेमेटिक यहूदियोंका हनन किया! इस प्रवृत्तिको हेय समझनेपर भी मानव प्रवृत्ति अभी ऊपर नहीं उठी है।

ईसा मसीहका खतना हुआ था। वे यहूदीके घर उत्पन्न हुए थे। परन्तु यहूदियोंके कारण उन्हें सूलीपर चढ़ना पड़ा। यहूदियोंने उनका विरोध किया, परन्तु ईसाई-जगत्‌ने अपने प्रभुके आचरणका अनुकरण कर खतना नहीं कराया। यह विश्वकी अत्यन्त आश्चर्यजनक घटना है। इसका भी कारण है। ईसाने अपने जीवनको जनताके सम्मुख रखा। उन्होंने मूर्तिपूजाका विरोध नहीं किया। परन्तु उनका उपदेशक्रम ऐसा था कि ईसाई मूर्तिपूजक नहीं हुए। उन्होंने बलिप्रथाका विरोध खुलकर नहीं किया परन्तु बलिप्रथा स्वतः ईसाई-जगत्‌से लोप हो गयी। उन्होंने मानव-विचारको तर्क एवं भक्तिसे बदला। उनके अनुयायी हुए अधिकतर आर्य। उनका धर्म फैला सेमेटिक जगत्‌में नहीं, अपितु आर्य-जगत्‌में। उनका सीधा विरोध हुआ सेमेटिक लोगोंसे। यही कारण है कि सेमेटिक परम्परापर आधृत ईसाई धर्म सेमेटिक परम्पराका अनुकरण न कर उससे अलग हो गया। यहूदियोंका विरोध तथा उनके कारण ईसाका सूलीपर चढ़ना भी एक महत्त्वपूर्ण कारण है जिसने उन्हें यहूदी परम्परासे अलग रखा।

सृष्टि रचना

मूसाकी बाइबिल अपना कथानक आरम्भ करती है—'ईश्वर !' पहले दिन उसने आकाश और पृथ्वीकी रचना की। पृथ्वी सुडौल न थी। शून्य थी। अगाध जल था। तिमिराच्छन्न थी। ईश्वरकी आत्मा जलस्तरपर घूम रही थी। उसने कहा—'प्रकाश'। प्रकाश हो गया। प्रकाश उसे अच्छा लगा। प्रकाशको उसने दिन कहा। अन्धकारका नाम रात्रि रखा।

दूसरे दिन उसने कहा—'जलके बीच आकाश जलको विभाजित करे।' दोनोंके अन्तरका नाम अन्तरिक्ष हुआ।

'आकाशके नीचेका जल एक स्थानपर एकत्र हो जाय'—ईश्वरने तीसरे दिन कहा। एकत्रित जल समुद्र हुआ। पृथ्वीपर पादप, वनस्पतियाँ आदि उत्पन्न हुईं।

दिन एवं रात्रिको अलग करनेके लिए ईश्वरने कहा—'अन्तरिक्षमें प्रकाश हो।' प्रकाश हुआ। 'ऋतु, वर्ष, मासका चिह्न हो। वे प्रकाश भी दें।' ज्योतियाँ उत्पन्न हुईं। सूर्य एवं चन्द्र दिन और रात्रिपर प्रभुता निमित्त बनाये। उसने नक्षत्रों एवं ग्रहोंको भी बनाया। चौथा दिन समाप्त हुआ।

पाँचवें दिन ईश्वरने कहा—'जीव जन्तुओंसे जल पूर्ण हो जाय।' जल उनसे पूर्ण हुआ। पक्षियोंकी भी सृष्टि की। उसे रचना अच्छी लगी। उसने उन्हें आशीर्वाद दिया।

ईश्वरने छठे दिन स्थलको नाना प्रकारके प्राणियोंसे पूर्ण किया। उसे अच्छा लगा। असने अपने अनुरूप मानव रचना की। उसने मानवको जलचर, नभचर, स्थलचर सब जीवधारियोंपर प्रभुत्व दिया। उन्हें आशीर्वादसे पूर्ण किया।

सातवें दिन उसने विश्राम किया। उस दिनको उसने पवित्र करार दिया। उस दिनको अपना आशीर्वाद दिया।

ऋग् वेदमें भी सृष्टि-रचनाका प्रायः यही क्रम है। यथा—

परमात्माने ऋत एवं सत्यकी उत्पत्ति की। रात-दिन प्रगट हुआ। जलमय समुद्र हुआ। संवत्सर अर्थात् ऋतु एवं रात दिन विभाजित करनेवाला प्रकट हुआ। तत्पश्चात् सूर्य, चन्द्रमा, देव, पृथ्वी, अन्तरिक्ष, महलोंककी पूर्व कल्पनानुसार उसने सृष्टि रचना की। अर्थात् अपनी इच्छानुसार उसने सृष्टि बनायी ऋ० अ ८ अ० वे० ४८। बाइबल सृष्टि रचनाकी यह गाथा बेबिलोनियन गाथाके आधारपर ली गयी है। बेबीलोलियन साहित्यमें भी करीब-करीब इसी प्रकार सृष्टि-रचनाका क्रम दिया गया है।

नरकी उत्पत्ति

यदि मानव आदमको परमेश्वरने मिट्टीसे बनाया। नासारंध्र द्वारा प्राण फूँका। मिट्टीका मानव जीवित प्राणी हुआ। प्राची दिशाके अदनमें उसने प्रज्ञा एवं अप्रज्ञा वृक्ष सहित उद्यान-रचना की। वहाँ उसने आदमको रखा।

उद्यानकी भूमि सींचनेके लिए अदनसे एक स्रोतस्विनी निकली। वह अग्रसर हुई। चार धाराओंमें विभक्त हुई। पहली धारा स्वर्णोत्पादक देश हवीलाको परिवेष्टित करती हुई पिशन कहलायी। दूसरी धारा कूश, अर्थात् यूथोपिया देशको परिवेष्टित करती गिहन नामसे प्रख्यात हुई। तीसरी धारा असोरिया किंवा असुर देशमें प्रवाहित हुई। चौथी धाराका नाम परात अथवा फुरात है। यह आज भी इसी नामसे ईरानमें प्रवाहित है।

नारीकी उत्पत्ति

आदम एकाकी था। साथी विहीन था। ईश्वरने उसे गहरी नींदमें सुला दिया। उसकी एक पंसुली निकाली। उस स्थानको मांससे भर दिया। नरकी पसुलीसे नारी बनायी। उसका नाम हौवा हुआ। उसे आदमके साथ रख दिया।

मानवका पतन

आद्य नर-नारी नंगे थे। शुद्ध थे। पवित्र थे। विकाररहित थे।

लज्जाका ज्ञान नहीं था। निर्लिप्त थे। उन्हें नग्नावस्थाका ज्ञान नहीं था।

सर्पने एक दिन हौवासे कहा—

'उस वृक्षका फल खाया है ?'

'किसका ?'

'जो उद्यानके मध्यमें है ?'

'नहीं ?'

'क्यों ?'

'ईश्वरने निषेध किया है।'

'कारण ?'

'खाने अथवा स्पर्श करनेसे मृत्यु होगी।'

'ओह ! मृत्यु न होगी !!'

'फिर क्या होगा ?'

'तुम अमर हो जाओगी।'

'और ?'

'गुण एवं अवगुणका ज्ञान उत्पन्न होगा।'

'खानेसे ईश्वरने मना क्यों किया ?'

'तुम्हारी प्रज्ञा चक्षु खुल न जाय इसलिए।'

'ओह !'

नारीने वर्जित फल खाया। माया तुल्य वे प्रिय थे। उसने आदमको भी खिलाया।

उनके प्रज्ञा चक्षु खुले। लज्जा उत्पन्न हुई। अंजीरके पत्तोंसे उन्होंने अपना तन ढँक लिया।

भगवान् उद्यानमें आये। नर-नारी छिप गये। उन्हें लज्जा मालूम हुई। अपनी नग्नावस्थाका ज्ञान हुआ।

ईश्वरने बुलाया—'आदम !'

'मैं यहाँ हूँ।'

'कहाँ ?'

'छिपा हूँ।'

'क्यों ?'

'नंगा हूँ।'

'तुमने फल खाया है क्या ?'

'हाँ।'—आदमने कही सब कहानी।

'तू मिट्टी है। मिट्टीमें मिल जा।'

ईश्वरने चमड़ेका अंगरखा बनाया। उन्हें पहनाया। उन्हें अदन-उद्यानसे निकाला। मानवका स्वर्गसे पतन हुआ।

जिस मिट्टीसे आदम उत्पन्न हुआ था उस मिट्टीको वह जोतने-बोने लगा। खेती करने लगा। कृषक हुआ। उसने अपनी स्त्रीका नाम हौवा रखा।

जीवनवृक्षकी रक्षाके निमित्त ईश्वरने पूर्व ओर करूवोको नियुक्त किया। वृक्षके चारों ओर प्रज्वलित तलवार घूमने लगी।

भ्रातृहत्या

आदमके दो पुत्र केन और हाबिल हुए। केन कृषक था। हाबिल चरवाहा था। केनने ईश्वरको अन्नबलि चढ़ायी। हाबिलने भेड़ और बकरीके गर्भसे उत्पन्न प्रथम बच्चेकी बलि दी। उनकी चर्बी बलि-स्वरूप चढ़ायी। ईश्वरने हाबिलकी पशुबलि स्वीकार की।

केन क्रोधित हुआ। हाबिलकी हत्या की। मिट्टीसे उत्पन्न मिट्टीकी सन्तानका रक्त मिट्टीपर गिरा। ईश्वरने पूछा—'केन! तेरा भाई हाबिल कहाँ है ?'

'मैं उसका संरक्षक नहीं हूँ।'

'तुम्हारे भाईका रक्त मिट्टीसे मुझे पुकार रहा है।'

केन चुप रहा।

'भूमिने तुम्हारे भाईका रक्त पान किया है। भूमि तुम्हें शाप दे रही है। तू भूमिकी पूरी उपज न पायेगा।'

केन उदास हो गया। वाणी पुनः गूँजी—

'पृथ्वीपर तू अशाश्वत एवं खानाबदोश होगा।'

केन अदनसे पूर्व नोद प्रदेशमें रहने लगा।

आदमकी मृत्यु

एक सौ तीस वर्षकी अवस्थामें आदमको सेथ नामक पुत्र हुआ। नौ सौ तीस वर्षकी अवस्थामें उसकी जीवनलीला समाप्त हुई। विश्वमें आदमकी सन्तान आदमी चारों ओर फैलने लगे।

जल-प्रलय

मानव बढ़ते गये। दुनियामें छा गये। साथ ही बढ़ गयी उनकी बुराई। ईश्वरको पश्चात्ताप हुआ। उसने विचार किया। पृथ्वी जन-विहीन कर दी जाय।

नूह आदमवंशीय थे। भगवान्‌की उनपर कृपा थी। नूहको एक जहाज बनानेके लिए आदेश दिया। नभचर, वनचर, जलचर, भूचर सभी नर-मादाका एक-एक जोड़ा जहाजमें रखा गया। पर्याप्त भोज्य सामग्री भी रखी गयी। उसकी उस समय ६०० वर्षकी उम्र थी। ६०० वर्षके ठीक सत्तरहवें दिन जल-प्रलय आरम्भ हुआ।

चालीस दिन तथा चालीस राततक पानी बरसता रहा। पृथ्वी एक सौ पचास दिनतक जलमग्न रही। सातवें मासके सत्तरहवें दिन नूहका जहाज अरात पर्वतपर लगा। दसवें मासतक पानी उतरता गया। दसवें मासके प्रथम दिन पर्वत शिखरका दर्शन हुआ।

नूहकी उम्रके छः सौ एक वर्षके प्रथम मासके प्रथम दिन जल सूख गया। दूसरे मासके सत्ताइसवें दिन पृथ्वी पूर्णतया सूख गयी।

यज्ञ

जहाजसे नूह उतरे। उन्होंने यज्ञवेदी बनायी। पशुवेध किया। भगवान्‌ने प्रतिज्ञा की—मानवके दोषोंके कारण पृथ्वीको पुनः शाप न दूँगा। मानव भगवान्‌के अनुरूप बना है। उसे पशु, जीव एवं जन्तु खानेका अधिकार है।

'रक्त ही प्राण है। अतएव रक्त हराम है। रक्त सहित मांस खाना

हराम है। मनुष्योंका रक्त स्वयं मनुष्य ही बहायेगा। हमारे इस वचनका प्रतीक आकाशीय इन्द्रधनुष है। उस धनुषको देखकर हमारे वचनका स्मरण रहेगा।'

नूहकी मृत्यु

जलपोतमें नूहके साथ उसके पुत्र शेम, हाम और येपेत थे। नूह कृषक थे। उन्होंने अंगूरकी खेती की थी।

एक दिन दाख मधु अर्थात् अंगूरी शराब पीकर मदमत्त हो गये। कनानके पिता हामने उन्हें नग्न देखा। अपने दोनों भाइयोंसे पिताकी नग्नावस्थाकी बात कही। शेम और येपेतने एक वस्त्र लिया। पिताकी नग्नावस्था अपनी आँखों न देख सकते थे। पिताकी ओर पीठकर उलटे पैर गये और पितापर वस्त्र फेंक दिया। फिर लौट आये।

नूहको बात मालूम हुई। उसने अपने कनिष्ठ पुत्र हामको शाप दिया। उसके पुत्र कनान अपने भाई-बन्धुओं अर्थात् शेम और येपेतके दास होंगे। नौ सौ पचास वर्षकी उम्रमें नूहका देहावसान हुआ।

अनेक भाषाएँ

एक ही आदमकी सन्तान होनेके कारण मानवजगत्की एक ही भाषा थी। उनकी सन्तान पूर्व प्रदेशकी ओर चली। शिनार प्रदेशमें उनका उपनिवेश बना। उन लोगोंने पत्थर तथा चूनेके स्थानपर पक्की ईंटों तथा गारेसे एक बुर्ज बनानेकी परिकल्पना की। उन्होंने संकल्प किया कि हम यहाँ रहेंगे।

एक दल, एक भाषा, एक काम करते देखकर ईश्वरने विचार किया कि उन्हें एक स्थानपर रखना ठीक न होगा। उन्हें विश्वमें फैला दिया जाय। उनकी भाषामें भगवान्‌ने गड़बड़ी उत्पन्न कर दी। नगरनिर्माणका विचार त्याग दिया गया। वे विश्वमें बिखर गये। उस नगरका नाम बबेल अर्थात् गड़बड़ पड़ा।

अब्राम

अब्राम नूहके वंशज थे। देशमें उर एक नगर था। इसी स्थानके

समीप जरदस्तुने भी जन्म ग्रहण किया था। वहाँ आजसे लगभग चार हजार वर्ष पूर्व तेराह नामक व्यक्ति रहते थे। उन्हें तीन पुत्र—अब्राम, नाहोर और हारान थे।

हारानका पुत्र लूत था। हारान उर नगरमें ही मर गया। अब्रामकी स्त्री सारै और नाहोरकी मिल्का थी। मिल्का हारानकी पुत्री तथा पिस्काकी बहिन थी।

मूर्त्तिपूजा

गाथा है कि अब्रामादि उफरात नदीकी हरी-भरी उपत्यकामें पशु चराया करते थे। उनके पिता मूर्त्तिकार थे।

एक दिन उसने स्वयं एक लोमड़ीकी प्रतिमा बनायी। सायंकाल उसके सम्मुख घुटना टेका। प्रार्थना की। उसे अपने कार्यपर स्वयं आश्चर्य मालूम हुआ।

उरवासी ही नहीं, समस्त कसीदियोंका देश मूर्त्तिपूजक था। मूर्त्तिपूजाके विरुद्ध आवाज उठाना कठिन था। राजकीय अपराध था। वहाँके लोग मूर्त्तिके देवत्व, शक्ति एवं पवित्रतामें विश्वास करते थे।

मूर्त्ति-खण्डन

एक दिन अब्रामके पिता घरसे बाहर गये थे। उसने घरकी सब मूर्त्तियोंको कुल्हाड़ेसे तोड़ डाला। केवल एक मूर्त्ति रहने दी। उसके पास कुल्हाड़ा रख दिया। उसे सन्देह हुआ कि उपास्य मूर्त्ति उसे दण्ड देगी। समय बीतता गया। मूर्त्ति उससे कुछ कह न सकी। दण्ड न दे सकी। उसका कुछ बिगाड़ न सकी। वह चकित हुआ। मूर्त्तिकी शक्तिका रहस्य जैसे उसके सामने प्रच्छन्न रूपसे खुल गया।

कुछ समय बाद उसका पिता तेराह आया। वह बिगड़ा—

'मूर्त्तियाँ तुमने तोड़ी हैं?'

'नहीं।'

'फिर किसने तोड़ीं?'

'पिताजी! वह मूर्त्ति जिसके पास कुल्हाड़ी रखी है उसीने सबको

तोड़ा है।'

'क्यों ?'

'मूर्त्तियाँ आपसमें लड़ गयीं। उनमें झगड़ा हुआ था।'

'मिथ्या।'

'नहीं।'

'मैं जानता हूँ। मूर्त्तियाँ न आपसमें झगड़ सकती हैं, न लड़ सकती हैं, न हिल-डुल सकती हैं। तुमने यह सब किया है।'

'यदि आपकी बात ठीक है तो ये प्रतिमाएँ किस कामकी ?'

'उनकी पूजा होती है।'

'किन्तु उन्हें आँखें हैं, देख नहीं सकतीं। उन्हें कान हैं, सुन नहीं सकतीं। उन्हें पैर है, हिल नहीं सकतीं। अजीब बात है।'

पिता गम्भीर हो गया।

'वे व्यर्थ हैं। हम ही उन्हें बनाते हैं, हम ही उनकी पूजा करते हैं। अपने ही कामकी पूजा ? मैंने उन्हें निरर्थक जानकर तोड़ दिया।'

'फिर लोग पूजा किसकी करेंगे ?'

'उसकी, जिसने सूर्य, चन्द्रमा, नक्षत्रोंकी रचना की है; जो ऋतुओंको लाता है, जो वृष्टि करता है; भूमि हरी-भरी बनाता है; भेड़ोंके गर्भसे बच्चा उत्पन्न करता है।'

तेराह चुप हो गया। उसने मूर्त्तिपूजक देशमें विपत्तिका अनुभव किया। उसने देशत्यागका निश्चय किया।

देशत्याग और तेराहकी मृत्यु

तेराहने अपने पुत्र अब्राम, पोता लूत और पतोहू सारैको लेकर कानान प्रदेशके लिए प्रस्थान किया। वह हारान देशमें पहुँचकर वहीं रहने लगा। दो सौ पाँच वर्षकी उम्रमें उसका देहान्त हो गया।

शमरा टेबलेटमें तेराह नाम मिला है। पर तेराह इब्राहीमके पिता थे यह निश्चित रूपसे नहीं कहा जा सकता। परन्तु इतना स्पष्ट है कि यह नाम ४ हजार वर्ष प्राचीन होगा।

कानान प्रदेश

पचहत्तर वर्षकी उम्रमें अब्रामने अपनी पत्नी, भतीजे लूत तथा अपने पशुधन और सम्पत्तियोंके साथ कानान प्रदेशमें प्रवेश किया।

मोरेहके समीप शकेम पहुँचा। वहाँ कनानी आबाद थे। ईश्वरने उससे कहा—यह देश तुम्हारे वंशजोंको दूँगा। उसने भगवान्‌के निमित्त वहाँ एक वेदी बनायी।

बेतेलके पूर्ववर्ती पर्वतके समीप आया। बेतेल तथा हईके मध्य उसने अपना डेरा खड़ा किया। वहाँ भी भगवान्‌के निमित्त एक वेदी बनायी। तत्पश्चात् प्रस्थान किया।

हिब्रू

कानानके रहनेवालोंने अब्रामको इब्री कहा। इब्री शब्दका अर्थ है दजला और फरात नदीके पारसे आनेवाले लोग। इब्रीके कुटुम्बको इब्रीस कहा गया। हिब्रू शब्द इब्रीका अपभ्रंश है।

बाइबिलकी घटनाकी सत्यता आधुनिक अन्वेषणोंसे प्रमाणित हुई है। मिस्रमें काहिर तथा थीब्सके बीच तेल एल अमरनामें सन् १४८७ में लगभग तीन सौ साठ पत्रव्यवहारके लेख मिले हैं। तेल एल अमरना टेबलेटके नामसे ख्यात है। फरोहा अमेन होतपकी वह राजधानी थी। फरोहा अमेन होतपका देहान्त ईसासे १३७६ वर्ष पूर्व हो गया था। फरोहाने कानान प्रदेशादि जीता था। लेखमें हत्ती तथा हबीरू अर्थात् हिब्रू शब्दका स्पष्ट उल्लेख है। इससे यह सिद्ध है कि हिब्रू जाति केवल गाथा नहीं किन्तु ऐतिहासिक सत्य रखती है। सर लियोनार्डने बेबीलोन सम्बन्धी अन्वेषणसे सिद्ध किया है कि बेबीलोनके लेखोंमें हबीस शब्द आया है। उसे कभी-कभी एयोरियाके गोत्रमें भी शरीक कर दिया गया है। वे ईसासे १३६० से १३८० वर्ष पुराने हैं।

अकाल और मिस्र

देशमें अकाल पड़ा। अकालसे रक्षा निमित्त अब्राम मिस्र चला। मार्गमें अपनी पत्नी सारैसे कहा—'तुम सुन्दरी हो। तुम्हारे कारण,

सम्भव है, मिस्री मुझे मार डालें। अतएव तुम मुझे भाई कहना। तुम्हारे कारण मेरी रक्षा हो जायगी। यदि अब्रामका होना चार हजार वर्ष पूर्व मान लिया जाय तो उस समय मिस्रमें बारहवीं पीढ़ीका राज्य रहा होगा।

मिस्रके राजा फरोहाके राज-प्रासादमें सारै उनके भृत्यों द्वारा लायी गयी। सारैके कारण अब्रामको दास, दासी, भेड़, बकरी, गाय, बैल, गदहियाँ तथा ऊँट मिले। ईश्वर फरोहापर क्रोधित हुआ। फरोहाको मालूम हुआ कि सारै वास्तवमें अब्रामकी पत्नी है। उसने अब्रामको बुलाकर कहा—

'तुमने अनुचित किया। मैंने सारैको अपनी पत्नी निमित्त रखा था। बहिन कहनेकी क्या आवश्यकता थी ?'

अब्राम शान्त रहा। फरोहाने उसे धन-धान्य देकर विदा किया।

लूतसे बँटवारा

बेतेल लौटकर अब्रामने अपनी सम्पत्ति एवं पशुधनका बँटवारा भतीजे लूतसे कर लिया। लूतने जार्डन नदीकी उपत्यकामें अपना डेरा डाला। अब्राम हेबरोनमें रहने लगा। वहाँ उसने भगवान्‌के लिए एक वेदी बनायी।

प्रथम युद्ध

अम्रकेल आदि राजाओंने अमलेकियों तथा एमेरियोंको पराजित किया। सदोममें लूत रहता था। उसे भी धन, धान्य एवं पशुके साथ पकड़ ले गये। अब्रामको समाचार मिला। अब्रामके पास लगभग तीन सौ अठारह युद्धकुशल दास थे। उसने अपनी दास-सेनाके साथ आक्रामकोंपर आक्रमण किया। दान स्थानतक उन्हें खदेड़ ले गया। लूतको उसने धन-धान्य सहित छुड़ा लिया।

ईश्वरकी प्रतिज्ञा

'प्रभु ! तुमने मुझे क्या दिया ?'—अब्रामने ईश्वरसे कहा।

'क्या दूँ ?'

'मैं निर्वंश हूँ।'

'तुझे सन्तान होगी।'

अब्राम गम्भीर हो गया। ईश्वरने कहा—'वही तुम्हारा उत्तराधिकारी होगा।'

'क्या तू ताराओंको गिन सकता है?'—ईश्वरने अब्रामको नक्षत्रोंको दिखाते हुए पूछा।

'नहीं! अगणित हैं।'

'तुम्हारा वंश भी अगणित होगा।'

अब्रामने बछिया, बकरी, मेष, पण्डुक तथा एक कपोत लिया। पक्षियोंके अतिरिक्त अन्य पशुओंको दो टुकड़ोंमें बलि किया। उन्हें अपने सामने रख दिया। सायंकालतक बलि लोथपर मांसाहारी पक्षियोंको न बैठने दिया।

प्रतिश्य देश

रात्रिमें ईश्वरने अब्रामसे कहा—'तुम्हारे वंशज चार सौ वर्षोंतक विदेशोंमें दुःखमय जीवन व्यतीत करेंगे। तुम्हारे वंशजोंको महानद नीलसे लेकर फरात नदीका समस्त भूभाग दूँगा। इस प्रदेशमें केनिय, कनिज्जिय, कद्मोनी, हित्ती, परिज्जी, रफियम, एमोरिय, कनानी, गिर्गाशी, यबूसि आदि रहते हैं। यह सुन्दर उपजाऊ भूखण्ड केवल तुम्हारे वंशवालोंको देता हूँ।

इस्माईलकी उत्पत्ति

अब्रामने कानान देशमें दस वर्ष व्यतीत किये। सारैकी हाजरा नामक मिस्री दासी थी। सारैने पति अब्रामसे कहा—'हमारी कोख बन्द है। हाजरासे वंश चल जाय तो उत्तम होगा।'

छियासी वर्षकी उम्रमें अब्राम द्वारा हाजराको गर्भ रहा। गर्भ धारण करते ही सारैके प्रति हाजराकी दृष्टि मोटी हो गयी।

सारै हाजराको दुःख देने लगी। हाजरा भागी। शूरके जंगलमें कदिश तथा बरेदके बीच एक जलाशयके पास ठहरी। ईश्वर-दूत हाजरासे

मिले। उसे लौटनेके लिए कहा। यह भी कहा कि गर्भसे पुत्र होगा। उसका नाम इस्माईल रखना। इस्माईलका अर्थ ईश्वरका सुननेवाला होता है। जलाशयका नाम लहैदोई पड़ा।

खतना प्रथाका आरम्भ

अब्रामकी उम्र निन्नानबे वर्षकी थी। ईश्वरने उससे कहा—'तुम्हारा नाम अब्राम न होकर इब्राहीम अर्थात् सबका पिता होगा। मैंने तुम्हें जो वचन दिया है उसके प्रतीक स्वरूप अपना, अपने वंशजों तथा क्रीत दासोंका खतना करो। पैदा होनेवाले प्रत्येक शिशुका खतना आठवें दिन किया जाय। खतना रहित पुरुषोंका नाश किया जाय। खतनाहीन पुरुष हमारे तुम्हारे बीचमें हुई प्रतिज्ञाके भंग करनेके भागी होंगे। अपनी पत्नी सारैको अब सारा कहना, उसे पुत्र होगा। उसका नाम इसहाक होगा।

ईश्वरने नाम बदल दिया। उन्हें खतना करनेके लिए कहा। उन्हें द्विज सदृश दूसरा जन्म दिया। उन्हें विश्वके अन्य मानव समुदायसे अलग किया। खतनामय पुरुषकी एक जाति बन गयी। उनका एक गोत्र बना। इस गोत्रने अपनेको विशिष्ट समझा। भगवान्ने उन्हें सुन्दर प्रदेश देनेकी प्रतिज्ञा की। उसके बदलेमें मनुष्यने खतना कराया। खतना ही एक ऐसा अंग था जिसके कारण मनुष्योंकी बाहरी आकृतिमें कोई फर्क न पड़ता था। समय पड़नेपर कौन हिब्रू है कौन नहीं है, इसकी पहचानके लिए यह सरल उपाय था, जैसे यज्ञोपवीतके कारण द्विज पहचान लिया जाता है। खतना ईश्वर तथा आदमियोंकी ओरसे इब्राहीमके साथ हुआ एक प्रण है।

निन्नानबे वर्षकी अवस्थामें इब्राहीमने खतना कराया। इस्माईल का खतना तेरह वर्षकी उम्रमें हुआ। दोनोंका खतना एक ही दिन हुआ। घरमें जितने पुरुष तथा दास थे सबका खतना संस्कार सम्पन्न किया गया।

मम्रेके मैदानमें इब्राहीम अपने खेमेके द्वारपर बैठा था। उसने

अपने सम्मुख तीन देवपुरुष देखे। दण्डवत किया। जल, भोजन एवं विश्रामके लिए निवेदन किया। उसके दासने कोमल सुन्दर बछड़ा मारकर पकाया। साराने तीन सुआकी रोटी बनायी। देववाणीने कहा—'साराको बसन्तमें पुत्र उत्पन्न होगा।' सारा सुनकर हंसी। उसका मासिक-धर्म बन्द हो गया था।

पिता-पुत्री सहवास

लूतने संघर्षोंके कारण सोअर स्थान त्याग दिया। पर्वतपर अपनी दो पुत्रियोंके साथ रहने लगा। पर्वत पुरुषविहीन था। वंश चलाने की कामनासे पुत्रियोंने पिता द्वारा वंशोत्पत्तिका विचार किया। एक रातको दोनों पुत्रियोंने पिताको अंगूरी मदिरा पिलायी। प्रथम दिन ज्येष्ठा तथा दूसरे दिन कनिष्ठाने पिताके साथ सहवास किया। मदके कारण पिताका ज्ञान लोप हो गया था। ज्येष्ठा कन्यासे मोआब जातिका मूल पुरुष मोआब पैदा हुआ। कनिष्ठा कन्यासे वेन-अम्मी पुत्र हुआ। वह अम्मीन वंशियोंका जनक कहलाया।

इसहाकका जन्म

इब्राहीम सूर और कदिशके बीच गरारमें रहने लगा। वहाँका राजा अबिमेलक था। इब्राहीमने यहाँ भी बात फैलायी कि सारा उसकी बहन है। राजाने साराको राजप्रासादमें रख लिया। रात्रिमें उसने स्वप्न देखा। सारा विवाहित है। इब्राहीमसे उसने मिथ्याभाषणका कारण पूछा। उत्तर मिला। प्राणभयके कारण कहा था। पूर्णतया बात मिथ्या भी नहीं है। सारा उसकी माताकी कन्या नहीं है। पिताकी कन्या है। अतएव वह बहन भी हुई। एक सौ वर्षकी उम्रमें इब्राहीमको सारासे इसहाक पुत्र हुआ। आठवें दिन उसका खतना किया गया।

नर-बलि

'इसहाकसे तुम स्नेह रखते हो?' ईश्वरने इब्राहीमसे पूछा—

'हाँ।'—इब्राहीमने उत्तर दिया।

'उसे लेकर मेरियाहप्रदेशके लिए प्रस्थान करो। पर्वतपर उसकी

बलि करना। उसके शरीरकी आहुति यज्ञमें डालना।'

इब्राहीमने होमअग्नि एवं छुरा लिया। इसहाकको समिधा दी। इसहाकने आश्चर्यसे पूछा—

'अग्नि और समिधा तो है, बलिपशु कहाँ है ?'

'चिन्ता न करो। ईश्वर अपनी बलिका स्वयं प्रबन्ध कर लेगा।'

वे निश्चित स्थानपर पहुंचे। इब्राहीमने यज्ञवेदी बनायी। वेदीपर समिधा सजायी। इसहाकको बाँधा। समिधाके ऊपर रखा। छुरासे बलि करना चाहता था कि आकाशवाणी हुई—

'उसे न मार। मैं तुझसे प्रसन्न हूँ।'

इब्राहीमने आँख उठायी। उसने देखा एक मेष झाड़ीमें अपनी सींगोंके कारण फंसा है। पुत्रके स्थानपर मेषकी बलि दी। अग्नि प्रज्वलित हुई। मेषकी आहुति दी गयी। इब्राहीमने उसका स्थान 'यहोवा पिरे' अर्थात् ईश्वर स्वयं उपाय करेगा, रखा।

इब्राहीमने पहली बार पशुबलि कर दोनों ओर रख दिया था। उन्हें हविरूप यज्ञमें नहीं डाला था। मालूम होता है कि उसने जन्मस्थानमें हवनहीन बलिप्रथा प्रचलित थी। उसे असंस्कृत बलिप्रथा कह सकते हैं। जन्मभूमि त्यागकर जब नवीन देशमें पहुँचा तो उसके सांगोपांग पशुमेध किया। यह यज्ञ वैदिक यज्ञसे मिलता है। उसने अपने यहाँकी बलिप्रथा त्यागकर सुसंस्कृत प्रथा अपनायी। मुसलमान लोग कुर्बानी अर्थात् बलि करते हैं परन्तु उसे अग्निको अर्पित नहीं करते। इब्राहीमकी गोत्रीय किंवा वंशपरम्पराकी बलिप्रथा शायद वही रही होगी जिसे मुसलमानोंने अपनाया।

साराकी मृत्यु

किर्पतर्बामें साराकी मृत्यु एक सौ सत्ताइस वर्षकी उम्रमें हुई। एफ्रोनसे उसने गुफासहित भूमि खरीदी। वह स्थान कानान प्रदेशमें हेब्रोनके सम्मुख मकपेलामें है। साराकी मिट्टी उसी गुफामें दी गयी।

इसहाकका विवाह

इब्राहीम वृद्ध हो गया था। उसने विश्वसनीय वयोवृद्ध दासको बुलाया। उसे अपने मूलवंशकी कन्या लाकर इसहाकसे विवाह करनेके लिए कहा। इब्राहीमकी जाँघके नीच हाथ रखकर दासने प्रतिज्ञा की।

दासने दस ऊंट साथ लिये। उत्तम पदार्थोंसे उन्हें लादा। मेसोपोटामियाके नाहोर नगरमें पहुंचा।

सन्ध्याकाल था। कूपके पास वह विश्राम कर रहा था। नारियाँ कूपजल लेने आयीं। उसकी दृष्टि एक कन्यापर पड़ी। वह रूपवती थी। कुमारी थी। पर-पुरुषका मुख नहीं देखा था। घड़ा भरकर चली। दास दौड़ा। जल माँगा। उसने स्नेहसे जल पिलाया। दासने लगभग आध तोलेका सुवर्ण कर्णबाला निकाला। उसे दिया। हाथोंमें सुवर्ण कंकण पहनाया। परिचय पूछा। उसने सफलतापूर्वक उत्तर दिया—'नाहौरकी पत्नी मिल्काके पुत्र बतूएलकी कन्या हूं। मेरा नाम रिबेका है। हमारे यहाँ चारा है। चलो विश्राम करो।'

'अच्छा चलूंगा।'—दासने आह्लादित होकर कहा।

रुबेका किंवा रिबेका घर पहुंची। सब हाल कहा। उसका भाई लावान दासके पास आया। सप्रेम उसे घर ले गया।

दासने बतूएलके सम्मुख विवाहका प्रस्ताव रखा। उसने स्वीकार किया। रिबेकासे पूछा। उसने स्वीकृति दे दी।

वह सहेलियोंके साथ चली। दासोंके साथ चली। गोधूलि कालमें लेहराई कूपके समीप पहुंची। दक्षिण दिशासे इसहाकको आते देखा। दाससे परिचय पूछा। ऊंटसे उतरी। परिचय पाते ही उसने अपना मुख ढक लिया। इसहाककी उम्र उस समय चालीस वर्षकी थी।

इब्राहीमका विवाह

कतूरासे इब्राहीमने विवाह किया। उसे बहुत पुत्र उत्पन्न हुए। जीवनकालमें ही उन्हें सम्पत्ति देकर पूर्व दिशाकी ओर भेज दिया। एक सौ पचहत्तर वर्षकी अवस्थामें उसका देहान्त हो गया। मकफेलाकी

गुफामें जहां साराको मिट्टी दी गयी थी वहीं उसे मिट्टी दी गयी।

दासीपुत्र इस्माईलकी सन्तानें हवीलासे लेकर सूरतक, जो मिस्रके सम्मुख अस्सूरके मार्गमें है, आबाद हो गयीं। इस्माईलकी मृत्यु एक सौ तीन वर्षकी आयुमें हुई।

रुबेकाकी सन्तति

विवाहके चौबीस वर्ष बादतक रुबेकाको कोई सन्तति न हुई। ईश्वरके आशीर्वादसे उसे जुड़वा लड़के उत्पन्न हुए। पहला रक्तवर्ण था। उसका नाम एसाव हुआ। दूसरेका नामकरण याकूब किया गया। उस समय इसहाककी अवस्था लगभग ६४ बरसकी थी।

भोजन और उत्तराधिकार

एसावको एक बार बड़ी भूख लगी। याकूबसे भोजन मांगा। याकूबने शर्त रखी। ज्येष्ठपनके अधिकारका त्याग। एसावने अपने ज्येष्ठपनके उत्तराधिकारका त्याग किया। याकूबने भोजन दिया।

गरार नगरमें इसहाक सपत्नीक आया। पूछनेपर रुबेकाको अपनी बहिन बताया। राजाने एक दिन खिड़कीसे देखा। इसहाक एवं रुबेका क्रीड़ारत थे।

राजा अबीयेलेकने कारण पूछा। उसने भय बताया। राजाने स्थान त्यागकी आज्ञा दी। इसहाकने गरारके नालेमें अपना तम्बू लगाया। वहांसे बर्शेबा गया। ईश्वरके लिए एक वेदी बनायी। वहीं निवास करने लगा।

एसावका विवाह

एसावने अपने दो विवाह चालीस वर्षकी अवस्थामें किये। दोनों ही कन्याएं हित्ती जातिकी थीं। उनका नाम यहूदीन और बासमत था।

माता-पिताने अन्तर्जातीय विवाह पसन्द न किया। एसाव अपने चाचा दासीपुत्र इस्माईलके पास गया। उसकी कन्या महलतसे तीसरा विवाह किया।

याकूबका प्रस्थान

रुबेकाका याकूबपर स्नेह था। उसने याकूबको एसाव बताकर पितासे आशीर्वाद भी दिला दिया। एसाव क्रोधित हुआ। रुबेकाने याकूबको अपने भाई लावानके पास हारान भेज दिया। पिताने उसे मामाकी कन्यासे विवाह करनेके लिए आदेश दिया।

स्वप्न और मनौती

याकूब हारानकी ओर चला। मार्गमें सूर्यास्तकालमें ठहर गया। पत्थरको तकिया लगायी। सो गया। स्वप्न देखा। एक सीढ़ी स्वर्गतक गयी है। उसपर ईश्वर खड़ा है। वह कह रहा था—मैं इब्राहीम और इसहाकका परमेश्वर हूँ। जिस भूमिपर तू सो रहा है उसे तेरे वंशजोंको दूँगा। तेरी वंशवृद्धि होगी। तुझे आशीर्वाद दूँगा।

याकूब प्रातःकाल उठा। उसने तकिया लगाये पत्थरको उठाया। स्तम्भस्वरूप उसे खड़ा कर दिया। स्तम्भके मस्तकपर तेल डाल दिया। उस स्थानका नाम पहले लूज था। उसका नाम बेतेल अर्थात् ईश्वरका मन्दिर रखा। उसने मन्नत मानी—वह उसे ईश्वर मानेगा, यदि वह राजी-खुशी घर लौट आये। उसे पहननेको कपड़ा मिले। वह स्थान मन्दिर होगा। उसे जो कुछ प्राप्त होगा उसका दशमांश ईश्वरांश स्वरूप देगा।

विवाह निमित्त चरवाही

वह एक कुएँके पास पहुँचा। भेंड़ बकरियोंके दो झुण्ड बैठे थे। कुएँपर पत्थर रखा था। चरवाहे एकत्र होनेपर पत्थर हटाते थे। ढोरोंको पानी पिलाते थे। फिर यथावत उसे रख देते थे।

उसने चरवाहोंसे स्थानका नाम पूछा। स्थानका नाम हारान मालूम हुआ। यह भी मालूम हुआ कि पशुओंके साथ जो कन्या आती है, लावानकी पुत्री राहेल है।

याकूबने कुएँका पत्थर हटाकर राहेलके ढोरोंको पानी पिलाया। अपना परिचय दिया। उसका चुम्बन किया। साथ मामा लावानके

घर गया ।

लाबानकी दो कन्याएँ थीं । बड़ीका नाम लिया तथा छोटीका राहेल नाम था । लियाकी आँखें धुँधली थीं । राहेल रूपवती थी । याकूब राहेलको पानेके लिए अपने मामाके ढोर चराने लगा । निश्चय हुआ कि सात वर्ष ढोर चरानेके बाद राहेलसे उसका विवाह कर दिया जायगा ।

सात वर्ष पश्चात् याकूबने विवाहके लिए कहा । लाबानने अपने गोत्रवालोंको निमन्त्रित किया । दावत दी । रात्रिमें राहेलके स्थानपर लिया याकूबके पास गयी । लाबानने दासी जिल्पाको सेवा निमित्त दिया ।

प्रातःकाल रहस्योद्घाटन हुआ । याकूबने हेतु जानना चाहा । उत्तर मिला । हमारे गोत्रमें ज्येष्ठ कन्याके पहले कनिष्ठाकी शादी नहीं होती । एक सप्ताह लियाके साथ रहो । राहेलसे भी शादी कर दी जायगी । अनन्तर राहेलके साथ याकूबकी शादी की गयी । सेवा निमित्त दासी बिल्हा भी दे दी गयी । उसे राहेलसे शादी करनेके कारण सात वर्ष अपने स्वसुरके ढोर और चराने पड़े । इस प्रकार दो विवाहके लिए चौदह वर्ष उसे अपने स्वसुरके ढोर चराने पड़े ।

लियासे सन्तान

ईश्वरने देखा कि लियाकी उपेक्षा हो रही है । राहेलसे उसके रूपके कारण याकूब स्नेह करता है । उसने उसे पुत्रवती किया । उसे रुबेन, शिमीन, लेवी और यहूदा चार पुत्र हुए । राहेल सन्तानहीन रही ।

दासीसे सन्तान उत्पत्ति

राहेलको बुरा लगा । उसने याकूबसे कहा । हमारी दासी बिल्हा से पुत्र उत्पन्न करो । वह हमारा पुत्र होगा । बिल्हासे दान और नप्ताली दो पुत्र हुए । लियाने अपनी दासी जिल्पा याकूबको दी । उससे गाद और आशेर दो पुत्र हुए ।

यूसुफका जन्म

लियाका पुत्र रुबेन कटनीके समय गेहूँके खेतोंपर गया । दूदाफल

लाया। राहेलने माँगा। लियाने कहा कि यदि पतिको मेरे पास रहने दे तो फल दूँ। राहेलने स्वीकार किया। याकूब उस दिन लियाके पास रहा। उससे इस्साकार पाँचवाँ पुत्र हुआ। वह पुनः गर्भवती हुई। छठवाँ पुत्र जेबेलून हुआ। तत्पश्चात् दीना नामक कन्या हुई। राहेलको भी एक पुत्र यूसुफ पैदा हुआ। याकूब सात वर्ष लिया, सात वर्ष राहेल और छ वर्ष ससुरके ढोरोंके निमित्त कुल बीस वर्ष ससुराल-में रहा।

याकूबने बीस वर्षोंके पश्चात् निश्चय किया कि मुझे अपने पिताके पास जाना चाहिये। अपने कुटुम्बके साथ वह भागा। राहेल अपने पिताके देवताकी प्रतिमा चुरा लायी।

सात दिन पीछा करनेके पश्चात् लाबानने दामाद याकूबको गीलादमें पकड़ा। गृहदेवताको लाबान खोजने लगा। राहेलने देवताको ऊँटकी काठीमें छिपा दिया। उसपर बैठ गयी। पिताके पूछनेपर बोली—'मैं रजस्वला हूँ। कैसे उठ सकती हूँ।' याकूब मिथ्या लांछन लगानेके कारण अपने स्वसुरपर क्रोधित हुआ। अन्तमें दोनोंने मेल कर लिया।

याकूबने पत्थरका स्तम्भ खड़ा किया। बन्धुओंने भी पत्थर एकत्रित कर ढेर लगाया। वह ढेर उनकी सन्धिका साक्षी हुआ लाबानने उसका नाम यज्ञशहादुथा तथा याकूबने जिलियाद रखा। याकूबने पर्वतपर ईश्वरको शान्ति बलि चढ़ायी। बन्धु-बान्धव-भोजन हुआ। लाबान दामादको आशीर्वाद देकर लौट गया।

इसराईल

याकूबका ज्येष्ठ भ्राता या जुड़वा भाई एसाव एदाममें रहता था। उसीके कोप-भयके कारण वह बीस वर्ष ससुरालमें रह गया था। उसके पास दूत भेजा। दूतने संदेश दिया। एसाव चार सौ आदमियोंके साथ अगवानीके लिए आ रहा है। याकूब भयभीत हुआ।

उसने अपने दलके दो भाग किये। यदि एसाव एक दलपर

आक्रमण करे तो दूसरा दल भाग जाय। योजना बनायी गयी। भाईकी भेंटके लिए दो सौ बकरियाँ, बोस बकरे, दो सौ भेड़ें, बीस मेढ़े, तीस बच्चों सहित दुधारी ऊँटनियाँ, चालीस गाय, दस बैल, बीस गदहियाँ और उनके दस बच्चे भेजे। आदेश दिया कि प्रत्येक झुण्ड दासोंके साथ काफी फासलेका अन्तर देकर चले।

ईश्वरसे मल्लयुद्ध

उषाकालमें एक व्यक्ति उससे मल्लयुद्ध करने लगा। याकूबको वह पराजित न कर सका। उसने याकूबकी जाँघकी एक नसका स्पर्श किया। उसकी नस चढ़ गयी। उसने कहा आजसे तेरा नाम इसराईल है, अर्थात् ईश्वरसे युद्ध करनेवाला। ईश्वरने उसे आशीर्वाद दिया। उस स्थानका नाम पनीएल अर्थात् साक्षात् ईश्वर-दर्शन रखा। इसराईल किंवा यहूदी जातिके लोग पशुओंकी जाँघकी नस इसी कारणसे नहीं खाते। यह घटना हमें किरातार्जुन युद्धकी याद दिलाती है।

भ्रातृमिलन

एसावको एदोम भी कहते हैं। याकूब उनसे मिला। भाइयोंने परस्पर चुम्बन किया। मिलकर रोये। याकूबके वंशजोंने अपने चाचाको दण्डवत किया। एसावत सेईर चला गया। याकूब सकोत पहुँचा। अपने रहनेके लिए घर तथा पशुओंके लिए झोपड़ा बनाया। सकोतका अर्थ होता है इसराईलका परमेश्वर।

एसाब और याकूबकी गाथामें हमें राम-गाथाकी झलक मिलती है। केकईके समान राहेलने भी ज्येष्ठ भ्राता एसावतका अधिकार कनिष्ट भ्राता याकूबको दिलाना चाहा। यहाँ याकूब देश त्यागकर रामके समान चौदह वर्षके स्थानपर बीस वर्ष देशसे बाहर रहता है। रामेश्वरके समान वह भी पत्थरका स्तम्भ गाड़कर उसपर तेल चढ़ाता अथवा पूजा करता है। उनका भी मिलन भरतमिलापके समान होता है। बेबीलोनकी सृष्टिरचना गाथा जैसे बाइबिलमें ली गयी है उसी प्रकार मालूम होता है। अपभ्रंश रूपमें सुनी सुनायी बातोंके आधारपर

भारतीय कथानकको यहाँ देनेका प्रयास देश, काल, पात्रके अनुसार किया गया है। सम्भव है कि मेरा यह विचार गलत ठहरे।

इसराईल-यहूदी-हिब्रू-ज्यू

इसराईल अर्थात् याकूबके वंशजोंको इसराईल कहते हैं, जैसे रघुके वंशजोंका नाम रघुवंशी पड़ा है। इसराईलकी सन्तानोंके लिए इसराईल संज्ञाका प्रयोग होता है। वे विश्वमें फैले हैं। उनकी अपनी कोई एक भाषा नहीं है। जिन देशोंमें रहते हैं वहाँकी भाषा बोलते हैं। उनमें घोर काले यूरोपियनसे लेकर सुन्दर गौर वर्णके लोग भी हैं। वे भिन्न भाषाभाषी, भिन्न प्रदेशीय होनेपर हिन्दुओंके समान एकसूत्रमें बँधे हैं। उनकी विभिन्नतामें एकताकी अपूर्व भावना हिन्दुओंके तुल्य है। उनकी एकताका मूलस्रोत हिन्दुओंके समान उनका धर्म है। वे एक जातिके हैं। एक राष्ट्र हैं। जीवित हैं। उनका जीवनस्रोत उनका धर्म है। यह कहना गलत है कि यहूदी बेबीलोनसे आये थे। वास्तवमें जैसा बाइबिलसे प्रकट है वे उफरात नदीकी उपत्यकासे आये थे।

दीनाका भ्रष्ट होना

दीना याकूबकी कन्या थी। वह तद्देशीय हित्ती आदि कन्याओंसे भेंट करने चली। उसपर शकिमकी निगाह पड़ी। वह हित्ती गोत्रीय हमोरका पुत्र था। वह दीनाको उठा ले गया। भ्रष्ट किया। उससे अनुराग उत्पन्न हुआ। अपने पितासे विवाह निमित्त कहा।

हमोर याकूबके पास आया, विवाहका प्रस्ताव रखा। निश्चय हुआ कि दोनों जातियाँ परस्पर रोटी-बेटीका व्यवहार करें। प्रश्न उपस्थित हुआ कि खतनाहीन पुरुषोंसे कैसे बेटीका व्यवहार होगा। हमोर तथा शकिमने खतना करवाना स्वीकार किया।

नगरके तोरण द्वारपर नगरके सभी पुरुष एकत्र हुए। उनके सम्मुख रोटी-बेटीका प्रस्ताव रखा गया। नागरिकोंने मान लिया। एक साथ रहे। सभी पुरुषोंका खतना किया गया।

खतनाके घावके कारण लोग पीड़ित थे। अपने घरोंमें पड़े थे। तीसरे

दिन दीनाके भाई शियोम तथा लेवीने तलवार लेकर नगरमें प्रवेश किया। शकिम तथा हमोरकी हत्या की। शकिमके घरसे दीनाको निकाल ले गये। नगरके सभी पुरुषोंकी हत्या कर दी गयी। कोई अपने घावोंके कारण अपनी रक्षा न कर सका। नगर लूटा गया। स्त्रियाँ हर ली गयीं।

प्रतिमा विसर्जन

ईश्वरने याकूबको दर्शन देकर आदेश दिया। जिन लोगोंके पास जितने पराये देवता हैं सब बाहर फेंक दिये जायं। कानोंके कुंडल उतार दिये जायं। सब प्रतिमाएं एवं देवचिह्न सिन्दूर वृक्षके नीचे जो शेकेमके पास था, गाड़ दिये गये। उसने कहा कि हमारा अपना भगवान् अलग है। वह वही है जो हमारे साथ मार्गमें था। जो हमारी सर्वदा रक्षा करता है।

याकूब बेतेल पहुँचा। वहाँ उसने वेदी बनायी। स्थानका नाम एल बेतेल रखा गया। वहाँ रुबेकाकी धात्री दबोराका देहावसान हो गया। उसे सिन्दूर वृक्षकी छायामें मिट्टी दी गयी। उस वृक्षका नाम अल्लोनबक्कुत अर्थात् रुदन-वृक्ष रखा गया।

राहेलकी मृत्यु

वे बेतेलसे आगे बढ़े। एप्रातसे थोड़ी दूरपर राहेलको प्रसव हुआ। शिशु उत्पन्न होते ही वह मर गयी। मरते समय लड़केका नाम बेनोनी अर्थात् शोकमूलक पुत्र रखा। परन्तु पिता याकूबने बिन्य मीन अर्थात् दक्षिणबाहुपुत्र रखा। बेतेलहेगके मार्गमें उसे मिट्टी दी गयी। उसकी कब्रपर एक स्तम्भ खड़ा किया गया।

विश्वका प्रथम समाधि-स्तम्भ

कब्रपर खड़ा किया गया यह पहला स्तम्भ है। इसके पूर्व कब्रपर स्तम्भ खड़ा करनेका वर्णन कहीं नहीं मिलता। स्तम्भ वास्तवमें कब्र पहचाननेके लिए खड़ा किया गया होगा। यहूदी, ईसाई तथा मुसलमान सभी अपनी कब्रोंपर स्तम्भ खड़ा करते हैं। यहूदी और ईसाई स्तम्भोंपर परिचय खुदवाते हैं। मुसलमान परिचयके साथ ही साथ

चिराग जलानेके लिए स्तम्भमें एक छोटा ताखा भी बनवा देते हैं। राहेलकी मृत्यु-परम्परा ही कब्रके स्तम्भोंकी जननी है।

याकूबकी मृत्यु

रुबेनने अपने पिताकी दासी पत्नी बिल्हाके साथ कुकर्म किया। यह बात लोगोंमें फैली। याकूबके बारह पुत्र कुल हुए। इसराइल जातिके यही बारह गोत्र हुए। याकूबके पास इसहाक आया। उनकी मृत्यु हुई। एसाव और याकूबने उन्हें मिट्टी दी।

यूसुफकी हत्याका प्रयास

परदेशीके रूपमें जिस कनान प्रदेशमें इब्राहीम एक दिन रहता था वहीं याकूब रहने लगा।

यूसुफ १७ वर्षका हुआ। वह और बिन्यामीन उसकी प्रिय स्त्री, राहेलकी सन्तान थे। उनपर उसका अधिक स्नेह होना स्वाभाविक था। राहेलके कारण उसने अपने जीवनके बीस वर्ष श्वसुरकी बेगारीमें बिता दिये थे। पिताका पुत्रस्नेह अन्य भाइयोंकी ईर्षाका कारण हो गया।

यूसुफने एक दिन स्वप्न देखा। भाइयोंसे कहा—'हम लोग खेतमें जुट्टे बांध रहे हैं। हमारा जुट्टा खड़ा हो गया। तुम लोगोंके जुट्टोंने हमारे जुट्टेको दण्डवत किया।'

स्वप्न सुनकर उसके भाई चिंतित हुए। उसने दूसरा स्वप्न देखा। भाइयोंसे कहा—'मैंने स्वप्न देखा कि सूर्य, चन्द्र एवं ग्यारह नक्षत्रगण मुझे दण्डवत कर रहे हैं।' भाई क्रुद्ध गये। पिताने उसे आज्ञा दी कि हबरोनकी उपत्यकामें जहाँ उसके भाई लोग पशु चरा रहे हैं, जाकर उनका समाचार ले आये। वह मैदानमें भटक गया। एक व्यक्तिसे ज्ञात हुआ कि उसके भाई दोतानमें हैं। वह दोतानके लिए रवाना हुआ।

भाइयोंने उसे देखा। मार डालनेका विचार किया। रुबेनने हत्याका विरोध किया। यूसुफ पहुँचा। उसका वस्त्र उतार लिया

गया। उसे एक जलहीन गड्ढेमें डाल दिया। यूसुफ जलहीन गड्ढा होनेके कारण डूबकर मर न सका।

यूसुफकी बिक्री

इस्माइलियोंका कारवां गिलादसे मिश्र जा रहा था। यहूदाने सुझाव दिया कि यूसुफको कारवाँके हाथ बेच दिया जाय। चाँदीके बीस सिक्कोंपर वह बेच दिया गया।

रुबेनने भाईको गड्ढेमें न पाकर सोचा कि वह मर गया। उसने अपना वस्त्र फाड़ डाला। भाइयोंके पास आया। भाइयोंने यूसुफके वस्त्रोंपर खून छिड़का। पिताके पास भेज दिया। अपने प्रिय पुत्रका वस्त्र पिताने पहचाना। अत्यन्त दुःखी हुआ। समझा किसी पशुने उसे चीर खाया। उसने अपना वस्त्र फाड़ डाला। कमरमें टाट लपेटा। बहुत दिनोंतक विलाप करता रहा।

यूसुफकी पुनर्बिक्री

व्यापारी यूसुफको मिस्र ले गये। पोतीपर मिस्रके राजाका नौकर था। जल्लादोंका प्रधान था। यूसुफको उसने खरीद लिया।

यहूदा

यहूदाने भाइयोंका साथ त्याग दिया। वह अदुल्लामी हीराके साथ रहने लगा। कनानी शूकी कन्या शूआसे शादी की। उसे एर तथा ओनान नामक दो पुत्र हुए। कजीबमें रहते समय शेला पुत्र हुआ। तामारसे एरका विवाह हुआ। एरका देहान्त हो गया।

यहूदाने द्वितीय पुत्रसे तत्कालीन प्रथानुसार भौजाईके पास जाने के लिए कहा। उस समय भाईकी विधवासे जो सन्तान उत्पन्न होती थी, वह मृत भाईकी सन्तान कहलाती थी। ओनानने भौजाईसे सहवास किया किन्तु वीर्य भूमिपर स्खलित कर दिया। उसने सोचा भाई का वंश लोप होनेपर पिताके दायमें उसका अधिक अंश हो जायगा। ईश्वरको यह बात बुरी लगी। उसने ओनानको मार डाला।

तृतीय पुत्र शेला भी कहीं न मर जाय, इस भयसे यहूदाने

विधवा तामारको मैके भेज दिया। आश्वासन दिया कि शेला बड़ा होनेपर उससे पुत्र उत्पन्न करेगा। तबतक वह वैधव्य जीवन व्यतीत करे। कालान्तरमें यहूदाकी स्त्रीका भी देहान्त हो गया।

जीवित जलानेकी प्रथा

यहूदाको अपने भेड़ोंका बाल कटवाना था। ढोरोंके साथ तिन्माथकी ओर चला। तामार अपने देवर शेलाके युवक होनेपर भी ससुराल न बुलायी गयी। उसने श्वसुरके तिन्माथ जानेकी बात सुनी। वेश्याएँ उन दिनों मुख ढँक लेती थीं। यही उनकी पहचान थी। वह एनेम नगरके तोरण द्वारपर मुख ढककर बैठ गयी। यहूदा वेश्यागमनकी इच्छासे उसके पास गया। प्रसंगके बदले एक भेड़ीका बच्चा देनेका वादा किया। जमानतमें उसके पास अपनी मुहर, भुजबन्द और छड़ी रख दी। प्रसंग पश्चात् भेड़ीका बच्चा हीरासे उसके पास भेजा। वह नहीं मिली।

तीन मास बीत गये। उसे पुत्रवधूके गर्भिणी होनेका समाचार मिला। उसकी क्रोधाग्नि भड़क उठी कि उसकी पुत्रवधूने व्यभिचार किया। दण्ड जीवित जलाना था। चिता रची गयी। जलानेके लिए वह बाहर निकाली गयी। उसने अपने श्वसुरकी वे वस्तुएँ जिन्हें उसने जमानतमें रखा था प्रस्तुत कीं। स्पष्ट कहा कि जिसकी चीजें हैं उसीने मुझे भ्रष्ट किया है। वह भी भस्म किया जाय। यहूदाने स्वयं अपनेको दोषी समझा, वह छोड़ दी गयी। उसे दो जुड़वा पुत्र हुए। इसी यहूदाके नामपर यहूदी नाम पड़ा है।

युसूफ

यूसुफ सुन्दर था, कर्मठ था, चतुर था। उसका स्वामी प्रधान जल्लाद पोतीपर था। उसके गुणोंके कारण वह प्रसन्न था। घरका सब कामकाज उसके ऊपर छोड़ दिया था।

उसकी स्त्रीका मन यूसुफपर लग गया। मुसलिम गाथा है कि उसका नाम जुलेखा था। उसने कई बार रति-प्रस्ताव रखा। यूसुफने

उसकी इच्छा-पूर्ति करनेमें असमर्थता प्रकट की।

एक दिन घर सूना था। स्त्रीने यूसुफका वस्त्र पकड़कर खींचा। यूसुफ भागा। उसका वस्त्र स्त्रीके हाथमें रह गया। कामोन्मत्ता नारीकी प्रतिहिंसाग्नि भड़क उठी। उसने शोर किया। नौकर चाकर इकट्ठे हुए।

स्वामीको बताया गया कि यूसुफ उसकी स्त्रीके साथ प्रसंग करना चाहता था। उसके चिल्लानेपर वस्त्र छोड़कर भागा। इस अपराधके कारण वह बन्दीगृहमें डाल दिया गया।

दो स्वप्न

फरोहाके प्रधान किंकर एवं सूपकारने राज्यापराध किया। वे बन्दीगृहमें डाल दिये गये। यूसुफ उनकी सेवामें नियुक्त किया गया। दोनोंने स्वप्न देखा। यूसुफसे चर्चा की।

'अंगूरकी लता मेरे सम्मुख लगी है। उसमें तीन शाखाएँ हैं। उनमें कलियाँ लगीं। वे फूलीं। अंगूर लगे। अंगूर पक गये। उनका रस अपने स्वामी राजा फरोहाको पान निमित्त दिया।' प्रधान किंकरने कहा।

'तुम्हारा स्वप्न शुभ है। तुम तीन दिनोंमें मुक्त होगे। तुम्हारी पुनर्नियुक्ति पुराने स्थानपर होगी।' यूसुफने कहा।

'मेरे सिरपर श्वेत रोटियोंकी तीन टोकरियाँ हैं। ऊपरकी टोकरीमें फरोहाके लिए पकाई रोटियाँ हैं। पक्षी रोटियोंपर झपटते हुए उन्हें खा रहे हैं।' प्रधान सूपकारने कहा।

'तीन दिनोंमें तुम्हारा मस्तक छिन्न होगा। फरोहा तुम्हारी लाश वृक्षसे लटकवा देगा। पक्षी तुम्हारा मांस नोच-नोचकर खायेंगे।' यूसुफने स्वप्नफल कहा।

तीसरे दिन फरोहाका जन्मदिवस था। स्वप्नफल ठीक उतरा। जेलसे निकलते ही उसके साथी उसे भूल गये।

फरोहाका स्वप्न

दो वर्ष यूसुफको बन्दीगृहमें और बीत गये। फरोहाने स्वप्न देखा।

—'वह नील नदीके तटपर खड़ा है। सात हृष्ट-पुष्ट सुन्दर गायें नदी से निकलीं, तटपर चरने लगीं। नदीसे सात गायें और निकलीं। वे कुरूप थीं। कंकालस्वरूप थीं। चरती सुन्दर गायोंको पतली दुबली कुरूप गायें खा गयीं।'

दूसरा स्वप्न देखा—'एक डंठलमेंसे सात मोटी बालें निकलीं। तत्पश्चात् सूखी पतली सात बालें और निकलीं। पतली बालें सातों बालोंको निगल गयीं।'

फरोहाने स्वप्नफल पूछा। कोई बतला न सका। प्रधान किंकर को यूसुफकी अचानक याद आयी। फरोहासे निवेदन किया। बन्दीगृहसे यूसुफ बुलाया गया।

स्वप्नफल

यूसुफने नम्रतापूर्वक स्वप्नफल कहा—'राजन! दोनों स्वप्न एक ही हैं। उनका फल भी एक ही है। सात हृष्टपुष्ट सुन्दर गायें तथा सात मोटी बालें सुकालके उत्तम वर्ष हैं। दुबली गायें तथा मुरझाई बालें अकालके सात वर्ष हैं। सात वर्ष मिस्रमें खूब उपज होगी। उसके बाद सात वर्ष भयानक अकालका समय आयेगा। दो बार स्वप्न देखनेका अर्थ है कि ईश्वरकी ओरसे ये बातें निश्चित हो चुकी हैं।'

'इसका प्रतिकार' फरोहाने पूछा।

'राजन्! किसी बुद्धिमान् व्यक्तिको मिस्रका प्रधान मंत्री बनाया जाय। सुकालके सात वर्षोंमें देशकी उपजका पंचामांश राज्यकोषमें एकत्रित किया जाय। अकालमें जनताको राज्यभण्डारसे अन्न देकर उसकी प्राण-रक्षाकी योजना बने।

बन्दीसे प्रधान मन्त्री

फरोहा प्रसन्न हो उठा। उसने अपनी उंगलीसे राजमुद्रिका निकाली। यूसुफको पहनाया। मल-मल वस्त्रसे उसे सुसज्जित किया। कण्ठमें सुवर्ण सिकड़ी पड़ी। फरोहाने अपने द्वितीय रथपर उसे आरूढ़

किया। प्रधान मन्त्रित्वकी घोषणा की गयी। लोगोंने उसे दण्डवत किया। उसका नाम सापनत्पानेह रखा गया। ओन नगरके याजक पोतापेराकी कन्यासे उसका विवाह किया गया। उस समय यूसुफकी अवस्था तीस वर्षकी थी। उसे दो पुत्र मनश्शे तथा एप्रेम हुए।

मिस्रमें अकाल

सात वर्षों पश्चात् घोर अकाल पड़ा। मिस्रके अतिरिक्त कहीं दाना नहीं रह गया था। यूसुफका पिता याकूब जीवत था। पुत्रोंको मिस्र अन्न लानेके लिए भेजा। यूसुफके सहोदर कनिष्ट भ्राता विन्यामीनके अतिरिक्त उसके दसो भाई मिस्रके लिए रवाना हुए।

वे मिस्र पहुँचे। यूसुफको पहचान न सके। उन्हें स्वप्नमें भी ध्यान न आया कि उसका भाई मिस्रका प्रधान मन्त्री होगा। उन लोगोंने उसे देखते ही दण्डवत किया।

यूसुफ उन्हें पहचान गया। अपना परिचय न दिया। द्विभाषियेके द्वारा बातचीत की। उसने उन्हें गुप्तचर घोषित किया। विपत्ति देखकर उन्होंने अपनी वंशपरम्परा कही। उन्हें तीन दिनतक बन्दीगृहमें रखा।

उन्हें इस शर्तपर जानेकी इजाजत दी कि अपने छोटे भाईको बन्धक रख दें। पिताके साथ जो छोटा भाई है उसे लेकर लौट आयं। शर्त पूरी न होनेपर बन्धक भाईका बध कर दिया जायगा। शिमोन बन्धक स्वरूप यूसुफके पास रह गया। यूसुफने बोरोंमें अन्न तथा उनका रुपया दोनों रखकर विदा किया।

मिस्र पुनर्गमन

अकालका रूप भयंकर होता गया। विन्यामीन को तथा दूना रुपया लेकर वे मिस्र लौटे। यूसुफने भाइयोंको दावत दी। यूसुफने उनके साथ भोजन किया। उनके रुपये उनके अन्नके साथ बोरोंमें रख दिये गये। यूसुफके आज्ञानुसार चांदीका एक कटोरा भी बोरेमें रख दिया गया।

नगरसे निकलते ही राज्य कर्मचारियोंने यूसुफके आज्ञानुसार उन्हें

पकड़ लिया। उनकी तलाशी ली गयी। बिन्यामीनके बोरेमें कटोरा मिला। वे चोर समझे गये। बन्दी रूप यूसुफके सम्मुख आये। उसे देखते ही उसके सम्मुख गिड़गिड़ाते हुए गिर पड़े। यूसुफने कहा— 'जिसके बोरेमें मेरा कटोरा मिला है वह हमारा दास होगा।'

यहूदा बहुत मिन्नत करने लगा। अपने वृद्ध पिताकी बात कही। हर प्रकारसे साबित करनेकी कोशिश की कि मैं चोर नहीं हूँ। उसने सफाई दी कि जो रुपया भूलसे उनके अन्नमें पहली बार रह गया था उसे बिना माँगे वापस कर दिया गया है।

यूसुफ अपनेको रोक न सका। परिचय दिया और रोने लगा। फरोहा को मालूम हुआ। वह प्रसन्न हो गया। उसने आदेश दिया कि सब भाई अपने कुटुम्बके साथ मिस्रमें आकर निवास करें।

जैकबका मिस्रमें प्रवेश

इसराइल अर्थात् जैकबने समाचार सुना। सबको साथ लिया। बर्शेदाके लिए प्रस्थान किया। अपने पिता इसहाककी परमेश्वरको बलि चढ़ायी। ईश्वरने उसे मिस्र जानेकी आज्ञा प्रदान की।

सत्तर प्राणियोंके साथ याकूबने मिस्रके लिए कूच किया। उस समय उसकी उम्र एक सौ तीस वर्षकी थी।

मिस्र आकर याकूब फरोहाके सम्मुख उपस्थित हुआ। उसे आशीर्वाद दिया। फरोहाने रामशे प्रदेश उन्हें उपनिवेश निमित्त दिया।

अर्थव्यवस्था

अकाल कालमें यूसुफने मिस्रकी सब भूमि खरीद ली। मालूम होता है कि मिस्रमें इस्तमरारी बन्दोबस्त था। अर्थात् भूमि जोतने बोनेवाले कृषकोंकी सम्पत्ति समझी जाती थी। राज्यका भूमिपर स्वामित्व नहीं था। अकालका लाभ उठाकर मिस्रकी समस्त भूमिका मालिक फरोहा किंवा राजा हो गया। उसने काश्तकारी प्रथा चलायी। भूमि जोतनेवाला उपजका पाँचवा अंश राज्यको देने लगा। याजकोंकी भूमि करमुक्त अर्थात् माफी करार दी गयी। विश्वकी यह सबसे प्राचीन

कर-प्रणाली है जिसमें राज्य एवं कृषकका सीधा सम्बन्ध स्थापित हुआ।

इसराईलकी मृत्यु

मिस्रमें आनेके पश्चात् याकूब अर्थात् इसराइल दस वर्षतक जीवित रहा। उसने अपने जांघतले यूसुफका हाथ रखवाकर प्रतिज्ञा करायी। उसका शव उसके पैतृक हड़ावर मकफेलामें जहां इब्राहीम आदि सोये हैं, पहुँचाया जायगा। उसे वहीं मिट्टी दी जाय। वह अपनेमें मिल जाय। यूसुफने प्रतिज्ञा की। इसराईलकी मृत्यु एक सौ सैंतालिस वर्ष-की अवस्थामें हो गयी।

मिस्रके वैद्योंने याकूबके शरीरकी रक्षा विगलित होनेसे की। उसपर सुगन्धि एवं औषधियोंका प्रयोग किया। शव रक्षानिमित्त चालीस दिनतक रखा रहा। सत्तर दिनतक शोक मनाया गया।

याकूबका शव लेकर यूसुफने मकफलाकी ओर प्रस्थान किया। ओविल मिस्रैन स्थानपर सात दिनतक शोक मनाया गया। मिट्टी मकफेलाकी गुफामें दी गयी।

यूसुफकी मृत्यु

यूसुफ एक सौ दस वर्षतक जीवित रहा। उसने भी इच्छा प्रकट की कि मेरा शव मेरे पूर्वजोंके कब्रिस्तान मकफेलामें दफन किया जाये। अतएव उसका शव एक बक्समें सुरक्षित रखा गया। लगभग चार सौ वर्ष पश्चात् मूसाने उसका शव मकफेलामें दफन करने लिए इसराईलोंके साथ भेजा।

चार सौ साल बीते

यूसुफने अपने अस्सी वर्षके लम्बे कालमें इसराइलियोंकी जड़ मिस्रमें जमा दी थी। चार सौ वर्षोंमें वे खूब फैले। उनका मिस्रमें क्या जीवनक्रम था, यह अन्धकारमय है। इतना स्पष्ट मानना ही पड़ेगा कि उन्होंने ऐतिहासिक और दार्शनिक क्षेत्रमें कोई महत्वपूर्ण कार्य नहीं किया। मिस्रके राजनीतिक और सामाजिक जीवनमें अपनी जनसंख्या के कारण उनका विशेष स्थान था। वे आये थे सत्तर की संख्यामें और

हो गये थे सात लाख ।

उनका उपनिवेश नील नदीके डेल्टाके पूरब था । नीलका पूर्वी तथा स्वेजका मध्यवर्ती प्रदेश गोशेन कहलाता था । वहांके आधुनिक अन्वेषणोंसे सिद्ध हुआ है कि गोशेन प्रदेशका केन्द्र प्राचीन केस था । आजकलका सप्त-एल-हेना ही पूर्वकालका केस था ।

वे वहाँ सुखपूर्वक रहते थे । मिस्रमें रहनेके बावजूद वे मिस्रियोंमें मिल न सके । उन्होंने अपनी परम्परा अलग रखी । मिस्रमें रहते हुए भी वे मिस्रको अपनी मातृभूमि समझ न सके । उनका ध्यान उस देशकी ओर लगा था जिसे ईश्वरने उन्हें देनेका वचन दिया था ।

वे इब्राहीम, इसहाक और याकूबके धर्मको मानते थे । उसके ईश्वरको मानते थे । फिर भी उनके धर्मकी स्पष्ट कोई रूपरेखा नहीं थी । पुराने धार्मिक विचार और कहानियां शताब्दियोंके संस्कारके कारण अपना मूल स्वरूप खो चुकी थीं । उनपर मिस्रकी संस्कृति, सभ्यता और धर्मका काफी प्रभाव पड़ चुका था ।

उन्होंने मिस्रके धर्म तथा उनके देवताओंको न माना । उनके मन्दिरोंमें जाकर उनके देवताओंके सम्मुख मस्तक न झुका सके । एक ही देशमें रहते हुए भी प्रतिक्रियावादी मुसलमानोंके समान दो संस्कृतियों, एवं सभ्यतामें विश्वास करते रहे । मिस्रको वे अपना देश न मान सके । उनके इस व्यवहारसे मिस्री उनसे घृणा करते थे । उनपर विश्वास नहीं करते थे । वे अपनी जनसंख्याके बलपर मिस्रमें 'पाकिस्तान' बनानेमें असमर्थ थे । वे मिस्रके अधीन थे । वे बने रहे । उन्हें शायद मिस्रियों जैसा नागरिक अधिकार भी प्राप्त नहीं था । उनमें यूसुफके पश्चात् कोई नेता पैदा नहीं हुआ । उन्हें दासतासे मुक्त करानेके लिए कोई आन्दोलन भी खड़ा नहीं किया गया ।

कोई भी राज्य इस प्रकारकी समस्यासे सशंक रहता है । फरोहाको भय था । आपत्तिकालमें विद्रोहाग्नि भड़क उठ सकती थी । अतएव जहांतक मालूम हो सका है उन्हें कोई राजनीतिक अधिकार नहीं

दिया गया था। वे दासत्वमें जकड़ गये। प्रतिरोध कभी नहीं किया। उनकी एक प्रकारसे राजनीतिक मृत्यु हो चुकी थी।

वे ईंटा पाथते थे। खेती करते थे। उनका पथेराका काम विशेष महत्त्व इस कथानकसे रखता है। उन्होंने ईंट बनाकर फरोहाके लिए रामसे तथा पिथम नामक नगरोंका निर्माण किया। ईंटों और गारोंमें जीवन सना रहनेपर भी उनकी जन-संख्या बढ़ती गयी। उनकी यह शक्ति फरोहाके लिए सिरदर्द हो गयी।

फरोहाका स्वप्न

गाथा है कि इसराइलोंके तीन सौ तिरपन वर्ष मिस्रमें रहनेके पश्चात् फरोहाने एक स्वप्न देखा। वह सिंहासनपर बैठा था। तिमिराच्छन्न आकाशसे दो उंगलियां निकलीं। उंगलियोंके मध्यमें एक छड़ था। वह सूर्यज्योतिसे भी लम्बा था। उस छड़के दो तरफ तराजूके दो पलड़े झूल रहे थे। एक पलड़ा नीचे और दूसरा ऊपर उठा था। नीचे-वाला पलड़ा बड़ा और सुवर्णका था। दूसरा तिनकेके बनाये हुए छोटे घोंसले सदृश था। सुवर्ण पलड़ेपर नदी बह रही थी। नदीसे ऊपरकी तरफ कटनी करनेवाले योद्धा, नगर, पिरामिड और पिरामिडोंके ऊपर राजा रानी थे। तिनकेवालेपर एक नवजात शिशु था। तिनकेका पलड़ा भारसे नीचे आते-आते सुवर्ण पलड़ेसे भी नीचे आ गया।

फरोहाने स्वप्न विचारज्ञ विलाम, जोब तथा येथ्रोको बुलवाया। विलामने कहा—

'एक स्त्री काम करने आती-जाती है। उसके गर्भसे इसराइलियों का मुक्तिदाता जन्म लेगा। राजन्! यदि वह जीवित रह गया तो इस देशका नाश कर देगा।'

'उनका नाश किया जाय' फरोहाकी गम्भीर वाणी गूंजी।

विलाम प्रसन्न हुआ

'किन्तु यह सम्भव कैसे होगा?'

'नवजात शिशु नील नदीमें प्रवाहित कर दिया जाय।'

'जोव ! तुम्हारा क्या मत है।'

फरोहाने जोवसे पूछा। जोवने कोई उत्तर नहीं दिया। वह नीरव हो उठा।

'येत्रो !—तुम्हारा क्या विचार है ?'

'राजन् ! विवेकका आश्रय लेना चाहिये। यहूदी दासत्व श्रृंखला-बद्ध हैं। अपमानित हैं। फिर भी शक्तिशाली हैं। उनका ईश्वर उनके साथ है।'

'ओह ! उनके एक देवता हैं। हमारे पास पचासों देवता हैं। उससे अधिक शक्तिशाली हैं।'

राजाज्ञा घोषित हुई—'इसराईल अपने नवजात पुत्रोंको नील नदीमें जीवित प्रवाहित कर दे।'

यही कहानी भारतमें कंस और कृष्णके विषयमें भी है। कथानकमें अन्तर है। परन्तु सिद्धान्त एक ही है। कंस एवं फरोहा दोनोंने कन्या-हत्या वर्जित की थी।

शिशुहत्या

फरोहाने शिप्रा तथा पूआ नामक धाइयोंको आदेश दिया। इसराइल स्त्रियोंको पत्थरके जननस्थानपर देखते ही उनके पुत्रको तुरन्त मार डालो। कन्या जीवित छोड़ दी जाय। यह नीति सफल न हुई। मिस्री स्त्रियोंको धाईकी आवश्यकता होती थी। इसराइली स्त्रियाँ इतनी शीघ्रतासे जननकार्य करती थीं कि उन्हें धाईकी आवश्यकता न होती थी।

सुनकर फरोहाने दूसरी आज्ञा नवजात पुत्रोंको नदीमें बहानेकी दी। नील नदी यदि एक ओर मिस्रकी पालक थी तो दूसरी ओर इसराइलियोंके बालकोंको खाने लगी।

मूसाका जन्म

मूसाके पिताका नाम अमराम था। वह लेवी वंशीय था। उसकी स्त्रीका नाम योथेबेद था। उसे तेरह वर्षकी एक कन्या मरियम थी।

मरियम यहूदियोंकी प्रथम नबिया थी। एक पुत्र था। वह तीन वर्षका था। उसका नाम हारून था। वह यहूदी जगत्का पहला याजक हुआ। मूसा अपनी माताकी तीसरी सन्तान थे।

उनका जन्मकाल निश्चित नहीं है। कुछ लोग कहते हैं कि ईसासे १५७६ वर्ष पूर्व हुए थे। कुछ कहते हैं कि वे चौदहवीं अथवा तेरहवीं शताब्दीमें उत्पन्न हुए थे।

आधुनिक अन्वेषणोंसे प्रतीत होता है कि बाइबिल वर्णित अत्याचारी फरोहा रामसे द्वितीय था। उसने ६७ वर्ष राज्य किया। उसकी मृत्यु ईसासे १२२५ वर्ष पूर्व हुई थी। अतएव हम वातावरणीय साक्ष्यके आधारपर मान सकते हैं कि वह चौदहवीं शताब्दीके प्रथम दशकमें पैदा हुआ होगा।

जन्मस्थान भी निश्चित नहीं है। वे नील नदीमें कुन्तीपुत्र कर्णके समान प्रवाहित कर दिये गये थे। नवजात पुत्रका जीवित रखना अपराध था। अतएव यह मानना पड़ेगा कि वे नील नदीके तटवर्ती स्थानमें उत्पन्न हुए होंगे जहाँसे उन्हें छिपाकर प्रवाहित करना सरल रहा होगा। फरोहा रामसे द्वितीयकी कन्या बिटियाह नील नदीमें स्नान करने रोज आती थी। इससे यह स्पष्ट होता है कि जन्मस्थान राजप्रासादके समीप रहा होगा। उस समय राजप्रासाद नील नदीके तटपर मेम्फिसमें था। किसी प्रत्यक्ष प्रमाणके अभावमें अनुमान किया जा सकता है कि नील नदीके तटपर मेम्फिसके समीप मूसाका जन्म हुआ होगा।

शिशु-प्रवाह

मूसाकी माताने तीन मासतक उसे छिपाकर रखा। किन्तु पता लगनेपर विपत्ति आ सकती थी। इसलिए उसे प्रवाहित करना ही अच्छा समझा। माँकी ममता पुत्रको अपनी आँखोंके सम्मुख मरना देखना सहन नहीं कर सकती थी। उसने सरकण्डोंकी एक नौका बनायी। उसे राल और चिकनी मिट्टीसे खूब लीपा। वह इस योग्य

बन गयी थी कि जलसे शिशुकी रक्षा कर सके।

माँने मूसाको हल्की नौकामें रखा। उसे नील नदीके तटपर लगे नरकटों या कांसोंके बीच जलमें रख दिया। नीलकी धारा उसे काँसोंके कारण वहाँ न ले जा सकी। आगे क्या होना है, जाननेके लिए मरियम कौतुहलवश छिपकर बैठ गयी।

राजकन्या बिटियाह

फरोहा रामसे द्वितीयकी कन्याका नाम बिटियाह था। कुछ लोगोंने उसे कुरमोसिस लिखा है। बिटियाहकी ममी प्राप्त हुई है। अतएव उसका पूर्व नाम ही प्रामाणिक है। गाथा है कि कुष्टने उसे बन्ध्या बना दिया था। रोगनिवारणार्थ नित्य नील नदीमें स्नान करने आती थी। कुष्टनिवारण निमित्त गंगास्नान लोग औषध मानते हैं। यही बात नील नदीके स्नानके सम्बन्धमें भी प्रख्यात रही होगी।

राजकन्या सखियों सहित तटपर आयी थी। काँसोंके बीचसे बालकके रुदनकी ध्वनि सुनी। उसे आश्चर्य हुआ। वह समीप गयी, बालक नावमें लेटा रो रहा था। उसका खतना हुआ था। देखते ही समझ गयी कि किसी इसराइलका बालक है।

उसे दया आयी, बालक नदीसे निकाला गया। प्रश्न उसके भविष्य का था, राजाज्ञानुसार उसे जीवित जलसमाधि देना अनिवार्य था। साधारण जनता बचानेका साहस न कर सकती थी। किन्तु शिशु राजकन्याके हाथोंमें था।

मरियम दौड़ी आयी, बोली—'आज्ञा हो तो धाईको बुला लाऊँ?'

'ला'—राजकन्याने स्नेहसे कहा।

मरियम अपनी माताको बुला लायी। बालक मूसा अपनी औरस माताको धातृ-माताके रूपमें सौंप दिया गया। उसका पारितोषिक भी निश्चय किया गया। मिस्रका शत्रु मूसा माताका दूध पीता यशोदाके श्रीकृष्णके समान बढ़ने लगा। गाथा है कि राजकन्याका कुष्ट अच्छा हो गया।

प्रासादमें

मूसा जब तीन वर्षका हुआ तो यह अपनी धर्ममाता बिटियाहके पास आया। कुछ लोगोंका मत है कि १२ वर्ष तक मूसा अपनी जातिवालोंके साथ रहा। राजप्रासादमें उसका नाम मूसा रखा गया।

मूसा शब्द इबरानी नहीं है। अरबी भी नहीं है। शुद्ध मिस्री शब्द है। उसका मिस्री होना इस बातका प्रमाण है कि उसका नाम इसराइलियोंमें नहीं रखा गया था। नामकरण संस्कार मिस्री समाजमें हुआ था। मिस्रमें थुतमोसि तथा थुतमोसिस आदि राजा अठारहवीं तथा उन्नीसवीं वंशपरंपरामें लगभग पैंतीस सौ वर्ष पहले हो चुके थे। उसका नाम राजाओंके नामसे साम्य रखता है। यह साबित करता है कि वह मिस्री राजप्रासादमें रहा। वहीं उसका नामकरण किया गया। राजकन्या यह कब पसन्द कर सकती थी कि उसके दत्तक पुत्रका नाम गुलाम यहूदियों जैसा रखा जाय। अपने पुत्रके अनुरूप उसने उसका नाम राजाओंकी परम्परामें रखा। मिस्री भाषामें मूसाका अर्थ होता है 'उत्पन्न'। इबरानी भाषामें मूसाका अर्थ होता है 'निकाला हुआ' अर्थात् पानीसे निकाला गया।

फरोहा और मूसा

गाथा है कि राजकन्या बिटियाह बालक मूसाको लेकर अपने पिताके पास गयी। राजभवनमें दक्षिण तथा उत्तरके पराजित लोग भेंट लेकर आये थे। राजन्य वर्ग उपस्थित था। बिलाम और जोब भी वहाँ थे।

मूसाने खेलते हुए राजाके मस्तकसे मुकुट उतार लिया। अपने मस्तकपर रखा। फरोहाने मुसकराकर स्नेहवश कहा—'युवक राजकुमार! अभी राज्य चाहता है क्या?'

'राजन्! बालकको नदीमें फेंकवा दीजिये। बिलामने चिन्तित स्वरसे कहा।'

'ओह! तुमने एक बार बालकोंको डुबानेके लिए कहा था। यह

बच गया। जोव तुम्हारी क्या राय है ?'

'यदि बालक जानता है कि उसने क्या किया है तो मार डाला जाय।'

'यदि नहीं।'

'तो जीवित रहे।'

'निर्णय किस प्रकार होगा ?'

'बालकके सामने दो तश्तरियां रखी जायं। एकमें एक अंगार और दूसरेमें सुवर्णका ढोंका रखा जाय। दोनोंका रंग एक-सा है। यदि वह सुवर्ण उठा ले तो समझना चाहिये कि उसमें ज्ञान है। आपका राजमुकुट खतरेमें है।'

दोनों तश्तरियाँ मूसाके सम्मुख रखी गयीं। मूसाने अंगार उठा लिया। मुखसे लगाया। बिटियाह चिल्ला उठी। मूसाकी वाणी ठीक न होनेका यह भी एक कारण दिया जाता है कि अंगारस्पर्शके कारण जिह्वा जल गयी थी। जलनेके कारण वाणी बिगड़ गयी, जो आजीवन त्रुटिपूर्ण रही।

फरोहा हंसा। बिलाम अपने देश दजला-फुरात नदियोंके दोआबे में चला गया। जोवने उजके लिए प्रस्थान किया।

अध्ययन

मूसाको तत्कालीन भाषाओं एवं विद्याका ज्ञान होना स्वाभाविक था। उस कालमें मिस्रका स्थान सर्वश्रेष्ठ था। विश्वके सभी कलाकार एवं विद्वानोंका वहां रहना सम्भव था।

बाल्यावस्था माता-पिताकी गोदमें बीती थी। इसराइली प्रथा तथा उनका प्रभाव शिशुके शुद्ध मस्तिष्कपर पड़ा था। उसे इसराइली प्रथा एवं धर्मकी झांकी जीवनके उषाकालमें मिली थी। बाल संस्कार मातृगृह में पड़ा था। बड़ा होनेपर राजप्रासादकी चकाचौंधमें उसने दूसरी दुनिया देखी।

मेम्फिससे १८ मील दूर नील नदीके बहावकी ओर हेलापोलिस

नगर था। उन दिनों वह मिस्रका शिक्षा-केन्द्र था। वहाँ का अर्थात् सूर्यकी उपासना होती थी। सूर्यका मन्दिर था। मिस्री राजा फरोहा इक्ष्वाकुवंशियोंके समान अपनेको सूर्यवंशी कहते थे। जापानके राजा मिकाडो आज भी अपनेको सूर्यकी ही सन्तान मानते हैं।

मिस्रके मन्दिरोंके पुजारी किंवा पुरोहित विद्वान् एवं इतिहासज्ञ होते थे। यूनानी इतिहास-लेखक हीरोडोटसने लिखा है कि मिस्रके पुरोहित श्रेष्ठ इतिहासज्ञ होते थे। गाथा है कि ओनके पुजारी अमन-थीससे उसने शिक्षा पायी थी। बाइबिल कहती है कि मिस्रकी सभी विद्याओंको उसने सीखा था। ज्ञान एवं कर्म दोनोंमें शक्तिपूर्ण था।

धार्मिक प्रभाव

मिस्रमें बहुदेव पूजा थी। होरुस अमेसी, शू, नत, ओसिरिस आदि देवताओंके साथ पशु-पक्षी एवं पादप भी देव श्रेणीमें आ गये थे। पुनरुत्थान अर्थात् मृत्यु मनुष्यको सुला देती है, वह एक दिन पुनः उठेगा। इसके प्रतीक स्वरूप पिरामिडको देखा। रक्षित शव,मन्दिर एवं प्रासादोंको देखा। एक्षनातन फरोहाने ईसासे चौदहवीं शताब्दी पूर्व मिस्र धर्ममें सुधार करना चाहा। उसका सुधार प्रसिद्ध है। उसने बहुदेवपूजाके स्थानपर एकेश्वरवादके सिद्धान्तको रखा था। उसपर एक्षनातनके सुधारोंकी छाप पड़ी। मातृगृहके धार्मिक सिद्धान्त, बहु-पूजा सिद्धान्त एवं सुधारवादी धर्मके एकेश्वरवादके सिद्धान्तोंका उसने अध्ययन किया। उसके इस अध्ययनकी छाप उसकी व्यवस्था आदिपर स्पष्ट दिखाई पड़ती है।

योद्धा

गाथा है कि रामसे द्वितीयके कालमें मिस्र साम्राज्यके अनेक स्थानों में विद्रोहाग्नि भड़क उठी। मिस्रपर आक्रमण भी हुआ। मिस्रकी ओरसे मूसा युद्धोंमें सम्मिलित हुए थे।

इथोपियाका शेवानगर था। वहाँ अधिकार प्राप्त करनेके लिए मिस्री सैनिक-दल नौ वर्षसे प्रयास कर रहा था। इथोपियाको कुश भी

कहते थे। मिस्री सफल न हुए।

मूसा सेनाके साथ भेजा गया। शेवाका राजा किकानो था। उसकी कन्याका नाम थर्बिस था। प्राचीरसे राजकन्याने रक्तिम लौहवर्ण मूसा को देखा। उसे अनुराग उत्पन्न हुआ। मूसाके पास सन्देश भेजा। मेरे साथ रहो। नगर तुम्हें दूँगी। मूसाने प्रस्ताव अस्वीकार किया।

दूसरी गाथा है कि मूसाने इस शर्तपर प्रस्ताव स्वीकार किया कि नगर पहले समर्पण कर दिया जाय। शायद सन्धि न हो सकी, नगर जीता गया। फरोहाने उसका सम्मान किया। उसे दोहरा कोड़ा रखने का गौरव प्राप्त हुआ। उसने थर्बिससे विवाह किया।

यह भी गाथा है कि सीमावर्ती दुर्ग अजराहमें रामसे द्वितियने उसे भेजा था। वहाँ उसने सफलतापूर्वक कार्य किया था।

बाइबिलके अनुसार मिस्रपर लीबियावालोंने आक्रमण किया था। रामसेने लीबियावालोंको पराजित किया था। आधुनिक अन्वेषणसे सिद्ध हुआ है कि अलअमीनमें मिस्रके फरोहाने किलेबन्दी की थी। उस किलेबन्दीका अवशेष इसी वर्ष मिला है। कहा जाता है कि इस स्थान-पर मूसाने मिस्रकी ओरसे युद्ध किया था। इस प्रकार मूसाकी युवा-वस्था बीत चली, वह ४० वर्षका हुआ।

मरियमका आवाहन

गाथा है कि मूसा गोशेनमें गया था। दासत्वमें आबद्ध इसरा-इलियोंको देखा था। उसने गोशेन और जोनके बीच उनका करुण-क्रन्दन सुना था। उसने एक बार देखा, चार व्यक्ति और एक स्त्रीका हाथ-पैर बँधा हुआ है। उन्हें लटका दिया गया है। उन्हें मिस्री सर-दार चमड़ोंके कोड़ोंसे मार रहे हैं!

उनमें झूलती स्त्री मरियम थी। उसकी करुण नारी दृष्टि मूसाकी ओर उठी—

'मूसा!'

'मूसा रुक गया।'

'तुम मुझे—'

मूसा जैसे कुछ याद करने लगा।

'पहचानते हो ?'

मूसा गम्भीरतापूर्वक मरियमके तेजस्वी मुखकी ओर देखने लगा। उसे कुछ याद न आया। उसने धीरेसे कहा—

'शायद—'

'नाम—'

'न ले सकूँगा ?'

'तुम्हारी बहन—'

'कौन—?'

मूसा चौंका। मरियमके पवित्र नेत्रोंमें देखने लगा!

'मरियम—!'

मूसा स्तम्भित हो गया! मिस्री सरदारोंके उठे कोड़े शायद रुक गये। वह मरियमके समीप चला गया। उसकी आँखोंमें करुणा थी। बाल्य जीवनकी स्मृतियाँ उठती-गिरती दौड़ पड़ीं। मरियमका बन्धन खुल गया। राजपुरुष स्वरूप मूसाको देखकर मिस्री सरदार हट गये। मूसा बोला—

'तुम्हारी यह अवस्था ?'

'बहुतोंकी है ?'

'ओह—'

'मैंने एक स्वप्न देखा था।'

'क्या ?'

'तुम उत्पन्न होगे ? जलपर फेंके जाओगे। वही जल एक दिन फट जायगा। हमारी जातिका नेतृत्व करोगे। उद्धार करोगे। दासत्वसे मुक्त करोगे ?

'मैं—'

'हाँ। याद है ? बाल्यावस्थामें मैं तुम्हें इरेद कहा करती थी।'

मूसा कुछ याद करने लगा।

'तुम हमारे सगे भाई हो।'

'मैं—' मूसा स्तम्भित हो गया। उसका मुख आश्चर्यसे खुल गया।

'हाँ।'

'नहीं—'

'तुम इसराइल—'

'मिथ्या'—मूसा पीछे हटने लगा।

'सत्य'—मरियमने विश्वासके साथ मूसाके नेत्रोंमें देखते हुए कहा।

'किस प्रकार ?'

'तुम्हारे माता-पिता जीवित हैं।'

'वे कहाँ हैं ?'

'इसी नगरमें—जोनमें।'

'क्या मैं—'

'चलो—'

भाई-बहन चले। उस पिताको देखने मूसा चला जिसे सैंतीस वर्षोंसे नहीं देखा था। वे देखने चले, उस पिताको जिसके विमल नेत्र दरिद्रता देवीकी बलिवेदीपर निछावर होकर धुंधले हो गये थे।

हिब्रूपर अत्याचार

मूसाने एक दिन देखा। एक मिस्री एक इब्री अर्थात् यहूदीको मार रहा था। उसे दया आयी। वह अत्याचार देख क्रोधित हो उठा। खून उबल उठा। उसने मिस्रीको मारा। वह मर गया। हत्याका भेद न खुलने पाये, इसलिए उसे बालूमें वहीं तोप दिया।

गाथा है कि फरोहाने दासोंसे काम लेनेके लिए १० इसराइल दासोंपर एक इसराइल नायक रखा था। बिल्लूका पुत्र दाथन उनमें एक था। दस नायकोंपर एक मिस्री सरदार था। मरोर उनमें एक था।

शिलोमीथ दानगोत्रीय इसराइल स्त्री थी। उसकी शादी दाथनसे

हुई थी। वह सुन्दर थी। मरोर उसे चाहता था। एक दिन वह आया। दाथनका हाथ-पैर बाँध दिया। उसके सन्मुख उसकी स्त्री शिलोमीथको भ्रष्ट किया। दाथनने अपनी स्त्रीको त्याग दिया। मरोरका अत्याचार ऊपर बढ़ गया।

दूसरे दिन दो इब्री पुरुष आपसमें लड़ रहे थे। गाथाके अनुसार वे दाथन और उसके भाई अविराम थे। मूसाने उन्हें मना किया। दाथन बिगड़ा—

'किसने तुम्हें हमारा न्यायकर्ता नियुक्त किया है? क्या मिस्रीकी तरह मेरी भी हत्या करोगे?'

महाप्रस्थान

बात फैल गयी। फरोहाने मूसाको दण्ड देना चाहा। उसने देश-त्यागका निश्चय किया। मिद्यानकी ओर चला। वह प्रदेश लालसागरके पूर्व था। अपने इसराइल भाइयोंके परित्राणके निमित्त अपना सुख, ऐश्वर्य एवं देश छोड़ चला। उस समय उसकी उम्र ४० वर्षकी थी। भगवान् बुद्धने महाभिनिष्क्रमण मानव-जगत्के उद्धारके निमित्त किया था। मूसाने अपना आवास छोड़ा—अपनी जातिके लिए।

मिद्यानमें

मिद्यानका याजक येत्रो था। उसे सात कन्याएँ थीं। गोधूलि काल था। वे अपने ढोरोंके साथ कूपपर आयीं। मूसाने उनके ढोरोंको जल पिलाया। वे प्रसन्न घर लौटीं। समाचार पितासे कहा।

येत्रो जलाशयपर आया। मूसाको आमन्त्रित किया। उसने अपनी कन्या सिप्पोराहका विवाह मूसासे कर दिया। गोर्शेय पुत्र उत्पन्न हुआ।

मूसाकी छड़ी

गाथा है कि सिप्पोराहने मूसाको अपने उद्यानका एक वृक्ष दिखलाया। वह बोली—'हमें जो अपनी पत्नी बनाना चाहता है उसे वह वृक्ष उखाड़ना पड़ेगा। पिताने विवाहके लिए यही शर्त रखी है। अबतक जो कोई भी उखाड़ने आया वृक्ष उसे खा गया। क्या तुम उसे

उखाड़नेका प्रयास करोगे ?'

'उसकी कहानी क्या है ?'

'एक छड़ी थी। भगवान्‌की थी। उसने उसे प्रथम विश्रामके दिन आदमको दिया था। आदमने उसे इनोचको और इनोचने नूहको दिया था। नूहने शेमको दिया। शेमने अब्राम किंवा इब्राहीमको दिया। इब्राहीमने इसहाकको, इसहाकने याकूबको और याकूबने यूसुफको दिया! यूसुफकी मृत्युके पश्चात् छड़ी फरोहाके खजानेमें दाखिल हो गयी। वहाँसे पिताजी लाये'।

'फिर क्या हुआ ?'

'पिताजी छड़ी लेकर बागमें घूम रहे थे। जमीनपर पटका। उसने जमीन थाम ली। वृक्ष हो गया। फल लगने लगे।'

'वह वृक्ष है कहाँ ?'

सिप्पोराहने स्थान दिखा दिया। मूसाने तरुवरका स्पर्श किया। वह छड़ी हो गया।

येत्रोको विश्वास हो गया। मूसा इब्राहीमका वंशज है। उसने अपनी कन्याका विवाह मूसासे कर दिया।

दूसरी गाथा है। मूसा येत्रोके बागमें आया। तरुवरोंके बीच उसने एक छड़ी गड़ी हुई देखी। साधारण पतली छड़ी प्रतीत होती थी। गोली थी। चिकनी थी। वैसी ही थी जैसी ढोर चरानेवाले रखते हैं। मूसाने येत्रोसे पूछा—

'छड़ी यहाँ क्यों गड़ी है ?'

'उसके पीछे एक कहानी है।'

येत्रोने गंभीरतापूर्वक कहा। मूसाने पूछा—'क्या मैं जान सकता हूँ।'

'अवश्य! यूसुफकी मृत्युके पश्चात् छड़ी फरोहाके खजानेमें चली गयी। मैं फरोहाके राजप्रासादका प्रधान याजक था। मुझे छड़ी पसन्द आयी। फरोहासे माँग लिया। भूमि पर पटका। उसने इतनी मजबूतीसे भूमि पकड़ ली कि कोई उसे उखाड़ नहीं सका।'

'आश्चर्य।'

मूसाने छड़ीपर कुछ लिखा देखा, पढ़ने लगा। उसकी मुद्रा चकित हो गयी।

'आश्चर्य है?'

'क्या बात है?'

'उसपर देज्जद, अदश और वेहाचव लिखा है।'

'इसका अर्थ?'

'इसके साथ एक और कहानी है।'

'वह क्या?'

'भगवान्‌ने छः दिनोंमें सृष्टि रचना की। सातवें दिन विश्राम किया। उस विश्रामके दिन उसने दस आश्चर्यजनक चीजें बनायीं। उनमें एक छड़ी भी है।'

'यह छड़ी'—येत्रोने साश्चर्य कहा।

'हाँ—यह आदमको दी गयी थी। वह अदन उद्यानमें था। आदमके वंशजोंके पास रहती चली आयी है। वही इस समय हमारे सम्मुख है।'

'तुम्हारी सत्यताका प्रमाण?'

'इसे कोई अबतक निकाल नहीं सका है?'

'हाँ।'

मूसा अग्रसर हुआ। गड़ी छड़ीको सरलतापूर्वक निकाल लिया। येत्रो समझ गया। मूसा कोई महान् व्यक्ति है। उसने अपनी कन्या सिप्पोराहका विवाह उसके साथ कर दिया।

कुछ आधुनिक विद्वानोंका मत है कि मूसाने येत्रो याजकका धर्म स्वीकार कर लिया। मूसाकी माताका नाम जोकिवेद इब्रानी भाषाका शब्द नहीं है। वह मिद्दियानी शब्द कहा जाता है। वह इसराइल धर्मके स्थानपर इसी धर्मको मानती थी। येत्रो भी उसी धर्मका था। वह उसी परमेश्वरकी उपासिका थी जो मूसाको उसकी ससुरालमें

उसके सम्मुख अवतीर्ण हुआ था।

४० वर्ष पशुपालन

मूसा ४० वर्षकी उम्रमें येत्रोके यहाँ आया था। ४० वर्षतक ससुरालमें पशु-पालन करता रहा। उसने इस लम्बे कालमें येत्रोकी धर्मपरम्पराका अध्ययन किया। उसके सम्मुख मिस्री, इसराइल तथा येत्रो तीनों धर्मोंकी रूप-रेखा थी। निश्चय ही प्रकृतिकी गोदमें भ्रमण करता हुआ वह मननशील हो गया था। मूसाका यह ४० वर्षका काल घटनाविहीन है। अभीतक किसी लेखकने इसपर प्रकाश नहीं डाला है। मैं समझता हूँ कि उसे कोई सुनिश्चित सिद्धान्त एवं मार्गका आश्रय नहीं मिल रहा था। किस प्रकार अपने भाइयोंको फरोहा जैसे शक्तिसम्पन्न राजासे मुक्त करे। वह अपने माता-पितासे, दुनियाके सभी सुखोंसे अलग पड़ा रहा। उसका वह काल भगवान् बुद्धके महाभिनिष्क्रमणके पश्चात्का तपस्याकाल कहा जा सकता है। इतने लम्बे कालके एकान्त जीवन एवं चिन्तनने उसे स्थितप्रज्ञ बना दिया था। वह अपनेको नेता बनाने एवं विश्वको एक सिद्धान्त देनेकी रचनामें लगा था।

भगवान्के सम्मुख

एक दिन वह होरेब पर्वतके समीप पशु चराता पहुँचा। वह चकित हो गया। एक कटीली झाड़ीसे अग्निशिखा उठ रही थी। ज्वालाके बीच हरी झाड़ी जल नहीं रही थी। वह किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो गया। झाड़ीसे वाणी सुन पड़ी—

'मैं यहाँ हूँ।'

मूसाने वाणीकी ओर देखा।

'मूसा! समीप न आना। जूता उतार दो। जिस स्थानपर तू खड़ा है वह पवित्र स्थान है।'

मूसा मूक था।

'मैं तुम्हारे पितृगण इब्राहीम, इसहाक एवं याकूबका परमेश्वर हूँ।'

मूसाने अपना मुख हाथोंसे ढँक लिया।

'इसराइल मिस्रमें दास हैं। कष्टमें हैं। उन्हें उस देशमें ले चल जिसे देनेकी मैंने तुम्हारे पित्रोंसे प्रतिज्ञा की है।'

मूसा सुनने लगा।

'मिस्र जा? इसराइल जातिको मिस्रसे निकालकर प्रतिज्ञ देशमें आबाद कर। तू फरोहाके पास जा। उससे कह कि इसराइल जातिको मिस्रसे आने दें? यही मेरा आदेश है।'

'मैं कौन हूँ? फरोहाके पास जाऊँ। इसराइल जातिको मिस्रसे निकालूँ।'

उसने कहा—'मैंने तुम्हें भेजा है।'

मूसा गम्भीर हुआ।

'इसराइलोंसे कहना उनके परमेश्वरकी आज्ञा है। मैं तुम्हारे साथ रहूँगा। उन्हें निकाल लानेके बाद तुम इसी पर्वतपर मेरी उपासना करोगे।'

'मैं इसराइलियोंसे क्या कहूँगा कि उनका परमेश्वर कौन है? उसका क्या नाम है?'

गम्भीर वाणी गूँजी—'मैं वही हूँ, जो मैं हूँ।'

ईश्वरने अपना जो परिचय मूसाको दिया वही उपनिषदोंमें भी वर्णित है। ईशावास्योपनिषद्के सोलहवें श्लोकमें भगवान्ने कहा है—योऽसा वसौ पुरुषः सोऽहमस्मि। अर्थात् वही मैं हूँ जो मैं हूँ। जरदस्तुने भी जब ईश्वरसे पूछा कि आप कौन हैं? तो वहाँ भी भगवान्ने 'अहमी मजदो' कहा। बाइबिल, जरदस्तुकी गाथा एवं उपनिषदोंका यह विचित्र साम्य इंगित करता है कि धर्मोंका मूलस्रोत, उनका उद्गम, एक ही था।

यहोवा

मूसा इसराइल तथा यहोवाका माध्यम था। उसने यहोवाका परिचय इसराइल जगत्को दिया। इसराइलका परिचय यहोवासे कराया।

परिचयके परिणामस्वरूप उसने विश्वकी जातियोंमें केवल इसराइल जातिको चुना। इसराइल जातिका विश्वमें विशेष मिशन हुआ। इसराइलका संघर्ष यहोवाका संघर्ष है। यहोवा इसराइलके साथ है। उनका रक्षक है। उनके लिए वह योद्धास्वरूप प्रतीत होता है। वह उसी प्रकार कार्य करता है जैसे इन्द्रादि देवता अपने भक्तोंके लिए करते थे। इसराइल, बिना यहोवाके आशीर्वादके, जीवन-शून्य है।

यहोवा इसराइलोंका 'ईश्वरवाचक शब्द नहीं है। मूसाके पूर्व बाइबिलमें इसराइलके ईश्वरके लिए 'इब्राहीम, इसहाक और याकूबका ईश्वर' शब्दोंका प्रयोग किया गया है। कोई व्यक्तिवाचक संज्ञा नहीं है। इब्राहीम आदिको एल शदाई नामसे ईश्वरका ज्ञान था। अद्वैतवादी अरब लोगोंके ईश्वर वाचक नाम अल्लाहका विश्वरूप जैसे पैगम्बर मुहम्मदने दिया ठीक उसी प्रकार अपने श्वसुर येथ्रोके ईश्वर यहोवाको उसने इसराइल जगत्के ईश्वरके नामसे सम्बोधित किया। यहोवा मिद्दिपानी भाषाके परमेश्वरका नाम है। ईसासे पूर्व नवीं शताब्दीके मेशाके लेखमें यहोवा उपासना तथा नेबो पर्वतका उल्लेख है।

स्वर्ग-नरक हीन धर्म

मैंने बहुत ध्यानसे प्राप्य ग्रन्थोंको पढ़ा। मुझे आश्चर्य हुआ। मूसाने कहीं स्वर्ग अथवा नरकका स्पष्ट वर्णन नहीं किया है। मरनेके पश्चात् अपने पूर्वजोंके साथ आदमी मिल जायगा। इसका वर्णन खूब मिलता है। परन्तु पापी नरकमें और पुण्यात्मा स्वर्गमें जाता है, इसकी कल्पना नहीं की गयी है। पुनर्जन्म तथा कर्म सिद्धान्तके विषयमें कुछ नहीं कहा गया है।

प्रतीत होता है कि मूसाका एकमात्र उद्देश्य मिस्रकी दासतासे यहूदियोंको छुड़ाकर उन्हें नवीन देशमें आबाद करना था। उस देश की कल्पना सुन्दर है। वहाँ अंगूर और मधुकी बहुलता है। वह सुन्दर देश है। भगवान्की आज्ञा माननेपर वह देश अर्थात् कानान प्रदेश

यहूदियोंको मिलेगा। हमारी समझसे मूसाने भौतिक स्वर्गकी कल्पना की थी। उस देशमें पहुँचना ही स्वर्गमें पहुँचना समझा गया। ईश्वरके आदेशपर चलनेका परिणाम सभी धर्मोंने स्वर्गप्राप्ति कहा है। मूसाने जीवित, दिखाई देती हुई मरुभूमिके मुकाबले सुन्दर भूमि दिखायी। वहाँ जानेपर राष्ट्र बनेगा। खानेको मिलेगा। अन्य धर्मवाले स्वर्ग-प्राप्तिकी कामनामें जैसे सब कुछ निछावर इस जीवनमें कर देते हैं उसी प्रकार इस भौतिक स्वर्ग देश प्राप्तिके निमित्त मूसाने इसराइलोंसे बड़ासे बड़ा त्याग करा उन्हें स्वर्ग देशमें पहुँचाया। जीवनमें ही स्वर्ग प्राप्त कराया।

मिस्रकी ओर

मूसाको मालूम हुआ कि उसके समयके फरोहाका देहान्त हो चुका है। उसके स्थानपर विटियाहका पुत्र फरोहा हुआ है। अतएव उसने मिस्र जानेका निश्चय किया। श्वसुर येत्रोसे विदा माँगी। स्त्री तथा पुत्रोंको गदहोंपर बैठाया। छड़ी हाथमें ली। मिस्रकी ओर चला। उस समय उसकी उम्र ८० वर्षकी थी। अर्थात् जिस उम्रके लगभग भगवान् बुद्धका परिनिर्वाण हुआ। उस कालके पश्चात् मूसाने अपने महान् जीवनका अध्याय खोला।

ईश्वरका क्रोध

मूसाने एक गैरयहूदी स्त्रीसे विवाह किया था। वह इसराइल तथा ईश्वरके बीच हुई प्रतिज्ञाको न जानती थी। साक्षीस्वरूप खतना-प्रथाका उसे ज्ञान न था। मूसाके लड़कोंका खतना नहीं हुआ था।

मार्गमें एक सरायमें वे ठहरे। ईश्वरने उसे मार डालना चाहा। मूसाने खतना करनेके लिए स्त्रीको आदेश दिया। यह स्वाभाविक प्रतीत होता है कि जिन इसराइलियोंका वह नेता बनने जा रहा था उनके धर्मकी वह स्वयं उपेक्षा न करे। वह एक मिशनके साथ चला था। खतना-रहित सन्तानोंको देखकर इसराइली जनताकी आस्था उसपर न होती। वह कार्य जिसे वह स्वयं नहीं करता था कैसे दूसरोंपर लादता ?

इस दृष्टिसे उनमें पहुँचनेके पहले इसराईलके ईश्वरके आज्ञानुरूप आचरण करना अनिवार्य था।

सिप्पोराहने एक तेज पत्थरकी धारसे अपनी सन्तानोंका खतना किया। शिशुके कटे चमड़ेको मूसापर फेंक दिया। बोली—'तू खूनी पति है।'

पत्नीकी वापसी

गाथा है कि मूसाने मार्गसे ही अपनी पत्नी तथा सन्तानोंको ससुराल लौटा दिया। मूसाके सम्मुख गम्भीर समस्याएँ थीं। वह अस्सी वर्षका हो चुका था। उसे अपनी जातिका नेतृत्व करना था। फरोहाका सामना करना था। लाखों इसराइलियोंको एक स्थानसे निकालकर दूसरेमें आबाद करना था। गृहस्थीके बोझसे उसे छुटकारा मिला। वह किसी भी विपत्तिका सामना करनेके लिए मुक्त था।

हारूनसे भेंट

मूसा अपने बड़े भाई हारूनसे हरबकी पहाड़ीके पास मिला। ईश्वरने मूसाको आज्ञा दी थी कि फरोहासे बात करने लिए हारूनको साथ ले जाना। मूसाकी वाणी ठीक न थी। हारूनने मूसाके उद्देश्यका समर्थन किया। दोनों फरोहासे मिलने दो सौ मीलकी लम्बी यात्रापर निकल पड़े।

नेतृत्व

मूसा और हारूनने अपनी जातिके सभी वृद्धोंको एकत्र किया। ईश्वरकी आज्ञा सुनायी। प्रतिज्ञ देशमें चलनेकी आशा दिलायी। परमेश्वरने दुःख दूर करनेका वचन दिया है, यह जानकर सबको सन्तोष हुआ। उन्होंने भगवान्का अभिनन्दन किया।

फरोहाके सम्मुख

रामसे द्वितीयकी मृत्यु ईसासे १२२५ वर्ष पूर्व हो चुकी थी। मेरनप्ताह ईसासे पूर्व १२४० से १२१५ वर्षतक मिस्रका फरोहा रहा। बैबीलोनमें इस समय कदशमा खर्बे द्वितीय राजा था।

मूसा और हारून फरोहा मेरनप्ताहके सम्मुख उपस्थित हुए। बोले—

'परमेश्वर यहोवाकी आज्ञा है कि आप मेरी जातिको धार्मिक कृत्य निमित्त जंगलमें जानेकी आज्ञा दें।'

'यहोवा!' फरोहा चकित हुआ। उसने विश्वके देवताओं तथा ईश्वरके नामोंकी सूचना निकलवायी। उसने एक-एक नाम पढ़वाकर सुना! बोला—

'तुम्हारे परमेश्वरका नाम इसमें नहीं है। मैं कैसे उसे ईश्वर मानूँ?'

'हमारा ईश्वर यहोवा है।'

'यहोवा कौन है? मैं उसे नहीं जानता। मैं उसकी आज्ञा कैसे मानूँ? इसराइलियोंको जानेकी आज्ञा नहीं दे सकता।'

'हिब्रुओंके परमेश्वरसे भेंट हुई है। उनकी आज्ञा है कि हम जंगल में जाकर तीन दिनतक उसके लिए बलि प्रदान करें।'

'ओह! तुम अपनी जातिको विश्राम दिलाना चाहते हो। तुम लोग आलसी हो गये हो। जाओ अपना काम करो।'

असन्तोषका आरम्भ

ईंटा पाथनेके लिए इसराइलियोंको खर-पात राज्यकी ओरसे दिया जाता था। फरोहाने आज्ञा दी कि उन्हें अब खर-पात न दिया जायगा। वे स्वयं उन्हें एकत्र कर ईंटा बनावें।

दोनों काम एक साथ करनेके कारण निश्चित संख्यामें ईंटें न बन सकीं। उनपर कर्मचारी अत्याचार करने लगे। वे फरोहाके पास पहुँचे।

फरोहाने सुनते ही कहा—'तुम सब आलसी हो गये हो।'

'दोनों काम एक साथ—'

'ओह! यहोवाको बलि प्रदानके लिए छुट्टी चाहते हो? जाओ—काम करो, तुम्हें खर-पात नहीं मिलेगा।'

राजाज्ञा हुई—'यदि ईंट कम हो जाय तो इसराइलियोंके शिशु

मारकर दीवालमें लगाकर कमीकी पूर्त्ति की जाय।'

मेम्फिसके भग्नावशेषोंमें लड़कोंकी लाशें ढोलक जैसे पात्रमें चुनी हुई मिली हैं।

इसराइली मूसा और हारूनके पास गये। बातें सुनायीं। बोले—'हमारे दुर्भाग्यके दिन आ गये हैं। कर्मचारियोंके हाथोंमें अत्याचार करनेके लिए हथियार दे दिया गया है।'

छड़ी सर्प बनी

फरोहाके सम्मुख मूसा और हारून गये। पुरानी बातें दुहराईं। फरोहाने पूछा—'प्रमाण?'

मूसाने छड़ी जमीनपर डाल दी। वह सर्प बन गयी।

फरोहाने अपने ऐन्द्रजालिकोंको बुलवाया। उन्होंने भी सर्प बनाया। मूसाका सर्प ऐन्द्रजालिकोंके सर्पोंको खा गया। फरोहा चकित हुआ। उसका हृदय कठोर हो गया। उसने यहूदियोंको जानेकी आज्ञा न दी।

नील नदी रक्तमय हुई

दूसरे दिन मूसा और हारून फरोहाके पास पहुँचे।' वह नील तटपर टहल रहा था। जानेके लिए निवेदन किया।

अपने ईश्वरके साक्ष्यस्वरूप नीलकी धारापर छड़ी पटकी। जल रक्त बन गया। मछलियाँ मर गयीं। दुर्गन्धसे स्थान भर गया। पानी पीने योग्य न रहा।

मूसाने अपनी छड़ी जलाशयोंपर घुमायी। मिस्रके सभी जलाशय रक्तमय हो गये। काष्ठ और पत्थरके पात्रोंमें जल गृहस्थीके लिए रखा जाता था। वे भी रक्तमय हो गये। फिर भी फरोहाका हृदय द्रवित न हुआ।

मेढक आक्रमण

सात दिन बीत गये। मूसा और हारून पुनः फरोहाके पास पहुँचे। पुनर्निवेदन किया, वह न माना। जलाशयोंपर मूसाने हाथ घुमाया।

सब जलाशय मेढकमय हो गये। फरोहा परेशान हुआ, बोला—

'मिस्र मेढकहीन करो, तुम्हें जाने दूँगा।'

'कल मेढक हीन होगा।'

दूसरे दिन आँगन, खेत सभी स्थानोंपर मेढक मर गये। लोगोंने बटोरकर उनका ढेर लगा दिया। फरोहाका हृदय पुनः कठोर हो उठा। उसने जानेकी आज्ञा न दी। निस्सन्देह फरोहाका मनोबल सर्वप्रथम विचलित हुआ।

कुटकियोंका आक्रमण

यहोवाने आज्ञा दी। हारूनने छड़ी धूलपर पटकी। छड़ी धूलपर पटकते ही चारों ओरसे कुटकियोंका दल दौड़ा। फरोहाके राजकर्मचारियोंने कहा—'यहोवाका कार्य है।' फरोहाका हृदय सरल न हुआ। फरोहाके पश्चात् राजकर्मचारियोंपर प्रभाव पड़ा। उन्होंने मन ही मन यहोवाकी शक्तिका विश्वास किया।

जनतामें अन्तर

फरोहा जलाशयपर टहल रहा था। मूसा और हारून दोनों उसके पास गये। निवेदन किया। वह न माना। मक्खियाँ उठीं। मिस्रके सब स्थान मक्खियोंसे भर गये। परन्तु इसराइलियोंके घरमें मक्खियों ने प्रवेश न किया। गोशेन प्रदेशमें प्रवेशतक न किया। इसराइलियोंमें विश्वास उत्पन्न हुआ। यहोवा उनके साथ हैं। सारा मिस्र चकित हुआ। मिस्री देवता असमर्थ सिद्ध हुए। फरोहाने मूसा और हारूनको बुलाकर कहा—

'मिस्रमें ही अपने परमेश्वरको बलि दो।'

'यदि हम यहाँ बलि करेंगे तो यहोवा हमें पत्थरवाह कर देगा।'

'बहुत दूर न जाकर जंगलमें बलिदान करो।'

'मक्खियाँ गायब हुईं। किंतु फरोहाने इसराइलोंको न जाने दिया।

प्राणियोंमें अन्तर

फरोहासे पुनः मूसाने निवेदन किया। वह न माना। यहोवा

कुपित हुआ। मिस्रके पशु मरने लगे। इसराइलोंका एक भी पशु न मरा। पशुओंकी मृत्युमें भी यहोवाका पक्षपात देखकर मिस्री चकित हुए। फरोहाने यह अन्तर सुना। फिर भी उन्हें जाने न दिया।

व्याधियोंमें अन्तर

फरोहाके पास वे पुनः गये। उसका दिल न हिला। मुट्ठीभर भस्म मूसाने आकाशमें उड़ा दी। सबके शरीरपर फफोले पड़ गये। फोड़े निकल आये परन्तु इसराइल निर्दोष रहे। मिस्रके ऐन्द्रजालिकोंको भी फोड़े निकले। मिस्रके लोगोंने देखा कि मूसा उनसे अधिक शक्तिशाली है। मिस्री लोगोंका नैतिक मनोबल विचलित हो गया। वे अपनेको मूसाके सम्मुख असमर्थ समझने लगे।

विश्वास

फरोहाने उनकी बात न मानी। मूसाने घोषणा की कि यहोवा ओला बरसायेगा। जो लोग अपने पशुओं तथा पक्षियोंको छायामें बाँध लेंगे वे बचेंगे। मूसाने देखना चाहा कि कितने उसपर विश्वास करते हैं।

मूसाने छड़ी आकाशकी ओर उठायी, मेघ गरजा। ओले पड़ने लगे। ओलोंके साथ अग्नि भी मिली थी। तरु, पल्लव तथा खेत नष्ट हो गये। मिस्रियोंमें जिन लोगोंने मूसापर विश्वास कर अपने जीव-जन्तुओंको छायामें रख लिया था वे बच गये। बाकी नष्ट हो गये। इसराइलियोंका कुछ न बिगड़ा।

फरोहा घबड़ाया। उन्हें बुलाया। उपल वृष्टि रोकनेके लिए कहा। नगरसे निकलकर आकाशकी ओर मूसाने हाथ उठाया। वृष्टि बन्द हुई। फिर भी फरोहाने उन्हें जानेकी आज्ञा न दी। मिस्री जनता दो भागोंमें विभक्त हो गयी, मूसाकी बातपर विश्वास करने और न करनेवाले। मिस्रकी संघटित संघ-शक्तिको मूसाने इस प्रकार एक ठेस दी।

आर्थिक नाश

फरोहाके पास वे गये। फरोहा न माना। पुरवा हवा बही। टिड्डियोंका दल मिस्रपर छा गया। उपल वृष्टिसे जो कुछ शेष हरा-भरा

रह गया था वह भी नष्ट हो गया। इसराइलोंके खेत बचे रहे।

फरोहाने उन्हें बुलाया। टिड्डियोंको भगानेके लिए कहा। पछुवा हवा बही। टिड्डियाँ लाल सागरमें जाकर डूब गयीं। फिर भी फरोहाका हृदय कठोर ही रहा। मिस्रमें कुछ भी फसल न बच सकी। अकालका दृश्य सामने आ गया। जनता त्रस्त हो उठी।

कर्मचारियोंने हथियार डाले

फरोहाके कर्मचारी फरोहाके पास गये। उससे निवेदन किया कि मिस्रकी रक्षाके लिए इसराइलोंको जाने दें। फरोहाने मूसा और हारून-को बुलाया। मूसाने कहा—

'हम गाय, बैल, ढोर, पशु, पक्षी, स्त्री, पुरुष, बच्चे अपनी समस्त सम्पत्तिके साथ जायँगे।'

'केवल पुरुष जा सकते हैं'—फरोहाने कठोरतापूर्वक कहा।

घोर अन्धकार

मूसाके कारण मिस्रके लोग दहल गये थे। उन्हें कोई मार्ग नहीं सूझता था। मिस्रपर तीन दिनतक घोर अन्धकार छाया रहा। फरोहाने मूसाको बुलाकर कहा—

'अपने बालकोंको भी ले जाओ, परन्तु पशु यहीं रहेंगे।'

'हम होम एवं शांति-बलि कैसे देंगे ? पशु बिना जाना व्यर्थ होगा।'

फरोहाका हृदय कठोर हो गया। उसने उन्हें न जाने दिया।

हत्या

यहोवाने मूसासे कहा—'मैं अर्धरात्रिमें मिस्रमें निकलूँगा। फरोहासे लेकर साधारण पिसनिहारिन तथा पशुओंतककी ज्येष्ठ सन्तान-की हत्या करूँगा। इसराइलके किसी प्राणीका नुकसान न होगा। मिस्रमें जब मृत्यु अपना ताण्डव करेगी उस समय तुम्हारे यहाँ उत्सव होगा।'

पासका पर्व

वह महीना वर्षाका प्रथम महीना था। दसवाँ दिन था। पितृवंश

एवं कुटुम्बके अनुसार प्रथम गर्भसे उत्पन्न एक-एक मेष अलग किया गया। वह निर्दोष तथा हृष्ट-पुष्ट था। प्रथम मासके चौदहवें दिन गोधूलि कालमें इसराइली एकत्र हुए। मेष-बलि सम्पन्न हुई। बलिरक्त द्वारके ऊपर तथा दोनों ओर लगाया गया। बलि-पशुकी कोई हड्डी तोड़ी न गयी। उसे भूना गया। अखमीरी रोटी और तिक्त साग तैयार किया गया।

प्रत्येक व्यक्तिने कमर कस ली। जूता पहना। हाथमें लाठी ली। रोटी सागके साथ खाना आरम्भ किया। विजातीय तथा जिनका खतना नहीं हुआ था वे इसमें शरीक नहीं किये गये।

जिन मकानोंपर रक्तका चिह्न नहीं था वहाँकी ज्येष्ठ सन्तानकी मृत्यु हो गयी। फरोहाका लड़का भी मर गया। इसराइली अपना पर्व मना रहे थे।

इसराइली लोगोंने अपने पड़ोसी मिस्रीके गहने उधार माँग लिये थे। उधारमें सुन्दर वस्त्र तथा सुवर्ण एवं रजतके आभूषण थे। कहा गया था कि उत्सव पश्चात् वे वापस कर दिये जायँगे। यह प्रथा अपने यहाँ भी है। विवाहादि उत्सवपर लोग पड़ोसीके गहने तथा सामानादि माँग लेते हैं। किसीको देनेमें संकोच नहीं होता। उत्साहसे ही अधिक लोग देते हैं।

रात्रिकालमें ही फरोहाने मूसा और हारूनको बुलाया। बोला—

'तुरत यहाँसे निकल जाओ। अपना मुख फिर मुझे न दिखाना। मिलनेपर मार डाले जाओगे।'

'आपने ठीक कहा—हम आपका मुख स्वयं नहीं देखेंगे'—मूसाने कहा।

रक्तहीन क्रान्ति

मूसाकी विजय हुई। फरोहा पराजित हुआ। इसराइलियोंने विश्वकी सबसे बड़ी और प्रथम रक्तहीन क्रान्तिमें सफलता पायी। उनकी दासता समाप्त हुई। वे स्वतन्त्र देशमें जानेके लिए आजाद थे। मूसाकी

इस महती क्रान्तिके पश्चात् विश्वने इस प्रकारकी क्रान्ति भारतमें देखी। महात्माजीके महान् नेतृत्वमें विश्वके सबसे बड़े साम्राज्यने स्वयं भारतीयोंको दासतासे मुक्त कर उन्हें स्वतन्त्रता दी। विश्वकी इन दोनों महान् आत्माओंकी कार्यप्रणालीमें बहुत कुछ साम्य मिलता है। दोनोंने अपनी जातिको दासतासे उन्मुक्त किया। दोनोंने ईश्वरपर विश्वास किया। दोनोंने स्वीकार किया कि भगवान् उनके साथ हैं। दोनोंने शत्रुके विरुद्ध हथियार नहीं उठाया। दोनोंने जनताको तैयार किया। दोनोंको जनताका अपूर्व समर्थन प्राप्त था।

अप्रतिम मानव कारवाँ

फरोहा मैनेप्लाहके राज्यकालके पाँचवें वर्षमें शायद आजसे बत्तीस सौ वर्ष पूर्व इसराइली दासता बन्धनसे छूटे। मूसा और हारून लौटे। खुशखबरी सुनायी। गूथा हुआ आटा महिलाओंने बाँधकर कन्धोंपर रख लिया। वे रामसेसे चल पड़े। उनके पास मिस्रियोंके माँगे हुए गहने और वस्त्र भी थे। मिस्री अपने शोकमें पड़े थे। रात्रिकालमें शायद उनमेंसे कोई वापस माँगने आता भी नहीं। किसीको सम्भवतः मालूम भी न रहा होगा कि इसराइली आज ही रात्रिमें देशत्याग कर देंगे।

उस महान् मानवीय कारवाँमें बालक-बालिकाओं एवं स्त्रियोंके अतिरिक्त छः लाख पुरुष थे। विश्वका यह सबसे बड़ा जनसमूह था जिसने किसी देशका एक साथ, एक समय त्याग किया था। इतना बड़ा जनसमूह एक साथ शरणार्थी नहीं हुआ था। उनकी कुल संख्या लगभग पैंतीस लाख रही होगी। उनके साथ उनकी समस्त सम्पत्ति, पशु, पक्षी आदि सब चले थे।

भारत-विभाजनके समय लगभग एक करोड़ व्यक्ति एक देशसे दूसरे देशमें गये। उनके जानेका कारण उनकी स्वतन्त्र इच्छा नहीं थी। वे एक जातिके भयके कारण दूसरे देशमें जानेके लिए बाध्य हुए थे। मिस्र और भारतमें सबसे बड़ा अन्तर यह है कि मिस्रमें इसराइली दास थे। भारतमें एक जाति दूसरेकी गुलाम न थी। दोनोंने स्वतन्त्रता

पायी थी। गुलामसे आजाद हुए थे। उनका देशत्याग वर्षोंके अन्दर हुआ था। वे एक साथ नहीं चले थे। क्रमसे आते गये। उनका प्रबन्ध होता गया।

पैंतीस लाख जनसमूह एक साथ चला। उनके खाने, पीने, रहनेकी व्यवस्था कैसे की गयी होगी, विचार करनेपर किसी भी व्यावहारिक व्यक्तिका दिमाग चक्कर खाने लगेगा। उन दिनों रेल न थी। यातायातके साधन सुगम न थे। पैदल चलना था। मूसाका व्यक्तित्व एवं नेतृत्व कितना महान् था, इसी एक घटनासे प्रकट होता है। कारवाँ रामसेसे सुकोत पहुँचा। कुछ लेखकोंने इस निर्गमनका काल ईसासे १४५०से १२५० वर्ष पूर्व रखा है। फरोहा मैरनप्राह कारठोले ईसापूर्व १२२९ में हुआ है अतएव हमने जिस समयका अनुमान किया है वह ठीक है।

लम्बा मार्ग

सुकोतसे कानान प्रदेश दूर नहीं था, यदि फिलस्तीनके मार्गसे इसराइली चलते तो शीघ्र पहुंच जाते। यहोवा अथवा भगवान्‌ने मूसासे स्वयं कहा कि यदि युद्ध करना पड़ा तो इसराइली, संभव है मिस्र लौटकर पुनः दासतामें फंस जायं। लम्बे मार्गका अवलम्बन करो, ताकि तुम्हारे लोग एक जाति बन जायँ।

मूसाने गंभीरतापूर्वक विचार किया। इसराइली मिस्रमें दास थे। उनपर कोई उत्तरदायित्व नहीं था। दिनभर मजदूरी तथा काम करते थे। शामको खाना खाते थे। ४०० वर्षके लम्बे कालकी दासता उनकी जीवनश्री सोख गयी थी। वे क्रीत दासतुल्य थे। उन्होंने कभी युद्ध नहीं किया था। हथियार कैसे पकड़ा जाता है जानते भी न थे। कानान देशमें शक्तिशाली जातियाँ आबाद थीं। वे अपना स्थान छोड़कर उनका स्वागत न करतीं। युद्ध अनिवार्य था। भीड़ साथ लेकर युद्ध नहीं किया जा सकता था। मूसा युद्ध-कौशल जानता था। मिस्रकी ओरसे लड़ चुका था। पथेरों और चरवाहोंसे उसे युद्धशील जाति बनाना था। उसे एक जाति एवं एक राष्ट्र बनाना था। जातियाँ एक

दिनमें नहीं बनतीं। उसके लिए दुःख एवं कष्ट अनिवार्य है। मूसाने लंबा मार्ग लिया। उसने एनाममें छावनी डाली।

ज्योतिर्मय स्तम्भ

जनसमूहके सम्मुख दिनमें मेघस्तम्भ चलता था। रात्रिमें वह ज्योतिर्मय हो जाता था। यह स्तंभ दिन एवं रात्रि दोनोंमें पथप्रदर्शन करता था। स्तंभ भगवान्का प्रतीकस्वरूप था। वह उन्हें मार्ग दिखा रहा था। उनके साथ था। जनताका मनोबल अपने ईश्वरको साथ देखकर ऊँचा उठता गया। उसमें कष्टसहनकी भावना जागरित हो गयी।

समुद्र तटपर

वे मिगदोल एवं समुद्रके बीच पहुंचे। हीरोतके सम्मुख पीहामें छावनी डाली। फरोहाका विचार उनके जाते ही पुनः बदल गया। सम्भव है कि जिन नागरिकोंकी सम्पत्ति उधार लेकर नहीं लौटायी गयी थी उनकी विनयपर फरोहाने पीछा करनेकी आज्ञा दी हो। वह स्वयं चला। छः सौ रथोंपर मिस्रके सरदार चले। सेना साथ चली। वे बाल-सिमोन समुद्रके निकट पहुंच गये।

समुद्रने मार्ग दिया

'रावण रथी, विरथ रघुबीरा'का यहाँ रूप था। फरोहाके साथ रथ था। रथी थे। सैनिक थे। मूसा पैदल था। उसका जनसमुद्र शस्त्र-हीन पैदल था।

फरोहाकी सेना देखते ही इसराइली जनता काँप उठी। कुछ लोग घबरा गये। कुछ पछताने लगे। कुछ निश्चय कर बैठे कि फरोहा उन्हें लौटा ले जाकर जुल्म करेगा। कुछने समझ लिया कि मृत्युकी विभीषिका समीप है। किंतु मेघस्तम्भ इसराइली और मिस्रियोंके बीच आ गया।

मूसा अविचल था। उसे विश्वास था कि उसका परमेश्वर उसके साथ है। वह उसकी रक्षा करेगा। उसने अपनी छड़ी समुद्रकी

ओर उठायी।

पुरवा हवा चली। पानी हटा। समुद्रने मार्ग दे दिया। समुद्रके बीच प्रशस्त मार्ग हो गया। इसराइली उस मार्गसे पार हो गये।

इथाममें बाल जेफेनकी मूर्ति थी। फरोहाने उसे नमस्कार किया। आशीर्वाद मांगा 'बाल जेफेन विजय दे।'

मिस्री सेना समुद्री मार्गसे चली। इसराइलियोंका पीछा किया। मूसाने दूसरे तटसे हाथ उठाया। पछुवा हवा बही। फटा समुद्र मिल गया। फरोहाकी समस्त सेना समुद्रके बीचमें थी। लहरोंने उन्हें अपनी गोदमें ले लिया।

फरोहा भी समुद्रमें डूबकर मर गया। यह किंवदन्ती गलत प्रमाणित हुई। उसकी ममी अर्थात् सुरक्षित लाश थीवसके समीप पिरामिडसे प्राप्त हुई है। उसकी लाशका परीक्षण सन् १९०७ में किया गया है, यह जाननेके लिए कि उसके हृदयके कठोर होनेका कारण क्या था, बाइबिलकी गाथा कहाँतक सत्य है। कहा जाता है कि नमककी साधारण तह उसके शरीरमें मिली है, जो शायद समुद्रमें डूबने या फँसनेके कारण भी हो सकता है। उसके हृदयपर धब्बे भी पाये गये थे जिसका अर्थ लगाया गया कि उसका हृदय इसी कारण कठोर हो गया था अथवा कठोरताके कारण ही धब्बे पड़ गये हों। इस विषयपर बिना पूरे अन्वेषणके विचार स्थिर करना कठिन है। यह सत्य है कि जिस स्थानपर समुद्रका फटना कहा जाता है, वहाँ पुरवा हवा बहनेपर पानी कम होता है। पछुवा हवाके समय जल बढ़ता है।

विजय-गीत

इसराइलोंपर अत्याचार करनेवालों, उन्हें दास बनानेवालोंकी लोथें समुद्रपर तैर रही थीं। उनके शिशुओंको जलसमाधि देनेवाले स्वयं जलसमाधि ले चुके थे। इसराइलकी यह विजय थी। उनके परमेश्वरका गौरव था। उमंगमें वे गा उठे—

'यहोवा मेरी शक्ति है। मेरा भजन है। उद्धारक है। मेरा ईश्वर

है ।·हम उसकी स्तुति करते हैं । वह हमारे पूर्वजोंका परमेश्वर है । वह योद्धा है । उसका नाम यहोवा है ।'

'फरोहाका रथ, फरोहाकी सेना समुद्रमें लीन हो गयी । तुम्हारे श्वासकी वायुने उन्हें अपनी गोदमें ले लिया । महाजलराशिमें शीशेके समान शत्रु डूब गये । देवताओंमें यहोवाके तुल्य कौन है ।'

'यहोवा ! तू पवित्र है ! प्रतापी है । स्तुतिकारोंके लिए अभयप्रद है । तू आश्चर्य है । तू कर्ता है ।'

मरियमने नारियोंके साथ डफ उठा ली । उमंगध्वनिमें ठेका देने लगी—

'यहोवाका गाना गाओ । वह महाप्रतापी है । अश्वारोहियोंको अश्वसहित समुद्रकी गोदमें डाल दिया ।'

बाइबिलका यह प्रथम भजन-गीत है । यहूदी संगीतकी यह सर्व श्रेष्ठ लय है ।

मनुष्योंके डूबनेपर इसराइलने आनन्द मनाया । गाना गाया । यहोवाको बात पसन्द न आयी । उसने कहा—'तुम्हारा भविष्य दुःखमय लयसे लिखा जायगा ।' कहावत है कि यहूदियोंके संगीतके दुःख किंवा शोकमय होनेका यही कारण है ।

यात्रा

लालसागर तटसे मूसा इसराइलियोंको सूरके मरुमय जंगलमें लाया । वहां तीन दिन जल न मिला । मारा स्थानपर खारा पानी प्राप्त हुआ । उसमें एक वनस्पति मूसाने डाली । पानी मीठा हो गया । सबने खूब पिया ।

वे एलीम पहुंचे । वहाँ बारह जलस्रोत तथा सत्तर खजूरके वृक्ष थे । मिस्रसे निकलनेके दूसरे मासके पन्द्रहवें दिन अर्थात् डेढ़ मास पश्चात् सिनाई अथात् सिनेके जंगलमें पहुंचे । सिने पर्वतके समीप छावनी पड़ी ।

इसराइल यद्यपि दास थे किन्तु उन्हें मिस्रसे भोजन मिल जाता

था। मिस्रके पश्चात् बराबर मरु जंगलमें वे चल रहे थे। लाखों व्यक्तियों, पशुओं आदिके लिए भोजन-व्यवस्था करना साधारण बात न थी। जनरव भोजन तथा मांसके लिए उठने लगा।

गाथा है कि लोग इतने क्रुद्ध हुए थे कि मूसापर आक्रमण कर दिया। उनके मस्तकसे रक्तधारा बहने लगी थी। मरियम तथा हारून उन्हें उठाकर खेमेमें ले गये।

मन्ना

यहोवाकी ज्योति मेघमालामें दृष्टिगोचर हुई। मूसाने ध्वनि सुनी। भगवान्‌ने प्रातःकाल रोटी तथा सायंकाल मांस देनेका वचन दिया। सायंकाल बटेरोंका झुण्ड आता था। इसराइल उन्हें खूब पकड़ते थे। प्रातःकाल ओस पड़ती थी। सूखती थी। उसे एकत्र किया जाता था। धूप अधिक होनेपर गल जाती थी। उसे मन्ना कहते थे। वह छोटे छिलके अर्थात् धनियाके रूपमें गिरता था। श्वेत होता था। स्वाद उसका पूआ जैसा होता था।

जीवनमें साम्य

आदेश जारी किया गया कि प्रति व्यक्ति पीछे एक अमेर अर्थात् नदुआ मन्ना ले लें। सब लोग एक प्रकारका भोजन करने लगे। जीवनमें साम्य लानेका यह पहला चरण मूसाने उठाया था। छठे दिन दो दिनके लिए एकत्र किया जाता था। सातवां दिन ईश्वरीय विश्रामका दिन था। मन्ना न गिरता था। चालीस वर्षतक एक रूप इसराइल वही भोजन करते रहे। गरीब-अमीरका सब भेद मिट गया। आधुनिक शब्दोंमें वर्गहीन समाज बन गया था।

चट्टानसे जल

सिनेसे चलकर रेफी दीममें छावनी पड़ी। जल अप्राप्य था। विकट समस्या थी। वादविवाद होने लगा। भगवान्‌की परीक्षाकी बात उठी।

यहोवाने मूसासे कहा—'वृद्धोंको एकत्र करो। उन्हें साथ लेकर होरेब पर्वतके समीप आओ। मैं वहाँ होरेबकी एक शिलापर खड़ा

रहूँगा। जिस छड़ीसे तुमने नील नदीके जलको मारा था उसी छड़ीसे चट्टानपर मारना। यथेष्ठ जल निकलेगा।

ईश्वराज्ञानुसार मूसाने कार्य किया। जल निकला। मूसाने उस स्थानका नाम मस्सा अर्थात् परीक्षा और मरीवा अर्थात् वाद-विवाद रखा।

अमेलेकपर विजय

याकूबके बड़े पुत्र एसावके वंशज अमेलेक हुए। वे रेफीदमके समीप रहते थे। मूसाको दो संघर्ष करने पड़े। पहला मिस्रियोंसे, जो उन्हें मिस्रसे बाहर नहीं आने देना चाहते थे। दूसरा अमेलेकसे, जो उन्हें अपने देशमें प्रवेश नहीं करने देना चाहते थे।

मूसाने यहोसूको युद्धनेता बनाया। वह युद्ध करने गया। मूसा पर्वतपर चढ़ गया। मूसाका हाथ जबतक उठा रहता था तबतक इसराइली प्रबल रहते थे। हाथ गिरते ही अमेलेकी छोप रखते थे। मूसा थक गये। उन्हें पत्थरपर बैठाया गया। हारून और हूर उसके दोनों हाथ दोनों ओरसे ऊँचा उठाये रहे। सूर्यास्ततक मूसाका हाथ ऊँचा उठा रहा। मैदान इसराइलियोंके हाथों रहा।

मूसाने भगवान्के लिए एक वेदी बनवायी। उस वेदीका नाम यहो वान्निसी पड़ा।

श्वशुरका आगमन

येत्रो अपनी कन्या, मूसाकी पत्नी सिप्पोराह तथा पुत्र गर्शोम तथा एलीजारको लेकर आया। मूसाने दण्डवत किया। चुम्बन किया। कुशल प्रश्नोपरान्त खेमेमें गया। येत्रोने स्वीकार किया कि यहोवा बली है। उसने होम तथा शान्ति-बलि भगवान्को अर्पित की। वृद्धोंके साथ भोजन किया।

न्याय-प्रक्रिया

लोगोंके झगड़ोंका फैसला मूसा स्वयं करने बैठता था। इस कार्यमें उसे प्रातःसे सायंकाल हो जाता था। येत्रोने उसे सुझाव दिया। हजार,

सौ, पचास तथा दस मनुष्योंका एक-एक प्रधान नियुक्त करो। वे न्याय किया करें। जटिल तथा महत्त्वपूर्ण विवादोंका फैसला स्वयं किया करो। मूसाने सुझाव स्वीकार कर कार्यान्वित किया।

सिने सिनाई या होरेव

सिनाई मूसाकी कर्मभूमि है। ग्रीक जगत्‌में ओलम्पियाका जो स्थान था हिब्रू जगत्‌में वही स्थान सिनेको प्राप्त है। मिस्रसे प्रस्थान करनेके तीन मास पश्चात् मूसाने सिनाई पर्वतके सम्मुख छावनी डाली। यहींसे इसराइलियोंका आध्यात्मिक इतिहास आरम्भ होता है।

मूसा पर्वतपर गया। यहोवाकी ध्वनि सुन पड़ी—'घने मेघोंमें मैं तुम्हारे पास आता हूँ। तुमसे बातें करूँ तो और लोग सुनें। लोग आज और कल अपना वस्त्र धोकर साफ कर लें। तीन दिनतक स्त्री-प्रसंग न करें। तीसरे दिन मैं इसी पर्वतपर उतरूँगा। पर्वतके चारों ओर एक सीमा बाँध देना। लोग सीमासे आगे न बढ़ें। पर्वतपर चढ़नेवाला, स्पर्श करनेवाला, पशु, प्राणी, मनुष्य कोई भी हो, पत्थरवाह या बाणों-से छेद दिया जायगा।'

ईश्वर-आगमन

तीसरे दिन प्रातःकाल हो मेघ गरजने लगा। बिजली चमकने लगी। पर्वतपर काली घटा छा गयी। तूर्यकी गम्भीर ध्वनि जैसी ध्वनि होने लगी। छावनीके लोग कम्पित हो उठे।

मूसा सबको पर्वतके समीप ले गया। वे खड़े हो गये। यहोवा अग्नि द्वारा पर्वतपर उतरा। पर्वत व्योममय हो गया। काँप उठा। यहोवाने शिखरसे मूसाको बुलाया। आदेश दिया—'घोषणा करो। पर्वतपर कोई आनेका प्रयास न करे। हारूनके साथ नीचे घोषित कर लौट आओ।

मूसाने आज्ञा पालन किया।

दस आज्ञाएँ

यहोवाकी पवित्र वाणी मुखरित हुई—

'मैं देवता हूँ। तुम्हारा परमेश्वर हूँ। तुम्हें दासत्वसे मुक्त कर तुम्हें मिस्रसे यहाँ लाया हूँ। मेरे अतिरिक्त तुम्हारा और कोई ईश्वर नहीं है।'

'आकाश, जल, पृथ्वीमें जो हैं उनकी प्रतिमा न बनाना। उन्हें नमस्कार न करना। मैं तुम्हारा ईश्वर ईर्षालु हूँ। मुझसे जो द्वेष करता है उसके पुत्र, पौत्र, प्रपौत्र एवं पूर्वजों तकको दण्ड देता हूँ। मेरी करुणा मेरे अनुगामियों एवं भक्तोंपर होती है।'

'ईश्वरका नाम व्यर्थ मत लेना। भगवान् उन्हें निर्दोष न मानेगा जो वृथा उसका नाम लेते हैं।'

'सातवाँ दिन विश्रामका है। वह पवित्र है। वह दिन मेरा है। छः दिनोंमें सृष्टिरचना हुई थी। सातवें दिन विश्राम किया गया था। उस विश्रामके दिन आशीर्वाद दिया था। वह दिन पवित्र ठहराया गया है।'

'माता-पिताका आदर करो ताकि उस देशमें अधिक दिनतक रहो जिसे भगवान् तुम्हें देता है।'

'हत्या न करना।'

'व्यभिचार न करना।'

'चोरी न करना।'

'झूठी गवाही न देना।'

'पड़ोसीके घर, दास, दासी, स्त्री, बैल, गदहा आदिका लोभ न करना।'

'मूसा! अपनी जातिसे मेरी बात कह—ईश्वरके साथ किसी दूसरेको सम्मिलित न करो। चाँदी-सोनेके देवताओंको न मानना। मेरे लिए मिट्टीकी वेदी बनाना। भेड़, बकरी, गाय, बैलकी पशुबलि करना। होम करना। वेदीपर शान्ति बलि करना। यदि पत्थरोंकी वेदी बनानेकी इच्छा हो तो गढ़े पत्थरोंकी मत बनाना।'

दण्ड संहिता

यहोवाने मूसासे दण्ड संहिता कही—

'मनुष्यकी हत्याका दण्ड हत्यारेकी हत्या है।'

'माता-पितापर हाथ उठानेवालेका दण्ड मृत्यु है।'

'मानव-तस्करताका दण्ड मृत्यु है।'

'माता-पिताको शाप देनेका दण्ड मृत्यु है।'

'विवाहितके साथ परस्त्री पुरुष संसर्गका दण्ड मृत्यु है।'

'कुमारीके साथ व्यभिचारका दण्ड मृत्यु है।'

'प्राणके बदले प्राण, आँखके बदले आँख, दाँतके बदले दाँत, पैरके बदले पैर, चोटके बदले चोट, मारके बदले मार और अग्निके बदले अग्निका दण्ड दिया जाय।'

'यदि बैल किसीको सींगसे मारे और मार खाया व्यक्ति मर जाय तो बैल पत्थरवाह किया जाय।'

'यदि बैल किसीके दास किंवा दासीको सींगसे मारे तो बैलका स्वामी मजलूमके स्वामीको ३० शेकेल (रौप्य मुद्रा) दे। बैल पत्थर-वाह कर दिया जाय।'

'यदि किसीका बैल किसीके बैलको घायल करे और वह मर जाय तो जीवित बैल बेचकर आधा मूल्य और बैलका शरीर बाँट लिया जाय।'

'यदि चोर सेंधमें पकड़ा जाकर मारसे मर जाय तो कोई दोष नहीं लगेगा। किन्तु सूर्योदय-कालके पश्चात् मारनेवाला दोषी होगा।'

'यदि मँगनी की गयी कन्यासे कोई ब्याहके पूर्व संसर्ग करे तो उसकी कीमत अदा कर कुकर्मी उससे ब्याह कर ले। कन्याका पिता विवाह न करे तो कुकर्मी कन्याकी कीमत अदा करे।'

'डाइनकी हत्या की जाय।'

'पशुगामी व्यक्तिकी हत्या की जाय।'

'यहोवाके अतिरिक्त अन्यको बलि अर्पण करनेवालेका नाश किया जाय।'

'दरिद्रसे सूद न लिया जाय।'

'सम्बन्धी या बान्धवका वस्त्र यदि गिरो रखा हो तो सन्ध्याके पहले उसे लौटा दिया जाय ताकि वह बिना वस्त्र न सो सके।'

'पशुओंकी ज्येष्ठ सन्तति सात दिनतक माताके पास रहे। आठवें दिन उसे यहोवाको अर्पित किया जाय।'

छः वर्ष खेत जोतकर सातवें वर्ष उसे खाली रखा जाय। सातवें वर्ष बारी और बगीचेका फल नहीं लेना चाहिये। वे सब गरीबोंके लिए हैं।'

'कुष्ठ होनेपर मकान तोड़ देना चाहिये।'

'यदि कोई अपने दासकी एक आंखको क्षति पहुंचाता है तो उस दासको मुक्त कर देना चाहिये।'

'बलि-पशुका रक्त खमीरी रोटीके साथ नहीं चढ़ाना चाहिये। बलि पशुका मांस दूसरे दिनके लिए नहीं रखना चाहिये।'

'वर्षमें तीन पर्व—मिस्रसे निकलनेकी स्मृतिमें, दूसरा—कटनीके समय और तीसरा—वर्षके अन्तमें मानना चाहिये।'

'बकरीका बच्चा उसकी माताके दूधमें न पकाया जाय।'

'भूमिकी पहली उपजका पहला भाग यहोवाका है।'

यहोवाके वचनोंको मूसाने लिख लिया।

मूसा और उनकी संहिता

मूसा पाश्चात्य देशोंमें प्राचीनतम संहिताकार हुए हैं। उनके पूर्व बेबीलोनमें स्फुट संहिताएं थीं। परन्तु उन्हें सुसंस्कृत एवं वर्गीकरण करनेका श्रेय मूसाको ही प्राप्त है। मूसाने दस ईश्वरीय आदेश, दो सौ सैंतालिस निर्देश तथा तीन सौ पैंसठ निषेधात्मक आदेश दिये हैं। उनकी रचना चालीस दिनोंमें सिने पर्वतपर हुई थी। विधि भगवान्के नामसे दी गयी थी। बाइबिल और कुरानमें यहाँ अन्तर है। यहोवाने स्वयं अपने मुखसे नियमों एवं विधियोंका उच्चारण किया था। मूसाने उन्हें लिपिबद्ध किया। कुरान मुहम्मद साहबके इलहामका परिणाम है। उन्होंने खुदाका पैगाम दिया था। मूसाने अपनेको कभी पैगम्बर या

नबी नहीं कहा। उन्होंने सर्वत्र बाइबिलमें यही कहा है कि भगवान् जैसी आज्ञा देता है वैसा कार्य करता हूँ। यह आत्मानुभूति भी हो सकती है। यह आत्मानुभूति उसी प्रकारकी है जैसी महात्मा गांधीको समय-समयपर विशेष समस्याओंके हल करनेके समय हो जाया करती थी।

मूसाकी संहितामें स्थानीय तथा राष्ट्रीय दोनों प्रकारकी व्यवहार-विधियाँ हैं। वह कृषिप्रधान प्रदेशका नकशा जैसे सामने रखकर बनायी गयी हैं। उसमें बेबीलोन, हित्ती, हम्मुरबी एवं असीरियोंके लौकिक आचारों एवं नियमोंकी छाप है। वह विश्व इतिहासकी एक महान् गौरवपूर्ण विधि है। उसमें बेबीलोनकी नैतिक परम्परा है। मिस्रकी विचक्षणता है। आरमीनियन पूर्वजोंके आचार हैं। वे छः सौ तेरह विधियाँ पाश्चात्य जगत्की वर्त्तमान संहिता एवं विधियोंकी आधारशिला हैं। भारतीय मनुकी स्मृति भारततक ही प्रायः सीमित रह गयी, परन्तु यहूदी, मुसलिम एवं ईसाई शक्तिकी वृद्धिके साथ-साथ बाइबिल चारों ओर फैली। उसके सिद्धान्त फैले। कहना न होगा कि बहुल मानव जगत् उन्हींसे आज प्रभावित है। उसमें याजकीय, राजकीय, सामाजिक, आचारीय आदि व्यवहारोपयोगी सभी बातोंका समावेश है। उनपर विचार करते समय हमें सोचना चाहिये कि उनका उदय उस समय हुआ था जब तीन हजार वर्ष पूर्वका मानव-जगत् आज जैसा विकसित नहीं था। वह जीवन पूर्ण संस्कृत नहीं था। वह काल मनुष्यके विकासका प्रारम्भिक काल था। वह वनजन्य सभ्यतासे नगरजन्य सभ्यतामें प्रवेश कर रहा था। अतएव मूसाकी संहिता आधी अर्धसंस्कृत है। आधी अति भव्य है। उसमें मानवकी क्षमता, उसके व्यक्तिगत आचार, व्यक्तिगत गुण एवं व्यक्तिगत नैतिकता पर बहुत जोर दिया गया है। मानवके लिए उदात्त भावनाएँ तथा वृद्धोंके प्रति आदरका भाव खूब मिलता है। पुरुष-स्त्रीके सम्बन्धपर बहुत जोर दिया गया है। मालूम होता है कि उन दिनों यौनसम्बन्ध

बहुत ढीला था। लोगोंकी नैतिकताका ह्रास हो गया था। मूसाका ज्ञानभण्डार कितना विशाल था। खेतमें गिरी बालोंसे लेकर राज्यके नियमोंतकका उन्होंने ध्यान रखा है।

बलि

दूसरे दिन प्रातःकाल मूसा पर्वतसे उतरा। यहोवाके लिए वेदी बनायी। वेदीके चारों ओर इसराइलके बारह गोत्रोंके प्रतीक स्वरूप बारह स्तम्भ खड़े किये।

वृषभमेध

वेदी बन जानेपर वृषभ बलि किया गया। बलि-पशुका मांस हवि हुआ। मांस-हविकी यज्ञमें आहुति दी गयी। बलि-पशुका आधा रक्त रखा गया। आधा वेदीपर मूसाने छिड़का।

एकत्र जनसमूहको ईश्वर-वचन पढ़कर सुनाया। लोगोंने स्वीकार किया। वचनबद्ध हुए। शेष रक्त लोगोंपर छिड़कते हुए मूसाने कहा—'यह तुम्हारे उस वचनका रक्त है जो तुम लोगोंने आज दिया है।'

मूसा पर्वतपर सत्तर वृद्धोंको लेकर गया। परमेश्वरका दर्शन किया। भगवान्‌के चरणोंके नीचे नीलमणि आकाशतुल्य एक चबूतरा था।

भगवान्‌के साथ चालीस दिन

यहोस्‌के साथ मूसा पर्वतपर चढ़ा। इसराइलोंके बीच हारून तथा हूरको छोड़ता गया।

छः दिनतक पर्वत मेघाच्छन्न रहा। सातवें दिन भगवान्‌ने मेघोंके बीचसे मूसाको आवाज दी। पर्वतके नीचेसे महान जनसमूहने प्रचण्ड अग्नि तेजस्वरूप शिखरपर यहोवाका तेज देखा। मूसा मेघोंके बीच होता शिखरपर चढ़ने लगा।

नन्दी पूजा

चालिस दिन हो गये। मूसाका कुछ पता न लगा। शंका बढ़ने लगीं। नेताका लोप कभी-कभी जनतामें अराजकता उत्पन्न कर देता

है। जनसमूहने हारूनको घेर लिया। उन्होंने समझा कि मूसा शिखर-पर मर गया। वे एक देवता बनानेपर जोर देने लगे। पूछने लगे कि किस देवताकी पूजा की जाय। हारूनने देखा कि लोगोंमें विद्रोहकी भावना फैल रही है। उसने अन्तमें कहा कि सब लोग अपनी सुवर्ण बलियाँ दे जायं।

एकत्रित सुवर्ण राशिसे एक नन्दी बनाया गया। उसे टाँकियोंसे गढ़ा गया। लोग कह उठे—'यह बाल वृषभ ही हमारा ईश्वर है। यही हमें मिस्रसे बचाकर यहाँ लाया है।'

हारूनने नन्दीके सम्मुख एक वेदी बनायी। घोषणा की कि कल बलि दी जायगी। भोज होगा।

मालूम होता है, वृषभकी पूजा प्राचीनकालमें भारतसे लेकर मिस्र तकमें प्रचलित थी। मिस्रकी कई ममियों तथा कब्रोंके ऊपर वृषभ खुदा मिला है।

भृंगी और नन्दी शिवके गण थे। मिस्रके राजा सूर्यवंशी थे। लिंगपूजाका भी उनके जीवनमें आभास मिलता है। वहाँके अन्वेषणोंसे हालमें ही पता चला है कि वृषभ जीवित अवस्थामें पूजा जाता था। मरनेपर उसे ममी अर्थात् जिस प्रकार मिस्रके राजाओंके शरीरकी सुरक्षा ममी बनाकर की जाती थी, ठीक उसी तरह मरनेपर पूजित वृष ममी बना दिया जाता था। उसका मृत शव राजाओंके शवोंकी तरह सुरक्षित रखा जाता था। यह इस बातको प्रमाणित करता है कि इसराइलने इसी नन्दी किंवा वृषभ पूजाके आधारपर मूसाकी अनुपस्थितिमें नन्दी पूजा आरम्भ कर दी थी। वैदिक एवं पौराणिक साहित्यमें गायका महत्त्व यह बात साबित करता है कि मिस्रवाले वास्तवमें भारतीय धर्मके मूलतः माननेवाले थे। कालान्तरमें अत्यन्त दूर होनेके कारण उनका सम्बन्ध भारतसे टूट गया। मूल उपासना-पद्धति भी कालान्तर में बदलती गयी और स्वतन्त्र मालूम पड़ने लगी। मोहनजोदड़ो, अक्कम और सुमेरमें भी वृषभ उरेहित मुद्राएँ मिली हैं। भारतमें तो गायकी

पूजा होती है। नन्दीकी पूजा अभी भी होती है। इसराइल लोगोंको वृषभका महत्त्व मालूम था। इसके अतिरिक्त और कोई कारण नहीं मालूम होता कि वृषभकी ही मूर्त्ति क्यों बनायी गयी।

मूसाका लौटना

मूसाके हाथोंमें ईश्वरके साक्षीस्वरूप दो शिलाखण्ड थे। भगवान्‌ने विधान लिखकर स्वयं मूसाको दिया था।

मूसाकी दृष्टि नन्दीपर पड़ी। नन्दीके सम्मुख नृत्य हो रहा था। संगीत लहरियाँ हिलोरें ले रही थीं। जनसमूह आनन्दविभोर था।

उसने हाथोंके शिलालेखोंको पटक दिया। वे खण्ड-खण्ड हो गये। उसने नन्दीको अग्निमें डाल दिया। उसे पीसकर चूर्ण बना डाला। उसे पानीमें डाला। उस पानीको सब इसराइलोंको पिला दिया।

नरसंहार

मूसा छावनीके मार्गमें खड़ा हो गया। बोला—'जो मेरे साथ हो, आ जाय।' लेवी गोत्रीय उसके पास आ गये। मूसाने उन्हें तलवार लाने के लिए कहा।

लेवी गोत्रीय लोग सशस्त्र होकर आये। मूसाने आज्ञा दी—'उनका संहार करो जो नन्दी पूजामें सम्मिलित थे।' उस दिन लगभग तीन हजार व्यक्ति तलवारके घाट अपने खेमोंमें उतार दिये गये।

निराकार उपासना

संस्कार विसर्जन कठिन होता है। मूसाने निराकार एकेश्वरवादके सिद्धान्तका प्रतिपादन किया था। साकार उपासना बहुदेव पूजामें परिणत हो जाती है। ईश्वरका आकार लोग अपनी रुचिके अनुसार बनाने लगते हैं। साकार उपासना गिरते-गिरते पशु, पक्षी, वृक्ष, पादप एवं कंकड़-पत्थर और अन्तमें मिट्टी तकमें परिणत हो जाती है। भिन्न-भिन्न साकार उपासना तथा भिन्न-भिन्न मूर्तियोंकी पूजाके कारण अनेक दलोंमें जनता बँट जाती है। एकता नष्ट होती है। सब अपने भगवान्,

अपनी मूर्तिकी श्रेष्ठताके लिए झगड़ते हैं। निराकार उपासनामें यह सब झंझट नहीं होता। उससे लोगोंकी एकतामें ठेस नहीं लगती। निराकार उपासना करनेवाले मुसलमान, यहूदी आदि हिन्दुओंसे अधिक एकतासूत्रमें बँधे हैं। उनमें समष्टिकी भावना अधिक होती है। साकार उपासनामें व्यष्टिवादी होना स्वाभाविक है।

मूसाकी निराकार उपासना सरलतापूर्वक लोगोंके दिमागमें नहीं घुसी थी। वे मिस्रसे आये थे। बहुदेव-पूजा देखी थी। मूर्तिपूजा देखी थी। उसीके आदी हो गये थे। अनेक प्रतिमाएँ देखी थीं। फरोहाके बनवाये विशाल मन्दिर देखे थे। उनमें देवदासियाँ नृत्य करती थीं। संगीत होता था। देवपूजाका आडम्बरमय कर्मकाण्ड था।

निराकार ब्रह्मकी उपासना सांस्कृतिक एवं परिपक्व मस्तिष्ककी कल्पना है। नन्दीकी पूजाने मूसाको सावधान कर दिया। उसे इसराइल-को एक जाति बनाना था। एक जातिके लिए एक ईश्वर एवं एक रूपका संस्कार बनाना आवश्यक है। ऐसा भी स्थान होना चाहिये जहाँ लोग एकत्र हो सकें। बुद्धके शब्दोंमें सन्निपात-बहुल हो। मूसाने इस समस्याका हल निकाला। निराकार ब्रह्मकी मूर्ति नहीं हो सकती। फिर लोग किसके सम्मुख उपस्थित हों। बुद्ध एवं मुहम्मदके पहले मूसा हुए थे। अतएव उन्हें स्वयं मार्ग निश्चित करना था। उनके सम्मुख पहलेका कोई आदर्श अथवा प्रक्रिया नहीं थी। उसके लिए दो स्थानोंको साधन बनाया। खेमा बनाया। याजक-परम्परा कायम की। भगवान्-की वाणी, बबूलकी मंजूषामें, भगवान्‌के साक्षी स्वरूप रखी। वह मूर्ति नहीं ईश्वरका साक्ष्य था। बलि उसे नहीं ईश्वरको, उसके सम्मुख साक्ष्य रूप दी जाने लगी। यह मूसाके साकार एवं निराकार उपासना-का मध्यम मार्ग था। निराकार उपासकके लिए भगवान् निराकार था। साकार उपासकके लिए साक्षीकी मंजूषा थी। वहाँ श्रद्धासे माथा टेक सकता था। उसके मनको उसके सान्निध्यमें सन्तोष एवं शान्ति मिल सकती थी। यहूदियोंकी धार्मिक संस्थाकी व्यवस्थापर

वैदिक, मिस्री, कसीदियों एवं बेबीलोनीय व्यवस्था एवं परम्पराका प्रभाव प्रतीत होता है।

लेखोंकी पुनर्प्राप्ति

यहोवाके आज्ञानुसार मूसा पुनः सीनै पर्वतपर गया। उसने दो शिलाएँ भगवान्‌के वचनोंको लिखनेके लिए बना ली थीं। वह अकेला शिखरपर गया। मेघोंसे यहोवा आये। बोले—

'यहोवा ! यहोवा !! ईश्वर !!! वह बड़ा दयालु है। अनुग्रही है। क्रोधमें धैर्यशाली है। करुणामय है। सत्य है। पापमोचक है। दोषीको वह निर्दोष नहीं बना सकता। पूर्वजोंके अधर्मका दण्ड आनेवाली पीढ़ियोंको देता है।'

मूसाने अपना मुख ढँक लिया। मूसा व्यवस्थामय शिलालेख लेकर लौट आया। उसने भगवान्‌के साक्षीस्वरूप उन्हें मंजूषामें रख दिया।

बलि कर्मकाण्ड

मूसा लिखित पाँचों पुस्तकें पढ़नेके पश्चात् मेरा ध्यान मीमांसाकी ओर गया। बलि-प्रथाका आरम्भ वैदिककालसे होता है। बलि-प्रथा संस्कृत एवं सभ्य-समाजमें पायी जाती है। यह प्रथा जंगलियों आदिमें नगण्य-सी है। प्राचीनकालमें वैदिक धर्म एवं व्यवस्था ही विश्वमें फैली थी। बलि द्वारा ईश्वरको प्रसन्न करना, यज्ञ द्वारा इन्द्र, मरुत आदिका आह्वान करना सभी जानते हैं। यज्ञमें दी गयी हवि देवता प्राप्त करते हैं। बलिपशु पवित्र होता है। यह विचारधारा वैदिक थी। वह विश्वमें फैली थी। मिस्रवाले भी बलि करते थे। मूसाने निराकार ब्रह्मकी उपासनाके साथ पशु-मेधको अपने धर्मका अंग माना। यज्ञोंसे देवताओंका प्रकट होना हमारे यहाँ बहुत मिलता है। अग्निदेव मुख है। उसके द्वारा देवता ग्रहण करते हैं। इसी सिद्धान्तके आधारपर मूसाने यज्ञको माना। वैदिककालमें मन्दिर नहीं थे। उपासनागृह नहीं थे। केवल वेदियाँ बनायी जाती थीं। वही आध्यात्मिक जीवनकी केन्द्र थीं। इब्राहीमसे लेकर मूसातकने केवल वेदी ही बनायी। उसका

समर्थन किया। मालूम होता है कि वैदिक सिद्धान्तका परोक्ष अथवा गौणरूपसे मूसापर प्रभाव पड़ा था। वह कैसे पड़ा, अन्वेषणके लिए अच्छी चीज होगी।

गोमेध

गाय या वृषभ केवल एककी ही बलि की जाय। बलि-पशु निर्दोष, शुद्ध, ज्येष्ठ उत्पन्न एवं हृष्ट-पुष्ट हो। गाय अथवा वृषभ यहोवा स्थानके द्वारपर लाया जाय। बलि करनेवाला पशुके मस्तकपर हाथ रखे। यहोवाके सम्मुख वह बलि किया जाय। याजक बलिके रक्तको द्वारपर बलिवेदीके चारों ओर छिड़के। पशुकी खाल निकाल ली जाय। उसे बोटी-बोटी हवि योग्य बनाया जाय। याजक वेदीपर अग्नि रखे। अग्नि-पर समिधा सजाये। याजक समिधापर मज्जा (चर्बी) सहित हवि अर्थात् बोटियाँ और मस्तक रखे। अँतड़ियाँ और पाँव धो लिये जायँ। अग्नि जलने लगे। सब हवि भस्म हो जाय। अग्नि स्वयं बुझे।

भारतीय यज्ञमें हविके साथ श्रुवासे घी दिया जाता है। आहुति मन्त्रोंके साथ दी जाती है। मूसाकी प्रक्रियामें सभी हवि सजाकर एक साथ समिधापर रख दी जाती है। यह अन्तर है। वैदिक तथा यहूदी दोनोंकी अग्नि शान्त होती। हवि जबतक भस्म नहीं हो जाती जलती रहती है।

अजमेध

बकरे अथवा भेड़ पहलोठीके दोषरहित तथा हृष्ट-पुष्ट हों। यहोवा-की वेदीके उत्तर ओर बलि की जाय। याजक रक्तको वेदीपर छिड़के। हवि योग्य बोटियाँ बनायी जायँ। मस्तक और चर्बी अलग रखी रहें। वेदीपर अग्नि, अग्निपर समिधा और समिधापर मस्तक, चरबी और मांस हवि सजा दी जाय। अँतड़ियाँ पवित्र जलमें धो ली जायँ। वेदी-की अग्नि प्रज्वलित होकर सब भस्म कर दे। यह यज्ञ यहोवाके लिए सुगन्धियुक्त एवं सुखदाई होगा।

पक्षीबलि

पण्डुक तथा कबूतरकी बलि की जाय। याजक पक्षीको वेदीके समीप ले जाय। पक्षीका गला मरोड़कर धड़से अलग करे। खून वेदीके बाहर गिरा दिया जाय। उसका पर निकालकर वेदीके पूर्वकी ओर, जहाँ हवनका भस्म रखा जाता है, फेंक दे। सिर समिधाके ऊपर रखा जाय। पंखेके स्थानसे उसका शरीर फाड़कर अग्निमें डाल दे।

अन्नबलि

मैदापर तेल और उसपर सुगन्धित लोहबान रखा जाय। लोहबानवाला अंश पूरा मुट्ठीमें लेकर उसे यज्ञाग्निमें डाल दिया जाय। शेष मैदा याजकका हो जायगा। हमारे यहाँ मैदाके स्थानपर यव, तेलके स्थानपर घी और लोहबानके स्थानपर सुगन्धित पदार्थोंका प्रयोग किया जाता है।

दूसरा प्रकार

अखमीरी रोटी सादी या तेलमें चुपड़ी और यदि तवेपर पकायी गयी हो तो मैनवाली रोटीका चूर्ण बनाया जाय। चूर्णपर तेल पुनः डाला जाय। कड़ाहीमें काढ़ी हुई पूड़ी भी हवि होगी। याजक उसे यज्ञाग्निमें आहुतिस्वरूप डालेगा। बचा हुआ अपने लिए रख लेगा। हमारे यहाँ कहीं-कहीं देहातोंमें पूड़ीका चूर्ण बनाकर हवन करते हैं।

दक्षिणके मन्दिर प्रायः वैसे ही बने हैं जैसी मूसाने कल्पना की थी। अन्तर केवल यही मालूम होता है कि देवताके स्थानपर साक्षीकी मंजूषाके रखनेका आदेश दिया था। दक्षिणके मन्दिरोंमें झण्डा किंवा पताकाके स्थानके करीब एक ऊँची वेदी बनी रहती है। उसी वेदीपर अन्नादि तथा पकवान, भात आदि लोग चढ़ाते हैं। प्रकारमें अन्तर पड़नेका कारण यही है कि भारत अपने ढंगपर विकसित हुआ और मूसाने मिस्रादि स्थानोंकी बलि प्रणालीके आधारपर, जो भारतीय प्रणालीका ही विकृत रूप था, एक नवीन प्रणालीका सृजन किया।

शान्ति, पाप, दोषादि अनेक बलियोंकी प्रक्रियाका वर्णन तथा

उनका फल मूसाने ब्योरेसे यहोवाके कथनानुसार दिया है।

शुद्ध मांस

फटे, चिरे खुर तथा पगुरी करनेवाले जानवरोंका गोश्त हलाल है। फटे खुर या पगुरी न करनेवालोंमें ऊँट, श्वान, खरहा और सूअर हराम हैं। इनका मांस स्पर्शतक नहीं करना चाहिये। जल-जन्तुओंमें पंख और चोटीवाले हलाल, शेष हराम हैं। पक्षियोंमें उकाब, हड़फोड़, चील, कौवा, शुतुरमुर्ग, तखमास, जलकुक्कुट, बाज, हवासिल, हाड़गिल, उल्लू, राजहंस, गिद्ध, बगुला, टिटिहरी और चमगादड़ हराम हैं। चारपाँवोंमें पंजेके बल चलनेवाले, भूमिपर रेंगनेवाले तथा नेवला, चूहा, गोह, छिपकली, मगर, साँड़ा और गिरगिटान भी हराम हैं। अशुद्ध मांसका स्पर्श भी अपवित्र माना गया है। उनका स्पर्श करनेवाला सायंकालतक अशुद्ध रहता है। यदि मिट्टीके बर्तनमें अशुद्ध मांस पड़ जाय तो उसे फोड़ देना चाहिये।

कुष्ठ रोगी

उनका बाल बिखरा और वस्त्र फटा होना चाहिये। अपने ओठोंको ढँके हुए "अशुद्ध हूँ, अशुद्ध हूँ" पुकारते चलें। उन्हें आबादीके बाहर अकेला रहना चाहिये।

प्रसंग और शुद्धता

वीर्य स्खलित होनेपर सायंकालतक व्यक्ति अशुद्ध रहता है। उसके लिए स्नान करना अनिवार्य है। वस्त्र या चमड़ेपर वीर्य गिर जाय तो उसे धोया जाय। उसे स्पर्श करनेवाला भी अशुद्ध समझा जायगा। उसे स्नान करना होगा। रतिके पश्चात् स्त्री-पुरुष दोनोंको स्नान करना आवश्यक है। रतिके दिनभर वे अशुद्ध रहेंगे।

ऋतुमती नारी

ऋतुमती स्त्री सात दिनतक अशुद्ध रहती है। भारतमें तीन दिनकी अशुद्धता मानी जाती है। उसे स्पर्श करनेवाला सायंकालतक अशुद्ध रहेगा। जिस वस्त्र या बिस्तरपर ऋतुमती सोये अथवा स्पर्श करे वह

अपवित्र माना जायगा। उसे स्पर्श करनेवाला सायंकालतक अशुद्ध रहेगा। यदि ऋतुमती स्त्रीका रक्तस्राव अधिक दिनतक होता रहे तो जबतक वह होता रहेगा वह अशुद्ध समझी जायगी।

विपरीत रति

विपरीत रतिका दण्ड मृत्यु है। सास और पतोहू दोनोंके साथ प्रसंग करनेवाला पुरुष स्त्री सहित जीता भस्म कर दिया जाये। ऋतु-मतीके साथ प्रसंग करनेवालेका नाश किया जाय। याजककी स्त्री यदि वेश्यावृत्ति करे तो वह जीवित फूँक दी जाय।

निषिद्ध मैथुन

माता, विमाता, सगी या विमातृ बहिन, पोती, नतिनी, फूआ, मौसी, चाची, पतोहू, भौजाई, साली इनके साथ विवाह एवं मैथुन निषिद्ध है। किसी स्त्री उसकी कन्या तथा पोती के साथ मैथुनका निषेध है। स्त्रीगमन रीतिसे पुरुष एवं पशुगमन घृणित कर्म है।

अशुद्ध रक्त

किसी प्रकारका रक्त अशुद्ध है। त्याज्य है। उसका पान या भोजन वर्जित है। रक्त ही प्राण है। यदि किसी पशुका शिकार किया जाय तो उसका रक्त गाड़ देना चाहिये। किसी जानवरसे फाड़े हुए पशुका माँस खानेवाला व्यक्ति स्नान करेगा तथा सायंकालतक अशुद्ध रहेगा।

कृषि-व्यवस्था

लवनी अथवा कटाईके समय पूरा खेत न काटा जाय। किनारोंपर की फसल छोड़ दी जाय। खेतोंमें गिरी हुई बालों अथवा अन्नको न बीना जाय। अंगूरके बागमें पूरा अंगूर न तोड़कर कुछ छोड़ दिया जाय। छूटा अन्न-फसल तथा फल गरीबोंका हिस्सा है। लवनी-कालमें पहली उपज याजकका अंश है। घर भूमि बेची न जायगी।

मजदूरी

मजदूरकी मजदूरी रात बीतनेके पहले दे देनी चाहिये। भिन्न जातिके पशुओंका परस्पर सम्भोग त्याज्य है। दो प्रकारके बीज एक ही

खेतमें बोना ठीक नहीं है। सन तथा मिलावटके वस्त्र न पहने जायँ। नये लगे बागका फल तीन वर्ष नहीं खाना चाहिये। पाँचवें वर्ष उन्हें उपयोगमें लाया जाय।

नरमेध वर्जित

नरमेध निमित्त यदि कोई अपने पुत्रको मेलिच देवताको दे तो उसे पकड़कर पत्थरवाह कर दिया जाय। व्यभिचारी पुरुष तथा स्त्री दोनों ही पत्थरवाहके योग्य हैं। ओझा तथा प्रेतसाधक निश्चित रूपसे वध कर दिये जायँ।

यहोवा-निंदाका दण्ड

दोनगोत्रीय शलोमीतने एक मिस्री कन्यासे ब्याह किया था। उसके पुत्रने एक दिन एक इसराइलीसे विवाह किया। यहोवाकी निंदा की। उसे बन्दी किया गया। विचार हुआ। सब लोग एकत्र हुए। उसे पत्थरवाह किया गया।

विश्राम वर्ष

चालीस वर्ष काम करनेका वर्ष होगा। पचासवाँ वर्ष विश्राम करनेका वर्ष होगा। वह जुबली कहलायेगा। उस वर्ष खेती न की जायगी। बिना छाँटी हुई दाख लता तोड़नी न होगी। दरिद्र भाईसे ब्याज या बढ़ती न ली जाय। भूमिका दशमांश यहोवाका है। दस पशुओंमें एक पशु भी यहोवाका अंश होगा।

जनगणना

व्यवस्था तथा सिद्धान्त देनेके पश्चात् प्रश्न उपस्थित हुआ कि कनान देशमें जानेका क्रम क्या होगा। राष्ट्रके लिए विधान बन गया। विधानको कार्यान्वित करनेके लिए देशमें मनुष्योंका आबाद होना आवश्यक है। बिना देश राष्ट्रकी कल्पना व्यर्थ है। देश प्राप्त करना था। उसके लिए शक्ति आवश्यक थी। राष्ट्रकी शक्ति उसकी सेना है। विश्वकी वह प्रथम जनगणना है। जनगणना प्रथाका जनक मूसा है।

मूसाने बीस वर्षके युवकोंकी गणना प्रत्येक ग्रामोंके अनुसार

करायी। रूबेन ४६५००, शियोन ५९३००, गाद ४५६५०, यहूदा १४६००, इस्साकार ५४६००, जबलून ५७४००, यूसुफ ४०५००, मनश्शे ३२२००, बिन्यामीन ३५४००, दान ६२७००, आशेर ४१००१, नफ्ताली ५६४०० अर्थात् कुल ६०३५५० युवक युद्धोपयोगी थे। उनमें लेवी गोत्रकी गणना नहीं की गयी।

नाकेबन्दी

शक्ति मालूम हो जानेपर मूसाने नाकेबन्दी अर्थात् व्यूहरचना की। उनके पास कोई दुर्ग न था। वे मैदानमें रहते थे। मैदानमें किस प्रकार अपनी रक्षा की जाय यह सैनिक प्रक्रियाका दूसरा चरण था। पूर्व दिशाकी ओर यहूदाने अपने गोत्रके साथ पताका फहरायी। इस दलमें ७,६०० पुरुष थे। सेनापति इस्सार हुआ। इसके साथ जबलून गोत्रीय ५७४०० व्यक्ति रहे। उनका सेनापति एलीआब हुआ। १ लाख ८६ हजार पुरुष सबसे आगे कूच करनेके लिए इस प्रकार नियत किये गये। इसे आजकलकी भाषामें अग्रिम जत्था कह सकते हैं।

दक्षिण पार्श्वमें रूबेन गोत्रीय ४६५०० व्यक्तियोंकी छावनी कायम हुई। सेनापति एलीसूर हुआ। शियोन गोत्रीय शलूमिएलके नेतृत्वमें ५९३०० तथा एल्यासाके नेतृत्वमें गादवंशीय ४५६०० व्यक्ति रहे। १५०१४५० व्यक्तियोंका दूसरा स्थान निश्चित किया गया।

लेवीवंशीय यहोवाके शांति खेमेके साथ मध्यमें रखे गये। यह मध्य भाग छावनीका था।

पश्चिम पार्श्वमें एलीशामके नेतृत्वमें एप्रेम गोत्रीय ४५०००, पदासूरके नेतृत्वमें मनश्शे गोत्रीय ३२२००, अबीदानके नेतृत्वमें बिन्यामीन गोत्रीय ३५००० अर्थात् कुल ११२२०० पुरुष इस छावनीके अन्तर्गत थे। इनका तृतीय स्थान था।

उत्तर पार्श्वमें अही एजरके नेतृत्वमें दान गोत्रीय ६२७००, आशेर गोत्रीय ४१५०० पुरुष, पगीएलके नेतृत्वमें, नफ्ताली गोत्रीय ५३४०० पुरुष अहीराके नेतृत्वमें कुल १५७६०० पुरुष इस छावनीमें रहे।

कूचके समय वे सबके पीछे रखे गये ।

सुरक्षा विभागमें इस प्रकार कुल ६०३५५० युवक लगाये गये ।

ज्येष्ठका अधिकार

लेवी गोत्रीय यहूदियोंके गोत्रोंमें सबसे ज्येष्ठ थे । यहोवाने उन्हें अपने लिए रखा । वे ही याजक अर्थात् भारतीय कर्मकाण्डीके समान रखे गये । हमारे यहाँ अनेक गावोंमें ज्येष्ठ भ्राताको उसके ज्येष्ठ होनेके नाते अधिक भाग मिलता है जिसे जेठासा कहते हैं । यह प्रथा मालूम होता है, बहुत पुरानी है ।

शिशु-गणना

एकमास अथवा उससे अधिकके शिशुओंकी गणना की गयी । उनकी संख्या २२२७३ हुई ।

देवदास

लेवी वंशीय ३० से ५० वर्ष तकके पुरुषोंकी गणना की गयी । उनकी संख्या ८५०० थी । उन्हें यहोवाके सेवक या दास रूपमें स्वीकार किया गया ।

समाजसे बाहर

कुष्ट और प्रमेहके रोगी तथा किसी प्रकार अशुद्ध हुए लोगोंको छावनीके बाहर रखा गया ।

याजक शुद्धि विधि

पवित्र जल लेवी वंशीय पुरुषपर छिड़का जाय । उनका सर्वांग मुण्डन किया जाय । स्वच्छ धुला वस्त्र धारण करे । तेलसे सने अन्न बलिकी हविके साथ एक बछड़ा ले । यह बढ़ता पाप बलिनिमित्त लिया जाय । अर्थात् बलि द्वारा पापमोचन होकर व्यक्ति शुद्ध होता है । इसराइली एकत्र किये जायँ । तत्पश्चात् बलि यहोवाको अर्पित की जाय ।

तूर्यध्वनि

आजकल हमलोग बिगुल बजाते हैं । बिगुलकी आवाजपर सेनाके लोग एकत्र होते हैं, चलते हैं । मूसाने चाँदीकी दो तुरही, अथवा

सिंहा अथवा तूर्य बनवाया जो लोगोंको बुलाने तथा प्रस्थानके समय बजाया जाता था। यदि दोनों तूर्य एक साथ बजें तो समस्त जनसमूह-को यहोवा स्थानके सम्मुख एकत्र होना पड़ता था। सशस्त्र पुरुषोंपर एक नायक नियुक्त किया गया था। एक तूर्यके बजनेपर वे सब एकत्र होते थे। आक्रमण एवं संघर्षकालमें साँस बाँधकर तूर्यध्वनि की जाती थी।

सिने पर्वतसे प्रस्थान

मिस्रसे निकलनेके दूसरे वर्षके दूसरे मासके बीसवें दिन मेघ यहोवाके साक्षी तम्बूके स्थानसे हटा। यह ईश्वरका संकेत था। मेघ स्तम्भ मिस्रसे साथ ही चला था। यहोवाके लिए जब साक्षी स्थान बनाया गया तो वह उस स्थानके ऊपर रुक गया था।

लोग चले। मेघ पारान जंगलमें स्थिर हो गया। जब मेघ साक्षी-वाले तम्बूके ऊपर ठहर जाय तो लोग छावनी डाल देते, अन्यथा चलते थे।

होवाव

होवाव मूसाका साला था। मूसाने उसे अपने साथ चलनेके लिए कहा। होवाव मार्ग तथा प्रदेश खूब जानता था। मूसा अपरिचित थे। होवावसे प्रतिज्ञा भी की। वह देश देनेके लिए कहा जिसे भगवान्‌ने इसराइलको देनेका वचन दिया था। होवावने स्वीकार न किया। वह अपने प्रदेश तथा कुटुम्बियोंमें लौट गया।

सिने पर्वतसे तीन दिनकी यात्रा की गयी। यहोवाकी साक्षी मंजूषा उनका पथप्रदर्शन करती रही।

अग्नि

मरुभूमिमय जंगलमें लोग यहोवाकी शिकायत करने लगे। छावनी-में आग लग गयी। एक ओरसे अग्निने सर्वनाश करना आरम्भ किया; परन्तु मूसाके प्रार्थनापर भगवान्‌ने आग रोक ली।

मूसाकी दूसरी शादी

मूसाने एक कुशी अर्थात् यूथोपियन स्त्रीसे शादी कर ली।

मरियम तथा हारूनको बात पसन्द न आयी। मरियमने इसे अनुचित कार्य कहा। निन्दा की। मूसाकी स्त्री सिप्पोराह जीवित थी। यहोवा मरियमपर नाराज हुआ। वह कुष्टरोगी तुल्य हो गयी। उसे छावनीके बाहर सात दिनतक रखा गया। मूसाकी प्रार्थनापर वह पुनः भली-चंगी हो गयी। वे लोग हेसरोतमें प्रस्थान कर पारान जंगलमें आये।

गुप्तचर

कादेश स्थानमें छावनी पड़ी। कानान देशकी वास्तविक स्थिति जाननेके लिए गुप्तचर नियुक्त किये गये। प्रत्येक गोत्रसे एक-एक प्रमुख व्यक्ति लिया गया। जक्कुर, शम्मू, शायान, कालेब, पिगाल, होते अर्थात् यहोशू पलती, गद्दीएल, गद्दी, अम्मीएल, सतूर, नहूवी तथा गूएल लिये गये। वे रवाना हुए। चालीस दिन पश्चात् स्थितिका अध्ययन कर लौटे।

गुप्तचर कानान देशसे अंगूरका गुच्छा लोगोंको दिखानेके लिए लाये। जिस नालेसे उन्हें तोड़कर लाये थे उस नालेका नाम एशकोल अर्थात् अंगूरका गुच्छा रखा गया। वहाँका सुन्दर वर्णन किया गया। दूध और मधुधाराकी बात कही गयी। निवासियोंके विषयमें कहा गया कि वे बली हैं। नगर गढ़ स्वरूप हैं। वहाँ अनाक गोत्रीय आबाद हैं। दक्षिणमें अमलेकी, पर्वतीय प्रदेशमें हित्ती, यबूसी, अमीरी बसते हैं। समुद्र तथा यार्दन नदीके तटपर कानानवासी आबाद हैं।

कालेबने कहा—'आक्रमण कर उन्हें जीत लेना चाहिये।'

'नहीं'—उसके अन्य साथियोंने कहा।

'क्यों?'

'आक्रमण करनेकी हमारी क्षमता नहीं है। वे हमसे बली हैं। वहाँके पुरुष हमसे डीलडौलमें ऊँचे और ताकतवर हैं। अनाक गोत्रीयोंके सम्मुख हम टिड्डीके समान मालूम होते हैं।'

जनताका मनोबल टूट गया। वह उदास हो गयी। उसने कानान प्रदेशमें प्रवेश करनेसे इनकार कर दिया। यहोवा क्रोधपूर्वक बोला—

'चालीस वर्षतक मरुभूमिमें तुम लोग घूमते रहोगे। जबतक वर्तमान इसराइलियोंकी पीढ़ी समाप्त न हो जायगी कानान देशमें न जा सकोगे।'

जनताका यह कार्य विद्रोहात्मक, कमजोरी और अनुशासन भंगका था। यहोवाने मूसाको आदेश दिया—

'अमलेकी तथा कानानी लोग उपत्यकामें रहते हैं। यहाँसे घूमकर लाल सागरकी ओर चलकर हीराके जंगलमें प्रवेश करो।'

विद्रोह एवं शान्ति

यहोशू तथा कालिबके अतिरिक्त गुप्तचर जनताको भड़काने लगे। विद्रोहकी अग्नि सुलगने लगी। यहोवाने यहोशू तथा कालिबके अतिरिक्त सब गुप्तचरोंको मार डाला। लोग आक्रमण करनेके लिए आतुर हो गये। मरु जीवनसे वे ऊब गये थे। मूसाने उन्हें रोका। कुछ लोगोंने न माना। विद्रोहका झण्डा ऊँचा किया। मूसाका वचन भंग किया। अमलेकी तथा कानानियोंपर आक्रमण किया। दुश्मन उन्हें पीटते होमीतक चले आये।

कोरहका विद्रोह

कोरह लेवीका प्रपौत्र था। सबेनियन वंशीय दातानने, अबिराम तथा ओनके साथ मूसाके विरुद्ध षड्यन्त्र किया। दो सौ पचास प्रतिष्ठित सभासदोंके साथ मूसा और हारूनके खिलाफ वे बोले—'हम सब बराबर हैं। यहोवाके समुदायमें केवल उन्हें ऊँचा आसन क्यों दिया जाय ?' मूसाने उन्हें बुलाया। वे न आये।

उसी दिन भूमि फटी। विद्रोहियोंको निगल गयी। उनकी सारी सम्पत्ति अधोलोकको चली गयी। अग्नि उठी। उसने दो सौ पचास विद्रोही सभासदोंको भस्म कर डाला।

महामारी

छावनीमें महामारी फैली। चौदह हजार सात सौ व्यक्ति मर गये। धूप जलाकर हारूनने प्रायश्चित्त किया। मुर्दों और जीवित दोनोंके

बीच गया। सुगन्धित द्रव्योंकी सुगन्धिसे कीटाणु मर गये।

महामारी फैलनेपर भारतमें हवन किया जाता है। वेदीपर सुगन्धित द्रव्य जलाया जाता है। उसकी सुगन्धि वायुमण्डलमें फैलती है। कीटाणु मर जाते हैं। यह प्रथा बहुत पुरानी मालूम होती है।

मरियमकी मृत्यु

प्रथम मासमें इसराइल जन-समूह कदेशमें आया। कदेश ही शायद एल मिस फेन है। प्रतीत होता है कि यार्दन नदीके पूर्व दोआबके मैदानमें वह स्थान था। वह संघर्षका मुख्य स्थान रहा है।

इस स्थानपर नबिया मरियमकी मृत्यु हुई। उसने दासत्वमें आबद्ध इसराइल जनतामें क्रांतिकी फूँक फूँकी थी। उसके आह्वानपर जो लोग अग्रसर हुए थे वे आगे आये। उसे वृक्षकी दो शाखाओंकी रथीपर रखा। ऊनके वस्त्रमें उसका पवित्र शरीर रखा गया। उसे लोग लेकर चले। लक्ष-लक्ष कण्ठोंसे उद्‌भूत हुआ महाप्रयाण गीत। वृद्धा माताकी आँखोंमें थे आँसू और कण्ठमें शोक-गीत।

कब्रपर उसका मुख अन्तिम बार खोला गया। उसके ज्योतिर्मय मुखकी ओर मूसा देखने लगे। स्मृतिपटलपर नील नदीके तटसे आजतककी सारी घटनाएँ घूम गयीं। बाल्यावस्थाकी साथी थी। आन्दोलनकी साथी थी। मूसामें विद्रोहाग्नि उत्पन्न करने वाली थी। मरुभूमिमें साथी थी। कब्रमें वह चली। मिट्टीने उसे ढँक लिया। उसका भौतिक शरीर मिट्टीका था। मिट्टीमें रह गया। किन्तु जीवित रहेगी जबतक दुनियामें मूसाकी कहानी रहेगी।

मरीवामें जलोत्पत्ति

मरु जंगलमें जलका सर्वथा अभाव था। लोग परेशान हुए। यहोवाके आज्ञानुसार मूसाने लोगोंको एकत्र किया। छड़ोंसे पर्वतकी चट्टानपर मारा। जलप्रपात उद्‌भूत हुआ। स्थानका नाम मरीवा रखा गया। मरीवाका अर्थ मारना होता है।

इदोम

इदोमका राज्य कदेशकी सीमापर था। मूसाने राज्यसे मार्ग माँगा। इदोमने अस्वीकार किया। मूसाने शर्त्त रखी—अंगूरके खेतोंसे होकर न जायँगे। मार्गसे दाहिने बायें भी पैर न रखेंगे। प्रदेशके जलाशयोंका उपयोग न करेंगे। यदि पशु जल पीवेंगे तो जलका मूल्य देंगे। परन्तु इदोमने अनुमति देना तो दूर रहा अपनी सेनाके साथ सीमापर आ गया। इसराइलोंने उस मार्गसे जानेका विचार त्याग दिया।

हारूनकी मृत्यु

कदेशसे इसराइल होर पर्वतके समीप पहुँचे। मिस्रसे निकले चालीस वर्ष हो चुका था। पाँचवें मासका प्रथम दिन था। मूसा हारूनके पुत्र एलिजारके साथ पर्वत शिखरपर गया। मूसाने पर्वतपर हारूनका वस्त्र उतारकर एलिजारको पहनाया।

हारून एक गुफामें चला गया। बैठा। प्राणविसर्जन किया। उस समय उसकी आयु एक सौ तीस वर्षकी थी। लोगोंने तीस दिनतक हारूनके लिए शोक मनाया।

आज भी खतना करनेवाला जिस कुर्सीपर बैठता है उसे एलिजारकी कुर्सी कहते हैं। खतना हिन्दुओंके समान द्विजकर्म है। जिस प्रकार बिना यज्ञोपवीत कोई द्विज नहीं होता उसी प्रकार बिना खतना कोई यहूदी नहीं हो सकता। यह यहोवा तथा इसराइलके बीच हुए वचनका प्रतीक है।

अर्दका नाश

दक्षिण देशीय अर्दका कानानी राजा था। उसने इसराइलसे संघर्ष किया। संघर्षमें मारा गया। नगरका संहार किया गया। स्थानका नाम होर्मा अर्थात् नाश रखा गया।

नाग उपद्रव

जनसमूहने होर पर्वतसे लाल समुद्रका मार्ग लिया। विषैले सर्पोंका उपद्रव आरम्भ हुआ। बहुत लोग उपदंशसे मर गये। पीतलके

सर्पकी एक प्रतिमा बनायी गयी। उसे स्तम्भपर लटका दिया गया। जो लोग उसे देखते उनका विष उतर जाता था।

नागपूजा प्राचीनकालमें यरूशलममें प्रचलित थी। मिस्रमें नाग प्रतिमाको महत्त्वपूर्ण स्थान मिलता है। फरोहाके राजमुकुटमें नाग लिपटा भी मिला है। भारतमें नागपूजा निमित्त अब भी नागपंचमी मनायी जाती है। नागकी प्रतिमा लोग उस दिन अपने घरोंके द्वारपर लगाते हैं।

मूसाने नागपूजा स्वीकार नहीं की। किन्तु पीतलकी प्रतिमा-बना स्तम्भ टाँगना रहस्यसे खाली नहीं मालूम पड़ता। सम्भव है नाग-पूजकोंका समर्थन प्राप्त करनेके लिए बाइबिलमें पीछेसे क्षेपकरूपमें इसे बढ़ा दिया गया हो।

यात्रा

ओबेनसे कूचकर इसराइलने मोआवसे पूर्व अविराममें छावनी डाली। वहाँसे जेरेद और जेरेदसे अरनोन, नदीकी दूसरी ओर छावनी की। वहाँसे चलकर बीर पहुँचे। यह वही कुआँ था जिसके विषयमें यहोवाने मूसासे कहा था कि वहाँ लोगोंको एकत्र करना, वहाँ मैं जल दूँगा। वहाँसे मत्तान, नहलीएल, बोमोत होते मोआवकी तराईमें पहुँचे।

सिंहोनकी पराजय

एमेरियोंके राजा सिंहोनसे इसराइलोंने जानेके लिए मार्ग माँगा। वह सेनासहित लड़ने आया। यहजके मैदानमें पराजित हुआ। अरनोन-से यब्बोकतक समस्त भूभाग इसराइलोंके अधिकारमें आ गया। वे हेसबोन तथा समीपवर्ती अन्य नगरोंमें रहने लगे। नगरोंमें इसराइलके रहनेका यह प्रथम वर्णन बाइबिलमें मिलता है।

अन्य नगरोंकी प्राप्ति

याजेर नगर लिया गया। बाशानके राजासे युद्ध हुआ। एद्रोईमें वह पराजित हुआ। वह अपनी सन्तान तथा सारी प्रजाके साथ मार डाला गया। वहाँसे कूचकर यार्दन नदीके इस पार मोआब प्रदेशके

अरवामें छावनी डाली गयी ।

राजा बालक

बालक मोआवका राजा था । इसराइलियोंने अमेरियोंके साथ जो व्यवहार किया था, जानता था । वह व्याकुल हो उठा । उसने विलामको बुलवाया ।

यहोवाने विलामको जानेके लिए रात्रिमें कहा । साथ ही यह भी कहा कि वह जो आज्ञा देगा उसके अनुसार वह कार्य करे ।

विलाम मोआवी राज्य कर्मचारियोंके साथ प्रातःकाल अपनी गदहीपर चढ़कर चला । उसके साथ उसके दो सेवक भी थे ।

गदहीको यहोवाका दूत मार्गमें तलवार लिये दिखलाई पड़ा । गदही भड़की । मार्ग छोड़कर खेतमें चली गयी । विलामने गदहीको पीटा । वह पुनः सीधे मार्गपर आ गयी ।

मार्गके दोनों ओर अंगूरके बागोंकी दीवालें थीं । यहोवाका दूत मार्गमें पुनः खड़ा हो गया । गदही दीवालसे दबक गयी । विलामका पैर दब गया । गदहीके सरपर उसने मारा । गदही बढ़ी ।

यहोवाका दूत अत्यन्त संकुचित मार्गमें खड़ा हो गया । किसी ओर हटने-बढ़नेका स्थान नहीं था । गदही विलामके साथ जमीनपर बैठ गयी । विलामने उसे पीटा । गदही बोल उठी । उसकी वाणी मानव सदृश थी—'यहोवाका दूत मार्गमें खड़ा है ।' विलाम देखने लगा । दूतने कहा—'तुम जाओ लेकिन मैं जो कहूँगा वही करना ।'

बालक विलामसे मिलने मोआव सीमावर्ती एक नगरमें आया । बालकने भेड़-बकरियोंकी बलि की । विलामके पास खानेको भेजा ।

प्रातःकाल बालक विलामको लेकर बालूके एक टीलेपर गया । वहाँसे इसराइलोंकी छावनी दिखाई पड़ती थी ।

सात वेदियाँ—आशीर्वाद

विलामने सात वेदियाँ बालकसे वहाँ बनवायीं । विलामने एक-एक वेदीपर बछड़ा तथा मेढ़ा बलि चढ़ाया । वह वेदीके पास बालकको

खड़ा कर चला गया।

वह एक मुण्डे पर्वतपर गया। वहाँ ईश्वर उससे मिला। ईश्वरका आदेश पाकर वह बालकके पास आया। उससे बोला—

'इसराइल एक जाति है। भगवान्‌ने उसे शाप नहीं दिया है। मैं उसे क्यों शाप दूँ। ईश्वरने जिसे भयभीत नहीं किया है उसे मैं क्यों भयभीत करूँ? यह जाति अकेली आबाद होगी। अन्य जातियोंसे उसकी अलग गणना होगी।'

बालकने कहा—'तुम उन्हें आशीर्वाद दे रहे हो। मैंने तुम्हें शाप देनेको बुलाया है।'

'यहोवाने मुझे सिखलाया है, क्या मैं उसे ठीकसे न कहूँ?'

'चलो दूसरे स्थानसे उन्हें शाप दो।'

बालक बिलामको लेकर पिशगापर गया। वहाँ सात वेदियाँ बनायी गयीं। बछड़ा तथा मेढ़ाकी बलि दी गयी। उनकी आहुति दी गयी। बिलामने बालकसे कहा—

'होमबलिके समीप खड़े रहो। मैं ईश्वरसे मिलकर आता हूँ।'

ईश्वरके पाससे लौटकर बिलामने कहा—

'ईश्वर मनुष्य नहीं है। वह झूठ नहीं बोलता। वह आदमी नहीं है कि अपनी इच्छा बदला करे। उसने मुझे आशीर्वाद देनेकी आज्ञा दी है। उसने इसराइलको आशीर्वाद दिया है। मैं उसे बदल नहीं सकता। उनका परमेश्वर यहोवा उनके साथ है। सुनो—वे सिंह तुल्य होंगे। वे जबतक अपने शिकारका भक्षण न कर लेंगे तथा रक्त न पी लेंगे, लौटेंगे नहीं।'

बालकने पुनः शाप देनेके लिए कहा। बिलामको पोरके शिखरपर ले गया। वहाँसे शीमोन देश दिखाई पड़ता था।

वहाँ पहुँचकर बिलामने सात वेदियाँ बनवायीं। प्रत्येक वेदीपर एक बछड़ा तथा मेढ़ा बलि कर हवन किया।

ईश्वरकी आत्मा जैसे उसमें उतर आयी। उसने कहा—

'इसराइलका राजा आगाशके राजासे भी बली होगा। उसके राज्यकी अभिवृद्धि होगी। द्रोहियोंका वह भक्षण करेगा। उनकी अस्थियोंको चूर करेगा। वाणोंसे छेदेगा। वे सिंह एवं सिंहनीके समान सोये हैं। उन्हें कौन छेड़ेगा? जो कोई आशीष देगा वह आशीर्वाद पायेगा। जो शाप देगा वह शापित होगा।'

बालक विलामपर अत्यन्त क्रोधित हुआ। तीन बार उसने इसराइलको आशीर्वाद दिया था। उसने उसे तुरन्त भाग जानेके लिए कहा।

'इसराइलका दण्ड उठेगा। मोआब नष्ट होंगे। संघर्षरत गिरेंगे। वे अपनी वीरताका प्रदर्शन करेंगे। अमलेकी सब जातियोंमें श्रेष्ठ है परन्तु उनका अन्त विनाशमें है। कानानी उजड़ जायँगे।'

विलाम अपने घर लौट पड़ा।

वेश्यागमन और दण्ड

इसराइली शीत्तीममें निवास करते थे। वे मोआब लड़कियोंसे फँस गये। लड़कियोंने अपने देवताओंके यज्ञमें उन्हें आमन्त्रित किया। वे गये। भोजन किया। उनके देवताओंके सम्मुख सिर झुकाया। वे बालपोर देवताके उपासक बन गये। मूसाने आदेश दिया—

'बालपोर देवताके सम्मुख सिर झुकानेवालोंकी तुरन्त हत्या की जाय।'

साक्षीमय ईश्वरीय खेमेके सम्मुख इसराइली एकत्र हुए।

एक मिद्दानी स्त्री थी। कोजबी नाम था। सूरकी पुत्री थी। एक जिम्री नामक इसराइली था। वह शाल्लूका पुत्र था। अपने खेमेमें स्त्रीको ले गया। एली अजरके पुत्र पीन हरसने उसे देखा। उसने बरछी उठायी। खेमेमें उनके पीछे घुस गया। उसने दोनोंकी हत्या कर दी। उनकी हत्याके पश्चात् इसराइली छावनीमें फैली महामारी रुक गयी। इस महामारीमें चौबीस हजार व्यक्ति मर गये।

द्वितीय जनगणना

महामारीके पश्चात् जनगणना करना आवश्यक समझा गया।

द्वितीय बार जनगणना की गयी। बीस वर्ष अथवा इससे अधिक उम्र-वाले पुरुषोंकी संख्या ६०१७३० हुई। एक मास या इससे अधिक उम्रके लेवीय गोत्रके लोगोंकी संख्या २३००० थी।

उत्तराधिकार

पुत्ररहित मनुष्यकी मृत्युके पश्चात् उसका उत्तराधिकार उसकी पुत्रीको दिया गया। उसके अभावमें क्रमशः भाई, चाचा, कुटुम्बी एवं सबसे निकटके सम्बन्धीको उत्तराधिकारी घोषित किया गया।

मूसाका उत्तराधिकारी

मूसा नूनके पुत्र यहोशूको, जिसने युद्धमें असीम पराक्रम दिखाया था, साथ लेकर अबारीम पर्वत-शिखरपर गया। उसने उस प्रदेशको दिखाया जिसे भगवान्‌ने इसराइल जातिको देनेका वचन दिया था।

उसने यहोशूके सिरपर हाथ रखा। उसे अपना उत्तराधिकारी बनाया।

दैनिक होम

यहोवाका हव्य प्रातः एवं सायंकाल वेदीकी पवित्र अग्निमें आहुति द्वारा दिया जाता था। इस हविके लिए एक वर्षतकके भेड़के बच्चेका प्रातः एवं गोधूलि समय हवन किया जाता था। वेदीकी अग्नि निरन्तर जलती रहती थी। साथ ही कूटकर निकाले हुए चौथाई टीन एपा तेलको दसवें अंश मेदेके साथ मिलाकर अन्न बलि भी दी जाती थी। यही हवनकी दैनिक प्रक्रिया थी।

अर्घ्य

चतुर्थांश टीन कड़ी मदिरा भगवान्‌के पाननिमित्त पवित्र स्थानपर गिरायी जाती थी। अर्घ्यदान प्रातः एवं गोधूलि दोनों समय किया जाता था।

मिद्दियानियोंपर विजय

प्रत्येक गोत्रसे एक-एक हजार योद्धा चुने गये। प्रत्येक गोत्रने अपना सेनापति चुना। एलिअजारका पुत्र पिनहास सैनिकोंके साथ

भेजा गया। उसके हाथोंमें पवित्र स्थानके पात्र थे। तूर्य था।

कुमारी कन्याएँ बचीं

मिद्दियानियोंसे युद्ध हुआ। एवी, रेकेम, सुर, हूर एवं रेवा नामक पाँचों मिद्दियानी राजा मार डाले गये। बोरका पुत्र बिलाम भी तलवारके घाट उतार दिया गया। इसराइलियोंकी पूर्ण विजय हुई।

मिद्दियान देशके समस्त जीवित पुरुषोंकी हत्या कर दी गयी। सब नगर तथा छावनियाँ फूँक दी गयीं। स्त्रियाँ तथा बाल-बच्चे कैद कर लिये गये। उनकी ६०७५०० भेड़-बकरियाँ, २२००० गाय-बैल, ६१००० गदहे तथा ३२००० अक्षत योनि कुमारियाँ हाथ लगीं।

मूसाने विजेताओंका स्वागत आगे बढ़कर विरोही स्थानपर किया। स्त्रियोंको जीवित देखकर आदेश दिया—

'स्त्रियोंको जीवित क्यों छोड़ दिया ? इन्होंने यहोवाके साथ विश्वासघात किया है। पोर देवताकी पूजा इसराइली पुरुषोंको फँसाकर करायी। प्रत्येक बालक तथा क्षतयोनि स्त्रियाँ तुरन्त मार डाली जायँ। अक्षत-योनि कन्याएँ तुम लोग अपने लिए रख लो।

आदेश होते ही अक्षत-योनि कन्याओंके अतिरिक्त बालक एवं स्त्रियां सब मार डाले गये।

शरणार्थी नगर

मूसाने कानान देशकी सीमा बतायी। आदेश दिया कि कानान देशके नगरोंके बाहर छः शरणार्थी नगर बनाये जायँ। शरणार्थी नगरमें खूनी भागकर शरण लेंगे। यदि कोई किसीकी भूलसे हत्या करे तो उसे वहीं रहना होगा। हत्यारा शरणार्थी नगरकी सीमाके बाहर खूनका बदला लेनेवाले द्वारा मार डाला जाय तो हत्याका दोष उसे न लगेगा। इस प्रक्रियामें कालेपानीकी सजाका प्रारम्भिक रूप देखनेको मिलता है।

बहिर्गोत्र विवाह वर्जित

सलोफलादकी कन्याओंके विषयमें यहोवाके आदेशानुसार मूसाने

कहा—

'कन्याएँ चाहे जिससे विवाह कर सकती हैं। परन्तु विवाह पितृ-गोत्रमें ही हो सकता है। इसराइलियोंके किसी गोत्रका भाग दूसरे गोत्रमें मिलने न पाये। इसराइली अपने पितृगोत्रके भागके अधिकारी हैं। यदि स्त्री किसी वंशमें उत्तराधिकार पाती है तो उसे उसी वंशके पुरुषसे ब्याह करना चाहिये। एक गोत्रका उत्तराधिकार दूसरे गोत्रमें न जाय।'

अन्तिम भाषण

मिस्र निर्गमनका चालीसवाँ वर्ष था। ग्यारहवें मासका पहला दिन था। यार्दन नदीके दूसरे तटपर यारान, नोपेल, लबान, हसेरोत, दिज-हाव भूखण्ड और लालसागरके मध्यमें इसराइलियोंको यहोवाका आदेश मूसाने दिया—

'तुम आज एक जाति बन गये। एक राष्ट्र बन गये। तुम्हारी संख्या-के कारण भगवान्‌ने तुम्हें नहीं चुना है। तुम्हें चुना है तुम्हारे दिये गये वचनोंके कारण। उन्हें पूरा करनेकी तुमने प्रतिज्ञा की है। जिस देशमें तुम प्रवेश करने जा रहे हो वह मिस्र तुल्य नहीं है। परमेश्वरने उसके लिए वचन दिया था। वह पर्वतमय है। हरी-भरी उपत्यकामय है। आकाशसे उसमें वृष्टि होती है।

'जिस देशके अधिकारी होने जा रहे हो तुम उसके अनुसार आच-रण करो। दुनियामें कौन ऐसी जाति है जिसका परमेश्वर उसके साथ चलता है? विश्वमें कौन ऐसी जाति है जिसके पास संहिता, नियम एवं धर्म है?

'मैं उस भूमिमें प्रवेश नहीं करूँगा। तुम उसमें जाओगे। उसके अधिकारी होगे। तुम किसी वस्तुको खोदकर प्रतिमा मत बनाना। तुम्हारा ईश्वर ईर्ष्यालु है। वह तुम्हें दण्ड देगा। तुम्हें भस्म कर देगा।

'क्या कभी किसी जातिने अग्नि द्वारा परमेश्वरकी वाणी सुनी है? क्या सुनकर जीवित रही है? क्या किसी जातिने स्वयं परमेश्वरकी वाणी

अपने कानों सुनी है ? क्या किसी जातिको परमेश्वरने तुम्हारे समान दासतासे मुक्त किया है ? क्या किसी जातिको परमेश्वरने अत्याचारसे बचाया है ? क्या किसी जातिको परमेश्वरने तुम्हारे समान देश देनेका वचन दिया है ?

'यहोवा हमारा परमेश्वर है। वह एक है। उसकी मनसा, वाचा, कर्मणासे भक्ति करना। मैं तुमसे जो कहता हूँ उसे करो। कण्ठस्थ कर लो। आनेवाली सन्तानोंको सुनाना। उन्हें सिखाना। उनकी हर समय चर्चा करना। उन्हें अपनी भुजाओंपर चिह्नस्वरूप बाँधना। अपने प्रवेश-द्वारके ऊपर तथा दोनों ओर लगा देना। याद रखना, ईश्वरकी परीक्षा लेनेका साहस कभी न करना।

'पराजित जातियोंको समूल नष्ट कर देना। उनपर करुणा न करना। उनसे वचनबद्ध न होना। उनसे शादी-ब्याह मत करना। उनकी वेदियोंका नाश कर देना। उनके स्तम्भोंको तोड़ देना। उनकी अशेरा नामक मूर्तियोंको काट-काटकर गिरा देना। मूर्तियोंको आगमें डाल देना। यहोवाने विश्वकी समस्त जातियोंमें केवल तुम्हें चुना है। तुम उसकी चुनी हुई जाति हो।

'यदि तुम्हारा स्नेही, बन्धु, बान्धव, मित्र, सगा-सम्बन्धी तुमसे किसी देवताकी उपासना करनेके लिए कहे, वे चाहे पृथ्वीके ओर-छोरपर ही क्यों न हों, उनपर दया न करना। उनसे कोमल व्यवहार न करना। उन्हें पत्थरवाह करना। उनकी हत्या करना।

'यदि नगरमें अन्य किसी देवताके उपासनानिमित्त जैसा घृणित कार्य कोई नगरवासी करे तो उस नगरके निवासियोंको उनके पशु आदिके साथ समाप्त कर देना। बीच चौकमें सारी सम्पत्ति एकत्र करना। उसे यहोवा निमित्त फूँक देना। जहाँ फूँका जाय वह स्थान कभी आबाद न किया जाय। वह डीहस्वरूप पड़ा रहे।

'यदि कोई यहूदी दासतुल्य तुम्हारे हाथ बिक जाय तो छः वर्ष पश्चात् उसे मुक्त कर देना। अपनी सम्पत्तिमेंसे उसे कुछ देना। वह

खाली हाथ न जाय। तुम्हारे स्नेहके कारण छः वर्ष पश्चात् भी वह तुम्हारे पास रहना चाहे तो किवाड़पर कान रखकर सुतलीसे छेद देना। दासीके साथ भी यही व्यवहार करना।

'यदि कोई पुरुष या स्त्री सूर्य, चन्द्रमा एवं नक्षत्रोंकी उपासना करे तो उसे नगरके तोरण द्वारपर ले जाना। कमसे कम दो साक्षियोंके आधारपर उसे दण्ड देना। एक साक्षीके साक्ष्यपर कभी दण्ड न देना। दण्ड देते समय पहले साक्षियोंका हाथ उसके ऊपर उठे। वह पत्थरवाह कर दिया जाय।

'अपनेमेंसे राजा नियुक्त करना, किसी परदेशीको राजा मत चुनना। राजा अधिक स्त्रियाँ, सोना, चाँदी आदि न रखे। राजा लेवीय याजकोंसे व्यवस्थाकी पुस्तकें नक़ल कराकर अपने पास रख ले। उसका नित्य पाठ किया करे।

'पुत्र, कन्या, मानवमेध बलि कर यज्ञ करनेवाला, शुभ-अशुभ मुहूर्त्त कहनेवाला, फलित ज्योतिषी, इन्द्रजालिक, ओझा, प्रेत-साधक, प्रेतको जगानेवाले यहोवाके सम्मुख घृणाके पात्र हैं। उनका दण्ड मृत्यु है।

'यदि कोई अपनेको नबी कहे, मेरा नाम लेकर कोई बात करे, पुराने देवताओंका नाम ले तो वह नबी तुरन्त मार डाला जाय।

'नया मकान बनानेवाला, अंगूरकी नयी बारी लगानेवाला, मँगनी हुआ युवक, कायर, अस्थिरचित्त व्यक्ति युद्धमें न जाकर अपने घर लौट जाय।

'युद्धके पूर्व सन्धिका पैगाम भेजना। यदि सन्धि स्वीकार कर नगरका द्वार खुल जाय तो अधिकार कर लेना। वहाँके निवासी तुम्हारे बेगार होंगे। स्त्रियाँ, बाल-बच्चे, नगरका सब सामान तुम्हारा होगा। यदि युद्ध करें तो उनका पूर्णतया सत्यानाश कर देना।

'यदि युद्धके पश्चात् सुन्दर स्त्री मिले, तुम उससे ब्याह करना चाहते हो तो उसे अपने घर लाना। स्त्री अपना मुण्डन कराये। नाखून कटाये।

दासत्वका वस्त्र उतार दे। माता-पिताके लिए एक मास शोक करे। तत्पश्चात् उससे विवाह करना। उसे अपनी पत्नी बनाना। उसे पुनः बेचना अनुचित है—आमीन।'

जनसमुदाय कह उठा—'आमीन'।

मूसा गीता

'इसराइलियो! मैं एक सौ बीस वर्षका हो गया हूँ। मेरी मृत्यु निकट है। सुनो—

'मेरा उपदेश मेघतुल्य बरसेगा। मेरी बातें ओसकी तरह गिरेंगी। मैं यहोवाके नामका प्रकाश करता हूँ। अपने परमेश्वरकी महिमा कहता हूँ। वह महान् है। वह पूर्ण है। उसकी न्यायगति है। वह सत्य है। अकुटिल है। धार्मिक है। सरल है। तुम्हारा पिता है। उसने तुम्हें बनाया है। स्थिर किया है। हिंसाका बदला लेना उसका काम है। वह न्याय करेगा। दासोंपर करुणा करेगा। उसका साझी कोई देवता नहीं है। वही मारता है। वही जिलाता है। वही घायल करता है। वही चंगा करता है। उसके हाथोंसे कोई छूट नहीं सकता। वह अनन्त है। अपने द्रोहियोंसे, अपने शत्रुओंसे बदला वही लेगा।'

मूसाका आशीर्वाद

'यहोवा सिने शिखरपर अवतीर्ण हुआ। सेहरसे उदय हुआ। परान पर्वतपर उसके तेजका दर्शन मिला। उसके दक्षिण बाहुसे तेजोमय संहिताएँ निकलीं। वह देशसे, लोकसे स्नेह करता है। उसके चरणोंमें उसके लोग हैं। उसके वचनोंसे लाभ उठाते हैं।'

मूसाने प्रत्येक गोत्रका नाम लेकर भिन्न-भिन्न आशीर्वाद दिया।

अन्तिम झाँकी

मानव कारवाँ चला। अपने साथ चालीस वर्षका इतिहास लेकर एक नयी पीढ़ी चली। पुरानी पीढ़ी, वह पीढ़ी जो दासत्वमें पैदा हुई थी, उनकी हड्डियोंको पीछे छोड़ती हुई मुक्त वायुमण्डलमें उत्पन्न मुक्त पीढ़ी चली, एक नया देश बसाने, एक नयी जाति बनाने, एक

नये राष्ट्रका निर्माण करने। उनके साथ था यूसुफका ताबूत। वे ले जा रहे थे उसे उसके पूर्वजोंके पास सुलाने।

मूसा बिदाई ले चुका था। वह धीरे-धीरे चढ़ने लगा पर्वतपर। गोधूलि आ रही थी। दूरपर क्षितिजमें मानव कारवाँ लोप हो रहा था। तूर्यध्वनि भी धीरे-धीरे धीमी होती वायुमण्डलमें लीन हो रही थी। मूसाकी जीवनलीला भी लीन होने लगी।

उसकी पवित्र पलकें आनन्दसे मिलने लगीं। वे फिर खुलीं। सूर्य पहाड़के पीछे डूब रहा था।

वह महान् व्यक्ति एक शिलाखण्डपर बैठा। उसने अपने लिए कुछ न लिया। कुछ न किया। अपनी सन्तानोंके लिए कुछ न किया। अपने कुटुम्बके लिए कुछ न किया। अपनी जीवित वृद्धा माताके लिए और जीवनसहचरी पत्नीके लिए कुछ न किया। कुछ न रखा। उसने दूसरोंके लिए किया। वह दूसरोंके लिए जिया। उसके इस कुछ नहींमें ही उसकी महानता छिपी है।

पिसगाह अर्थात् नेबो पर्वतपर एक गुफा थी। गुफाके अन्दर अपनी मिट्टीकी काया लेकर मिट्टीमें मिलनेके लिए उसने प्रवेश किया। पलकें मिल गयीं। फिर खुलीं। गुफासे निकला। देखा, पवित्र नेबो पर्वत मेघाच्छादित था। मेघ बरसने लगा।

दिन बीत गया। गोधूलि कालमें अचानक हवा बही। मेघ हट गये। शशिकी शान्त रश्मियाँ अमृतवर्षण करने लगीं। नक्षत्र नभोपथसे धीरे-धीरे गमनशील हुए। मूसा लेट गया। भगवान्ने उसके उस मुखसे जिसके द्वारा विश्वकी व्यवस्था मुखरित हुई थी, आत्माको बटोर लिया।

लोग कहते हैं। यहोवाने उसके मुखका चुम्बन किया। कुछ कहते हैं वह यहोवाके साथ चला गया। कुछ कहते हैं कि जब वह योशुआ और एलिजारसे बातें कर रहा था तो मेघमालाने अचानक उसे घेर लिया। वह उपत्यकामें लोप हो गया। और चरवाहे कहते हैं उस गुफामें मूसाका शरीर न था। लोग कहते हैं, देवदूत उसके पवित्र

पार्थिव शरीरको उठा ले गये। उसे मोआबकी उपत्यकामें उस स्थानपर गाड़ दिया जो केवल उन्हें मालूम था। किन्तु मैं कहता हूँ, उसकी महानता यह है कि जिसके लिए उसने सब कुछ किया उसे अपनी मिट्टी देनेका कष्ट भी नहीं उठाने दिया। उसे कब्रकी आवश्यकता न थी। वह जीवित है। उसका व्यक्तित्व जीवित है। जीवित रहेगा—अपनी अद्वितीय गाथाके साथ।

---

५. प्रभु ईसा मसीह

आजसे लगभग चार हजार वर्ष पहलेकी बात है—अब्राहमने यहूदी वंशमें जन्म ग्रहण किया था। उसके वंशने नबियोंको, पैगम्बरोंको और भविष्यवादियोंको उत्पन्न किया है। वह देव-दूतोंका जनक रहा है। उसने सुलेमान जैसे न्याय-प्रिय राजाको जन्म दिया है। उन्हींके पौत्र याकूबके समयमें यहूदिया किंवा फिलिस्तीनमें घोर अकाल पड़ा।

उन दिनों मिस्रमें फरोहा अर्थात् फरयूनके वंशजोंका राज्य था। पवित्र स्रोतस्विनी नील द्वारा आर्द्र मिस्रकी भूमिपर अनोखी सभ्यता एवं संस्कृति मुसकरा रही थी। वहाँ याकूबका सुपुत्र यूसुफ राजा फरयूनका मन्त्री था। प्राण-रक्षा-निमित्त सकुटुम्ब अपने एकादश पुत्रोंके साथ याकूबने मिस्रके लिए प्रस्थान किया।

ईसाका प्रादुर्भाव

चार सौ वर्षके लम्बे कालमें याकूबकी सन्तान मिस्रकी उर्वरा भूमिमें खूब फली-फूली। बहुतोंको किसीका फलना-फूलना सुहाता नहीं। एककी वृद्धि दूसरोंके सरदर्दका कारण बन जाती है। सुख आँखोंमें अखरने लगता है। वे जकड़ गये फरोहाकी पराधीनताकी शृंखलामें। वे त्रस्त हो उठे। चीजें दबायी जानेपर उठती हैं। जन-जाग्रति हुई। मूसाके नेतृत्वमें यहूदी जनता उठी। पराधीनताकी बेड़ियाँ टूटीं। वे मुक्त हुए। चल पड़े अपने स्वदेश यहूदियाको। प्रतिवर्ष उस मुक्ति-दिवसकी सुहावनी स्मृतिमें यहूदी-जगत् पास्का पर्व मनाता है।

उनके नेता मूसाने उन्हें भौतिक मुक्तिके साथ ही साथ अध्यात्मकी ओर उन्मुख किया। ईश्वरकी दस पवित्र आज्ञाओंकी ओर उन्हें आकर्षित किया। धार्मिक परम्परा स्थापित की। अब्राहमकी उसी वंश-परम्पराकी बयालीसवीं पीढ़ीमें प्रभु ईसुने जन्म ग्रहण किया था।

शक्तिशाली रोमन साम्राज्य

जरासन्धके पैरकी तरह रोमन साम्राज्य यूरोपकी सीमा पार कर एशियामें फैल चुका था। फिलस्तीनने गुलामीका तौक पहन ली। सीज़रका पुत्र आगस्टस रोमका सम्राट् था। हिरोद यहूदिया अर्थात् फिलस्तीनका शासक था। फिलस्तीनका राजा शायद वह इसी अर्थमें रहा होगा जिस अर्थमें ब्रिटिश कालमें भारतीय रियासतें थीं। पराधीनताका अभिशाप पतन है। जिन्दगीका सूखना है। यहूदी जातिने अपनी स्वतन्त्रता खोयी। अपनी जन्म-भूमिसे उद्वासित होकर सहस्रों वर्षोंतक विश्वमें आवास-विहीन, देश-विहीन, राज्य-विहीन हो परिभ्रमण करती रही। बीसवीं शताब्दीमें श्वेतांगोंकी कृपासे धर्मके आधारपर भारतकी तरह फिलस्तीन खण्डित कर दिया गया। अरबोंके रक्तसे धूसरित भूमिपर इसराइल राज्य स्थापित हुआ। यहूदियोंने खुशीके चिराग जलाये। कहनेके लिए, जीनेके लिए, रहनेके लिए उन्हें प्रभुसत्ता-सम्पन्न राजस्वरूप एक भूखण्ड मिला। उस राज्यका नाम पड़ा इसराइल।

देवी मरियम

मरिया (मरियम, मेरी) अक्षतयोनि थी। कुमारी थी। उसकी मंगनी यूसुफसे हुई थी। विवाहके पूर्व ही प्रभु गर्भमें आ चुके थे। यूसुफने जनापवादके भयसे विचार किया कि चुपचाप मरियाको त्याग दे। रात्रिमें उसे स्वप्न हुआ। पवित्र कोखमें प्रभुकी पवित्र आत्मा है। स्नेहपूर्वक यूसुफ अपने घर मेरियाको लिवा लाया। गर्भकालपर्यन्त उसने देवी मरियाका स्पर्श नहीं किया।

रोमन जगत्की जनगणना सम्राट् आगस्टसके आदेशपर की जा रही थी। जनगणनामें सम्मिलित होनेके लिए नाजरेत नगरसे यूसुफने अपने पूर्व पुरुष दाउदके आवास पुण्य धाम बेथलहमके लिए प्रस्थान किया।

उन्नीस सौ पचपन वर्ष पूर्व प्रभुने अक्षतयोनि देवी मरियाकी कोख से जन्म ग्रहण किया। जगत्त्राता प्रभुको जिनकी मूर्तियाँ करोड़ों रूपयोंके बने गिरजाघरोंमें आज रखी हैं, जिनके नामपर लोग अरबों

व्यय करते संकोच नहीं करते, बैथलहमकी किसी धर्मशालामें स्थान न मिल सका था। अतएव शिशुको वस्त्रोंमें आवृत कर चरनीमें रख दिया गया।

आठ दिन पश्चात् नामकरण संस्कार हुआ। उनका नाम यीसु रखा गया।

अवतारी शिशुकी चर्चा फैली

सूतिकागृहके पश्चात् अर्थात् शुद्धीकरणके अनन्तर यूसुफ तथा देवी मरिया शिशुको लेकर यरूशलम आये। उन दिनों प्रथा थी कि ज्येष्ठ पुत्रको माता-पिता मन्दिरमें जाकर ईश्वरको अर्पित कर देते थे। शिशु सहित मन्दिरमें उन लोगोंने प्रवेश किया। अपने इकलौते शिशु-को भगवान्के चरणोंमें अर्पित कर दिया।

सिमेयन नामक महात्मा उन दिनों यरूशलममें रहते थे। मन्दिरमें शिशुको देखा। गोदमें लेकर कह उठे—तुम इसराइल जातिकी कीर्ति एवं अन्य जातियोंकी प्रकाश-ज्योति हो। अन्ना नाम्नी चौरासी वर्षीया विधवा थी। उसने केवल सात वर्ष विवाहित जीवन-यापन किया था। उसे लोग देवदूतिनी कहते थे। वह प्रभुकी कीर्ति गान करने लगी।

पूर्वके ज्ञानी पुरुष यरूशलममें आये। वे कहने लगे कि यहूदियोंके राजाने जन्म लिया है। प्राचीमें तारा देखा गया है। उनकी बातोंसे राजा हिरोद घबड़ा गया। उस समय उसकी उम्र लगभग सत्तर वर्षकी थी। राजाने ज्ञानियोंसे तारा-दर्शनका काल पूछा। निवेदन किया कि प्रभुका पता लगाया जाय। सूचना मिलनेपर मैं भी प्रभुको नमस्कार कर कृतार्थ होऊँगा।

तारेका मार्ग-प्रदर्शन

ज्ञानीगण शिशुके अन्वेषणमें अग्रसर हुए। आकाश-मण्डलमें तारा उनका मार्ग-प्रदर्शन करता आगे-आगे चलने लगा। शिशु यीसुके स्थान-पर जाकर तारा स्थिर हो गया। ज्ञानियोंने देवी मरियाके साथ शिशुको देखकर नमस्कार किया। भेंट चढ़ायी। दूसरे मार्गसे स्वदेश लौट गये।

ज्ञानी लोग राजा हिरोदके पास लौटकर नहीं गये। उसके क्रोधकी सीमा न रही। उसने कंसकी तरह आदेश जारी किया कि दो वर्षसे कम उम्रवाले तमाम शिशुओंको मार डाला जाय। यूसुफ प्रभुको उसी प्रकार लेकर मिस्र चले गये जिस प्रकार वसुदेव कृष्णको लेकर वृन्दावन चले गये थे। यहूदियामें राजा हिरोदके स्थानपर जब अरखेलौस राजा हुआ तो प्रभु तथा माता मरियाके साथ पुण्यधाम बैथेलहममें न जाकर गलीलियाके नाजरेत नगरमें येसुफ आगये।

यास्का पर्वमें ईसा

माता-पिताके साथ प्रभु यास्का पर्वमें भाग लेनेके लिए यरूशलम आये। मन्दिरमें वे शास्त्रियों आदिके मध्य बैठे तीन दिनोंतक उनकी बात सुनते तथा प्रश्न करते रहे।

प्रभुकी अवस्था तीस वर्षकी हुई। गलीलिया प्रदेशमें यार्दन नदीके पवित्र तटपर प्रभुने योहन स्नानकर्ता द्वारा स्नान (बपतिस्मा) किया। स्नानान्तर प्रभुने भगवान्‌की प्रार्थना की। प्रार्थना करते ही स्वर्गसे पवित्रात्मा कपोत स्वरूप उतरी। आकाशवाणी हुई—'प्रिय पुत्र! मैं तुमसे अत्यन्त प्रसन्न हूँ।'

मन्दिर या बाजार

यास्का पर्व पुनः समीप आया। प्रभुका आगमन यरूशलममें हुआ। मन्दिरमें बैल, भेड़, कबूतर बेचनेवालोंका जमघट था। प्रभुने रस्सीका कोड़ा बनाया। बैल, भेड़ आदिको मन्दिरसे बाहर किया। व्यापारियोंका टेबुल उलट दिया। मुद्राएँ फेंक दीं। बोल उठे—'भगवान्‌के पवित्र मन्दिरको व्यापार-स्थल न बनाओ।'

आध्यात्मिक चमत्कार

प्रभुने कहा—"देवदूत अपने घरमें आदरका पात्र नहीं होता।" गलीलियाकी ओर प्रयाण किया। वे उपदेशामृत द्वारा लोगोंको तृप्त करने लगे।

काना नगरमें जलको दाखरसमें परिणत किया। वहाँके राज्याधि-

कारीका पुत्र कफरनहहूम असाध्य रोगसे ग्रस्त था। प्रभुने अपने स्थानपर बैठे-बैठे ही उसे जीवनदान दिया। एक अशुद्ध कोढ़ीको स्पर्श कर उसे रोगमुक्त किया।

अर्द्धाङ्गी

प्रभुके चारों ओर जनसमूह था। कुछ लोग एक अर्द्धाङ्गीको खाटपर लाये। प्रभुतक पहुँचना कठिन था। लोगोंने खाटसहित ऊपरसे प्रभुके समीप उसे उतार दिया। उन्होंने कहा 'उठो'। अर्द्धाङ्गी उठ खड़ा हुआ। जिस खाटपर आया था उसे स्वयं लेकर चला गया।

बारह शिष्य

पर्वतपर प्रभु प्रार्थना करने गये, रात्रिपर्यन्त प्रार्थना की। प्रातः उन्होंने अपने शिष्योंमेंसे द्वादश शिष्योंको चुना। उसका नाम प्रेरित रखा। शिष्यों सहित प्रभु उतरे। यहूदिया, यरूशलम, समुद्र तटवर्ती तिरुस तथा सिफोन आदिसे जनसमूह उमड़ पड़ा था। कोई उपदेश ग्रहण करने आया था। कोई प्रेतबाधा दूर कराने आया था। कोई अच्छा होने आया था। कोई शुद्ध होने आया था।

पर्वतपरका प्रवचन

प्रभु पुनः पर्वतरोही हुए। वे पर्वतपर बैठ गये। पवित्र पर्वतीय उपदेश मुखरित हुआ—'दीन धन्य हैं, स्वर्गका राज उनका है। नम्र धन्य हैं, पृथ्वीके वे अधिकारी हैं। शोक करनेवाले धन्य हैं, उन्हें सांत्वना मिलेगी। न्यायके लिए भूखे और प्यासे रहनेवाले धन्य हैं, वे तृप्त किये जायँगे। दयालु धन्य हैं, वे दया प्राप्त करेंगे। शुद्ध हृदय धन्य हैं, भगवान्‌का उन्हें दर्शन प्राप्त होगा। मेल करनेवाले धन्य हैं, वे भगवान्‌की सन्तान कहलायेंगे। न्यायनिमित्त सन्तप्त किये जानेवाले लोग धन्य हैं, स्वर्गका राज्य उनका है। मेरे कारण जिनकी निन्दा होगी, जो सताये जायँगे, जिनपर मिथ्यारोप होगा, जिनपर दोषारोप होगा, वे धन्य हैं। उनके निमित्त स्वर्गमें उनका पुरस्कार सुरक्षित है।

'यदि भगवान्‌की वेदीपर तुम भेंट चढ़ाने आये हो और तुम्हारा

भाई तुमसे रुष्ट है तो वेदीके समीप अपनी भेंट छोड़ दो। पहले भाईका स्नेह प्राप्त करो तब आकर वेदीपर भेंट चढ़ाओ।

'यदि लोभसे तुम्हारे नेत्र किसी नारीपर उठते हैं तो तुम्हारा यह आभ्यान्तरिक व्यभिचार है। तुम्हारा दाहिना हाथ अथवा आँख तुम्हारे पापका कारण बने तो उन्हें उखाड़कर फेंक दो। एक अंगके कारण तुम्हारा शरीर नरकगामी न हो।

'यदि मनुष्य व्यभिचारके अतिरिक्त और किसी कारणसे पत्नीका त्याग करता है अथवा त्यक्त नारीसे विवाह करता है तो वह स्वयं व्यभिचारी है।'

शपथ खाना छोड़ दो

'सौगन्ध मत खाओ। स्वर्गकी सौगन्ध न खाओ। वह भगवान्का आवास है। पृथ्वीकी मत खाओ। वह भगवान्की चरणधूलि है। यरूशलमकी कसम मत खाओ। वह महान् राजाओंकी नगरी है। अपने सरकी कसम मत खाओ, क्योंकि सरका एक बाल भी तुम सफेद या काला नहीं कर सकते।

'जनश्रुति है कि लोग आँखके बदले आँख और दाँतके बदले दाँत चाहते हैं। यदि तुम्हारे दायें गालपर थप्पड़ पड़े तो स्नेहसे बायाँ गाल भी मारनेवालेकी तरफ फेर दो। कोई कुरता छीनना चाहे तो अपनी चादर भी उसे दे दो। कोई आधा कोस बेगारमें ले जाना चाहे तो उसके साथ एक कोस और चले जाओ।

'शत्रुका उपकार करो। उससे स्नेह करो। अपने ऊपर मिथ्यारोप करनेवालेके लिए, अपने ऊपर अत्याचार करनेवालेके लिए, भगवान्से प्रार्थना करो।

'दान करते समय तुम्हारा बायाँ हाथ न जान सके कि दाहिने हाथने क्या किया है।

'उपवासके समय तुम्हारा मुख पाखण्डियोंकी तरह उदास न हो ताकि लोगोंको तुम्हारे उपवासका ज्ञान हो जाय। बल्कि तुम अपने

मुखको धो डालो। इत्र मस्तकपर लगा लो।

'मेरे पीछे हे प्रभु! हे प्रभु!! कहते फिरनेवाले स्वर्गगामी नहीं होंगे, बल्कि भगवान्‌की इच्छापूर्ति करनेवाले स्वर्ग प्राप्त करेंगे। उपदेशानुसार अनुकरण करनेवाला अपने मकानका निर्माण चट्टानपर करता है। सुनकर न अनुकरण करनेवाला बालूपर घर बनाता है जो आँधी, पानी, बाढ़के एक हलके धक्केसे गिर पड़ता है। सर्वनाश कर देता है।'

इकलौता पुत्र जी उठा

समुद्र-तटवर्ती प्रदेशमें भ्रमणशील प्रभुने फरनाहूम शतपतिके दास को अच्छा किया। नाइम नगरके प्रवेश-द्वारपर आते ही प्रभुने देखा कि एक अरथीके साथ भीड़ जा रही थी। एक विधवाका इकलौता लड़का मर गया था। माँ रो रही थी। प्रभुने युवकसे कहा—'उठ।' युवक जी उठा।

विश्वासकी शक्ति

एक फरीसीने प्रभुको भोजनार्थ आमन्त्रित किया। प्रभु बैठे ही थे कि नगरकी एक पापिन स्त्री आयी। उसके हाथमें संगमरमरकी कुप्पीमें इत्र था। उसने अपने आँसुओं द्वारा प्रभुका चरणकमल प्रक्षालित कर अपने सुन्दर केशोंसे पोंछा। भक्तिपूर्वक चरणचुम्बन कर चरणोंपर इत्र लगाने लगी। लोगोंको आश्चर्य हुआ। प्रभु बोले—'इसके हृदयमें प्रेम है। इसके विश्वासने इसकी रक्षा की है। यह शुद्ध है।'

द्वादश प्रेरितोंके साथ प्रभु उपदेश देते फिर रहे थे। देवी मगदेलना, रुसन्ना, मोहन्ना आदि नारियाँ अपनी सम्पत्ति अर्पित कर सेवारत हो गयीं। देवी मगदेलनासे सात भूत निकालकर प्रभुने उसे शुद्ध किया था। उसी प्रकार एक अन्धे और गूँगे भूतग्रस्तको उन्होंने अच्छा किया।

प्रभु लोगोंसे घिरे बैठे थे। प्रभुका ध्यान उन्हें खोजती हुई उनकी माता तथा भाईकी ओर लोगोंने आकर्षित किया। प्रभुने कहा—'भगवान्‌की इच्छा पूर्ण करनेवाला ही हमारी माता और भाई है।'

जब तूफान शान्त हो गया

नाव चली जा रही थी। प्रभु पीछेकी ओर तकिया लगाये सोये थे। आँधी उठी, नौकामें जल भरने लगा। शिष्य व्याकुल हो उठे। प्रभुने कहा—'समुद्र और मरुत भगवान्‌के आदेशानुवर्ती हैं। क्या भगवान्‌पर विश्वास नहीं है ?' आँधी शांत हो गयी।

गलीलियाके गेरसिनियों प्रदेशमें एक भूतग्रस्त मिला। वह न तो घरमें रहता था, न वस्त्र धारण करता था। कब्रोंमें रहता था। प्रभुने भूतको छोड़नेके लिए कहा। भूत निकलकर सुअरोंके समूहमें घुस गया। सुअरोंका समूह दौड़ता हुआ समुद्रमें प्रवेश कर डूब मरा।

विश्वासः फलदायकः

प्रभु नौका द्वारा पार पहुँचे तो सभा-भवनका प्रधान जेरुस उनके चरणोंपर गिर पड़ा। रुग्णा कन्याकी प्राण-भिक्षा माँगने लगा। प्रभु उसके साथ चले। अपार जनसमूह साथ चला। स्रावसे एक स्त्री गत बारह वर्षोंसे पीड़ित थी। उसे विश्वास हो गया कि यदि प्रभुके वस्त्रों तकका ही स्पर्श कर लेगी तो अच्छी हो जायगी। उसने प्रभुके पवित्र वस्त्रोंका स्पर्श किया। वह स्वस्थ हो गयी। प्रभुने कहा, 'पुत्री ! तेरे विश्वासने तुझे अच्छा किया है।'

प्रभु बढ़ रहे थे कि जैरुसके घरवालोंने आकर कहा 'कन्या मर गयी। प्रभुका अब कष्ट करना व्यर्थ होगा।' प्रभु विचलित न हुए। बोले—'विश्वास रखो।' वहाँ पहुँचकर लड़कीका हाथ पकड़कर बोले—'तालियाकुमी' अर्थात् ओ ! लड़की उठ। और वह उठ बैठी !

कुछ आगे बढ़नेपर दो अन्धे मिले। प्रभुने पूछा—'क्या तुम्हें विश्वास है कि हम तुम्हें अच्छा कर देंगे ?' वे विश्वासपूर्वक बोल उठे—'हाँ।' प्रभुने उनकी आँखोंका स्पर्श करते हुए कहा—'तुम्हारे विश्वासानुसार लाभ होगा।' दोनोंकी आँखें खुल गयीं।

गलीलियामें अन्तिम बार उपदेश देते हुए प्रभुने कहा—'यदि तुम्हारा राईके दानेके बराबर भी ईश्वरपर विश्वास है तो पर्वत ढह

सकता है। तुम्हारे लिए कुछ भी असम्भव नहीं है।'

शिष्योंके मध्य एक बालकको खड़ाकर प्रभुने कहा—'स्वर्गका वही अधिकारी होगा जो इस बालक तुल्य छोटा बनेगा। जो इस बालकको ग्रहण करेगा वह हमें ही ग्रहण करता है।

'यदि तुम्हारा हाथ कुमार्गगामी हो तो उसे काट दो। यदि तुम्हारे पैर कुमार्गगामी हों तो उन्हें काट दो। यदि तुम्हारे नेत्र कुमार्गगामी हों तो उन्हें निकाल दो।

'तुम पृथ्वीके लवण हो। विश्वकी ज्योति हो। यदि तुम्हारा भाई अपराध करे तो सात बार नहीं, अपितु सतगुना सात बार क्षमा कर दो।'

मण्डपोंके पर्व निमित्त प्रभु यरूशलममें आये। मन्दिरमें दो भाषण किये। वे साक्षर नहीं थे। दैव-प्रदत्त अन्तर्ज्योति एवं ज्ञान द्वारा लोगोंको आश्चर्य-चकित कर देते थे। भाषणके पश्चात् प्रभु जैतून पर्वतपर चले गये।

क्षमा-दानसे उद्धार

प्रातःकाल प्रभु पुनः मन्दिरमें आकर लोक-कल्याणार्थ उपदेश देने लगे। फरीसी तथा शास्त्रीने एक व्यभिचारिणीको उनके सम्मुख उपस्थित किया। लोग चिल्ला उठे। हजरत मूसाके विधानानुसार पत्थरसे इसे मार डालना चाहिये। प्रभु चुपचाप सुनते हुए भूमिपर कुछ अंकित करने लगे। लोगोंके पुनः आग्रहपर बोले—'तुम लोगोंमें जो निष्पाप हो वह पहला पत्थर मारे।' भीड़ क्षीण होने लगी। वहाँ केवल प्रभु तथा स्त्री रह गयी। प्रभुने स्नेहसे कहा—'जाओ, अब फिर पाप मत करना।'

दैनिक प्रार्थना

यहूदियोंसे वाद-विवादके पश्चात् प्रभु मारिया तथा यहूदियाका दौरा करने लगे। यात्राकालमें देवी मरथा तथा मेरियाको प्रभुकी सेवा-का शुभ अवसर प्राप्त हुआ। प्रभुने दैनिक प्रार्थनाके लिए कहा—

'स्वर्गस्थित हे हमारे पिता! तुम्हारा नाम पवित्र किया जाय।

तुम्हारा नाम अवतीर्ण हो; जिस प्रकार स्वर्गमें अपनी इच्छा पूर्ण होती है उसी प्रकार पृथ्वीपर भी पूर्ण हो। आजके निर्वाहभरके लिए हमें आहार प्रदान कर। जैसे हम अपने अपराधियोंको क्षमा करते हैं, तू हमारे अपराधोंको क्षमा कर। हमें परीक्षामें मत डाल। बुराईसे हमारी रक्षा कर, आमीन।'

प्रभु उपदेश कर रहे थे कि भीड़मेंसे एक नारीने कहा—'धन्य है वह गर्भ जिसमें आप रहे और धन्य हैं वे स्तन जिनका आपने पान किया है!' प्रभुने सुनते ही कहा—'वे अधिक धन्य हैं जो भगवान्‌की गाथा सुनते एवं अनुकरण करते हैं।'

'किससे भयभीत होते हो? उनसे, जो इस शरीरको नष्ट करनेके पश्चात् कुछ और नहीं कर सकते? जिनकी शक्तिका अन्त हो जाता है, उनसे भयभीत न हो। भय उससे करो जो मृत्युके पश्चात् सामर्थ्य रखता है।

'सम्पत्ति द्वारा किसीका जीवन नहीं चलता अतएव लोभसे दूर रहो। प्राणरक्षार्थ चिन्ता न करो कि हम क्या खायेंगे और क्या पहनेंगे। प्राण एवं शरीर भोजन एवं वस्त्रसे कहीं अधिक मूल्यवान् हैं।

'नभगामी पक्षी खेतमें बोता नहीं, काटता नहीं, भण्डार नहीं भरता। ईश्वर उसे पालता है। क्या तुम्हारा जीवन पक्षियोंसे अधिक मूल्यवान् नहीं है? कल अपनी चिन्ता स्वयं कर लेगा। आजका विचार करो।

'पृथ्वीपर एकत्र सम्पत्ति नष्ट होती है। चोरोंका भय रहता है। जहाँ भयरहित सम्पत्ति रह सकती है उस स्वर्गके निमित्त उसे एकत्र करो।'

पत्थर-वर्षा

स्थापन पर्वपर प्रभु यरूशलम आये। वे सुलेमानके बरामदेमें टहल रहे थे। यहूदियोंने उन्हें पत्थरवाह अर्थात् पत्थरके चक्कोंको फेंक-फेंककर मार डालना चाहा, परन्तु वे असफल रहे। प्रभु वहाँसे यार्दन नदीके

उस पवित्र स्थानपर आकर रहने लगे जहाँ योहन स्नानकर्ता निवास करता था।

यरूशलमसे एक कोस दूर बेथानिया ग्राम था। वहीं मरियम और मरथा रहती थीं। मरियाका भाई लाजरुस मरणासन्न हो गया। बीमारीका सन्देश प्रभुके पास पहुँचा।

यरूशलमकी ओर प्रस्थान

प्रभुने यरूशलमके लिए प्रस्थान किया। शिष्योंने प्रभुको सावधान किया कि आप उसी स्थानपर जा रहे हैं जहाँ यहूदियोंने आपको पत्थर-वाह करना चाहा था। समयपर प्रभु बेथानिया पहुँचे।

लाजरुसका स्वर्गवास हुए चार दिन हो गये थे। वह दफना दिया गया था। मरियाने नम्रतापूर्वक कहा कि प्रभुकी उपस्थितिमें वह न मरता। वह पुनरुत्थान (कयामत) के दिन पुनः उठेगा। प्रभुने कहा—'हमी पुनरुत्थान हैं। हमीं जीवन हैं। विश्वासी मरकर भी जीवित रहता है। जो विश्वास करते हैं, मुझमें जीते हैं। वे कभी नहीं मरते।' प्रभुने लाजरुसको उठनेके लिए कहा। वह कफन सहित उठ गया।

सेवासे ही उच्चपदकी प्राप्ति

यरूशलमके मार्गमें माँ जवेदी अपने दो पुत्रोंके साथ प्रभुके सामने वर माँगने लगी कि उनके राज्यमें उसके दोनों पुत्र प्रभुके दायें और बायें बैठें। प्रभुने कहा—'किसीको दायीं और बायीं ओर बैठाना मेरा कार्य नहीं है। यह स्थान उनके निमित्त रक्षित है जिनके हेतु बनाया गया है। दूसरी जातियोंपर जो शासन करते दिखाई देते हैं, अपनी प्रभुता लादते हैं और जो मुखिये अधिकार प्रदर्शित करते हैं वे बड़े नहीं हैं। बड़ा वह है जो सेवा-व्रत वरण करता है। तुममें जो श्रेष्ठ होना चाहे वह सबका दास बने। मैं सेवा करानेके लिए नहीं बल्कि सेवा करनेके लिए आया हूँ। लोगोंके उद्धारनिमित्त प्राणोत्सर्ग करने आया हूँ।'

येरिकोके समीप प्रभु पहुँचे तो तिमेउसका पुत्र वरतिमेउस अन्ध भिखारी मार्गपार्श्वमें बैठा भीख माँग रहा था। उसने प्रभुसे अपने नेत्र माँगे। प्रभुने कहा कि—'अपने विश्वासके कारण तुम नेत्र प्राप्त करोगे।' वह देखने लगा।

येरिकोमें प्रवेश करते ही जनसमूह उमड़ पड़ा। जनकेउस नाकेदारोंका मुखिया था। वह नाटा था। दर्शन निमित्त गूलरके वृक्षपर चढ़ गया। प्रभुने उसे उतरनेके लिए कहते हुए कहा—'जो खो गया है उसीको खोजने वे आये हैं।' तत्पश्चात् प्रभु उसके घर गये।

वेथानियाकी ओर

यास्का पर्वके छः दिन पूर्व प्रभु वेथानिया आये। सिमोन कोढ़ीके घर देवी मरथाने भोजनका आयोजन किया। मरियाने प्रभुके उत्तमांगपर जटामासीका इत्र रखा। उनके चरण-कमलको मला। अपने सुन्दर केशकलापसे प्रभुके चरणोंको पोंछा।

वेथफगे तथा वेथानिया निकटवर्ती पर्वतके समीप प्रभु इसी दिन आये। वे शिष्योंसे बोले—'सामनेवाले गाँवमें एक गदहीके पास उसका बच्चा बँधा है। उसपर अबतक किसीने सवारी नहीं की है, उसे लाओ।' शिष्य गदहेको उसके स्वामीसे माँगकर लाये। उसपर आरोहित प्रभु चले। साथमें लोग चले। मार्गमें लोगोंने वस्त्र बिछा दिये। नव-पल्लव बिखेर दिये। प्रभुके लिए लोगोंमें अपार श्रद्धा-भक्ति देखकर फरीसिया जल उठे।

गेहूँकी उपमा (शीर्षक)

प्रभुके दर्शनार्थ अन्य जातिके लोग आये। प्रभु बोले—'गेहूँका बीज भूमिपर गिरता है। मरता नहीं। भूमिमें अपना अस्तित्व खोकर मिल जाता है। उसमें फल लगते हैं। वह एकसे अनेक होता है। जीवनसे स्नेह रखनेवाले अपना जीवन नष्ट कर देंगे। जीवनसे विरक्त अनन्तजीवन निमित्त अपना जीवन रक्षित रखेंगे।'

यरूशलमके मन्दिरमें प्रभु टहल रहे थे। यहूदी महायाजकों,

शास्त्रियों एवं सनातनियोंने उन्हें मार डालनेका विचार किया, किन्तु भयके कारण साहस न हुआ।

पश्चात्तापसे बड़ा विश्वास

प्रभुने उपदेश देते हुए कहा—'केवल पश्चात्ताप करनेसे स्वर्गद्वार अनावृत नहीं होता। विश्वास करनेवाले नाकेदार और वेश्याएँ स्वर्गमें उनसे पहले पहुँचेंगी जो पश्चात्ताप तो करते हैं परन्तु विश्वास नहीं। जिस पत्थरको कारीगर निरर्थक समझकर त्याग देते हैं वही कोनेका सिरा बन जाता है। राज्य अर्थात् कैसरका जो कर है वह उसे दो और जो भगवान्‌के लिए है उसे भगवान्‌पर अर्पित करो।'

इसराइलियो! परमात्मा एक है। पूर्ण हृदयसे, पूर्ण आत्मासे, पूर्ण मनसे, पूर्ण शक्ति द्वारा उससे प्रेम करो।'

पाखंडियोंको फटकार

शास्त्रियों और फरीसियोंको फटकारते हुए कहा—'कहते हो परन्तु स्वयं करते नहीं। अपनी उँगली भी नहीं लगाना चाहते परन्तु दूसरोंपर असह्य बोझ बाँधकर लाद देते हो। विस्तृत प्रार्थनाकी ओटमें विधवाओंका घर साफ कर जाते हो। पाखंड निमित्त कार्यरत रहते हो। चमड़ेके टुकड़ोंपर तावीजरूपी शास्त्रवचन लिखकर बाहु तथा मस्तकपर बाँधते हो। दावतोंमें प्रथम स्थान, सभा-भवनोंमें मुख्य आसन, बाजारोंमें नमस्कार सुनना तथा लोगोंसे 'स्वामी' सम्बोधित होना तुम्हें प्रिय लगता है।

'तुम सब भाई हो! तुम्हारा स्वामी परमात्मा है। पृथ्वीपर कोई तुम्हारा पिता नहीं है। तुम्हारा केवल एक पिता है। वह स्वयं भगवान् है। तुमसे बड़ा तुम्हारा सेवक है।

'पाखण्डी शास्त्रियो! तुम्हें धिक्कार है। भगवान्‌के स्वर्ग-मन्दिरका द्वार तुम मानवोंके लिए अवरुद्ध करते हो। न तो तुम उसमें स्वयं प्रवेश करते हो और न दूसरोंको जाने देते हो। चेला मूड़नेके लिए तुम पृथ्वी एवं जलपर भटकते फिरते हो। चेला मूड़ लेनेपर चेलेको नारकीय

बना देते हो।

'पाखण्डियो! तुम पात्रोंके बाह्य भागको साफ करते हो। तुम्हारा हृदय तमाच्छन्न है। अशुद्ध है। अन्तर शुद्ध होनेपर बाहर भी शुद्ध हो जायगा। तुम बाहरसे सुन्दर दृश्यमान पुती हुई कब्रोंके समान हो जिसके पेटमें मुर्दोंकी हड्डियाँ एवं अपवित्र वस्तुएँ भरी हैं। बाहर तुम्हारा धार्मिक आडम्बर है, परन्तु अन्तर कपट एवं अधर्मपूर्ण है।'

सर्वश्रेष्ठ दान कौन?

प्रभु कोष-भण्डारके सामने बैठे थे। जनता कोषमें दान डाल रही थी। धनीमानी अधिक छोड़ रहे थे। एक निर्धन विधवाने आकर एक अधेला उसमें छोड़ दिया। प्रभुने कहा—'कोषमें डालनेवालोंमें विधवा-का दान सर्वश्रेष्ठ है। लोगोंने अपने धनके बचे भागका त्याग किया है, परन्तु विधवाने अपना सर्वस्व अर्पण किया है।'

प्रभुने महाप्रयाणका प्रथम भाषण करते हुए कहा—'जो हमें देखता है वह भगवान्‌को देखता है। हमपर विश्वास करनेवाला भगवान्‌पर विश्वास करता है। हम ज्योतिस्वरूप जगत्‌में आये हैं।'

मैं दाख-लता हूँ

'हम वास्तविक दाख-लता हैं। परमात्मा दाख-उद्यानका स्वामी है। इससे बढ़कर और प्रेम नहीं हो सकता कि कोई अपने मित्रके निमित्त प्राणोत्सर्ग कर दे। परस्पर उसी प्रकार प्रेम करो जैसे हमने तुमसे किया है। मैंने तुमको मित्रवत् माना है। तुमने हमारा वरण नहीं किया है, बल्कि हमने तुम्हारा किया है।'

महाप्रयाणका प्रथम संकेत

'शिष्यो! प्रयाण पश्चात् तुम शोकमग्न होगे। विलाप करोगे। परन्तु तुम्हारा शोक आनन्दमें परिवर्तित हो जायगा। माँ प्रसव-वेदना-से दुःखी होती है। प्रसवके पश्चात् दुःख भूल जाती है, यह जानकर कि जगत्‌में एक मानव अवतीर्ण हुआ है। वह समय आयगा जब तुम लोग मुझे अकेला छोड़कर इधर-उधर अपना रास्ता नापोगे। फिर भी

मैं अकेला नहीं रहूँगा। भगवान् मेरे साथ रहेगा।'

षड्यंत्र

दो दिन पश्चात् पास्का पर्व होनेवाला था। कैफस महायाजकके प्रांगणमें प्रधान याजक तथा सनातनी एकत्र होकर विचार करने लगे कि प्रभुको किस प्रकार धोखेसे पकड़कर समाप्त कर दिया जाय।

द्वादश प्रेरितोंमेंसे एक शिष्य यूदसने प्रधान याजकोंसे पूछा कि प्रभुको पकड़वा देनेपर मुझे क्या पुरस्कार मिलेगा। उन्होंने प्रभुके शरीरका मूल्य तीस रजत मुद्रा आँका। यूदसने बीड़ा उठाया।

अन्तिम भोजन

वह प्रभुके अन्तिम सायं-भोजनका दिन था। वह अखमीरकी रोटीका दिन था। पास्काका दिन था। मेमनेके बलि चढ़ानेका दिन था प्रभुने पेत्रुस तथा योहनसे पास्काका मेमना बनानेके लिए कहा। स्थान पूछनेपर प्रभुने कहा—'नगरमें पानीका घड़ा ढोता हुआ एक व्यक्ति मिलेगा। उसका अनुसरण करते हुए, जिस घरमें वह प्रवेश करे उसके स्वामीसे कहना कि वह अतिथिशाला दिखा दे। वहाँ गुरुके साथ शिष्य पास्काके मेमनेका भोजन ग्रहण करेंगे। स्वामी तुम्हें सुसज्जित भोजनशाला दिखा देगा। वहीं तुम तैयारी करना।'

मुहूर्त लगते ही प्रभु अपने द्वादश शिष्योंके साथ अन्तिम ब्यालू करने बैठे और बोले—'मेरी अतीव इच्छा थी कि दुःख भोगनेके पूर्व मैं तुम लोगोंके साथ पास्काका मेमना ग्रहण करता, किन्तु अन्तिम आहुतिके पूर्व न पा सकूँगा।'

प्रभुने पात्र शिष्योंकी ओर बढ़ाया। धन्यवाद दिया। बोले—'परस्पर बाँट लो।'

शिष्य बोल उठे—'हममें कौन श्रेष्ठ है?'

प्रभुने उत्तर दिया—'मैं तुम्हारे मध्य सेवक स्वरूप बैठा हूँ।'

प्रभु ब्यालूसे उठ गये। अपने वस्त्रोंको उतार दिया। कटिसे अंगोछा खोंसा। जलपात्र लेकर शिष्योंका पैर धोने और अंगोछेसे

पोंछने लगे।

पाँव धोनेके पश्चात् प्रभु पुनः बैठ गये। बोले—'यदि गुरु और प्रभु होकर तुम्हारे चरणोंको मैंने धोया है तो तुम्हें भी परस्पर एक दूसरेका पाँव धोना चाहिये।'

प्रभुने कहा—'जो मेरे साथ भोजन करता है वह मुझपर लात उठायेगा। मैं तुमसे सत्य कहता हूँ, मेरे भेजे हुएको जो ग्रहण करता है वह मुझे ग्रहण करता है। जो मुझे ग्रहण करता है वह मेरे भेजनेवाले को ग्रहण करता है।'

विश्वासघातीके लिए दुःख

प्रभुने दुःखमय वाणीसे कहा—'शिष्यो! तुममेंसे एकके कारण मैं बन्दी हूँगा।'

शिष्य चकित हुए।

प्रभुने कहा—'मेरे साथ थालीमें ग्रास ग्रहण करनेवालेको ही मुझे बन्दी बनानेका श्रेय प्राप्त होगा। मैं जाता हूँ। उसके लिए दुःखी हूँ जो मेरे साथ विश्वासघात करेगा। उत्तम होता कि वह जन्म ही न लेता।'

यूदस बोला—'गुरो! क्या वह मैं हूँ?'

प्रभुकी वाणी मुखरित हुई—'तुमने कह दिया।'

प्रभुके पवित्र वक्षस्थलपर झुककर एक शिष्यने कहा—'प्रभु वह कौन है?'

'रोटीका टुकड़ा जिसे डुबोकर दूँगा।'

प्रभुने रोटीका टुकड़ा डुबोकर यूदसको देते हुए कहा—'शीघ्र कार्य सम्पन्न करो।'

किसीकी बुद्धिमें कोई बात नहीं आयी। यूदस टुकड़ा लेकर शीघ्रतापूर्वक बाहर निकल आया। उस समय रात्रि थी।

मेरा रक्त

भोजनके समय प्रभुने एक रोटी अपने आशीर्वचनोंके साथ तोड़ी।

शिष्योंको देते हुए बोले—'ग्रहण करो। यह मेरा शरीर है।'

कटोरा लेते हुए प्रभुने धन्यवाद दिया। बोले—'इसे पान करो। नवीन सन्धिका मेरा रक्त है। अनेकोंकी पापक्षमाके लिए बहेगा।'

'पुत्रो !'—प्रभुने कहा—'तुम्हारे पास थोड़े समय मैं और हूँ। तुम मुझे खोजोगे। किन्तु तुम वहाँ न आ सकोगे। मैं तुम्हें एक नवीन आदेश देता हूँ। परस्पर प्रेम उसी प्रकार रखो जैसे मैंने तुमसे प्रेम रखा है। तुम्हारे इस पारस्परिक प्रेम द्वारा ही लोग जानेंगे कि तुम मेरे शिष्य हो।'

पेत्रुस बोल उठा—'प्रभु ! आपके साथ बन्दी बनूँगा—मरूँगा।'

'पेत्रुस' !—प्रभुने कहा—'आज ही रात मुर्गेके दो बार बाँग देनेके पूर्व ही तुम मुझे अस्वीकार करोगे।'

सब शिष्य बोल उठे—'आपके संग मरना ही क्यों न पड़े परन्तु हम आपको अस्वीकार न कर सकेंगे।'

प्रभुने कहा—'जिसके पास थैली है, झोली है या केवल वस्त्र है वे उसे बेचकर कृपाण खरीद लें।'

शिष्योंने कहा—'प्रभु यहाँ दो कृपाण मौजूद हैं।'

प्रभु कह उठे—'बहुत हैं।'

महाप्रयाणकी द्वितीय वक्तृता

महाप्रयाणकी द्वितीय वक्तृता देते हुए प्रभुने शिष्योंसे कहा—'मैं ही पथ हूँ। मैं ही सत्य हूँ। मैं ही जीवन हूँ। यदि हमें जानते हो तो निस्सन्देह परमात्माको भी जानते हो। जो हमें देखता है वह भगवान्‌को देखता है। क्या तुम विश्वास नहीं करते कि मैं परमात्मा हूँ और वह मुझमें है। परमात्माका मैं निवासस्थान हूँ। वही मुझसे कार्य सम्पन्न कराता है ? यदि मुझसे प्रेम करते हो तो मेरी बातोंका अनुकरण करो। अपनी शांति तुम्हें देता हूँ। तुम्हारे हेतु शांति छोड़ जाता हूँ। मैं तुम्हें भौतिक शांति नहीं देता हूँ। यदि तुम्हारे हृदयमें मेरे लिए प्रेम होगा तो तुम आनन्दित होगे कि मैं परमात्माके पास जाता हूँ।

चलो, यहाँसे चलें।'

प्रभुने आकाशकी ओर देखकर कहा—'भगवन्! समय आ गया। अपने पुत्रको कीर्ति दो। आपका ही सत्य स्वरूप एक ईश्वर जानना अनन्त जीवन है। जो काम आपने सौंपा था मैंने उसे किया है। मेरा सर्वस्व आपका है और आपका सर्वस्व मेरा है। मैं चरणोंमें आ रहा हूँ। मैं वन्दना करता हूँ। मनुष्योंको कुमार्गसे बचाओ। सत्य द्वारा उन्हें पवित्र करो।'

प्रभु बाहर आये। वे जैतून पर्वतपर केद्रन नाला पारकर आरोहित हुए। उनके शिष्य उनके साथ थे। वे गेत सेमनी उद्यानमें पहुँचे। शिष्योंसे बोले—'बैठो। प्रार्थना करके आता हूँ।'

अन्तिम प्रार्थना

प्रभुने अपने साथ पेत्रुस, याकूब तथा योहनको ले लिया। बोले—'तुम यहीं जागते हुए ठहरो।'

प्रभु आगे बढ़कर भूमिपर प्रार्थना करने लगे। मरणासन्न स्थितिके कारण उनका मन एकाग्र हो गया था। रक्त-बिन्दुके समान उनका पसीना भूमिपर गिरने लगा। बोले—'पिता! तुम्हारी इच्छा पूर्ण हो।'

लौटकर प्रभुने देखा, उनके सब शिष्य निद्राभूत थे। वे पेत्रुससे बोले—'क्या एक घण्टा तुम मेरे साथ जाग नहीं सकते? जागो, आत्मा सन्नद्ध है। शरीर दुर्बल है।'

प्रभु दूसरी बार प्रार्थना कर लौटे। उनके कमलनेत्र भारी थे। शिष्य सो रहे थे। प्रभु शिष्योंको सोते छोड़कर पुनः तृतीय बार प्रार्थना करने चले गये। लौटकर बोले—'सोओ। विश्राम करो। समय आ गया। विश्वासघातके कारण पापियोंके हाथोंमें मनुष्यका पुत्र होगा।'

यूदसका विश्वासघात

यूदस जानता था कि प्रभु कहाँ थे। सैनिकों, सिपाहियों, मशाल, दीपक तथा हथियारके साथ वह प्रभुके निकट आया। उसने संकेत कर दिया था—जिसका वह चुम्बन करेगा वही प्रभु होंगे। उन्हें ही

गिरफ्तार करना होगा।

'गुरो ! नमस्कार !'—कहते हुए यूदसने प्रभुका चुम्बन लिया।

प्रभु आगे बढ़े। बोल उठे—'किसकी तलाशमें हो ?'

'येसु नासरीकी।'— वाणी गूँज उठी।

'मैं ही हूँ।'

पकड़नेवाले पीछे हटते भूमिपर गिर पड़े। प्रभुने पुनः पूछा—'किसे खोजते हो।'

'येसु नासरीको।'—उत्तर मिला।

'मैं ही हूँ।'

उन लोगोंने प्रभुको पकड़ लिया। पेत्रुसने महायाजकके दास मलकुसपर तलवार चलायी। उसका दाहिना कान कट गया। प्रभु बोले उठे—'ठहरो।'

प्रभुने मलकुसको अच्छा कर दिया। प्रभुने पेत्रुससे कहा—'म्यानमें तलवार रख लो। तलवार उठानेवाला तलवारसे ही मरता है।'

प्रभुने पकड़नेवालोंसे कहा—'तलवार और लाठियाँ लेकर क्या डाकू पकड़ने निकले हो ? मैं प्रायः प्रतिदिन तुम लोगोंके साथ मन्दिरमें था। क्यों नहीं पकड़ लिया ? अब तुम्हारा समय है। अन्धकारका अधिकार है।'

प्रभुको बाँधकर लोग ले चले। उनके सभी शिष्य भाग खड़े हुए। एक नंगा बदन युवक चादर ओढ़े प्रभुके पीछे चल रहा था। सिपाहियोंने उसे पकड़ा। वह चादर छोड़ नंगा ही भागा।

ईसा वन्दीके रूपमें

प्रभु पहले महायाजक कैफसके श्वसुर अन्नसके सम्मुख उपस्थित किये गये। अन्नसने प्रभुको बँधेबँधाये कैफसके पास भेज दिया। कैफसके समीप याजक, शास्त्री तथा सनातनी एकत्र थे।

शीतके कारण भवनके बाहर भृत्य और प्रहरियोंके साथ पेत्रुस भी आग ताप रहा था। महायाजककी दासी उसे पहचानकर बोली—

'नासरी येसुके तुम भी सखा थे ?' पेत्रुसने उत्तर दिया—'यह तुम क्या कह रही हो !' पेत्रुसका कहना था कि मुर्गेने पहली बाँग दी।

महायाजकने प्रभुके उपदेश एवं शिष्योंके सम्बन्धमें प्रश्न किया। प्रभुने कहा—'मैंने प्रकटमें सब बातें की हैं। सभास्थल, मन्दिर तथा जहाँ जनता एकत्र होती थी वहीं बात कही है। मैंने कुछ छिपाया नहीं है।'

प्रभुका उत्तर सुनते ही समीपस्थ एक प्रहरीने प्रभुको एक थप्पड़ मारा। द्वारसे निकलते हुए एक दूसरी दासी पेत्रुसको देखकर बोल उठी—'येसु नासरीके यह भी साथ था।' पेत्रुसने शपथपूर्वक कहा—'मैं उनके साथ नहीं था।'

समीपस्थ लोगोंने पेत्रुससे कहा कि तुम शिष्योंमेंसे एक हो। पेत्रुसने जिसका कान काट लिया था उसके सम्बन्धीने कहा—'येसुके साथ उद्यानमें तुम्हें मैंने देखा था।' पेत्रुसने धिक्कारपूर्वक शपथ खाकर कहा—'जिस व्यक्तिके सम्बन्धमें तुम बात करते हो उसे मैं जानता भी नहीं।' उसी समय मुर्गेने दूसरी बार बाँग दी। पेत्रुस बाहर आकर फूटफूटकर रोने लगा।

बृहस्पतिकी रात थी। प्रभुको पकड़े हुए लोग उनकी हँसी उड़ाने लगे। परिहास करने लगे। उन्हें पीटने लगे। उनपर थूकने लगे। उनका मुख ढँककर मुखपर मारते हुए पूछने लगे—'भविष्यवाणी कर, किसने तुझे मारा ?'

प्राणदण्डकी घोषणा

शुक्रवारके उषाकालमें महायाजक आदि प्रभुकी हत्याके निमित्त परामर्श करने लगे। उन लोगोंने गवाह ढूँढ़े। कोई गवाही ठीक न उतरी। महायाजकने पूछा—'क्या तू ईश्वरका पुत्र है ?' प्रभुने कहा—'क्या आप कहते हैं कि मैं ईश्वरका पुत्र हूँ ?' महायाजकने सुनते ही प्रभुका वस्त्र फाड़ दिया। बोल उठा—'साक्षीकी क्या आवश्यकता ? इसने भगवान्‌की निन्दा की है। बोलिये आप लोगोंका क्या विचार

है। यहूदी महासभा चिल्ला उठी—'प्राणदण्ड !'

प्राणदण्डकी घोषणा सुनते ही यूदस पश्चात्ताप करने लगा। मिली हुई तीस रौप्य मुद्राओंको उसने महायाजकों तथा प्रधानोंको लौटा दिया। परन्तु वे बोले—'हमें इनसे क्या मतलब। तू जान, तेरा काम जाने।' यूदस मुद्राओंको वहीं फेंककर भागा। उसने फाँसी लगाकर आत्महत्या कर ली।

रौप्य मुद्राओंको लेकर प्रधान याजकोंने कहा। यह रक्तकी कीमत है। इसे कोषमें रखना अनुचित है। इन मुद्राओंका क्या उपयोग किया जाय ? वाद-विवाद होता रहा। अन्तमें निश्चय हुआ कि परदेशियोंके कब्रिस्तान निमित्त भूमि एक कुम्हारसे खरीद ली जाय। वह भूमि आज भी हकेन्दमा अर्थात् रक्तभूमि कहाती है।

मैं संसारका राजा नहीं

यहूदी लोग कैफससे यीसुको शासकीय भवनमें लाये। उन्होंने भवनमें प्रवेश इसलिए नहीं किया ताकि पास्का मेमना खा सके।

रोमन प्रशासक पिलातुसने पूछा—'इस मनुष्यपर क्या अभियोग लगाया गया है ?''

जनरव कह उठा—'यदि निर्दोष होता तो उसे हम यहाँ क्यों लाते ?'

पिलातुस बोला—'अपने नियमानुसार तुम्हीं लोग इसे दण्ड दो।'

यहूदी जनता बोली—'हमें प्राणदण्ड देनेका अधिकार नहीं है।'

पिलातुस गंभीर हो गया।

जनता चिल्लाने लगी—'यह जातिको उभाड़ता है। राज्यको कर देनेसे मना करता है। स्वयं अपने-आपको राजा कहता है।'

पिलातुस भवनमें चला गया। उसने प्रभुको बुलाकर पूछा—'क्या तुम यहूदियोंके राजा हो ?'

प्रभुने कहा—'आप स्वयं पूछते हैं या किसीके कहनेसे प्रश्न करते हैं ?'

पिलातुसने कहा—'मैं यहूदी नहीं हूँ। तुम्हारी जातिके लोगोंने

न्याय निमित्त तुम्हें मेरे हाथों सौंपा है। तुमने क्या अपराध किया है?'

प्रभु बोले—'मेरा राज्य इस दुनियाका नहीं है। यदि इस जगत-का राजा होता तो यहूदियोंके हाथोंमें पड़नेके पहले मेरे सेवक मेरी रक्षा निमित्त उनसे संघर्ष करते।'

मैं सत्यका पुजारी हूँ

पिलातुसने प्रश्न किया—'क्या तुम राजा हो?'

प्रभुने कहा—'मैं सत्यका साक्षी हूँ। सत्यका आदर करनेवाले मेरा शब्द सुनते हैं।'

पिलातुस बोला—'सत्य क्या है?'

प्रधान याजक तथा सनातनी उनपर अनेक आरोप लगाने लगे।

प्रभुने किसी आरोपका उत्तर न दिया।

पिलातुसने पूछा—'अपने विरुद्धकी साक्षियाँ सुन रहे हो?'

प्रभुने कुछ उत्तर न दिया।

पिलातुस चकित हो गया। उसने कहा—'मैं कोई दोष नहीं पाता। मुझे कोई अपराध दिखाई नहीं देता।'

भीड़ चिल्ला उठी—'गलीलियासे यहाँतक इसने यहूदियोंको उभाड़ा है।'

पिलातुस बोल उठा—'क्या यह गलीलियाके हैं?'

भीड़ बोल उठी—'हाँ।'

पिलातुस कह उठा—'यरूशलममें राजा हिरोद उपस्थित है। इन्हें उनके पास ले जाओ। वही गलीलियाका शासक है।'

हिरोदके सम्मुख

येसुपर दृष्टि पड़ते ही हिरोद प्रसन्न हो गया। हिरोदने येसुसे अनेक प्रश्न किये। प्रभुने उत्तर नहीं दिया। समीपस्थ प्रधान याजक एवं शास्त्री प्रभुपर अनेक आरोप लगाने लगे।

अपनी सेनाके साथ हिरोदने प्रभुका अपमान किया। उन्हें श्वेत वस्त्र पहनाया। उनका उपहास किया। प्रभुको पिलातुसके पास पुनः

प्रत्यावर्तित किया। हिरोद पिलातुससे द्वेष रखता था। परन्तु इस घटनासे वह द्वेष भूल गया। पिलातुसका मित्र बन गया।

पिलातुसने प्रधान याजकों, शास्त्रियों आदिको एकत्र कर कहा—'आप लोग यहूदियोंके उभाड़नेका इसपर आरोप करते हैं। मैंने आप लोगोंके सम्मुख जाँच की। मैंने उसे निर्दोष पाया। हिरोदने उसे निर्दोष पाया। प्राणदण्ड योग्य उसने कोई अपराध नहीं किया है। मैं उसे पिटवाकर छोड़ दूँगा।'

यहूदियोंकी हठधर्मी

परम्परानुसार पास्का पर्वके दिन यहूदियोंके इच्छानुसार पिलातुस एक बन्दी मुक्त कर देता था।

बारावस नामक व्यक्तिने हत्या की थी। वह राजद्रोही था। भीड़ने कहा—'परम्परानुसार एक बन्दी मुक्त करो।'

पिलातुस बोला—'येसुको मुक्त करूँ या बारावसको।'

पिलातुस समझ गया कि ईर्ष्याके कारण यहूदी प्रभुकी हत्या करनेपर तुल गये हैं। वह न्यायासनासीन था। उसकी स्त्रीने उसके पास संदेश भेजा कि धार्मिक येसुके विषयमें वह कुछ न करे।

क्रोधपूर्ण भीड़ कह उठी—'बारावसको मुक्त करो।'

पिलातुसने समझाया कि येसुको मुक्त करना ठीक है। वे न माने। पिलातुसने परेशान होकर पूछा—'मैं येसुका क्या करूँ ?'

सब चिल्ला उठे—'उसे क्रूश दो।'

पिलातुसने पुनः कहा—'उसे क्यों क्रूश दूँ। उसने प्राणदण्ड योग्य कोई अपराध नहीं किया है। मैं उसको पिटवाकर मुक्त करूँगा।'

भीड़ भड़क उठी—'उसे क्रूश दो।'

पिलातुसकी एक न मानी

भीड़को बिगड़ती देखकर पिलातुसने बारावसको मुक्त कर दिया। प्रभुको कोड़ा मारनेका आदेश दिया। प्रभुने शान्तिपूर्वक मार सही।

प्रतिहारीगण प्रभुको भवनके प्रांगणमें लाये। उनके चारों ओर

सैनिक खड़े कर दिये गये। प्रभुका वस्त्र उतार दिया गया। उन्हें लाल वस्त्र पहनाया गया। उत्तमांगपर काँटोंका मुकुट रखा गया। दाहिने हाथमें सरकण्डा थमाया गया। अनन्तर उनके सम्मुख घुटने टेककर वे परिहास करने लगे—'यहूदियोंके राजा! नमस्कार!!' तत्पश्चात् प्रभुके मुखपर थूकने लगे। सरकण्डेसे उनके मूर्धापर मारने लगे।

पिलातुसने जोर देकर कहा—'मैं इसमें कोई दोष नहीं पाता हूँ। मैं इसे बाहर तुम्हारे सम्मुख लाता हूँ।'

प्रभु काँटोंका मुकुट और बैंगनी रंगका वस्त्र पहने बाहर आये। पिलातुसने कहा—'येसुको देखो।'

महायाजक एवं प्रतिहारियोंने देखते ही आवाज बुलन्द की—'क्रूश दो, क्रूश दो।'*

पिलातुस बोला—'यह निर्दोष है। तुम इसे ले जाओ स्वयं क्रूश दो।'

यहूदियोंने उत्तर दिया—'इसने अपनेको ईश्वरका पुत्र कहा है। हमारे नियमानुसार मृत्युदण्ड आवश्यक है।'

पिलातुस भयभीत हो उठा। भवनमें आकर कहा—'तुम कहाँके हो?'

प्रभुने कोई उत्तर नहीं दिया।

पिलातुसने कहा—'तुम मुझसे क्यों नहीं बोलते? मैं तुम्हें स्वाधीनता एवं क्रूश दोनों ही दे सकता हूँ।'

प्रभुने कहा—'जिसने मुझे आपके सुपुर्द किया है उसका पाप अधिक है।'

पिलातुस प्रभुको मुक्त करनेका उपाय ढूँढ़ने लगा। यहूदी चिल्लाने लगे—'यह स्वयं राजा बनता है। राजा बननेवाला 'रोम सम्राट्'का विरोधी है। यदि आपने इसे छोड़ दिया तो सम्राट्के मित्र न कहे जायँगे।'

उत्तेजित भीड़की माँग

पिलातुस प्रभुको बाहर लाया। न्यायासनपर बैठ गया। वह स्थान

लिथोस्त्रोतोस था। यास्का आयोजनका दिन था। छः घड़ी दिन व्यतीत हो चुका था। उसने यहूदियोंको सम्बोधित किया—'तुम अपने राजाको देखो।'

वे चिल्ला उठे—'हटाओ। दूर करो। क्रूश दो।'

पिलातुस बोल उठा—'क्या मैं तुम्हारे राजाको क्रूश दूँ ?'

प्रधान याजक बोल उठे—'रोम सम्राट्के अतिरिक्त हमारा कोई राजा नहीं है।'

जनरव उत्तेजित होता जा रहा था। पिलातुसने जल मँगाया। सबके सामने अपना हाथ धोकर कहा—'इस धार्मिककी हत्याका मुझ-पर दोष नहीं है। यह तुम्हारा है। तुम्हीं जो चाहे करो।'

यहूदी जाति बोली—'इसकी हत्या हमपर और हमारी सन्तानोंपर है।'

पिलातुसने प्रभुको यहूदियोंके हाथोंमें दे दिया।

मेरे लिए आँसू न बहाओ

प्रतिहारियोंने प्रभुका उपहास कर बैगनी वस्त्र उतार लिया। उनका निजी वस्त्र उन्हें पहननेके लिए दिया।

प्रभु क्रास अपने कन्धोंपर ढोते गोलगोथाकी ओर चले। प्रति-हारियोंने मार्गमें एक किरीनी सियोन ग्रामीणको पकड़कर उसके ऊपर क्रास लाद दिया। वह प्रभुके पीछे-पीछे चलने लगा।

प्रभु महाप्रयाण निमित्त जा रहे थे। पीछे उनके क्रास लादे सियोन था। जनसमूह था। बिलखती नारियाँ थीं। विलाप करती माताएँ थीं। यीसूने उनकी ओर घूमकर कहा—'पुत्रियो ! मेरे लिए आँसू न बहाओ।'

प्रभुके दाहिने-बायें दो अपराधी प्राणदण्डके लिए चल रहे थे। गोलगोथा पहुँचनेपर प्रतिहारियोंने दाख-रस प्रभुको पीनेके लिए दिया। उन्होंने मुखसे लगाकर वापस कर दिया। पी न सके। एक पहर दिन चढ़ चुका था। तीन क्रास लगे थे। मध्यमें प्रभु तथा अगल-बगल दोनों अपराधी क्रासपर चढ़ा दिये गये।

प्रभुने चढ़ते हुए कहा—'भगवन् ! क्रासपर चढ़ानेवालोंको क्षमा कर। वे नहीं जानते कि क्या कर रहे हैं।'

प्रभुके क्रासपर पिलातुसने इब्रानी, यूनानी और लेटिन भाषाओंमें आरोपपत्र लिखकर टँगवा दिया था—'यीसु नासरी यहूदियोंका राजा।'

यहूदियों तथा प्रधान याजकोंने पिलातुससे विरोध किया कि दोष-पत्रपर यीसु नासिरी यहूदियोंका राजाके स्थानपर यह लिखा जाय कि उसने घोषित किया कि वह यहूदियोंका राजा है। पिलातुसने आरोप-पत्र परिवर्तित करना स्वीकार न किया।

क्रासपर चढ़नेके समय

क्रासपर चढ़ानेके पश्चात् प्रतिहारियोंने प्रभुका वस्त्र उतारकर चार भागोंमें बाँट लिया। प्रभुका कुरता बिना सिला बना था। कुरतेको फाड़कर बाँटना कठिन था। उन लोगोंने कुरतेके लिए चिट्ठियाँ डालीं। वे वहीं बैठकर पहरा देने लगे।

प्रतिहारी उपहास करने लगे। यदि तू ईश्वरका पुत्र है, यहूदियों-का राजा है तो अपनी रक्षा कर। प्रभुके साथ क्रासपर चढ़ा एक अप-राधी कहने लगा—'यदि तू वास्तवमें खीस्त है तो हमारी और अपनी रक्षा कर।' दूसरे क्रासपर चढ़े अपराधीने उसे डाँटकर कहा—'दण्ड भोगता हुआ भी तू ईश्वरका भय नहीं खाता? हम न्यायानुसार अपराधका दण्ड भोग रहे हैं परन्तु इन्होंने क्या अपराध किया है?'

प्रभुके क्रासके पास उनकी माता, मैरसी और मरिया मगदेलना खड़ी थीं। माँके पास प्रभुका एक प्रिय शिष्य खड़ा था। माँकी ओर देखते हुए प्रभुने कहा—'यह तुम्हारा पुत्र है।' शिष्यको सम्बोधित करते हुए बोले—'तुम्हारी यह माँ है।'

तीसरे पहर प्रभु बोल उठे—'एलोई एलोई लक्या सवक्थानी।' अर्थात् ओ भगवन्! ओ भगवन्!! क्या तूने मुझे त्याग दिया?

प्रभुने कहा—'प्यासा हूँ।'

उस स्थानपर सिरकेसे पूर्ण एक पात्र रखा था। एक प्रतिहारी

दौड़कर आया। सिरकेमें पनसुख्ता डुबाकर सरकण्डेपर लगाया। प्रभुको पीनेके लिए दिया। प्रभुने कहा—'सब पूर्ण हो चुका है।'

प्रभुकी पवित्र उदात्तवाणी गूँजी—'परमात्मन्! तुझे अपनी आत्मा सौंपता हूँ!'—कहते-कहते उनका मस्तक झुक गया।

महाप्रयाणके पश्चात्

देवी मरिया, मेगदलेना तथा सलोमी प्रभुकी सेवा गलीलियासे ही करती आयी थीं। वे उनका महाप्रयाण दूरसे बैठी देख रही थीं।

यहूदियोंने पिलातुससे निवेदन किया कि यास्का आयोजनका दिन है। अपराधियोंके पाँव तोड़ दिये जायँ। पर्वके दिन क्रासपरसे उतार लिये जायँ क्योंकि धर्मनियमानुसार यह विश्रामका दिन है।

प्रतिहारियोंने आकर पहले अपराधीकी टाँग तोड़ दी, फिर दूसरेकी तोड़ी। प्रभुके पास आये तो देखा कि वे महाप्रयाण कर चुके थे। अतएव टाँग तोड़नेका प्रश्न उत्पन्न न हुआ। एक प्रतिहारीने मृत प्रभुकी बगलमें बरछा भोंक दिया। रक्त और जल साथ ही बह चले।

योसेफ यहूदियोंके अरमीथिया नगरका सभासद था। उसने सायंकाल पिलातुससे प्रभुकी शवप्राप्तिके निमित्त निवेदन किया। पिलातुस आश्चर्यचकित रह गया कि प्रभुका इतने शीघ्र प्राणान्त कैसे हो गया। शतपतिसे निश्चय करानेपर कि प्रभु महाप्रयाण कर चुके हैं, शव योसेफको देनेकी आज्ञा दी गयी।

प्रभुका पवित्र शव सुगन्धित द्रव्योंसे सुगन्धित किया गया। यहूदियोंकी रीतिके अनुसार शव वस्त्रमें लपेटा गया। क्रूस-स्थलीके समीप एक उपवन था। उस उपवनमें किसी मृतके निमित्त एक कब्र खोदी गयी थी। शायद यास्काके कारण उसे दफनाया न जा सका था। प्रभुका पार्थिव शरीर उसी कब्रमें गाड़ दिया गया।

यास्काके दूसरे दिन प्रधान याजकों एवं फरीसियोंने पिलातुससे संयुक्त प्रार्थना की। उन्हें भय था कि प्रभुका शरीर उनके शिष्य कब्रसे चुरा ले जायँगे। वे प्रचार करेंगे कि पूर्व कथनानुसार प्रभु मृतकोंमेंसे

पुनः जीवित हो उठे हैं। पिलातुसने कहा—'तुम्हारे पास प्रहरी हैं। अपनी बुद्धिके अनुसार पहरा बैठा दो।' वे कब्रपर आये। कब्रके पत्थरपर सील-मुहर कर दी। पहरा बैठा दिया। यहूदी लोग प्रभुको पहरेमें रख सके या स्वयं पहरेमें हजारों वर्ष त्रस्त घूमते रहे, इसे विश्वने देख लिया है। प्रभुका कहना सत्य हुआ कि शक्तिसे शक्तिका शमन शायद न हुआ है और न होगा।

६. पैग़म्बर मुहम्मद साहब

अरबके देवता

कुल-देवता, ग्राम-देवता, नगर-देवता, प्रदेश-देवता, देश-देवता, गोत्र-देवता, जाति-देवतादिका जमाना था। आद्य मनुष्यने प्राकृतिक शक्तियोंकी शक्ति देख उन्हें देवस्वरूप मान हाथ जोड़कर नमस्कार किया। समुद्र, जलाशय, पुष्करिणी, सरोवर, नदी, मेघ देवीदेवता बन गये। पत्थरोंपर, चट्टानोंपर, धातुओंपर, लकड़ियोंपर, मनुष्यने अपने भावनानुसार देवी-देवताकी आकृति उरेह कर उनके चरणोंपर मस्तक रख दिया।

आकाशमें बिजली चमकी, मनुष्यने उसे भी देवता मान लिया। शीतल हवा बही; झुलसानेवाली लू चली, उन्हें भी मनुष्यने देवता मान लिया। बवण्डर उठा, वह भी देवता बन गया। आकाशमें नक्षत्र चमके। मनुष्य चकराया। वे निरावलम्ब नभमण्डलमें स्थित थे। मनुष्यने उन्हें देवता मान लिया।

वृक्ष फल देते हैं। शीतल छाया देते हैं। पशु दूध देते हैं। मनुष्य उन्हें स्वयं बना न सकता था, अतः उन्हें भी देवता बनानेसे न हिचका।

मनुष्य मरता है। गड़ता है। उसकी हड्डियाँ कब्रोंमें गल जाती हैं। वह चाहे सुन सकता हो या न सुन सकता हो, किन्तु हम उसे सुनाते हुए, देवता मान बैठे। शरीरसे कूचकर आत्मा कहाँ जाती है, इस रहस्यका हल न होता देख मनुष्यने उसे भी देवता मान लिया। अरबके मनुष्य नामधारी जीव यदि किसीको देवता माननेका साहस न कर सके थे तो वे स्वयं मनुष्य थे जिन्हें देवता माननेमें नाना प्रकारकी उलझनें शायद पैदा हो सकती थीं।

हत मृतात्मा अपनी कब्रपर पक्षी बनकर मँडराती है। जबतक हत्यारेका रक्तपान नहीं करती, शान्त नहीं होती। अतएव पुश्त दर-पुश्ततक नौनिहालोंको प्रतिहिंसाकी भयंकर अग्निमें जलाते रहना लोगों ने पसन्द किया था। मृतात्माकी सवारीके लिए जीवित ऊँटनी कब्रके पास बाँध दी जाती थी। बिना चारा, बिना जल वह गल-गलकर मर जाती। अरबवाले समझते, आत्मा उसपर सवार होकर चली गयी।

नारियाँ न होतीं तो दुनियाके मानव न होते। नारियाँ पुरुषोंको कोखमें रखती हैं। वेदना सहती हैं। हम उनके नेत्रोंकी शोभा होते हैं, किन्तु उन्हीं बालिकाओंको एक दिन अरब पुरुष सुन्दर वस्त्र पहनाता है। मुख चूमता है। शृंगार करता है। माँ भरी आँखोंसे विदा देती है। पिता कब्र खोदता है। नन्हीं बालिका खिलवाड़ समझती है। उस मिट्टीसे खेलती है। पिताके शरीरपर लगी धूलको प्रेमसे झाड़ती है। बाप आँख फेर लेता है। दिल धड़कता है। उठता है। बालिका स्नेहसे हाथ बढ़ा देती है। वह पिताकी छातीसे लगती कब्रमें गिरती है। बच्ची रो उठती है। पिताकी ओर देखती कहती है—'अब्बा! अब्बा!!' अब्बा कब्र मिट्टीसे भर देता है। जीवित गाड़कर घर लौटता है। अरबवाले गर्व करते थे अपनी जिंदा कब्रोंकी लम्बी कतारोंपर।

उन दिनोंका समाज

अरबी जिसे एक दिन माँ पुकारता था, वही विमाता पिताके मरने पर लड़केके साथ सुहाग रातकी तैयारी करती थी। दिवंगत पिता-की सब पत्नियाँ उसकी प्रिय पत्नी बन जाती थीं। तलाक देना मामूली बात थी। विवाह संस्कार न होकर वासनाका सुन्दर स्थल बनता था। एक स्त्री कितने ही पुरुषोंको पति बना लेती थी। उम्मखदीजाने चालीस बार तलाक देकर विवाह किया था। यह था उन दिनोंका अरबी समाज।

दासत्व-प्रथामें मानव नामधारी जीव जकड़े थे। कुछ सिक्कोंपर जानवरोंकी तरह बाजारोंमें बिकते थे। दासियोंके सतीत्वका, उनके

नारीत्वका कोई मूल्य नहीं था। गुलाम और मच्छड़के मरनेमें विशेष विषमता न थी। उनकी हत्या साधारण बात थी। उनकी गुहार परिहासका रिहर्सल था। भगवान्‌ने उन्हें मनुष्यका रूप दिया था। सबको एक जैसा पैदा किया था। किसीका किसीके घर पैदा होनेमें उसका क्या दोष था। लेकिन हम मनुष्य नामधारी मनुष्योंपर गुलामीका बोझ लादकर उनकी जीवन-श्रीको नष्ट करनेके निमित्त कृतसंकल्प थे। ऐसे समाजके लिए आवश्यक था कि वह जितने जल्द समाप्त हो अच्छा था।

जुएमें हारकर पाण्डवोंने राज्य खोया। महाभारत रोपा। परन्तु अरबमें जुएमें हारा मनुष्य अपनी आज़ादी खोता था। मनुष्यसे पशु बनता था। ताड़ी पीकर मर जाना साधारण बात थी। शराबमें सदाके लिए आँखें बंद कर लेना मस्तीकी निशानी थी।

देवताओंकी छीना-झपटी

अरबके लोगोंको अपने देवताओंपर ही सन्तोष न था। वे दूसरे गोत्रोंके, जातियोंके देवता छीन लाते थे। काबेमें देवी मरियमकी भी मूर्ति थी। पर धर्मके लोगोंके देवताओंको लेकर पूजा करनेमें उन्हें हिचक न थी। यह उनकी धार्मिक सहिष्णुताकी कहानी नहीं बल्कि उनकी मूढ़ताका लक्षण था।

उनके लिए रक्तस्नानसे देवताको सुशोभित करना स्वर्गद्वार अनावृत करनेके समान था। नर-बलितक उनके बलिकी सीमा फैल चुकी थी। दूसरेकी हत्यासे अपनी हत्या रोकना चाहते थे। परन्तु भगवान् उनके कुसंस्कारोंकी हत्याकी तैयारी कर रहा था।

राजनीतिक विभिन्नता

सामाजिक कुसंस्कारोंके बीच राजनीतिक एकता होना नामुमकिन है। एकताके लिए ठोस और अनुकरणीय सिद्धान्त होना चाहिये। सिद्धान्त मनुष्यको जीवनी शक्ति देता है। वह उसे बड़े-बड़े उत्सर्ग करनेके लिए अनुप्राणित करता है। मरनेमें भी सुख मिलता है। त्यागमें शान्ति मिलती है। अरबोंके पास कोई साहित्य न था। बहु-देवपूजाने

उन्हें बहुतसे भिन्न समुदायोंमें बाँट रखा था। अतएव अरबके कितने ही हिस्सोंपर रोमके सम्राट्, ईरानके बादशाह और हब्शके शाहंशाहका कब्जा था। उत्तरमें ईसाई और यहूदी धर्मका प्रभाव बढ़ रहा था। अरब पिछड़ता चला जा रहा था। नामके लिए नज्द, उम्मान तथा हजरमौतके हिस्से स्वतन्त्र थे। अरबपर बेबलोन परमिला, यूनान, रोम, मिस्र तथा अन्य सभ्य देशीय जातियोंका कभी आधिपत्य न हुआ। वे विश्वसे अलग ही रहे। विदेशीय सभ्यता संस्कृति एवं विचारोंसे प्रायः अछूती है अतएव उनका सांस्कृतिक विकास उतना न हो सका।

यदि अरबवाले ऊँची सभ्यताके उन दिनोंमें होते तो वे विज्ञान एवं अन्वेषणकी ओर चलते। वे अज्ञ थे। वे समझते थे कि उनका भाग्य रहस्यमय भविष्यमें है। भविष्य जाननेवाला भाग्यके उस रहस्य को समझ सकता है। उस रहस्यको अरबवालोंने प्राकृतिक शक्तियोंमें देखा। उनकी जीवन-लीला उनके व्यापार, अश्वारोहण, कविचर्चा, शराब एवं स्त्रियोंतक परिमित रह गयी।

अरब देश : भौगोलिक स्थिति

अरब देश १५ सौ मील लम्बा तथा ६ सौ मील चौड़ा है। कुल १२ लाख वर्गमीलमें फैला है। पूर्वमें फुरात नदी तथा फारसकी खाड़ी, पश्चिममें लालसागर अर्थात् बहर अहमर, उत्तरमें एशिया माइनर और इराक और दक्षिणमें अरबसागर है। अरब जलहीन देश है। कहीं-कहीं कुदरती चश्मे हैं। कहीं-कहीं मरुद्यान मिलते हैं। गर्मी खूब पड़ती है। खजूर बहुतायतसे और कहीं-कहीं बिना गुठलीके होता है। मक्का-मुअज्जमामें कुछ नहीं होता। तिजारत ही एकमात्र जीवनआधार था। लोहबान, तेजपत्र, रोगन, बलसान, रोगन जैतून, शहद, ऊँट, भेंड़, बकरी तथा ऊनका व्यापार लोग करते थे। अरब धूपका देश कहा जाता था। उसका बाजारका केन्द्र मक्का था। कारवाँ व्यापारका एकमात्र साधन था। लू खूब चलती थी। कारवाँका कारवाँ कभी-कभी रेतोंसे ढक जाता था।

अरबके निवासी

अरबवाले अस्थिर निवासी थे। वे खेमोंमें रहते थे। ऋतुके अनुसार उनके खेमे लगते थे। पक्के शहर, आलीशान मकान, किले आदिका अभाव था। अतएव वहाँ संस्कृति, कलाकौशलका पनपना मुश्किल था। आदमी सख्तमिजाज थे। जिद्दी थे। गुस्सावर थे। कौलके पक्के थे। हाथके सच्चे थे। मेहमाननेवाज थे। कबीलों अर्थात् गोत्रोंमें रहते थे। गोत्रभक्त थे। गोत्रोंमें खानदानी लड़ाई चलती थी, जिनका खात्मा सदियोंतक न होता था।

मक्का मुअज्जमा

इराकके एक शहरमें एक मूर्त्ति बनानेवाला मूर्त्तिकार आजर था। बाइबिलमें उसका नाम तेरह आता है। उसके पुत्रका नाम इब्राहीम था। इब्राहीमको मूर्त्तिपूजासे घृणा थी। वह कहते थे कि हम जिसको गढ़कर बनाते हैं उसको माथा क्यों नवाते हैं। वह एक पैगम्बर थे। उनके सिद्धान्तोंके कारण लोगोंने उन्हें सन्तप्त करना आरम्भ किया। वे शहर छोड़कर रवाना हुए। उनके साथ उनका पुत्र, पत्नी और भतीजा लूत भी था। हाजरा अपने पुत्र इस्माईलके साथ मरवा और सफा पहाड़ियोंके बीच पानी खोज रही थी। इस्माईल जमीनपर पड़े थे। उन्होंने जहाँ लात मारी वहीं पानी निकल आया। उसे आबे-जमजम कूप कहते हैं।

अस्तु, इब्राहीमने निराकार ब्रह्मोपासना निमित्त एक स्थान, जिसे काबा कहते हैं, बनवाया। वह ९ गज ऊँचा, ३२ गज लम्बा और २२ गज चौड़ा था। उसमें वे भगवान्‌की उपासना करते थे। इब्राहीमने अपने पुत्रकी बलि भगवान्‌के चरणोंमें देनी चाही। भगवान्‌ने उनकी परीक्षा ली, वे सच्चे उतरे। उसी दिनकी यादमें मुसलिमजगत् बकरीद त्योहार मनाता है। बलि करता है। कालान्तरमें इब्राहीमकी सन्तान मूर्त्ति-उपासक हो गयी। उन्होंने इब्राहीम और इस्माईलकी मूर्त्ति बनाकर उसकी पूजा प्रारम्भ की। गाथा है कि इब्राहीमको जब मालूम हुआ

कि उसके पुत्र द्वारा ऐसा हुआ है तो वह जलाशय स्थानपर आया। वहाँ काबा बनवाया और उसके पूर्वी किनारेपर संग असवद लगाया। यह पत्थर गाथानुसार उसे आदमकी सन्तान होनेके नाते उत्तराधिकारमें मिला था। आदम जब ईदन उद्यानसे चले थे तो अपने साथ लेते आये थे।

एक दूसरी गाथा भी है। सृष्टि-रचनाके लगभग २ हजार वर्ष पहले काबा स्वर्गमें बनाया गया था। आदम स्वर्गसे निकाले गये तो भूमिपर आकर उन्होंने स्वर्गीय काबेके समान भूमिपर मक्कामें काबा बनाया। उन्होंने ही काबेके पास आबे जमजम कूप बनाया।

पैगम्बर

पैगामका अर्थ होता है—सन्देश। पैगम्बरका अर्थ होता है सन्देश-वाहक। इस सृष्टिका स्रष्टा है। सृजक है। पालक है। मानव उसकी सन्तान है। उसने पृथ्वीपर मानवजातिको अपना प्रतिनिधि माना। उसका कर्त्तव्य है कि वह अपने स्रष्टाकी इच्छा-पूर्त्ति करे। उसके आदेशानुसार जीवनयापन करे। उसने जीवनविधि बतानेके लिए अपना दूत भेजा। उसके दूत प्रत्येक देश, प्रत्येक जाति एवं प्रत्येक युगमें समय-समयपर आते रहे हैं। वे भगवान्‌का सन्देश मानव-जगत्‌को देते थे, अतएव वे पैगम्बर कहलाये। पैगम्बर भी मानव ही होते हैं। प्रथम पैगम्बर हजरत आदम थे। इसलामकी दृष्टिसे अन्तिम पैगम्बर हजरत मुहम्मद हैं।

आखिरी पैगम्बरका आगमन

अरबोंकी मूढ़ मूर्त्ति-उपासना, उनकी जड़-संस्कृति तथा प्राणहीन परम्परा उन्हें अनुप्राणित करनेमें असमर्थ थी। 'परित्राणाय साधूनाम्, विनाशाय च दुष्कृताम्' गीताके शब्दोंमें किसीका आना आवश्यक था। अरबोंकी मूढ़ता नष्ट करने, उन्हें इनसान बनानेके लिए भगवान्‌को किसीको भेजना अभीष्ट था। यहूदियोंकी धार्मिक परम्परा, ईसाइयोंका प्रचार, अरबोंके सड़े सामाजिक ढाँचेको बदलनेमें असमर्थ था। भग-

वान्ने एक पैगम्बरको भेजा, उसका नाम मुहम्मद था।

वंशपरम्परा

गाथा है कि इब्राहीमके पुत्र इशहाकसे इसराइल कौम पैदा हुई। उनके दूसरे पुत्र इस्माइलकी सन्तान अरब जाति हुई। अरबमें कुरेश एक जाति थी। इसी जातिके हाथोंमें काबाकी व्यवस्था थी। इसी जातिमें कुसईका जन्म सन् ४०० ई० में हुआ था। वह अपनी जाति अथवा गोत्रके प्रमुख थे।

उन्होंने अपने लिए एक प्रासाद बनवाया था। उसका द्वार मन्दिरके चबूतरेपर खुलता था। इसे दारुन्दवा कहते थे। उसका अर्थ है गोष्ठी-भवन। उसमें सार्वजनिक विषयोंकी चर्चा होती थी। विचार होता था। न्याय होता था। उनके वंशके अतिरिक्त दूसरे गोत्रका वह व्यक्ति जिसकी उम्र चालीस वर्षसे कम होती थी उसमें प्रवेश न पा सकता था। युद्ध छिड़नेपर झण्डा जिसे लिवा कहते थे यहींपर देते थे। वह स्वयं अपने हाथसे एक बर्छेपर श्वेत झण्डी लगा कर देते थे। इस रीतिको अव्दुल लिवा कहते थे। अरब साम्राज्यके अन्तिम कालतक यह रिवाज किसी-न-किसी रूपमें चलता रहा।

एकदूसरा रिवाज उन्होंने दिफादका वहाँ चलाया था। गरीब यात्रियोंके लिए एक प्रकारका निर्धन कर (Poor Tax) लगाया था। इस करकी आमदनीसे गरीब यात्रियोंको अय्यामुल मीनाके समय भोजन दिया जाता था। यह रवाज भी मीनामें खलीफा और सुलतानों द्वारा जारी रखा गया। उनके ऊपर ही जल-वितरणकी व्यवस्थाका उत्तरदायित्व था। काबेकी ताली भी उन्हींके पास रहती थी। इस प्रकार उनके व्यक्तित्वमें धार्मिक, राजनीतिक एवं शासकीय तीनों व्यवस्थाएँ निहित थीं। उनकी मृत्यु सन् ४८० ई० में हुई।

उनके तीन पुत्रों अब्दुद्दार, अब्देमनाफ तथा अब्दुलउज्ज़ा थे। अब्देमनाफका जन्म सन् ४३० ई० में हुआ था। उनके चार पुत्रों अब्दुशम्स, नौफल, हाशिम और अलमुत्तलिब थे। हाशिमका जन्म सन् ४६४ ई०

में हुआ था। अब्दुशम्सके वंशज बनी उमैय्या तथा हाशिमके वंशज बनी हाशिमके नामसे प्रसिद्ध हुए। हाशिमके छः पुत्र अलहारिस, अबूतालिब, अबूलब, अब्दुल्लह, अब्बास और हमजा थे। उनमें अब्दुल्लहका जन्म सन् ५४५ ई० में हुआ था। मुहम्मद साहब अब्दुल्लहके पुत्र थे।

जन्म

मुहम्मद साहबका जन्म सोमवार, नौ रबीउल अव्वल अर्थात् २० अप्रैल सन् ५७१ ई० को मक्कामें हुआ था। कुछ लोग तारीख १२ को जन्मतिथि लिखते हैं। मुहम्मद साहबके चचा अबूतालिबके तीन पुत्र जाफर, अली और अकील थे। अलीसे मुहम्मद साहबकी कन्या फातिमाकी शादी हुई थी और उनसे दो पुत्र इमाम हसन और हुसेन हुए। अब्दुल उज्जाके पुत्र असद और असदके पुत्र खुवेलिद थे। खुवेलिदकी दो सन्तानें खदीजा तथा औवाम थे। अल औवामके पुत्र जुबेर थे। प्रपितामह अब्दुरशम्सके पुत्र उमैय्या और उमैय्याके हर्ब हुए। हर्बके पुत्र अबु सुफयान तथा उनके पुत्र मुआविया हुए।

पिताका देहान्त

अब्दुल्लहकी उम्र जब चौबीस सालकी थी तो उनके पिता अपने सम्बन्धी वहब जो उनके पितामह कुसईके भाई जुहराके वंशज थे, लिवाकर गये। अब्दुल्लहका विवाह वहबकी भ्रातुष्पुत्री आमिनाके साथ कर दिया। तत्कालीन लोकाचारके अनुसार अपनी ससुरालमें अब्दुल्लह तीन दिनतक रहे। तत्पश्चात् शामकी ओर व्यापारके निमित्त कारवाँके साथ प्रस्थान किया।

लौटते समय वह मदीना मुनव्वरामें बीमार पड़े। कारवाँवालोंने उन्हें वहाँ उनके मामाके सम्बन्धियोंके यहाँ छोड़ दिया। पिताका समाचार मिला तो अपने दूसरे पुत्र हारिसको भाईके पास मदीना भेजा। किन्तु मदीना पहुँचनेपर ज्ञात हुआ कि अब्दुल्लहका देहान्त कारवाँ रवाना होनेके एक मास पश्चात् पश्चिमकी यात्रामें ही हो चुका था।

मुहम्मद साहबको अपने पिताकी वरासतमें ५ ऊँट, कुछ बकरियाँ तथा एक गुलाम मिला। मृत्युके समय अब्दुल्लाकी उम्र २५ सालकी थी। मुहम्मद साहब गर्भमें थे।

धाईके पास

मक्कामें रिवाज था कि माँ अपने बच्चेको स्वयं दूध नहीं पिलाती थी। आठ दिन पश्चात् धाईको बच्चा दे दिया जाता था। बच्चा दूसरे गोत्र अर्थात् कबीलेमें भेजा जाता था। पहले मुहम्मद साहब अबूल-हबकी लौंडी सुवैबाके पास भेज दिये गये। कुछ दिनों पश्चात् हवा-ज़िन गोत्रके बनी सअदका एक दल मक्कामें आया। उनके पास धाई कर्मके लिए दस स्त्रियाँ थीं। हलीमाने उनका उत्तरदायित्व लिया।

उन्हें साथ लेकर वह अपने गोत्रमें लौट गयी। दो वर्ष बाद आमिनाके पास लेकर आयी तो बच्चेको हृष्ट-पुष्ट देखकर प्रसन्न हुई और पैगम्बरको वापस कर दिया। पाँच वर्ष पश्चात् हलीमा उन्हें लेकर मक्का आयी। शहरके पास पहुँचनेपर बालक पैगम्बर खो गये। अब्दुल मुत्तलिबने बच्चेको खोजनेमें सहायता की और वह मिल गया।

माताका स्वर्गवास

माँने एक मास बाद मदीना मुनव्वराके लिए प्रस्थान किया। उम्म ऐ एमन तथा दो ऊँटके साथ चलीं। एक मास मदीनामें रहनेके पश्चात् वह लौटीं। मार्गमें अलअबवाके पास बीमार पड़ीं। वहीं वह दिवंगत हुईं। उन्हें वहीं गाड़कर धादी उम्म ऐ एमन पैगम्बरको लेकर मक्काकी ओर चली।

बिना माँ-बापके पैगम्बरके संरक्षक पितामह अब्दुल मुत्तलिब हुए। उस समय उनकी उम्र अस्सी वर्षकी थी। उनकी मृत्युके पश्चात् अल-ज़ुबैर पितामहके इच्छानुसार संरक्षक बने परन्तु उनसे निर्वाह न हो सका और अपनी जिम्मेदारी अबूतालिबपर डाल दी।

बारह वर्षकी अवस्थामें जब अबूतालिब कारवाँके साथ प्रस्थान कर रहे थे तो पैगम्बर स्नेहसे उनके पास दौड़ते आये और लिपट गये।

बालजन्य स्नेहके कारण अबूतालिबने उन्हें अपने साथ ले लिया। कारवाँ कितने ही बड़े शहरोंमें घूमता रहा। पैगम्बरका पहले-पहल यहूदियों तथा ईसाइयोंसे सम्पर्क हुआ।

उकाजका मेला

मक्कासे तीन दिनकी यात्राकी दूरीपर उकाजका मेला लगता था। कुरेश तथा हवाज़िन गोत्रके लोग एकत्र होते थे। स्थान रम्य था। व्यापारी आते थे। कविताएँ गायी जाती थीं। कवियोंकी होड़ लगती थी। जनश्रुति है कि जो कविता सबसे अच्छी होती थी वह काबामें लटका दी जाती थी। एक हवाजिन युवतीको किसी कुरैशने कुछ कह दिया। तलवारें चमक उठीं।

अरबोंमें रिवाज था कि यदि कोई कर्जदार कर्ज न अदा कर सकता था तो महाजन बगलमें बन्दर बैठाकर बाजारमें बैठ जाता। वह कर्जदारका गोत्रोच्चार करता, कहता कि जो कोई उसे बन्दर देगा वह अमुक कर्जदारका कर्ज माफ कर देगा। कर्जदार कनाना कबीलेका था। उसने बन्दरका सिर उड़ा दिया। हवाज़िन और कनाना कबीलेमें लड़ाई हो गयी।

हिराके राजाने हवाज़िन कबीलेके एक सरदारके संरक्षणमें सुगन्धित तथा कस्तूरीका कारवाँ रवाना किया। कुरैश स्नेही एक व्यक्ति कारवाँपर टूट पड़ा। सरदार तलवारके घाट उतर गया। लूटपाट कर लोग भाग गये। मेलेमें पहुँचते ही खूनकी नदियाँ बहने लगीं। इसकी हर्बको खबर दी गयी। इब्न जुदआनने लोगोंको चुपचाप हथियार बाँट दिया। बहाना किया गया कि मक्कामें काम है। कुरैश चुपचाप मेलेसे चल दिये। सूर्यास्तमें हवाज़िनोंको खूनकी खबर मिली। वे कुरैशके पीछे दौड़े, किन्तु कुरैश मक्काकी सीमामें पहुँच चुके थे। वहाँ खून बहाना नाजायज करार दे दिया गया था। दोनों कबीलोंमें संघर्ष चार वर्ष तक चलता रहा। इस संघर्षमें बनी हाशिम तथा उमैय्या दोनों मिलकर शत्रुका सामना करते रहे। चार वर्ष पश्चात् दोनों दलोंमें सन्धि

हुई। मरे लोगोंकी गिनती की गयी। जिस ओरसे जितने अधिक आदमी मरे थे उन्हें उसी हिसाबसे हर्जाना दे दिया गया। तथ्यहीन, निष्कर्षहीन इस युद्धमें पैगम्बरने भी अपने गोत्रकी तीरोंसे मदद की थी।

संघका गठन

शांतिस्थापनके पश्चात् सन् ५९५ में कुरैशोंने निश्चय किया कि मक्कामें पीड़ितों तथा संतप्तोंके रक्षानिमित्त एक संघ बनाया जाय। इस भावनाने पैगम्बरमें उत्साह उत्पन्न किया। इस संघका नाम हिल्फुल फजूल था। यह संघ इसलामके ५० वर्ष पश्चात् तक कायम रहा। कुरैशका यह पहला कदम एक भले कार्यकी ओर उठा था। बनी हाशिम, जहुरा, बनी असद, बनी मुत्तलिब तथा बनी तमीम इब्नमुर्रा प्रतिज्ञाबद्ध हुए कि संतप्तोंके निमित्त वे आवाज बुलन्द करते रहेंगे।

युवावस्था

पैगम्बरकी युवावस्था समीपस्थ घाटियोंमें और पहाड़ियोंपर बकरियाँ चरानेमें बीतने लगी। वे आरम्भसे ही गम्भीर, विचारशील और सौम्य स्वभावके थे। प्रकृतिकी गोदमें, एकान्तमें रहते हुए निश्चय ही उनका मानसिक विकास सुपथकी ओर होने लगा। उनकी चित्तवृत्ति स्थिर होकर भगवान्की ओर उन्मुख होने लगी। अरबोंकी मानवीय दुर्दशाका चित्र उनकी आँखोंके सामने था। उनके विचार एवं जीवन निखरने लगे।

खदीजाके कारवाँमें

अबूतालिबके साधन परिमित थे। देशमें गरीबी थी। उन्होंने पैगम्बरसे उन्हींके खानदानकी ख्वैलिद विधवा कन्या बीबी खदीजाके कारवाँके साथ शाम जानेके लिए प्रबन्ध किया। कारवाँके साथ खदीजाका विश्वासपात्र सेवक मैसरा भी था। शामकी प्रथम यात्राके ठीक १३ वर्ष पश्चात् पुनः शामके लिए प्रस्थान किया।

कारवाँ लौटा। मैसरा पैगम्बरकी कार्यकुशलतापर मुग्ध था। उनकी सौम्यता एवं व्यवहारने उसे प्रभावित किया था। खदीजाका घर काबेके

उत्तर-पूर्व था। इसी घरमें फातिमा पैदा हुई थी। कारवाँ आनेकी खबर सुनते ही खदीजा कोठेपर चढ़ गयी। उसने देखा कि पैगम्बर ऊँटपर चढ़े कारवाँके आगे-आगे आ रहे थे। व्यापारमें आशातीत सफलता तथा लाभ हुआ था। खदीजा मुग्ध हो उठी।

खदीजासे विवाह

खदीजाका दो बार विवाह हो चुका था। वह विधवा थी। उसकी अवस्था चालीस सालकी थी और पैगम्बरकी उम्र पचीस साल। पूर्व पतिसे उसे दो पुत्र और एक कन्या थी। कुसूईके द्वितीय लड़के अब्दे-मनाफकी पाँचवीं पीढ़ीमें मुहम्मद और तृतीय पुत्र अब्दुल उज्ज़ाकी चौथी पीढ़ीमें खदीजा थी। सम्बन्धमें पैगम्बरकी दूरकी सम्बन्धिनी थी। एक ही गोत्र और वंशकी थी। वह काफी अमीर थी। पूर्वपतियोंकी सम्पत्ति तथा अपने अध्यवसायके कारण उसने काफी ख्याति प्राप्त कर ली थी। पैगम्बरका बीबी खदीजासे विवाह हुआ। यह विवाह सफल रहा।

पैगम्बरकी सन्तानें

बीबी खदीजासे उन्हें दो पुत्र तथा चार कन्याएँ उत्पन्न हुई थीं। पहले पुत्रका नाम कासिम था। अरब प्रथाके अनुसार उनका नाम अबुल कासिम भी पड़ा। इसकी मृत्यु दो सालकी उम्रमें हो गयी। ज्येष्ठ पुत्री जैनब थी। दो एक वर्षोंके क्रमसे रुकिया, फातिमा तथा उम्म-कुलसूम कन्याएँ पैदा हुईं। उनकी अन्तिम सन्तान एक पुत्ररत्न था जो शैशवावस्थामें ही दिवंगत हो गया था। उनकी पितृव्या सफ़ियाकी सेविका सलमाने सन्तानोत्पत्तिके कालमें धात्रीका कार्य किया था। प्रत्येक पुत्र तथा कन्याके जन्मपर क्रमसे दो अजशावकों तथा एक ऊँट की बलि खदीजा देती था।

पैगम्बरका रूप और आकार

जो कुछ वर्णन मिलता है उसके अनुसार वे मझोले कदमसे कुछ ऊँचे थे। स्थूलकाय न थे। परन्तु उन्हें दुबला भी नहीं कहा जा सकता था। शरीर प्रभावयुक्त तथा सुन्दर था। वक्षस्थल विशाल और चौड़ा

था। बदन दोहरा था। अस्थि संधियाँ मिली और गुथी थीं। ग्रीवा ऊँची तथा शोभनीय थी। मस्तक प्रशस्त सुन्दर भौं युक्त था। केश काले और किंचित् घुँघराले, कानोंतक लटकते थे। भौंहें धनुषाकार मिली थीं। नेत्र काले और चुभते हुए थे। बरौनियाँ लम्बी और काली थीं। हृदयस्थलतक फैली दाढ़ी घनी और उनके पुरुषार्थं तथा स्थिर बुद्धिकी प्रतीक थी। भावभंगी विवेचनात्मक एवं दार्शनिक थी। त्वचा कोमल और स्वच्छ थी। ग्रीवासे नाभिप्रदेशतक सुन्दर रोमावलि थी, चलते समय उनका चौड़ा पीठप्रदेश आगे झुक जाता था। कदम शीघ्र किन्तु निश्चयात्मक ढंगसे उठते थे। लोग यह भी कहते हैं कि वे इस प्रकार चलते थे जैसे कोई पहाड़पर चढ़ रहा हो।

भावभंगी और व्यवहार

वे स्वल्पभाषी थे। सौम्य थे। किसीकी ओर मुखातिब होते तो जैसे सारी शक्ति एक ओर केन्द्रस्थ हो जाती थी। वाणी सुसंस्कृत, शुद्ध एवं कण्ठ निर्मल था। शब्द संक्षिप्त और अर्थपूर्ण होते थे। कहनेकी अपेक्षा सुनना अधिक पसन्द करते थे। भाषा तर्क एवं विवेकपूर्ण होनेके साथ ही संयत होती थी। मित्रोंके साथ व्यवहार स्नेहपूर्ण होता था। यदि शत्रु उनपर विश्वास करता था तो वे उससे द्वेषके स्थानपर स्नेह करते थे। उनके सान्निध्यमें आते ही उनके स्नेह एवं विश्वासपर मुग्ध हो उठते थे। उनकी इच्छा-शक्ति परिष्कृत और तीव्र थी। बीबी खदीजाको उनके अद्वितीय गुणोंकी पहले पहल झांकी मिली थी।

काबाका जीर्णोद्धार

पैगम्बरकी उम्र ३५ सालकी थी। बाढ़ आयी। काबाकी दीवारें हिल गयीं। छत न होनेके कारण वस्तुएँ सुरक्षित न थीं। कुछ गायब हो गयी थीं। बादमें पुनः मिल गयीं। सुरक्षाकी दृष्टिसे जीर्णोद्धार करना उचित समझा गया। कुरैश विचार कर रहे थे कि अकस्मात् एक यूनानी जहाज लालसागरमें टकराकर क्षतिग्रस्त हो गया था।

कुरैशोंने जहाजकी लकड़ी खरीद ली। कहा जाता है कि जहाजके

कक्षान बाकुमको जीर्णोद्धार निमित्त रख लिया। कुरैशने चार भागोंमें बाँटकर एक-एक ओरकी दीवार बनानेका उत्तरदायित्व उठा लिया।

काबाकी दीवार गिरानेका किसीको साहस न हुआ। अन्तमें अल वालिदने एक हिस्सा तोड़ा। वे शंकित थे। रातभर चुपचाप देखते रहे। दीवार तोड़नेसे देवताकी नाराजीका भय था। प्रातःकाल जब किसी प्रकारकी अनहोनी घटना न घटी तो वे दीवार गिराने लगे। वे नींवके उस स्थानपर पहुँचे जहाँ हरे पत्थरकी मजबूत नींव पड़ी थी और फावड़ा काम न कर सकता था। उसी पुरानी नींवपर नयी दीवार का निर्माण आरम्भ हुआ।

लोग अपने सिरोंपर समीपवर्ती पहाड़ियोंसे पत्थर ढो-ढोकर लाने लगे। नींवसे काबेकी दीवार चार-पांच फुट उठ गयी तो प्रश्न उपस्थित हुआ कि संगअसवद कौन दीवारमें लगाये। संगअसवद आठ इञ्च चौड़ा अर्धवृत्ताकार ६ इञ्च ऊँचा था। रंग लाल और काला मिश्रित था। सभी कुरैशवंशीय चाहते थे कि वे उसे उठाकर लगायें। झगड़ेका हल न निकला। काम चार-पाँच दिन बन्द रहा। यह प्रश्न कौटुम्बिक कलहका रूप न धारण कर ले अतएव सभी कुरैश काबामें एकत्र हुए। सबसे वृद्ध व्यक्तिने उठकर कहा कि जो कल सबेरे इस द्वारसे पहले-पहल प्रवेश करे उसीको निर्णयका अधिकार दिया जाय।

पैगम्बरका निर्णय

पैगम्बर पहले व्यक्ति थे जिन्होंने प्रवेश किया। सब कह उठे अल-अमीन। इसका अर्थ है अमानतदार तथा सत्यवादी। पैगम्बरने अपनी चादर बिछा दी। उसपर संगअसवद रख दिया। बोले कि चारों ओर चारों कुटुम्बके लोग मिलकर चादर उठायें। इस प्रकारसे उसे उठानेका सभीको अवसर मिल गया। सबने उठाया और मुहम्मद साहबने उसे अपने हाथों दीवारमें लगा दिया।

चारों ओरकी दीवार खड़ी होजानेपर बीचमें ६ खम्भे खड़े कर दिये गये। १५ धरनें उसपर डाल दी गयीं। छत पाटी गयी। प्राचीन

प्रथानुसार काबा वस्त्रोंसे ढँक दिया गया अर्थात् उसपर खोली चढ़ा दी गयी। उसके चारों ओर पचास गज वृत्ताकार सीमा बना दी गयी। पश्चिममें बैठकभवन था। उसका द्वार काबाकी ओर खुलता थ। पूर्वमें बनी शेबाका द्वार आबे जमजम कूपके समीप खुलता था। कुछ दूरपर चारों ओर कुरैश लोगोंके मकान बन गये। काबेमें हुबल देवताकी मूर्ति स्थापित कर दी गयी। पूर्वकी ओर प्रवेशद्वार भूमिसे तीन-चार फुट ऊँचा था। काबेके चारों ओर ३६० मूर्तियोंकी कतारें थीं।

पैगम्बरके दामाद

खदीजाको बहनकी शादी अब्दुश्शम्सवंशीय अर्रबीके साथ हुई थी। उसका पुत्र अबुल आस था। पैगम्बरकी ज्येष्ठ पुत्रीकी शादी अर्रबीके साथ हुई थी। अन्य कन्याओं रुकय्या और उम्म कुलसूमकी शादी अबुलहबके पुत्रों उतवा और उतैबासे हुई थी। स्वर्गीय पुत्र अलकासिमके मृत्यूपरान्त पैगम्बरने हजरतअलीको अपने पुत्रतुल्य पास रख लिया था। उसके साथ चतुर्थ कन्या फातिमाकी शादी हुई।

जैद

हारिसके पुत्र जैदको पैगम्बरने अपने पुत्रके समान रख लिया था। उसका नाम ही जैदइब्न अबुल कासिम पड़ गया था। पैगम्बरकी सेविका उमायमन उम्मऐमनसे उसकी शादी हुई जिससे उसमा नामक पुत्र हुआ। कहा जाता है कि जैदके माता-पिता ईसाई थे। वह दक्षिणी शामका निवासी था। अपनी माँके साथ जा रहा था कि अरब लुटेरोंका बन्दी हो गया। गुलामीमें बेच दिया गया। खुवेलिदके पौत्र हाकिमके हाथ पड़ गया। हाकिमने उसे खदीजाको दे दिया। जैदकी उम्र शायद बीस साल और उम्मऐमनकी यदि दूनी नहीं तो काफी बड़ी थी।

हिरा गुहामें ध्यान

चालीस वर्षकी अवस्था पहुँचते ही पैगम्बर अत्यन्त विचारशील हो गये थे। मक्कासे उत्तर तीन मीलपर हिरा गुफा थी। उसका मार्ग तंग था। वे वहाँ जाकर ध्यानस्थ हो जाते थे। खदीजा भी कभी-कभी

उनके साथ चली जाती थी। नीचे सुरम्य प्रकृति और ऊपर गम्भीर आकाश होता था। एक दिन जिबरीलका दर्शन हुआ। कुछ दिनोंतक जिबरीलका दर्शन न हुआ। पैगम्बर हिराकी एक पहाड़ीसे दूसरी पहाड़ीपर घूमते रहे। उन्हें दर्शनकी बड़ी प्रबल इच्छा थी। निश्चय किया। प्रतीक्षामें व्याकुल रहते थे। इसी समय पृथ्वी एवं आकाशके मध्य जिबरील सिंहासनारूढ़ दृष्टिगत हुए। वाणी गूँजी—"ओ मुहम्मद !! तुम भगवानके वास्तविक सन्देशवाहक हो। मैं स्वयं जिबरील हुँ।"

आत्मविश्वासके साथ पैगम्बर घर लौटे। बीबी खदीजासे बोले—"मुझे क्या हो गया है ?" वह सो गये। खदीजा उन्हें देखने लगी। स्थिर होते ही पुनः बोले—'ओ खदीजा ! शायद कोई विश्वास न करेगा कि मैं जादो काहिनपर पागल हूँ !'

खदीजा बोली—'ओ अबुलकासिम ! भगवान् हमारा रक्षक है। हमपर विपत्ति न आयेगी। आप सत्यवक्ता हैं बुरेका बदला बुरेसे नहीं लेते। धर्मभीरु होकर जीना उत्तम है। मित्रों एवं सम्बन्धियोंके प्रति ध्यान हो। आपको क्या हो गया है ? क्या कोई भयावनी चीज देखी है ?'

'हाँ।'

पैगम्बरने जो कुछ देखा था कहा। खदीजा प्रसन्नतापूर्वक बोली—

'मंगल हो ! प्रसन्न हों ! आप लोकके पैगम्बर होंगे।'

खदीजा उठकर अपने सम्बन्धी वर्काके यहाँ गयी। वह नौफलका पुत्र था। वह अच्छा और वृद्ध था। यहूदियों तथा इसारियोंकी धर्म पुस्तकोंका उसे ज्ञान था। खदीजाकी बात सुनते ही वह कह उठा—"कुद्दूसुन ! कुद्दूसुन !! ओह ! यह नामुस अल अकबर है। यह लोकका पैगम्बर होगा। उससे यह कह दो। यह भी कह दो कि वह वीर हृदय बने।"

वर्का जब पैगम्बरसे मिला तो बोला—"मेरा जीवन जिसके हाथोंमें

है उसको साक्षी मानकर कहता हूँ—भगवानने तुम्हें लोकके पैगम्बर होनेके लिए चुना है। नामुस अल अकबर तुम्हारे पास आया था। लोग तुम्हें झूठा कहेंगे। तुम्हें अपराधी बनाएँगे। देशनिकाला करेंगे। तुम्हारे विरुद्ध हथियार उठाएँगे। ओह ! यदि मैं उन दिनों तक जीवित रहता तो तुम्हारे लिए युद्ध करता।"

वर्काने उनके ललाटका चुम्बन किया।

उनकी ईश-वन्दना देखकर अबूतालिबको एक दिन आश्चर्य हुआ। वे बोले—

"पुत्र ! तुम किस धर्मका अनुसरण करते हो ?"

"यह ईश्वरकाका धर्म है। उसके (Angel) दूतका धर्म है। उसके पैगम्बरका धर्म है। हमारे पूर्वपुरुष इब्राहीमका धर्म है।"

"अच्छा !"

"हाँ ! भगवान्ने मुझे अपने सेवकोंके पास भेजा है कि मैं उन्हें सत्पथकी ओर लाऊँ। आप उनमें सबसे उपयुक्त हैं। क्या यह धर्म स्वीकार कर उसका प्रचार न करोगे ?"

"पुत्र मैं अपने पूर्वजोंके धर्मको न त्याग सकूँगा। किन्तु जबतक मैं जीवित हूँ तुम्हें कोई हानि नहीं पहुँचा सकता।"

अपने पुत्र अलीकी ओर देखकर बोले—

"अली ! तुम किस धर्मका अनुकरण करते हो ?"

"पिता ! मैं ईश्वरमें और उसके पैगम्बरमें विश्वास करता हूँ। उन्हींका अनुकरण करूँगा।"

"बहुत अच्छा पुत्र ! तुम अपनी इच्छानुसार धर्मका अनुसरण करो।"

इस्लाम धर्मका आरम्भ

४४ वर्षकी वयसमें पैगम्बरने खुलकर सन्देश देना आरम्भ किया। सर्वप्रथम उनके धर्मकी अनुयायी बीबी खदीजा हुई। दूसरा ईमान लानेवाला उनका पोष्यपुत्र जैद था। हजरत अलीकी अवस्था तेरह या

चौदह वर्षकी थी। वे बाल्यकालसे ही मुसलमान हुए।

हजरत अबूबक्र

हजरत अबूबक्र पैगम्बरसे दो साल छोटे थे। वे आपके घनिष्ठ मित्र थे। हृदयमें करुणा थी। उनका विवेक सन्तुलित था। रहन-सहन अत्यन्त सादा था। सफल व्यवसायी थे। कमसे कम चालीस हजार रुपया नकद उनके पास था। खूब दान करते थे। कितने ही गुलामोंको खरीदकर आजाद किया था। कुरैशोंके इतिहास एवं उनकी परम्पराका उन्हें ज्ञान था। मक्कामें आदरकी दृष्टिसे देखे जाते थे। मक्कासे मदीना पैगम्बरके साथ गये तो उनके पास उस समय पाँच हजार रुपया था। यह मुसलमानोंके पहले खलीफा हुए हैं। इस्लामका सन्देश पाते ही ईमान ले आये।

बुरा कहनेवालोंमें आपका चचा अबूलहब आगे-आगे था।

पाँच मुसलमान

इस समय ५ व्यक्ति अमीनाके भतीजे सअद, खदीजाके भतीजे जुबेर, हजरत अबूबक्रका सम्बन्धी तल्हा, हजरत उस्मान जिनके साथ पैगम्बरकी कन्याकी शादी हुई थी और पाँचवें अब्दुर्रहमान मुसलमान हुए थे। अजरत अबूबक्रकी तरह अब्दुर्रहमान, हजरत उस्मान और तल्हा व्यापारी थे।

अब्दुर्रहमान पैगम्बरके घर गये तो चार साथियोंको और ले गये। उबैदा, अबू सलमा, अबू उवैदा और लड़के उस्मान थे।

पर्वतीय उपदेश

मक्केके समीप एक पहाड़ी है। उसका नाम सफा है। पहाड़ीपरसे लोगोंका आह्वान किया। लोगोंके एकत्र होनेपर बोले—

"ओ! कुरैशोंकी सन्तानो!! मैं पहाड़ीपर हूँ। तुम नीचे हो। मैं पहाड़ीके इस पार देख रहा हूँ। उस पार भी देख रहा हूँ। लेकिन तुम केवल एक ही ओर। क्या यह दृश्य देख सकते हो? मैं कहूँ कि पहाड़ीके पीछे डाकुओंकी एक टोली है। वह तुमपर आक्रमण करना

चाहती है। क्या तुम विश्वास करोगे ?"

"निश्चय।" —जनरव गूँजा।

"तुम्हें समझानेके लिए मैंने एक उपमा दी है, सुनो! मृत्यु सरपर है। एक दिन मरना है। मरकर ईश्वरके यहाँ जाना है। कर्मानुसार फल मिलेगा। यदि ईमान लाकर भी नेक काम न किये तो तुमपर कोई बड़ा अजाब आयेगा। केवल यह लोक देख रहे हो। परलोक नहीं देख सकते। मैं दोनों लोकोंको देख रहा हूँ। मैं तुम्हें वह बातें बता रहा हूँ जिससे तुम अनभिज्ञ हो।"

मक्केवालोंने बातें सुनीं। उनकी तथ्यपूर्ण बातोंपर विश्वास न किया। अपितु उन्हें बुरा-भला कहने लगे।

पाँच बातें

मुसलमानोंके लिए पाँच बातें अनिवार्य हैं। उनके बिना कोई मुसलमान नहीं हो सकता। (१) कलमा—अर्थात् अल्लाहके अतिरिक्त और कोई परमेश्वर नहीं है तथा मुहम्मद अल्लाहके रसूल हैं। (२) नमाज—पाँच बार दैनिक नमाज पढ़ना। (३) जकात—अपनी आयका ढाई प्रतिशतका दान करना। (४) रोजा—रमजान मासमें प्रदोषके समान उपवास। (५) हज—अर्थात् पवित्र मक्काकी तीर्थयात्रा। प्रारम्भमें ये पाँचों बातें नहीं थीं, कालान्तरमें ये पाँचों बातें इस्लामका आधार बना दी गयीं।

पहला गुलाम मुसलमान

हजरत अबूबक्र द्वारा आजाद किया हुआ बिलाल हबशी पहला व्यक्ति था जिसने मुसलिम धर्म कबूल किया था। मुसलिम इतिहासमें पैगम्बरके मुअज्जिनके नामसे उसने प्रसिद्धि पायी। बिलालका स्वामी खलकका पुत्र उम्मिया था। उम्मिया उसे बतश स्थानपर ले जाता। खूब धूप पड़ती। उसे खाली जलती जमीनपर लेटा देता। उसका मुख सूरजकी कठिन रोशनीकी तरफ होता। उसकी छातीपर एक बड़ा पत्थर यह कहकर रख देता कि जबतक इस्लामका त्याग नहीं करते, इसी

तरह पड़े रहोगे, या मर जाओगे। प्यासके मरते हुए भी उसके मुखसे केवल—अहदुन !–अहदुन !! (अर्थात् एक ईश्वर) निकलता था। कितने ही दिनोंतक यह प्रकिया चलती रही। अबूबक्रने उसे खरीदकर उसे मुक्त किया। ताड़ना उसे धर्मसे विरत न कर सकी। पहले चार वर्षोंमें केवल ४० व्यक्तियोंने इस्लाम कबूल किया था।

मुसलमानोंका प्रचार चुपचाप होता था। अरबवाले सतर्क हुए। उनके विरोधी संघटनका बीजारोपण होने लगा। साद मक्काके करीब मुसलमान साथियोंके साथ नमाज पढ़ रहा था। वाद-विवाद हुआ जिसने संघर्षका रूप धारण किया। ऊँट हाँकनेवाली लकड़ी चलायी गयी। इसलामकी ओरसे यह पहला प्रहार विधर्मियोंपर हुआ था।

एक दिन पैगम्बर काबाके समीप बैठे थे। उनके विरोधियोंका दल कुछ दूर बैठा था। उनमेंसे कुछ उदार विचारोंवाला रुबियाका पुत्र ओतबा उनके पास आया। बोला—"ओ मेरे भतीजे ! अपने गुणों एवं वंशके कारण तुम्हारी प्रतिष्ठा है। तुमने अपने वंश एवं जातिमें भेद उत्पन्न कर दिया है। हमारे देवी और देवताओंको नहीं मानते। हमारे पूर्वजोंके विषयमें औचित्यका निर्वाह नहीं करते। मेरा एक सुझाव है तुम्हें उसे मानना चाहिये।"

"कहिये।"

"यदि तुम धन चाहते हो तो हम एकत्र कर तुम्हें दे सकते हैं। सम्मान एवं प्रतिष्ठा चाहते हो तो हम तुम्हें अपना नेता बनाते हैं। सत्ता चाहते हो तो हम तुम्हें अपना राजा स्वीकार करेंगे। तुमपर कोई भूत सवार है तो हम उपचारक बुलायेंगे। उन्हें धन देंगे। वह उन्हें दूर कर देगा।"

"कृपया सुनिए ! कारुणिक परमेश्वरकी कृपासे उसका सन्देश मुझे मिला है। लोक-कल्याण निमित्त कुरान मिली है। मैं तुम्हारे ही समान मनुष्य हूँ। वह मुझपर नाजिल हुई है। उसने कहा है कि ईश्वर केवल एक है। मेरा जो सत्पथ है मैं उसका अनुसरण करूँगा।"

"तुम अपनी इच्छानुसार करनेके लिए स्वतन्त्र हो।"

मुसलमानोंपर कुरैशोंका अत्याचार दिनपर दिन बढ़ने लगा।

प्रथम हिजरत

अबतक इस्लाम कबूल करनेवालोंमें अधिक संख्या कुलीन वर्ग की थी। कुरैश उनपर आसानीसे हाथ उठा न सकते थे।। किंतु कुरैशोंका दुर्व्यवहार बढ़ने लगा। अरबवालोंका हब्श अर्थात् अबीसीनिया बड़ा अच्छा बाजार था। वहाँका बादशाह निजाशी सहिष्णु और विवेकशील व्यक्ति था। मुहम्मद साहबके धर्मके प्रचारके पाँचवें वर्षके सातवें मासमें ११ व्यक्तियोंने धर्म रक्षणार्थ अरब छोड़नेका निश्चय किया। चारके साथ उनकी औरतें थीं। उनके साथ पैगम्बरकी कन्या रुकय्या तथा उनके पति हजरत उसमान भी थे। हजरत अलीके भाई जाफर उनके सरदार बने। आधी दीनार उतराईपर शोएबाके बन्दरगाहसे लाल-सागर पार किया। कुरैशने समुद्र तटतक इनका पीछा किया परन्तु न पा सके। वे लोग जा चुके थे। निजाशीने उन लोगोंका बड़ा ही सुन्दर स्वागत किया।

द्वितीय हिजरत

हब्शमें तीन मास रहनेके पश्चात् वे लौट आये। अरबोंने जब सुना कि उन लोगोंका बड़ा सुन्दर स्वागत हुआ तो वे चिढ़ गये। मुसलमानोंपर पहलेसे अधिक अत्याचार होने लगा। पैगम्बरने राय दी कि लोग अबीसीनिया अर्थात् हब्श चले जायँ। सन् ६१५ और ६१६ के बीच १०१ व्यक्तियोंने प्रयाण किया। उनमें ८३ पुरुष और ११ कुरैश वंशीय तथा ७ अन्य वंशोंकी स्त्रियाँ थीं।

हब्शमें

कुरैशोंने उनका पीछा नहीं छोड़ा। राजा निजाशीका कान उनके विरुद्ध खूब भरा। राजाने उन्हें राजदरबारमें बुलाया। पूछा—

"क्या कारण है कि तुमने अपना देश त्याग दिया?"

"राजन्! हम एक नये धर्मको मानते हैं।"

"पूर्वजोंके धर्मका क्यों त्याग किया ?"

"नवीन धर्म सत्य है।"

"हमारे तथा दूसरी किसी जातिके धर्मको क्यों नहीं मानते ?"

जाफरने कहा—

"राजन् ! हम मूढ़ थे। अज्ञानी थे। मूर्तिपूजक थे। मुरदार मांस खाते थे। । कुकर्मी थे। गालियाँ बकते थे। अशुद्ध रहते थे। परस्पर संघर्षरत रहते थे। मत्स्य न्यायका प्राबल्य था। पड़ोसियोंको सताते थे। हम बुरे थे। हमारा कर्म बुरा था। ईश्वरकी हमपर असीम करुणा हुई। सन्मार्गका मार्ग प्रशस्त किया। उसने हममें अपना एक पैगम्बर भेजा। हम उसे जानते हैं। वह सद्‌गुणी है। नेक है। सत्यवादी है। अमीन है। उसने सत्यमार्गकी ओर हमारा आह्वाहन किया। ईश्वरका मार्ग दिखाया। परस्पर प्रेम करना सिखाया। मूर्तिपूजा त्यागकर केवल एकमात्र ईश्वरकी उपासनाका उपदेश दिया। सत्य भाषण, प्रतिज्ञा पूरी करना, बुराइयोंसे, पापोंसे दूर रहने, तथा अनाथोंकी सम्पत्तिसे दूर, उपद्रवोंसे दूर, पड़ोसियोंको ताड़न करनेसे दूर, रहनेका उपदेश दिया। पड़ोसियोंको सुखी करनेके लिए कहा। स्त्रियोंपर अत्याचार करनेसे दूर रहनेके लिए कहा। नमाज, रोजा, दान, पारस्परिक सहयोग एवं मानव मात्रको भाई समझकर रहनेका सुन्दर मार्ग बताया। उसे हमने पैगम्बर माना। उसके कथनानुसार आचरण किया। यही हमारा अपराध था। इसी अपराधके कारण हमारे जातिवाले, कुटुम्ब वाले हमसे चिढ़ गये। हमें सताने लगे। हम अपने धर्मपर दृढ़ रहे। उन्हें छोड़ न सके। यही कारण है कि यहाँ आये हैं।"

राजा गम्भीर हो उठा। उसने कुरैशोंकी बातोंपर ध्यान न दिया। कुरैश उदास घर लौट आये।

अबूजहलके नेतृत्वमें कुरैश पैगम्बरको परेशान और तंग करते थे। एक दिन एक गुलाम बाँदीने अबूजहलको ताना मारते सुना। हमजा कन्धेपर धनुष रखे शिकारसे लौटे थे। बाँदीने उनसे सब हाल कहा।

वह सीधे काबामें चले गये जहाँ कुरैशमें अबूजहल बैठा था। उन्होंने आवेशमें कहा—"मुहम्मदको चिढ़ाते हो? हम भी मुसलमान हैं।" वे मुसलमान हो गये और शेर इस्लाम कहलाये।

हजरत उमर

हजरत उमर मुसलमान-जगत्के दूसरे खलीफा थे। वे क्रोधी तथा निर्भीक व्यक्ति थे। इस्लाम माननेवालोंको चिढ़ाते थे। उनकी बहन फातिमा तथा बहनोई सादने इस्लाम कबूल कर लिया था। गुलाम खब्बाब कुरान मजीदकी बीसवीं सुरा पढ़ रहा था। उमरके कानोंमें आवाज पहुँची। वे सुनने लगे। पैरोंकी आहट पाकर गुलाम बाहर निकला। "क्या सुन रहा था?" भीतर घुसते ही उन्होंने पूछा। सादने उत्तर दिया—"उमर! क्या तुम्हारे धर्मकी अपेक्षा दूसरोंके धर्ममें सत्यता नहीं है?" उमरका सन्देह जम गया। समझ गये वे कुरान पढ़ रहे थे। सादको बाहर ढकेल दिया। बहन बचाने दौड़ी। संघर्षमें उसके मुखपर चोट आ गयी। खून बहने लगा। उसने विश्वाससे कहा—"मैं एक ईश्वरको मानती हूँ। मुहम्मद उसके पैगम्बर हैं। जो मनमें आये करो।" बहनके मासूम मुखपर खून देखकर उमरका दिल पसीज गया। उसने पूछा—"तुम क्या पढ़ रही थी।" उत्तर मिला "कुरान।" "मैं भी देखूँ।" बहनने गम्भीर स्वरसे कहा—"पहले पवित्र हो लो" उमरने हाथ-पैर धोकर पढ़ना शुरू किया। बोल उठा—"अतीव सुन्दर!"

हजरत उमर निवासस्थानपर पहुँचे। वहाँ मुहम्मद साहब थे। दरवाजा खटखटाया। हमजाने दरवाजा खोला। देखते ही चकित। बोल उठे—"उमर। पैगम्बरने स्नेहसे कहा—"आने दो।" उठकर उसके तलवारकी पेटी और अचल पकड़ लिया। प्रेमसे बोले—"उमर कबतक तुम इस प्रकार आचरण करते रहोगे?" हजरत उमर उत्साहसे कह उठे—"अल्ला हो अकबर!" उस समय उसकी उम्र २६ सालकी थी।

विरोधी मोरचा

इस्लामकी बढ़ती ताकतसे कुरैश परेशान हो गये। सभी बनी

हाशिम उनके क्रोधके शिकार बन गये। निश्चय हुआ कि बनी हाशिम के यहाँ न शादी करेंगे और न उनकी लड़कियाँ लेंगे। लेन-देन भी बन्द कर दिया गया।

बनी हाशिमके सामाजिक बहिष्कारकी घोषणा की गयी। सनातनी प्रथानुसार घोषणा-पत्र लिखकर काबेमें रख दिया गया।

विरोधी प्रचारका सामना करनेकी अपेक्षा बनी हाशिमने निश्चय किया कि वे स्वयं मक्कासे दूर चले जायँ। अतएव अबूतालिबने वंश सहित एक दर्रेमें शरण ली। मार्गमें फाटक लगा था। शहरसे पतला मार्ग जाता था। मुश्किलसे ऊँट निकल सकता था। लगभग तीन वर्ष तक वे इस प्रकार रहे। केवल मक्काके उत्सवके समय जब कि हर प्रकारकी शत्रुता कुछ दिनके लिए बन्द समझी जाती थी, उतरते थे। पैगम्बर मिना आदिके मेलोंमें भाग लेने चले जाते थे।

बहिष्कारका अन्त

सूचना मिली कि काबेमें रखे घोषणापत्रको दीमक चाट गया है। पैगम्बरने अपने चाचा अबूतालिबसे जिनकी उम्र अस्सी वर्षकी हो गयी थी, यह हाल कहा। वे कुछ साथियोंके साथ काबाकी ओर चले। कुरैशके एकत्रित सरदारोंको सम्बोधित कर कहा—"घोषणा-पत्रको कीड़े चाट गये हैं। यदि मेरी यह बात ठीक हो तो बहिष्कारका अन्त करो और यदि असत्य प्रमाणित हुई तो अपने भाइयों और लड़कोंको तुम्हें दे दूँगा, चाहे जो करना।" लोग प्रतिज्ञाबद्ध हुए। घोषणापत्र सचमुच खराब हो गया था। कुछ भी पढ़ना असम्भव था। कुरैश चकित हुए। उनका आश्चर्य देख अबूतालिबने पुराने सम्बन्धोंकी याद दिलायी। तत्पश्चात् काबेमें प्रार्थना कर लौट गये।

अबूतालिबका इस प्रकार आना और चला जाना सबके कौतूहलका विषय बन गया। एकत्र सरदारोंमें पाँच उठे और बोले—"हम बहिष्कारके विरुद्ध हैं।" उन्होंने हथियार उठाया। अबूतालिबके द्वारपर पहुँचकर मक्का लौटनेके लिए कहा। सब लोग मक्का लौट आये। किसीको

साहस हथियार उठानेका नहीं हुआ। बहिष्कार स्वतः समाप्त हो गया।

खदीजाकी मृत्यू

पचीस वर्षके सुखमय वैवाहिक जीवनके पश्चात् बीबी खदीजाकी मृत्यु दिसम्बर, सन् ६१९ में हो गयी। जनवरी सन् ६२० में अबूतालिबाका भी अवसान हो गया। उन्होंने ४० वर्षतक पैगम्बरकी संरक्षकता की थी।

पैगम्बरको कुरैश संतप्त करने लगे। एक बार उनपर कूड़ा फेंक दिया। घर पहुँचनेपर उनकी कन्या उनपर पड़े कूड़ेको साफ करती रोने लगी। वे बोल उठे—"भगवान् तेरे पिताका सहायक है, मत दुःख कर।"

तायफकी यात्रा

तायफ शहर मक्कासे पचास मील पूर्व है। चचा अबूतालिबकी महाशान्तिके १५ दिन पश्चात् जैदके साथ तायफकी ओर प्रस्थान किया। वहाँ लगभग १० दिन रहे। वहाँके लोग 'लात' देवताके पूजक थे।

पैगम्बरने एकेश्वरवादकी बात सुनायी। वे सब चिढ़ उठे। सड़कोंपर उन्हें चिढ़ाने लगे। उनपर पत्थरोंकी बौछार करते। वे यदि बैठ जाते तो हाथ पकड़ कर उठाते। वे इतने जख्मी हो गये थे कि जूतोंमें खून भर गया। जैदने उन्हें बचानेकी कोशिश की तो खुद चोट खायी। सिरसे खून बहने लगा। भीड़ उन्हें शहरसे खदेड़ती दो-तीन मील लायी। उन्हें एक बागमें विश्राम मिला। बागके मालिकने अंगूर भेजा। दस वर्ष पश्चात् इसी नगरके लात देवताकी मूर्ति खण्डित करनेकी आज्ञा पैगम्बरने दी थी।

नखला तायफ और मक्काके मार्गमें था। वहाँसे हिराकी गुफा होते हुए पैगम्बर मक्का लौट आये। मुतइमबिनअदीने जिसने बहिष्कारके प्रति आवाज उठाई थी अपने ऊँटपर बैठे हुए घोषित किया कि जो कोई उनपर हाथ उठायेगा उसकी खैर नहीं। किसीको कुछ कहनेका साहस न हुआ। वह काबेमें गये। संग असवद्का चुम्बन कर घर लौट आये।

सौदासे विवाह

पैगम्बरकी उम्र ५० वर्षकी थी। सौदा सकरानकी विधवा थी। दोनों ही मुसलमान धर्म स्वीकार कर चुके थे। अबीसीनिया गये थे। हब्शसे मक्का लौटनेपर सकरानकी मृत्यु हो गयी थी। बीबी खदीजाके मरनेके दो या तीन मास पश्चात् विवाह सम्पन्न हो गया।

औस और खजरज

चौथी सदीमें यमनके कुछ अरब क़बीले शामकी सीमापर आबाद हो गये थे। उनका नाम औस और खजरज था। मदीनापर इनका अधिकार स्थापित हो गया था। किंतु अरब कबीलोंकी सनातनी प्रथानुसार उनमें रात-दिन खटपट रहा करती थी।

अकबाकी प्रथम प्रतिज्ञा

मदीना निवासियोंके मुसलमान होनेका विवरण इस प्रकार है—पहले साल रजब मास सन् १० रब्बीमें अकबाके पास जहाँ अब मस्जिद अक्ब है, खजरज कबीलेके कुछ लोगोंसे हजरत पैगम्बर साहबकी भेंट हुई। आपने उनको इस्लामका निमन्त्रण दिया। यह लोग मदीनाके यहूदियोंसे एक पैगम्बरके आनेकी बात सुन चुके थे। यह सोचकर कि यहूदी मुसलमान होनेमें हम लोगोंसे आगे न बढ़ जायें, उनमेंसे ६ आदमी मुसलमान हो गये। दूसरे वर्षके हजके अवसरपर मदीनाके १२ आदमी मुसलमान हुए। इन्हीं लोगोंकी प्रार्थनापर हजरत मुहम्मद साहबने मुसअब बिनउमैरको मदीना भेजा। यह असअद बिन जराराके घरपर ठहरे, औसके सरदार साद बिन मआज इन्हींके घरपर मुसलमान हुए। तीसरे साल हजके अवसरपर मदीनाके बहत्तर आदमी और मीनाके अकबा स्थानपर मुसलमान हुए। इसी अवसरपर हजरत पैगम्बर साहबके चचा हजरत अब्बास भी उपस्थित थे जो अभीतक मुसलमान नहीं हुए थे।

इसी अवसरपर यह निश्चय हुआ कि हजरत पैगम्बर साहब मक्का निवास त्यागकर मदीना चले आयें। औस और खजरज हर तरहसे

आपकी मदद करेंगे। इसी अवसरपर पैगम्बर साहबने इन लोगोंमेंसे १२ व्यक्तियोंको अपना प्रमुख कार्यकर्त्ता चुना। इनमेंसे ९ आदमी खजरज गोत्रके थे और तीन व्यक्ति औस कबीलेके।

अप्रैल सन् ६२१में मिनामें मेला लगा। उस समयका यही हज था। इस मेलेमें १० खजरज तथा २ औस गोत्रीय लोगोंने पैगम्बरको स्वीकार किया। उन्होंने प्रतिज्ञा की कि "हम एकेश्वरवादी हैं। परमेश्वरका कोई दूसरा शरीक नहीं है। हम परस्त्रीगमन तथा तस्कर-वृत्ति न करेंगे। अपनी सन्तानोंकी हत्या न करेंगे। किसीके प्रति आपत्तिजनक शब्दोंका व्यवहार न करेंगे। पैगम्बरके अनुवर्ती होंगे। उनकी आज्ञाका पालन करेंगे।" उनके प्रतिज्ञा करनेपर पैगम्बरने कहा कि "जो प्रतिज्ञापालन करेंगे उन्हें भगवान् स्वर्ग तथा न पालन करनेवालेको दण्ड देंगे।"

इस स्थानपर आज भी एक मसजिद बनी है। यह बारहों अब इसलामके मिशनरी थे, वह धर्म-प्रचारार्थ फिर मदीना चले गये। मुसअब जो हब्शासे लौटे थे मदीनामें कुरान पढ़ानेके लिए नियुक्त किये गये। वह मदीनामें असअद इब्न जराराके मकानमें ठहरे। वहीं सब मुसलमान एकत्र होते और कुरान पढ़ा जाता था।

मुसअब एक दिन उपदेश दे रहे थे। उसैद बर्छा लिये घरमें घुसा। उसने उन्हें धमकाया। मुसअबने बड़ी शान्तिसे उत्तर दिया कि पहले बैठकर हमारी बातें सुन लो। वह बैठ गया। मुसअबने इसलामके मौलिक सिद्धान्त सुनाये। उसने कहा—"धर्म कैसे स्वीकार किया जाता है।" मुसअबने कहा—"स्नान कर लो और स्वीकार कर लो कि केवल एक ईश्वरके अतिरिक्त दूसरा कोई पूज्य नहीं है और मुहम्मद उसके पैगम्बर हैं।" उसने इसलाम कबूल किया।

अकबाकी द्वितीय प्रतिज्ञा

मार्च सन् ६२२ में मुसअब ७३ मुसलमानोंके साथ तीर्थ निमित्त आया। मार्गमें पैगम्बरसे बातें हुईं। उस समय केवल एक बाहरी व्यक्ति उनके चाचा अब्बास साथ थे। आनेवालोंमें ६२ खजरज और

११ औस गोत्रके लोग थे। दो स्त्रियाँ भी थीं। अब्बासने कहा—

"खजरजियो ! हमारे यह सम्बन्धी हमारे बीच प्रतिष्ठा एवं पूर्ण रक्षाके साथ रहते हैं। उनकी जाति उनकी रक्षा करेगी। उनमें मुसलमान तथा वे भी सम्मिलित हैं जिन्होंने इस्लाम कबूल नहीं किया है। तुम लोग उनकी अन्ततक रक्षा करो, यदि वह तुमसे रक्षाकी भावना रखते हों। इसकी कीमतका भी अन्दाजा लगा लो। यदि रक्षा करनेमें समर्थ हो तो प्रतिज्ञा करो। यदि अपनी उपादेयतामें तुम्हें सन्देह है तो इस विचारका परित्याग कर दो।"

वयोवृद्ध सरदार बरा इब्न मारूरने कहा—"हमने आपकी बातें सुनीं। हमारा निश्चय दृढ़ है। हमारा जीवन पैगम्बरकी सेवामें है।"

पैगम्बरने कुरानका कुछ भाग पढ़ा। वे बोले—"क्या अपनी औरतों और बच्चोंकी तरह रक्षा कर सकोगे?" आवाज गूँज उठी—"हाँ। किन्तु यदि हम ईश्वरके कार्यमें मर गये तो हमें क्या पुरस्कार मिलेगा।"

"जीवनोपरान्त आनन्द।"

"सफलता और प्रभुत्व प्राप्त होनेके पश्चात् आप हमें छोड़कर अपने लोगोंमें तो नहीं लौट जायँगे?"

"नहीं ! कभी नहीं !! तुम्हारा रक्त हमारा रक्त है। मैं तुम्हारा हूँ। तुम हमारे हो।"

अब्बासने अपने भतीजे पैगम्बरका हाथ पकड़कर कहा—"हाथ फैलाओ।"

पैगम्बरने हाथ फैला दिया।

बरा इब्न मारूरने अपना हाथ पैगम्बरके हाथपर रख दिया। सब लोग, एकके बाद दूसरे, आये और हाथ रखते गये।

पैगम्बरने कहा—"मूसाने अपने अनुयायियोंमें बारह नेता चुने थे। तुम सभी नेता और शेष लोगोंके जमानतदार रहोगे। मैं अपने लोगोंकी जमानत करता हूँ।"

"ऐसा ही होगा"—लोग कह उठे।

मदीनाके लिए प्रयाण

कुरैशोंका दुर्व्यवहार मक्कामें मुसलमानोंके साथ बढ़ गया। उनका वहाँ रहना दूभर हो गया था। पैगम्बरने सुझाव रखा कि लोग अपने कुटुम्बके साथ मक्का त्याग दें। मदीनाका मार्ग मक्कासे १० दिनोंका था। सन् ६२२ में दो मासके अन्दर लगभग एक या दो सौ व्यक्तियोंने मदीनाके लिए प्रस्थान किया। मदीनावालोंने उनका अभूतपूर्व स्वागत किया। मक्कामें पैगम्बर हजरत, अबू बक्र और हजरत अली रह गये।

हत्याका प्रयत्न

मुसलमान हाथसे निकल गये, यह जानकर कुरैश नाराज हुए। अबू सुफियान मक्काका प्रबन्धक था। उसने सभी लोगोंको बुलाया। निश्चय हुआ कि प्रत्येक गोत्रका एक-एक व्यक्ति एक साथ ही पैगम्बरके शरीरमें खंजर भोंक दे। कारण, यदि एक व्यक्ति मारता तो बनी हाशिमसे दुश्मनी होती। उससे बदला लिया जाता। अरब निवासी जनानखानेमें घुसना अनुचित समझते थे अतः निश्चय हुआ कि झुटपुटेके समय घरको घेर लिया जाय और जब ये प्रातःकालकी नमाजके लिए बाहर निकलें तो अपने उद्देश्यकी पूर्ति की जाय।

रात्रिमें मुहम्मद साहब उठे। उनकी चारपाईपर अली सो गये। पैगम्बरने अपनी चादर उनपर डाल दी। हजरत अबू बक्रके मकानपर पहुँचे। वे दक्षिणी मक्काकी ओरसे लगभग डेढ़ घण्टा रास्ता तय करने-पर तीन मील दूरस्थ पहाड़ी पर पहुँचे। पहाड़ीका रास्ता दुर्गम था। गोखरूके सिवाय वहाँ और कुछ न होता था। पैगम्बर और हजरत अबू बक्र दोनोंने पहाड़पर सौर गुफामें शरण ली। (जनश्रुति है कि गुफाके मुखपर मकड़ीने जाला बीन दिया था) कुरैशने हजरत पैगम्बरसे, पैगम्बरने अबू बक्रसे कहा—"चिन्ताकी बात नहीं है। हम लोगोंके बीच एक तीसरा अर्थात् भगवान भी मौजूद है।" अबू बक्रकी बकरियाँ चरानेवाला बकरियोंके साथ आता और उन्हें दूध दे जाता

था। अबू बक्रका पुत्र अब्दुल्ला रात्रिमें हजरत अबू बक्रकी पुत्री अस्मा द्वारा बनाया भोजन दे आता था।

गिरफ्तारीपर इनाम

पैगम्बरकी खोज होने लगी। घोषणा की गयी कि जो उन्हें जिन्दा या मुर्दा पकड़ लायेगा उसे एक सौ ऊँट इनाममें दिये जायँगे। अलीसे उन लोगोंने बहुत कुछ पूछा किन्तु सब बेकार साबित हुआ। मक्कासे जानेवाले हर मार्गपर खोजनेके लिए आदमी भेजे गये। पता न चला। शहरकी शान्तिमें वे स्वयं शान्त हो गये। केवल सुराका खोजमें लगा रहा।

एक बार कुरैश पैगम्बरकी खोज करते हुए सौर गुफाके समीप पहुँच गये। हजरत अबू बक्रने उनकी आहट पाकर चिंता प्रकट की। पैगम्बरने कहा—"चिन्ता मत करो। ईश्वर हमारे साथ है।"

कुरैश पैगम्बरका पता न पा सके।

हिजरत

अब्दुल्लासे तीसरी रातको मालूम हुआ कि कुरैश थककर बैठ गये हैं। खोजनेवाले लौट आये हैं। निश्चय हुआ कि सौर गुफा त्याग दी जाय। अब्दुल्ला दो ऊँट लाया। असमाने मार्गके लिए भोजन बनाया। वह गुफाके द्वारपर खाना लेकर आयी। जल्दीमें बाँधनेकी रस्सी भूल गयी। उसने कमरबन्दके दो टुकड़े कर दिये। एक टुकड़ेसे भोजन और दूसरेसे उसे ऊँटके जीनसे बाँध दिया। हजरत अबू बक्र तथा उनके नौकर इब्नफुहेराके साथ पैगम्बरने सौर गुफाका त्याग किया। साधारण मार्ग त्यागकर ८ रबीउल अव्वल अर्थात् २२ जून सन् ६२२ को मदीनाके लिए रवाना हुए। उपःकालमें समुद्री तट ओसफान पहुँचे। इसी दिनसे हिजरी सन् आरम्भ होता है।

प्रातःकाल वह एक डेरेके समीप पहुँचे। एक वृद्धा दरवाजेपर बैठी थी। उसने दूध तथा कुछ खानेको दिया। गर्मी कड़ी थी। दिन-भर वोदीदमें ठहरे रहे। किसी दुर्घटनाकी सम्भावना न देख वे सायं-

काल सीधे मार्गसे रवाना हुए। मार्गमें सुराका अकेले मिला। घोड़ा दौड़ाकर समीप आया परन्तु घोड़ेने ठोकर खायी, वह गिर पड़ा। वह पैगम्बरको गिरफ्तार करके सौ ऊँट इनाम लेना चाहता था। घोड़ेपर सवार होकर फिर आगे बढ़ा, घोड़ेके पाँव घुटनोंतक भूमिमें धँस गये, सौ ऊँटोंके लालचने अब भी पीछा न छोड़ा परन्तु तीसरी बार भी उसे सफलता न मिली तो वह घबड़ाया। उसने फरमान अमनकी प्रार्थना की। पैगम्बरने उसे शान्तिपूर्वक जानेकी अनुमति दे दी। अबू बक्रके गुलाम आमिर बिन फुहैराने रक्षापत्र लिख दिया।

मार्गमें जुबैरका कारवाँ मिला। उससे मालूम हुआ कि मदीनेमें उनके स्वागतकी तैयारी हो रही थी। बदरसे दाहिनी ओर मुड़ते हुए पूर्वी मार्गसे मदीनाके लिए अग्रसर हुए। मार्गमें एक ऊँट थकानके कारण आगे न बढ़ सकता था। एक कबीलेवालेने दूसरा ऊँट दे दिया।

कुबामें

मक्कासे आठ दिन चलनेके पश्चात् सोमवारको अकीककी उपत्यका पार कर मदीनाके पाँच मील दक्षिण-पश्चिम पहुँच गये। पथ-प्रदर्शकसे इन्होंने पहले कुबामें बनी अम्रबिन औफके यहाँ चलनेके लिए कहा। वहीं वे ठहरे। मदीनाका मार्ग बायीं ओर छोड़ते सोमवार जून २८, सन् ६२२ को ग्यारह बजे दिन कुबामें पहुँचे। तरुकी शीतल छायामें उनके पवित्र चरणोंने भूमिका स्पर्श किया।

जनसमूह उमड़ पड़ा। पैगम्बरने कहा—"ओ! लोगो!! अपने आनन्दका प्रदर्शन अपने पड़ोसीको शांतिमय नमस्कार द्वारा दो। गरीबोंका हिस्सा उनको दो। बन्धुताके बन्धनमें बँध जाओ। दूसरे जब सोते हैं तुम भगवान्की प्रार्थना करो। इस प्रकार स्वर्गमें तुम शान्तिपूर्वक प्रवेश कर सकोगे।"

कुबामें पैगम्बर कुलसूम सरदारके यहाँ ठहरे। दिनका कुछ समय सऊदके यहाँ बीतता था। वहाँ वे मिलनेवालोंसे मिलते थे। सुखके उपनगरमें हजरत अबू बक्रने अपने आतिथेय खारिजाकी कन्यासे विवाह-

कर उसे कृतज्ञ किया। वह चौदह दिन कुबामें रहे। कुबामें उन्होंने एक मसजिदकी नींव डाली। आप इसके लिए स्वयं इतने भारी-भारी पत्थर उठाते कि शरीर झुक-झुक जाता। श्रद्धालु आते, कहते—"हमारे माता-पिता आपपर निछावर हों, आप छोड़ दें।" आप उनकी बात मान लेते परन्तु फिर वैसा ही दूसरा पत्थर उठा लेते।

मदीनामें प्रवेश

शुक्रवारको प्रातःकाल जनसमूहसे घिरे हुए कसवापर सवार पैगम्बर मदीने चले। उनके पीछे अबू बक्र बैठ गये। बनी सालिमके मुहल्लेतक पहुँचे थे कि नमाजका वक्त हो गया। यहाँ जुमाकी पहली नमाज हुई। लगभग एक सौ मुसलमानोंके साथ नमाज पढ़ी। इस स्थानपर मसजिद बना दी गयी। वह स्थान आज भी मसजिद अल-जुमाके नामसे प्रसिद्ध है। मदीना पहुँचनेपर भिन्न-भिन्न लोग उन्हें अपने यहाँ ठहराना चाहते थे।

उन्होंने कसवाको छोड़ दिया। कहा कि जहाँ वह ठहरेगी वहीं वे ठहरेंगे। एक खुले आँगनमें खजूरोंके झुरमुटके पास कसवा ठहर गयी। पास ही अबू अय्यूबका मकान था। आपने उन्हें आमन्त्रित किया। उसके मकानकी पहली मंजिलमें उन्होंने सात मासतक निवास किया। कसवा जहाँ खड़ी हुई थी वह स्थान दस सिक्कोंके एवजमें खरीद लिया गया। इसी बीच वहाँ मसजिद और रहनेका स्थान बन गया। मदीनाका पूर्व नाम यसरिब था। नाम बदलकर "मदीनतुन्नबी" रखा अर्थात् नबीका नगर। वही कालान्तरमें मदीना हो गया।

मसजिद और मकानका निर्माण

सबसे पहले मस्जिद बनी। फिर सौदा और आयशाके लिए मकान बने। वे लगभग सात हाथ चौड़े और दस हाथ लम्बे थे। छत इतनी नीची थी कि हाथसे छू जाती थी। दर्वाजोंपर कम्बलका पर्दा पड़ा रहता। रात्रिमें दिये न जलते! दीवारें कच्ची ईंटोंकी थीं। फर्श कच्चा था। खजूरकी लकड़ीका खम्भा और छोहाड़ोंके पत्तोंका छप्पर छा दिया गया

था। उसके बनानेमें वह खुद मजदूरोंके समान काम करते थे। मदीना आनेके सात मास पश्चात् आएशाके साथ पैगम्बरकी शादी हुई। पाँचों वक्त तथा जुमाकी नमाज नियमित रूपसे पढ़ी जाने लगी। यरूशलमकी तरफ मुखकर नमाज पढ़ी जाती थी परन्तु अब काबाकी तरफ मुख करके नमाज पढ़ी जाने लगी। यहूदी तिराही तथा ईसाई घण्टा लोगोंको एकत्र करनेके लिए बजाते थे। मुसलमान अबतक घरोंसे आदमी भेजकर बुलवा लिये जाते थे। हजरत उमरने कहा—"एक आदमी पुकारे, सब लोग आ जायँ।" पैगम्बरने पसन्द किया। अजाँ पुकारी जाने लगी।

मदीनामें उपदेश

मदीनामें वह कभी खाली जमीनपर, कभी किसी खजूरके वृक्षसे उठँगकर लोगोंको उपदेश करते थे। उनसे एक बार पूछा—

"जो भगवान्‌की सृष्टि एवं उसकी सन्तानोंके साथ स्नेह नहीं करते उन्हें क्या समझते हैं?"

"उनके साथ ईश्वर स्नेह नहीं रखेगा।"—पैगम्बरने शान्तिपूर्वक कहा—"प्रत्येक उस मुसलमानको जो नंगेको वस्त्र पहनाता है भगवान् हरे स्वर्गीय वस्त्रोंसे आभूषित करेगा।"

दान

पैगम्बरने कहा—"ईश्वरने पृथ्वी बनायी तो वह हिलती और काँपती थी। कम्पन निवारणार्थ उसने उसपर पहाड़ बनाया।" यह देखकर एक फरिश्ते ने पूछा—

"प्रभो! आपकी सृष्टिमें पर्वतसे भी मजबूत कोई वस्तु है?"

"हाँ।"

"क्या?"

"लोहा।"

"क्यों?"

"वह पर्वतको भी काटता है।"

"लोहेसे भी मजबूत ?"

"अग्नि।"

"क्यों ?"

"वह लोहेको गला देती है।"

"अग्निसे भी अधिक ?"

"जल।"

"क्यों ?"

"जलसे आग बुझ जाती है।"

"जलसे भी मजबूत ?"

"हवा।"

"क्यों ?"

"जलको चलाती है।"

"हवासे भी मजबूत ?"

"दान।"

"क्यों ?"

"यदि कोई दाहिने हाथसे दान दे और बायाँ हाथतक उसे न जान सके तो वह सबपर क्षमता पा जाता है।"

"दान क्या है ?"

"प्रत्येक सद्गुणीय कर्म दान है।"

"और।"

"अपने भाईके सम्मुख प्रसन्नचित्त आना दान है।"

"और ?"

"अपने साथियोंसे सदाचरण करनेके लिए कहना भी दान है।"

"और ?"

"भूलेको मार्ग दिखाना दान है। अन्धेकी सहायता करना दान है। मार्गसे ठोकर तथा काँटा हटाना दान है। प्यासेको पानी देना दान है।"

एक अनुवर्त्तीने पूछा—"मेरी माँ उम्मसद मर गयी है। मैं उनके

लिए क्या दान कर सकता हूँ।"

"जल-दान।"—पैगम्बरने कहा।

उसने एक कूप माँके नामपर खुदवा दिया।

महाजरीन

मक्काके लोग जो मदीना चले आये थे, उन्हें वतनसे दूर रहना खलता था। मक्कावालोंका जीवनस्रोत कारवाँ था। वही उनके आर्थिक ढाचेका मेरुदण्ड था। किसी-किसी कारवाँमें दो हजार ऊँट और पचास हजार दीनारतक माल होता था। कारवाँको हमेशा लुटेरों-का सामना करना पड़ता था। मदीनावाले कभी कारवाँमें हस्तक्षेप नहीं करते थे। किन्तु मक्काके शरणार्थी अर्थात् महाजरीनके कारण स्थिति बदल गयी।

प्रथम आक्रमण

दिसम्बर सन् ६२२ ई० में ३० शरणार्थियोंके साथ हजरत हमजाने सीरियासे आते हुए कारवाँपर आक्रमण किया। यह अबू जहलके नेतृत्वमें आ रहा था। किन्तु बनी जुहेनाके बीच-बचावके कारण खूँरेजी न हुई।

मुसलमानोंकी ओरसे छूटा पहला तीर

जनवरी सन् ६२३ में हजरत उबेदाके नेतृत्वमें दूनी शक्तिके साथ अबू सुफियानके कारवाँपर आक्रमणकी योजना बनी। सूफियानके साथ दो सौ रक्षक सैनिक थे। उबेदाके लोगोंने चरते हुए ऊँटोंपर तीर छोड़ा। यह पहला तीर था जिसे मुसलमानोंने विधर्मियोंपर चलाया था। संघर्षकी नौबत न आयी।

एक मास पश्चात् सादके नेतृत्वमें तृतीय अचानक आक्रमणकी योजना बनी। वे रातमें चलते किन्तु दिनमें छिप जाते थे। पाँचवें दिन उन्हें मालूम हुआ कि कारवाँ एक दिन पहले ही निकल गया था।

जून सन् ६२३ ई० में बीबी आमिना जहाँ गड़ी थी वहीं कुरैशके कारवाँपर आक्रमण करनेकी योजना बनी परन्तु सफलता न मिली।

पहली सन्धि

पैगम्बरने मक्केसे सम्बन्धित पहली सन्धि की। यह आवश्यक समझा गया कि कुरैशों तथा विरोधी दलोंका सामना करनेके लिए भिन्न-भिन्न कबीलोंसे सन्धि कर उन्हें एक सूत्रमें बाँधा जाय। इस्लाम-के इतिहासमें यहाँसे एक मोड़ शुद्ध धार्मिक अंगसे राजनीतिक अंग-की ओर हुआ। धर्म एवं राजनीतिको एकमें मिलानेका यह पहला प्रयास था।

दक्षिण-पश्चिम मदीनाके कारवाँ मार्गपर जुलाई सन् ६२३ ई० में पाँचवें अभियानकी योजना बनी। २५०० ऊँटोंपर उमय्या इब्न खलफ-का मूल्यवान् कारवाँ गुजरनेवाला था। इसके साथ एक सौ हथियार-बन्द आदमी थे। किन्तु कारवाँ निकल गया।

अक्तूबर सन् ६२३ ई० में आक्रमणकी योजना बनी। परन्तु कारवाँ पहले ही निकल गया था। ओसराके समीपवर्त्ती कुछ कबीलोंके साथ सन्धि की गयी।

इस्लामका पहला कैदी

नवम्बर सन् ६२३ ई० में अब्दुल्ला इब्नजहशके साथ बारह महा-जरीन एक लिफाफेके साथ बत्ने नखलाकी ओर जो मक्का और ताएफके बीच मक्कासे एक दिन रातकी दूरीपर है, भेजे गये। आदेश था कि दो दिन चलनेके बाद लिफाफा खोला जाय। निश्चित समयपर लिफाफा खोला गया। आदेश था—"नखलाकी घाटीमें ठहरो, कुरैशकी गति-विधिका पता लगाओ और सूचना दो।"

संयोगवश इसी बीच मक्काके कुछ व्यक्ति जो शामसे व्यापारका सामान लेकर आ रहे थे, सामने आ गये।

मुसलमानोंने पैगम्बर साहबकी आज्ञाके बिना ही मक्कावालोंपर आक्रमण कर दिया। हजरमीका पुत्र अम्र मारा गया। मुसलमान मक्केवालोंका सामान और दो व्यक्तियोंको पकड़कर मदीनाकी ओर लौटे।

हजरत पैगम्बर साहबने इस घटनाका विवरण सुनकर बड़ी अप्रसन्नता प्रकट की। कहा—"मैंने तुमको इन कामोंकी तो आज्ञा नहीं दी थी।"

बद्रका युद्ध

बद्र एक कुएँका नाम है। अब वह शहर हो गया है। बद्रका युद्ध मुसलिम जगत्के लिए विशेष महत्त्व रखता है। किसी सिद्धान्तके लिए अपने पारस्परिक द्वेषभाव, वंशीय शत्रुताको त्यागकर खून बहाना यह एक ऐसी भावना थी जिसने अरबवालोंका कायापलट कर दिया। पैगम्बरने उन्हें भिन्न-भिन्न जाति, गोत्रीय एवं वंशीय शताब्दियोंसे जलती प्रतिहिंसासे निकालकर एक जातिके रूपमें खड़ा कर दिया। परिस्थितिके अनुसार मनुष्य कैसे अपनेको बदल सकता है, धर्मके साथ राजनीति अथवा शस्त्रके साथ-ही-साथ धर्मका क्या सम्बन्ध हो सकता है, उन्होंने व्यावहारिक रूपसे दुनियाके सामने रखा।

जनवरी, सन् ६२४ में अबू सुफियानके कारवाँका समाचार मिला। मुसलमानोंने इसी समय एक मजबूत संघटन बना लिया था। सुफियानको जब समाचार मिला कि कारवाँपर आक्रमण होगा तो दमदमके द्वारा मक्का समाचार भेजा। लालसागरके तटवर्ती प्रदेशसे कारवाँ शामसे मक्काके लिए रवाना हुआ।

रविवार १२ रमजानको मुसलमानोंने प्रस्थान किया। केवल हजरत उसमान बीमार रुकियाकी तीमारदारीके लिए मदीनामें रुक गये। मदीनाकी देखरेखका भार अबू लुबाबाको दिया गया। कुबा तथा ऊपरी मदीनाकी रक्षाके निमित्त नियुक्तियाँ की गयीं।

मुसलमानोंका प्रस्थान

मक्का मार्गसे लोग चले। कुल ३०५ व्यक्ति थे। ८० शरणार्थी थे। चौथाई औस और खजरज कबीलेके लोग थे। साथमें २ घोड़े और ७० ऊँट थे। असकराके समीप पहुँचकर वे पश्चिम बद्रकी ओर घूमे। वह कारवाँका पड़ाव था। गुप्तचर पता लगानेके लिए छोड़े

गये। दो मुसलिम गुप्तचरोंने जलाशयके पास दो औरतोंको बात करते सुना कि कारवाँ कल पहुँचेगा। खबर पैगम्बरको दी गयी।

बद्र पहुँचनेपर अबू सुफियानको जुहैनाके सरदारसे मालूम हुआ कि खतरा नहीं है। केवल दो मुसाफिर ऊँटपर आये और पानी पीकर चले गये। वह तुरन्त जलाशयपर पहुँचा। वहाँ उसे मुसाफिरों द्वारा छोड़ी वस्तुसे पता चल गया कि वे मदीनाके थे। उसने तुरन्त रातोरात समुद्रतटसे मक्काके लिए कूच कर दिया।

मक्कासे कुरैशोंका प्रस्थान

अब सुफियानको मालूम हो गया कि मक्कासे कुरैशोंने प्रस्थान किया है। उसने सूचना भेज दी कि आनेकी आवश्यकता नहीं। किन्तु मक्काकी फौज बद्रकी ओर बढ़ती गयी। कुरैशोंके साथ एक हजार आदमी, सौ ऊँट तथा १० घोड़े थे। पैगम्बरको बृहस्पतिवारको कुरैश फौजका पता चला। हजरत अबू बक्र तथा उमरको आगे बढ़नेके लिए कहा।

बद्रमें अलहुबावने मुहम्मद साहबके ठहरनेके लिए एक खजूरकी कुटी बनायी। इसी दिन मुसलमान मुश्किलसे खड़े हुए होंगे कि कुरैशोंके आगमन द्वारा उड़ती रेत दिखाई दी। जलाशयका घेरा डाला गया। कुरैश घेरा तोड़ना चाहते थे। असवद आगे बढ़ा। हमजाने तलवार चलायी। उसके पैर कटकर झूल गये। उसने घिसकते हुए पानी पीया। जलाशय नष्ट करना चाहता था कि हमजाकी तलवारने उसका काम तमाम कर दिया।

उन दिनोंकी प्रथाके अनुसार ललकार हुई। वलीद गुथ गया हजरत अलीसे। वलीदको गिरते देखकर उसका पिता उतबा आगे बढ़ा। हजरत हमजाने सामना किया। उतबाने साँस तोड़ दी। शैबा आगे बढ़ा। उवैदा सामने आया। उवैदाके पैर कट गये। हमजा और अलीने शैबाका काम तमाम किया। अपने तीन नेताओंको मरते देखकर कुरैशोंका दिल टूट गया।

सेनाएँ जूझीं

दोनों ओरकी सेनाएँ जूझ गयीं। मुख्य शत्रु अबूजहलकी टाँग मुआजने काट दी। अबूजहलके पुत्र इकरमाने मुआज पर हमला किया। अबूजहल साँस तोड़ रहा था कि अब्दुल्ला दौड़ता आया और उसका सर काटकर पैगम्बरके पास लाया। कुरैश हार गये। कुछ कैदी कत्ल कर दिये गये। लड़ाईमें प्राप्त सामान विभाजित कर दिया गया। अबू-जहलका ऊँट तथा उसकी प्रसिद्ध तलवार जुलफिकार पैगम्बरको मिली। कैदियोंको दो-दो चार-चार करके विभाजन कर उन्हें आरामसे रखनेका आदेश दिया गया। बादमें मालदारोंको फिदिया लेकर और निर्धनोंको बिना फिदिया लिये छोड़ दिया गया। जो कैदी लिखना-पढ़ना जानते थे उनका फिदिया १०, १० बच्चोंको लिखना सिखाना तय हुआ।

युद्धविद्यामें नवीनता

बद्रके युद्धमें मुहम्मद साहबने नेताकी हैसियतसे स्वयं आगे बढ़कर युद्ध नहीं किया जैसा कि प्राचीन कालमें नियम था। सेनापति स्वयं सेना लेकर आगे चलता था। पैगम्बरने दूर रहकर युद्धका परिचालन किया। सेनानायकका उत्तरदायित्व युद्ध परिचालन था। वही क्षण-क्षण नीति प्रदर्शित करता था। आजकलके सेनापतियोंने वही नीति अप-नायी है।

रुकय्याका देहांत

लौटनेपर विजयोल्लास फीका पड़ गया। रुकय्याका देहान्त हो गया। पैगम्बरने अपनी तीसरी कन्या उम्मकुल्सुम जिसका ब्याह अबू-लहबके साथ हुआ था और अब अलग हो गये थे, अपने विधुर जामाता हजरत उसमानके साथ कर दिया।

कैदियोंके साथ सद्व्यवहार

पैगम्बरकी आज्ञासे मदीनावाले तथा महाजिरोंने जिनके पास अपने घर थे, आधे हिस्सोंमें कैदियोंको रखा। एक कैदी अबूअजीजका कहना था कि मुसलमान लोग खुद खजूर और पानी पीकर रह जाते परन्तु

कैदियोंको भोजन कराया करते ।

पैगम्बरकी हत्याका यत्न

उमैर इब्न वहब एक नौजवान था । वह मुहम्मद साहबकी जान लेनेके लिए मदीना आया । कुछ दिन उपदेश सुननेपर इतना असर उसपर हुआ कि उसने इस्लाम-धर्म कबूल कर लिया ।

मक्कामें प्रतिहिंसाग्नि

बद्रकी लड़ाईने कुरैशियोंको उत्तेजित कर दिया । जनवरी सन् ६२५ में अर्थात् बद्रकी लड़ाईके एक साल बाद कुरैशोंने मदीनापर हमला करनेका निश्चय किया । गुरुवारको ओहदके मैदानमें कुरैशों-की फौज चलती थी तो आगे-आगे कुरैशोंकी औरतें डफ बजा-बजाकर गाती थीं । उनमें जोश पैदा करती थीं ।

शुक्रवारकी नमाजके पश्चात् पैगम्बरने स्वयं शस्त्र धारण किया । अश्वारूढ़ हो चलना ही चाहते थे कि एक आदमीका जनाजा आ गया । धार्मिक कृत्यके पश्चात् ओहदकी ओर रवाना हुए ।

एकके साथ एक

वंशीय परम्पराके अनुसार अबू सुफयान कुरैशका सेनापति था । तल्हा कुरैशका झण्डा लिये आगे बढ़ा । हजरत अली सामने आये । एक ही वारमें तल्हा लेट गया । उसका भाई उसमान झण्डा उठाकर आगे बढ़ा । हजरत हमजाके वारसे उसने अपनी साँस तोड़ दी । तल्हाके दो भाई और तीन पुत्र बारी बारीसे झण्डा उठाकर आगे बढ़े और मारे गये । पुनः दोनों सेनाएँ भिड़ गयीं । हजरत अली और अबू दुजानाने दोनों हाथोंसे तलवार इसी लड़ाईमें चलायी थी ।

हिन्दका एक गुलाम हब्शी था । उसका नाम वहशी था । हिन्दा उतबाकी बेटी थी । उतबा बद्रकी लड़ाईमें मारा गया था । उसने वहशीको तैयार किया था कि वह हमजाको मारे । उसने हमजाको प्राणहीन कर दिया । कुरैश चिल्ला उठे—"आला उज़्ज़ा", "आला हुबल ।" हिन्दा हमजाका कलेजा निकालकर युद्धभूमिमें चबाने लगी ।

पैगम्बर युद्धका संचालन कर रहे थे। फौजके पीछे वे एक ऊँची जमीनपर खड़े थे। पहले ही आक्रमणमें कुरैशोंके पाँव उखड़ गये। वे मैदान छोड़कर भागे। मुसलमान पीछेसे असावधान हो युद्धका माल लूटने लगे। कुरैश खालिदने पहाड़ीके पीछेसे आक्रमण किया। यह आक्रमण अत्यन्त उग्र हुआ। अफवाह उड़ी पैगम्बर मारे गये। कुरैश उनकी लाश ढूँढ़ने लगे। कुरैशोंकी जीत हुई।

पैगम्बर घायल हुए। जनश्रुति है कि मुसलमानोंके नाककान काटकर कुरैशोंकी स्त्रियोंने गलेमें माला पहनी। पैगम्बरको पहले एक पत्थरकी चोट लगी। तीरसे उनका ओंठ कट गया। सामनेका एक दाँत भी टूटा।

युद्धकौशल

पैगम्बर एक नये प्रकारके युद्धकौशलके जन्मदाता हैं। उन्होंने दुनियाको कुरान दिया, मजहब दिया और नवीन युद्धविद्या भी दी। अबतक रोम, ग्रीक, हिन्दुस्तानमें चाल थी कि सेनापति स्वयं लड़ता था। उसके मरनेके साथ ही युद्धकी हार मान ली जाती थी। लड़ाइयाँ व्यक्तिगत स्वार्थ, मुल्क जीतनेके लिए अथवा राज्य करनेके लिए होती थीं। परन्तु मुसलमानोंकी लड़ाई स्वरक्षा एवं एक सिद्धान्तपर आधारित थी। वह धर्मयुद्ध था। सबमें धर्मकी एक भावना थी। परिचालनकर्त्ता सिपाही-जैसा ही खड़ा एक समूहको दूसरे समूहसे संघर्ष करता देखता था। ताकत और संघटनका सामना सुन्दर परिचालनसे ही किया जा सकता है। मुहम्मद साहबने इस नये सिद्धान्तको दुनियाके सामने रखा। यूनानी, शक, हूण जिस हिन्दुस्तानमें न पनप सके वहाँ मुट्ठीभर मुसलमान बड़ी-से-बड़ी फौजको हरानेमें सफल हुए। मुहम्मद गोरी, पृथ्वीराज, बाबर और राणा साँगा इसके ज्वलन्त उदाहरण हैं। मराठों तथा अंग्रेजोंने भी जब इस कौशलका अनुकरण किया तो मुसलमानोंके पैर उखड़ गये।

युद्धके पश्चात्

अप्रैल, सन् ६२५ में सूचना मिली कि कुरैश पुनः हमला करना

चाहते हैं। मध्य मरुस्थलमें बनी असदकी शक्तिशाली जाति फैली थी। वे कुरैशोंके संघमें थे। उसके सरदार तलीहाने साड़नी तथा घुड़सवारों-की मजबूत ताकत बनायी। अबूसुलेमानके नेतृत्वमें १५० आदमियोंका दल रातमें चलता और दिनमें छिपता, सीधा रास्ता छोड़ता बढ़ा। बनी असद अचानक हमलेके कारण छिन्न-भिन्न हुए परन्तु तलीहा समयकी बाट देखने लगा। आगे चलकर तलीहाने अपनेको नबी घोषित किया था। दूसरी भिड़न्त मक्का और तायफके बीच नखलामें हुई। अब्दुल्ला सुफियान इब्न खालिदका सर काटकर मदीनाकी मसजिदमें लाया।

मई मासमें दस मुसलमान धर्मके प्रचार हेतु अज्ल और कारा कबीलोंके निमन्त्रणपर मक्काकी ओर भेजे गये। जब वे रजीअमें पहुँचे तो लहयान कबीलेवाले प्रतिहिंसासे जलते हुए उनपर टूट पड़े। तीन वहीं शहीद हो गये। एकने भागनेकी कोशिश की और पकड़े जानेपर पत्थरोंसे मार डाला गया। जैद और खुबैब मक्कामें बेच दिये गये। अत्तानिममें उन्हें मक्कावालोंने कत्ल कर दिया।

बीरेमऊना हत्याकांड

बनी आमिर और बनीसुलेमा नज्दके हवरजिन गोत्रके थे। उन्होंने एलान किया कि हम मुसलमान होना चाहते हैं। चालीस मुसलमान मदीनासे रवाना हुए। चार दिन चलनेके बाद बीरमऊना जलाशयपर पहुँचे। आमिरबिन तुफैलके पास खबर भेजी। सन्देशवाहक मार डाला गया। अपने कबीलेवालोंसे हमला करनेके लिए कहा। कबीलेवालोंने इनकार किया। आमिरने बनीसुलेमासे मदद ली। मुसलमानोंपर टूट पड़े और बोटी-बोटी काट डाली।

अम्र इब्न उमय्याने लौटते समय मार्गमें बनी आमिरके दो आद-मियोंको सोते पाया और उन्हें मार डाला। पैगम्बर बहुत नाराज हुए। अरबी कानूनके अनुसार खूनका हरजाना रुपयोंमें अदा किया गया।

बनी नज़ीरका निर्वासन

बनी आमिरके साथ यहूदी गोत्र बनी नज़ीरका संघ था। उन्हें

रक्षाकी दृष्टिसे हटनेके लिए कहा गया। उन्होंने इनकार किया। अपनी किलेबन्दीमें चले गये। घेरा अधिक दिन पड़े रहनेपर बाहर लगे उनके पौधे और खजूरके दरख्त मुसलमानोंने काट डाले। खेतोंमें आग लगा दी गयी। यहूदियोंने देशत्यागका निश्चय किया। वे शामकी ओर चले गये।

जनवरी सन् ६२६ में इन्होंने बद्र युद्धमें भाग लिया। ओबेदाकी विधवा स्त्री जैनबसे पैगम्बर साहबने शादी की। फरवरीमें अबूसलमाकी विधवा उम्मसलमासे विवाह किया। अबूसलमा ओहदकी लड़ाईमें बुरी तरह घायल हुए थे। बनी आमिरकी लड़ाईमें उन्होंने पुनः भाग लिया था। उनका पाँव कट गया और शरीरांत हो गया।

द्वितीय बद्र अभियान

फरवरी और मार्च सन् ६२६ में सूखा पड़ा। कुरैशने निश्चय किया कि वे बद्रमें लड़ेंगे। दो हजार पैदल तथा पचास घुड़सवारोंके साथ प्रस्थान किया। दो एक दिन चलनेके कारण अकालने उन्हें आगे बढ़ने न दिया। पैगम्बरने सामना करनेके लिए कहा। कुछ लोगोंने साहस खोया। पैगम्बर बोले—"वे अकेले जायँगे।" उनके आत्मविश्वासने लोगोंको अनुप्राणित किया। पन्द्रह सौ लोग चले। ८ दिनतक बद्रमें खेमा डाले रहे। कुरैश न आये। उनके घमण्डको ठेस लगी।

मई सन् ६२६ में बनी गतफान सन्देहात्मक ढंगसे एकत्र होने लगे। चारसौ आदमी मदीनासे रवाना हुए। खबर पाते ही कबीलेवाले पहाड़ोंमें भाग गये। 'खतरेकी नमाज' की रीति इसी समयसे चली। एक दल प्रार्थना करता तो दूसरा दल हथियारबन्द उनकी रक्षा निमित्त मुस्तैद रहता था। पन्द्रह दिन पश्चात् वे मदीना लौट आये।

लालसागर और फारसकी खाड़ियोंके बीच दौमतुलजन्दलका ओयसिस है। वहाँ अकाल पड़ा। उससे मदीनेको खतरा न पैदा हो और वे लूटमारपर न उतर आवें अतएव उनके विरुद्ध अभियान किया

गया। वे भाग गये। उनके कुछ जानवर पकड़े गये। लौटते समय फज़ाराके सरदार ओयेनासे सन्धि हुई।

पैगम्बरकी उम्र ६० सालकी हो गयी थी। जून सन् ६२६ में अपने पोष्यपुत्र जैदकी परित्यक्ता स्त्री जैनबसे छठीं शादी की।

बनी अलमुश्तालिक

दूमासे लौटनेपर मालूम हुआ कि खोजाओंकी एक शाखावाले बनी अलमुश्तलिक कुरैशोंकी मददसे मदीनेपर आक्रमणकी योजना बना रहे हैं। मदीनासे प्रस्थान किया। ८ दिनतक चलकर समुद्रके पास अलमोरैसीके पास डेरा डाला गया। पैगम्बरके साथ बीबी आयशा तथा उम्मसलमा भी थीं। दुश्मन घेर लिये गये। उनके दस तथा मदीनाके दो आदमी खेत रहे। छः सौसे अधिक बन्दी, २ हजार ऊँट और पाँच हजार भेड़-बकरियाँ मिलीं।

जुवैरिया बनी मुश्तालिक कबीलेकी एक सरदारकी बीस वर्षीया स्त्री थी। अपने कबीलेके पकड़े जानेपर एक नागरिकके हाथ पड़ी। उसने उसकी कीमत ४ छटाँक सोना रखा। पैगम्बरने उससे स्वयं शादी की। शादी और सम्बन्धके उपलक्ष्यमें सभी बनी मुश्तालिक कबीलेके लोग छोड़ दिये गये।

कुरैश मुसलिम अन्तिम संघर्ष

कुरैश संघने मदीनापर आक्रमण करनेकी अभूतपूर्ण योजना बनायी। अशजा तथा मुर्रा कबीलोंने चार-चार सौ सिपाही दिये। उमय्याके नेतृत्वमें बनी फजारा एक बड़ी फौज और एक हजार ऊँट लेकर आये। कुरैश केवल ४ हजार सैनिक, ३०० घोड़े, १५०० साढ़िनी-सवारके सहित चले। ओहदकी लड़ाईमें मारे गये तल्हाके लड़के उसमानके हाथमें झण्डा दिया गया। सेनापति अबू सुफियान था। कुल शक्ति १० हजार लोगोंकी थी, तीन भागोंमें सेनाने प्रयाण किया।

विश्वका प्रथम खाई युद्ध

मदीनाकी रक्षाका प्रश्न था। सलमान फारसीने राय दी कि खाई

खोदी जाय। खुलकर लड़ना कठिन था। खाई खोदी जाने लगी। पैगम्बर साहबने खुद खाई खोदी। मिट्टी फेंकी। खाई ३॥ मील लम्बी, चौड़ी करीब दस गज और गहरी भी शायद इससे कम ही रही होगी। छ दिनमें खाई खोदी गयी थी। अरब खाई-युद्धसे अपरिचित थे। मुसलमान खाइयोंमें बैठे तीर चलाते थे। पत्थरके ढोके रक्षाके निमित्त रख दिये गये थे। मुसलमानोंकी ३ हजारकी सेना खाई और मदीनाके बीच खुले मैदानमें खड़ी हो गयी। पैगम्बरके लिए एक चमड़ेका खेमा लगा दिया गया।

बनी कुरैजाका विश्वासघात

अबू सुफियानकी नीतिके कारण ठीक समयपर कुरैजाने पैगम्बरका साथ छोड़ दिया। कुरैशका आक्रमण खाईके कारण सफल न हो सका। खाई इतनी चौड़ी थी कि घोड़ा पार न जा सकता था। कहीं पतली पाकर यदि डाक भी गया तो उसमें आशानुसार सफलता न मिली। लगभग एक मासके घेरेके पश्चात् कुरैश लौट गये। उनके साथ मुगल फौजकी तरह इतना लवाजमा था कि वे ज्यादा ठहर न सकते थे।

बनी कुरैजापर हमला

कुरैशके विदा होते ही बनी कुरैजापर आक्रमण किया गया। तीन हजार मुसलमान पैगम्बरके नेतृत्वमें चले। कुरैजाने आत्मसमर्पण कर दिया और उन्हींकी रायसे सअद इब्न मुआज फैसलेके लिए नियुक्त किये गये। एक ओर मदीनाकी फौज खड़ी थी। दूसरी ओर मुश्कबन्द ७ या ८ सौ कुरैजा थे। दायीं ओर बच्चे और स्त्रियाँ पीली पड़ी खड़ी थीं। साद घायल था। कमजोर था। आदमियोंका सहारा लेकर खड़ा था। उसने अपने ही भूतपूर्व मित्रोंको बनी कुरैजाकी ओर देखा। उन्हींके धर्मशास्त्रके अनुसार उसने फैसला दिया। लड़ने योग्य पुरुष मार डाले जायँ। स्त्रियाँ और बच्चे गुलाम बना लिये जायँ। सम्पत्ति बाँट दी जाय। रातोरात बाजारकी दूसरी तरफ बहुत बड़ी कब्र खोदी गयी। कब्रके पास बन्दी बैठाये जाने लगे। उनका सर कब्रमें गिरने लगा। धड़ भी

उसीमें फेंक दिया गया। यदि बनी कुरैजाने पैगम्बर साहबको पंच माना होता तो कदाचित् उन्हें इतना कठोर दण्ड न मिलता, जैसा कि वे अन्य यहूदी गोत्रके सम्बन्धमें देख चुके थे। अधिक-से-अधिक प्रस्थान पर बाध्य कर दिया जाता। साद भी अपनी चोटोंके कारण मर गया। पैगम्बरने उसे कन्धा दिया।

हिजरतके छठे सालमें कुछ कारवाँके विरुद्ध अभियान किया गया। जून सन् ६२७ में बनी लिबानने जो अराजीमें हत्याएँ की थीं उनके विरुद्ध २०० साहिनी तथा २० घुड़सवारोंके साथ आक्रमण किया गया। पैगम्बरने स्वयं इसका नेतृत्व किया था। सूचना मिलते ही नियान पहाड़ोंमें चले गये। जहाँ मुसलमानोंकी हत्या हुई थी वहाँ धार्मिक कृत्य किया गया।

ओयनासे संघर्ष

जुलाईमें ओयना अपने घुड़सवारोंके साथ मदीनापर आक्रमण कर पैगम्बरकी दुधार गायोंको उठा ले गया। चरवाहेको मार डाला। पैग-म्बरको मसजिदके दरवाजेपर खबर मिली। उस समय वहाँ जितने लोग मौजूद थे उन्हें झण्डा देकर रवाना किया गया। ६०० साथियोंके साथ पैगम्बरने स्वयं प्रस्थान किया। सादबिन उबादा ३०० सैनिकोंके साथ मदीनाकी रक्षाके लिए छोड़ दिया गया। लुटेरे पकड़े गये। बहुतसे मारे गये। आधे जानवर मिले। खैबरकी ओर जुलतक उनका पीछा किया गया। पाँच दिन बाद लोग मदीना लौटे।

जुल बस्सा हत्याकाण्ड

जुल बस्सा मदीनासे दो या तीन दिनका रास्ता था। मुसलमानोंके पास अब काफी ऊँट और जानवर हो गये थे। चराईके मामलेको लेकर झगड़ा हुआ मसलमा नियुक्त किये गये। रातमें दुश्मनोंने उन्हें घेर लिया। सब लोग मार डाले गये। मसलमाको मरा समझकर मैदानमें छोड़ दिया। दूसरे दिन एक परिचितने जो उस ओरसे जा रहे थे मसलमाको मदीना पहुँचाया। यह घटना अगस्तकी है। सूचना

मिलते ही अबूउबैदाके नेतृत्वमें ४० घुड़सवार चले, परन्तु लुटेरोंका पता न लगा।

अक्तूबरमें बनी जुदआनसे संघर्ष हुआ। जैद व्यापारिक कार्यवश शामजा रहा था। वादी अलकुराके पास मार्ग भूल गया। बनी फजाराने लूटकी और अमानुषिक व्यवहार किया। मदीनामें घाव अच्छा होनेपर उसे ही जिम्मेदारी दी गयी कि वह कबीलेको सजा दे। उसने अचानक उनपर आक्रमण किया। ओयेनाकी चाची उम्मकिरफा कबीलेकी सरदार समझी जाती थी। वह पकड़ी गयी। उसके दोनों पैर दो ऊँटोंके पैरमें बाँध दिये गये। ऊँट दौड़ाये गये। वह दो टुकड़े हो गयी। उसके दो भाई भी मौतके घाट उतार दिये गये।

मक्काकी प्रथम यात्रा

फरवरी सन् ६२८ में एक दिन मुहम्मद साहबने प्रातःकाल स्नान किया। तीर्थ निमित्त वस्त्र धारण किया। उनके साथ १५०० तीर्थ-यात्री थे। वह अलकसवापर सवार हुए। जुलहुलैफा पहुँचे। यह मक्काके मार्गमें है। वहाँ लब्बैक कहा गया। बलि-पशुओंका मुख मक्काकी तरफ किया गया। उनमें अबूजहलका वह ऊँट भी था जो बद्रके युद्धमें पकड़ा गया था। सबकी बलि दी गयी।

कुरैशने विरोधका निश्चय किया। सभी कबीलेवाले मिल गये। खालिद और इकरमाके नेतृत्वमें २०० घुड़सवार बाढ़ रोकनेके लिए भेजे गये। सुफियाने पैगम्बरको खबर दी कि कुरैश अजगरके चमड़ोंका कपड़ा पहने खेमा गाड़े हैं। मुहम्मद साहब दूसरे मार्गसे अल हुदैबियाह पहुँचे। यह स्थान मक्काकी सीमापर मैदानमें था।

कुरैश मक्का लौट आये। मुसलमानोंका वास्तविक तात्पर्य जाननेकी चेष्टा करने लगे। खुजाई सरदारे कुरैश मुसलमानोंके खेमेमें आया। उसने स्पष्ट कहा कि उसका एकमात्र प्रयोजन तीर्थयात्रा है। अबू सुफियानका दामाद दूसरा दूत फिर भेजा गया। मुसलमानोंने हजरत उसमानको अपना दूत बनाकर मक्का भेजा। हजरत उसमानके लौटनेमें

बिलम्ब हुआ, धोखेकी शंका होने लगी।

प्रतिज्ञा

पैगम्बर वृक्षकी शीतल छायामें खड़े हो गये। बोले, कौन प्रतिज्ञा करना चाहता है कि अन्ततक साथ देंगे। सबने एक-एक कर पैगम्बरकी हथेलीपर हाथ रखकर प्रतिज्ञा की। पैगम्बरने अपनी दायीं हथेली बायींपर रखकर स्वयं प्रतिज्ञा की।

कुरैशने सुहैल आदिको सन्धि करनेका उत्तरदायित्व दिया। निश्चय हुआ कि इस वर्षतक शाम जानेवालेका मार्ग निर्विघ्न रहेगा। अपने संरक्षककी आज्ञा बिना यदि कोई व्यक्ति मुसलमानोंके यहाँ जायगा तो वह वापस कर दिया जायगा। पैगम्बरका कोई अनुवर्ती कुरैशके यहाँ आ जाय तो वह वापस न किया जायगा। इस वर्ष मक्कामें बिना प्रवेश किये तीर्थयात्री पैगम्बर सहित लौट जायँ। आगामी वर्ष पैगम्बर मक्का आ सकते हैं। आगंतुकोंके पास एक म्यानदार तलवारके अतिरिक्त और कोई हथियार न होगा। उन लोगों-के मक्का आनेपर सब कुरैश मक्का छोड़कर बाहर चले जायँगे।

बिना तीर्थ वापस

परम्पराके अनुसार पैगम्बरने साथियोंके साथ सिर मुड़ाया, मक्काके बाहर ही बलि प्रदान की। परिणाम यह हुआ कि अच्छा असर पड़ा। बनी खुजाआ पैगम्बरके साथ हो गये। सुहैलके पुत्रने पैगम्बरके साथ चलनेकी प्रार्थना की, किन्तु सन्धिके अनुसार उन्होंने उसे वापस कर दिया।

अगस्त सन् ६२८ में १६०० व्यक्तियोंकी ताकत खैबरको दबानेके लिए चली। उम्मसलमा इस बार भी पैगम्बरके साथ थी। सौ मीलका मार्ग ३ दिनमें समाप्त किया गया। सेना देखते ही खैबरवाले शहरकी किलेबन्दीके भीतर हो गये। उन्हें गतफानसे किसी तरहकी सहायताकी आशा न रही। खैबरकी घाटी छोटी-छोटी गढ़ियोंसे भरी थी। 'खेरिबान खैबर'के नारेसे पूरा खैबर जीत लिया गया। अलकमूसकी गढ़ीका सर-

दार किनाना लड़नेके लिए आगे बढ़ा। हजरत अलीने झण्डा उठाया। फतह मिली।

आठवीं शादी तथा विष

किनानेकी विधवा सुफियासे पैगम्बरने विवाह कर लिया। अली द्वारा मरहब मारा गया था। उसकी बहिन जेनब थी। उसके पिता, शौहर और भाई लड़ाईमें मारे गये थे। उसने दावत दी। हजरत अबू बक्र आदि खाने बैठे। पैगम्बरके पार्श्वमें बिश्रबिनबरा बैठा। मुहम्मद साहब कह उठे—"मत खाओ।" वह कुछ खा चुका था। उसका रंग बदल गया। वह तत्काल मर गया। पैगम्बरने भी कुछ खा लिया था। विषका प्रभाव उनपर अन्ततक रहा।

सन्धिके अनुसार फरवरी सन् ६२९ में २ हजार व्यक्तियोंके साथ पैगम्बरने यात्राके लिए प्रस्थान किया। ६० ऊँट आगे-आगे बलिदानके लिए चले। परन्तु बाहजमें सब हथियार रख दिये गये कि यदि कुरैशने धोखा दिया तो उनका प्रयोग किया जायगा। उसपर २०० सैनिकोंको रक्षाके लिए छोड़ दिया गया। मक्काके लिए लोग बढ़े।

सन्धिके अनुसार कुरैशने मक्का छोड़ दिया। उनके घर खाली पड़े रहे। वे पहाड़ियोंपर चले गये। वहाँसे नीचेका सब हाल देखने लगे। उत्तरी मार्गसे मुसलमानोंने मक्कामें प्रवेश किया। अलकसवापर बैठे पैगम्बर आगे चल रहे थे। ऊँटनीकी नकेल अब्दुल्ला इब्नखाहाके हाथोंमें थी। सात वर्षोंके पश्चात् मुसलमानोंने पुनः जन्मभूमिमें प्रवेश किया था।

काबाका दर्शन होते ही आवाज गूँजी—'लब्बेक'। काबेकी ७ बार परिक्रमा की गयी। संगअस्वद्का पवित्र स्पर्श किया गया। तत्पश्चात् प्राचीन प्रथानुसार मरवा तथा सफाकी सब रस्में अदा की गयीं अर्थात् एक ओरसे दूसरी तरफ सात बार लोग आये और गये। पैगम्बरने तथा साथियोंने सिर मुण्डन कराया।

दूसरे दिन पैगम्बर काबामें प्रातःकालसे शामकी नमाजतक रहे।

विलालने छतपर चढ़कर अजाँ दी। मदीनाकी मसजिदमें जिस प्रकार नमाज पढ़ी जाती थी उसी प्रकार पैगम्बरने नमाज पढ़ायी। पैगम्बर किसीके मकानमें न रहे। काबाके समीप चमड़ेके खेमेमें निवास किया।

अब्बासकी साली २६ वर्षीया विधवा मैमूनाके साथ पैगम्बरने विवाह किया। उसने पैगम्बरके अन्तकालसे ५० साल बादतक वैधव्य जीवन व्यतीत किया। अपने इच्छानुसार वहीं गाड़ी गयी जहाँ उसकी सुहागरात हुई थी। मक्कावालोंसे कह गया कि कुछ दिन रहने दें और शादीकी दावतमें शामिल हों परन्तु उन्होंने इनकार किया।

मदीना लौटनेके पश्चात् अप्रैल सन् ६२९ में बनी सुलैमाको फतह करनेके लिए ५० व्यक्तियोंका दल गया परन्तु सफलता न मिली। जूनमें बनी लेस जो मक्काके मार्गमें थे, फतह करनेके लिए लोग भेजे गये, परन्तु वे भाग गये। बनी मुर्राकी फतह करनेके लिए २०० सिपाही भेजे। जितने लोग पकड़में आ सके सभी मार डाले गये।

मूतहका युद्ध

सितम्बर, सन् ६२९ में मूतहका प्रसिद्ध युद्ध हुआ। कारण यह था कि पैगम्बर साहबने विभिन्न राजाओंके नाम—इस्लामके निमन्त्रण हेतु जो पत्र लिखवाये उनमें एक बुसराके अमीर शुरहबील गस्सानीके नाम भी था। पत्र ले जानेवाले हारिस इब्नउमैर थे। उस दुष्टने हारिसको मार डाला। बदला लेनेके लिए ३००० सिपाही एकत्र किये गये। निश्चय हुआ कि यदि नेता जैद मारे जायँ तो जाफर और उनके मरनेपर अब्दुल्ला बिनरवाहा नेतृत्व ग्रहण करेंगे। यदि वे भी खेत रहे तो फौज अपना सरदार चुन लेगी। रोमन फौजकी बड़ी तैयारी देखकर वे मूतह ग्रामके समीप ठहर गये। जैद श्वेत झण्डा लेकर आगे बढ़ा। शहीद हुआ। अब्दुल्लाने तुरत झण्डा ले लिया। आगे बढ़ा, वह भी शहीद हुआ। फौजने खालिदको सेनापति चुना। खालिदने बड़ी चतुराईसे सेनाका परिचालन किया। उसके हाथोंसे नौ तलवारें लड़ते समय टूटी थीं। उसने मुसलमान फौजको टुकड़ियोंमें बाँटकर आगे बढ़ाया।

रोमन लोग खालिदका कुछ बिगाड़ न सके। खालिदने पूरी फौजको भयंकर हत्याकाण्डसे बचा लिया। खालिद विश्वके सेनापतियोंमें अपनी रणचातुरीके कारण महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है।

अम्र और अबू उबैदाने अक्तूबर, सन् ६२९ में शामके सीमावर्ती कबीलोंको काबूमें किया। अम्रके साथ २०० सैनिक थे। १० दिनके प्रयाणके पश्चात् उसने देखा कि शत्रु काफी संख्यामें लोहा लेनेके लिए उठे हैं। अबू बक्र और अबू उबैदाने चाहा कि दोनों ही सेनाओंका वह नेतृत्व करे, परन्तु अम्रने स्वीकार नहीं किया। अम्रने सेनाके नेतृत्वके साथ-ही-साथ नमाज पढ़ायी। अरबवालोंको मिलाकर पैगम्बरने एक जाति बनायी, एक धर्म दिया और एक राज्य दिया। यही मुसलिम जगत्‌की त्रिवेणी है।

नवम्बर, सन् ६२९ में अबू उबैदाने ३०० सिपाहियोंके साथ समुद्रतटवर्ती जुहेना लोगोंको परास्त किया। दिसम्बरमें गतफान कबीलेको पराजित किया गया। बनी अब्स, मुर्रा, जुबयान, फ़जारा आदि कबीलोंने पूर्णरूपेण मुसलिम सत्ता स्वीकार की।

मक्का-विजय

दिसम्बर सन् ६२९ में मक्काकी ओर प्रयाण करनेकी भावना उठी, कारण यह कि खुजाआ और बनी बक्र कबीले मक्कामें रहते थे। खुजाआ पैगम्बरसे सम्बन्धित थे और बक्र कुरैशोंसे। खुजाआ कबीलेमें घुसकर बनी बक्रके कबीलेवालोंने कुछ लोगोंको मारा। खुजाआने पैगम्बरकी सहायता माँगी। वे तैयार हो गये। अब सुफियान मदीना गया और कहा कि १० वर्षीय सन्धिकी शर्तोंके विरुद्ध यह बात होगी, किन्तु सफलता न मिली। मक्कापर चलनेकी योजना बनने लगी।

जनवरी, सन् ६३० में जुहेना तथा सुलैम कबीलोंने एक-एक हजार आदमियोंसे मदद की। लगभग १० हजार सैनिकोंने मक्काकी ओर कूच किया। जैनब और उम्मसलमा पैगम्बरके साथ थीं। जुबैर दो सौ आदमियोंके साथ चला। मक्कासे एक दिनकी मंजिल मर्रु उज़-

हरानपर खेमा डाला गया। अल अब्बास कुरैशोंका साथ छोड़कर पैगम्बरसे मिल गये। अबू सुफियान पैगम्बरके खेमेमें आया, परन्तु सफलता न मिली।

जुबैर बायें पार्श्वका नेतृत्व करता हुआ उत्तरी ओरसे, खालिद दक्षिण पार्श्वका नेतृत्व करता दक्षिण ओरसे, सादबिन उबादा तथा अबूउबैदा महाजरीनका नेतृत्व करता जबले हिन्दकी ओरसे प्रवेश करे। झण्डा कैसके हाथोंमें था। पैगम्बरने सख्त हुक्म दिया था कि किसी तरहकी खूँरेजी मक्कामें न की जाय।

कुरैश पराजित

कुरैश संघ टूट गया। सुफियान, सुहेल, अबूजहलके पुत्र इक्रिमाने सामना किया, किन्तु खालिदके सामने उन्हें मैदान छोड़कर भागना पड़ा। खालिदके २ तथा मक्काके २८ आदमी मारे गये।

अबूतालिब तथा खादिजाके मजारोंके समीप पैगम्बरका चमड़ेका खेमा लगाया गया। खालिदके सिपाहियोंके हाथोंमें नंगी तलवार देखकर वे बहुत नाराज हुए।

अलकसवापर चढ़कर पैगम्बरने काबामें प्रवेश किया। काबेकी सब मूर्तियाँ हटा दी गयीं। उनकी पूजा करनेवाला, उनके सम्मुख मस्तक झुकानेवाला कोई न रह गया था। सारा अरब मुसलमान होनेके लिए तैयार था। मूर्ति पूजकोंका समय बीत चुका था। उनकी उपादेयता समाप्त हो चुकी थी।

अल उज्जादेवीकी मूर्ति करबलामें नष्ट की गयी। सुदाअकी मूर्ति टुकड़े-टुकड़े कर डाली गयी। मनातकी मूर्त्ति तोड़ फेंकी गयी। अरबके साधारण नागरिकोंने देखा कि जिनको वे सर्वशक्तिमान देवता माना करते थे वे अपनी रक्षा न कर सके। उनकी उनपरसे आस्था उठ गयी। सबने इस्लाम कबूल किया।

हवाजिन जाति मक्कासे दक्षिण पूर्व रहती थी। वह मूर्त्तिपूजक थी। उसने भी मूर्त्तियोंको नमस्कार कर इस्लाम कबूल किया।

मुआज इब्न जबलको इस्लामकी शिक्षा तथा कुरान मजीद सिखानेके लिए छोड़ दिया गया। कुरैशोंके घरानेके अतवाको राजकीय मामलोंके इन्तजामका भार दिया गया। १२ हजार सैनिकोंके साथ लोगोंने मदीनाके लिए प्रस्थान किया।

हवाजिनोंपर आक्रमण

हवाजिन मलिकके नेतृत्वमें एकत्र हो रहे थे। औतासकी घाटीमें सामना हुआ। वे हार गये। पहली फरवरीको यह युद्ध हुआ था। ६ हजार आदमी कैद कर लिये गये। लगभग तीन मन चाँदी, २४ हजार ऊँट तथा ४० हजार भेड़-बकरियाँ मुसलमानोंको मिलीं। बादमें हवाजिन छोड़ दिये गये।

तायफके आक्रमणमें अबू बकका लड़का घायल हुआ। उम्मसलमा तथा जैनब पैगम्बरके साथ थीं। जिस स्थानपर पैगम्बरने नमाज पढ़ी थी वहाँ आज तायफकी प्रसिद्ध मसजिद खड़ी है।

तुफैलने मूर्ति जलाकर पैगम्बरका साथ कर लिया। उनके बाग काट डाले गये। गुलामोंकी आजादीकी घोषणा की गयी। नागरिकोंने हार मान ली। पैगम्बरके अनुयायी हुए।

बाल्यस्नेहकी स्मृति

बनी साद कबीलेकी हलीमा थीं। उसकी लड़की शैमाने पैगम्बरके साथ ही हलीमाका दूध पीया था। एक साथ दोनों भाई-बहनकी तरह खेले थे। पैगम्बरने उसे अपनी बगलमें बैठाया। साथ चलनेके लिए कहा। वह अपने कबीलेका साथ छोड़नेके लिए तैयार न हुई। अपने गोत्रको स्त्रीका इस प्रकार सम्मान होता देख वे प्रसन्न हुए।

जिन कबीलोंने पैगम्बरकी सत्ता मान ली थी उनमें कर वसूल करनेकी व्यवस्था की गयी। तबूकपर आक्रमण किया गया। तबूकमें रहकर ईसाई राजासे सन्धि हो गयी। खालिदने दुम तुलजन्दलको अधीन किया। यहूदियोंसे मीनिया, अज़रुह तथा जरवामें सुलह की गयी। दिसम्बरमें पैगम्बर मदीना लौटे। दुमतुलज़न्दल सरदारने इस-

लाम कबूल कर लिया।

हातिमताई तय कबीलेके थे। दानशीलोंमें उनकी ख्याति है। मदीनासे २०० मील उत्तर शामकी सरहदपर वह कबीला रहता था। रोमन षड्यन्त्रका वह अड्डा हो गया था। पैगम्बरने अलीको फौजके साथ भेजा।

हातिमताईका लड़का अदी तय गोत्रका सरदार था। वह भाग गया। उसकी बहन सफनाह आदि पकड़ लिये गये। पैगम्बरने सफनाह तथा सभी कैदियोंको छोड़ दिया। अदी बड़ा प्रभावित हुआ। मदीना आया। उस कबीलेके सभी लोगोंने इस्लाम कबूल कर लिया।

तायफके घेरेके समय उरवा यमन युद्धविद्या सीखने गया था। लौटनेपर देखा कि अलतायफके अतिरिक्त सभी इस्लामके सम्मुख सर झुका चुके हैं। मदीना आया। पैगम्बरसे अत्यन्त प्रभावित होकर मुसलमान हो गया। घर लौटकर आया। अपने घरसे अजाँ दिया। मूर्तिपूजक बिगड़ गये। घर घेर लिया। बाणोंसे छेदकर उसे मार डाला, किन्तु उसने धर्मका त्याग न किया।

हवाजिन तथा मालिक कबीले लूटपाट करने लगे। अरबके कबीलोंने रक्षा निमित्त पैगम्बरके पास खबर भेजी। इस दलमें ६ सरदार तथा २० आदमी थे। उनके लिए खेमा लगा दिया गया। उनमें अल मुगरा भी थे। पैगम्बरने उन्हें इस्लामके सिद्धान्त समझाये। उन्होंने धर्म स्वीकार किया परन्तु बोले कि स्त्रियाँ लातकी पूजा करती हैं उसे कुछ समयतक जारी रहने दिया जाय। पैगम्बरने स्पष्ट कहा कि मूर्तिपूजा किसी कीमतपर इस्लाम कबूल नहीं करेगा। अबूसुफयान तथा अलमुगरापर उत्तरदायित्व सौंपा गया कि लातकी मूर्ति खण्डित करें। लोगोंने इस्लाम कबूल किया। मूर्तिपूजक स्वयं शून्य हो गये।

तेईस वर्षोंके घोर संघर्ष एवं उथल-पुथलके पश्चात् पैगम्बर तथा उनके अनुयायी सफल हुए। उन्होंने अरब समाजमें एक अभूतपूर्व क्रान्ति की। इस क्रान्तिकी पूर्णाहुतिमें अनेक युद्धों एवं संघर्षोंकी

आहुतियाँ पड़ी थीं। क्रान्तिके दौरानमें यदि काम आये लोगोंकी गणना की जाय तो मानना ही पड़ेगा कि जो सफलता मिली थी उसके सम्मुख वे नगण्य हैं।

वार्षिक तीर्थ

पैगम्बर वार्षिक तीर्थयात्रा निमित्त न जा सके अतएव अबू बक्र ३०० आदमियोंके साथ मक्काके लिए रवाना हुए। मिना, जहाँ पत्थर फेंकनेका रवाज पूरा किया जाता है, हजरत अलीने पैगम्बरका आदेश पढ़ा—"जो लोग ईमान नहीं लाये हैं वे स्वर्गमें प्रवेश न पा सकेंगे। कोई भी मूर्तिपूजक इस वर्षके पश्चात् तीर्थयात्रामें भाग न ले सकेगा। कोई भी पवित्र काबाकी परिक्रमा नंगा नहीं कर सकेगा। जिन्होंने पैगंम्बरसे सन्धि की है उनकी अवधितक उसका पालन किया जायगा। चार मासका समय कबीलेवालोंको दिया जाता है कि वे अपने घरोंको वापस आ जायँ। इस समयके पश्चात् पैगम्बरका कोई उत्तरदायित्व न रहेगा।"

हज्जतुल विदा

पैगम्बर साहब चालीस हजार व्यक्तियोंके साथ मदीनासे मक्काकी ओर चले। दसवें दिन मक्का शरीफ पहुँचे। दूसरे दिन स्नानकर अलकसवापर चढ़कर वे मक्काकी ओर अग्रसर हुए। प्रवेश करते हुए बोले—"हे भगवान्! इस पवित्र स्थानके गौरव, प्रतिष्ठा, श्रद्धा एवं मर्यादाकी अभिवृद्धि कर, जिसे तूने उसे दिया है।" अलकसवापर उन्होंने सात बार परिक्रमा की। पूर्व रीत्यानुसार कार्य कर अपने खेमेमें लौट आये। मिनामें नमाज पढ़ी। दूसरे दिन अरफात पहुँचे।

अरफातकी पावेज पहाड़ीपर वह कम्बलके खेमेमें ठहरे। दोपहरके बाद अलकसवापर आरूढ़ पैगम्बरने खुतवा दिया—"चाहे अरब वाले हों या अजमवाले, सब आदमके बेटे हैं। वे खाकसे बने हैं। विश्वके समस्त मुसलमान भाई-भाई हैं। जो स्वयं खाओ वही अपने दासोंको भी खिलाओ। जो स्वयं पहनो उसे ही गुलामोंको भी पहनाओ। ईश्वरी

पुस्तक कुरान मजीद तुम्हारे पास है। यदि उसके अनुसार आचरण करोगे तो पथभ्रष्ट न होगे। आज मैंने तुम्हारा धर्म तुम्हारे निमित्त पूर्ण किया है। तुम्हारे लिए इस्लाम-धर्म निश्चित किया है। सूद लेना अनुचित है। कोई किसीपर अत्याचार न करे। प्रत्येक मुसलमानकी प्रत्येक वस्तु प्रत्येक मुसलमानके लिए गौरवकी वस्तु है। प्रत्येक अपराधी केवल अपराधके लिए उत्तरदायित्व रखता है। अपनी स्त्रियोंसे दयापूर्ण व्यवहार एवं प्रेम करो। प्रत्येक व्यक्ति अपने अधिकारके अनुसार सम्पत्तिका अधिकारी होगा। हे परमेश्वर !! मैंने तुम्हारा सन्देश विश्वको सुना दिया है। मैंने अपना कर्तव्य पूर्ण किया है। भगवान् ! मेरी प्रार्थना है ! तू ही हमारा साक्षी हो।"

सूर्यास्तकालमें वह लौटे। उनकी ऊँटनीपर उनके पीछे जैदका पुत्र उसामा सवार था। सन्ध्या एवं सूर्यास्त दोनों नमाजें एक साथ पढ़ीं। रात्रिमें वहीं निवास किया। लोगोंसे बोले कि अलअकबाके कोनेसे सूर्योदयके पहले पत्थर मत फेंकना।

ज़ुलहिज्जाकी १० वीं तारीखको मिनाकी यात्रा की। अलअब्बासका पुत्र फजल उनके पीछे ऊँटनीपर बैठा था। पानी बरस रहा था। यात्रियोंकी वाणी मुखरित हुई—लब्बेक ! लब्बेक !! लब्बेक !!! भगवान्‌के अतिरिक्त और कोई भगवान् नहीं है। तुम्हारा कोई शरीक नहीं है। मिनाकी घाटीपर पहुँचकर एक पत्थर शैतानके किनारेसे फेंका। सर मुण्डन करवाया। नख कटवाया। बाल और नाखून जला दिये गये। वे १० या १२ दिनतक मिनामें रहे।

अन्तिम अभियान

जून सन् ६३२ में शामको उपद्रवियोंके दमनार्थ ओसामा नियुक्त किया गया। उसे झण्डा दिया गया। उसने प्रस्थान किया। पैगम्बरके जीवनकालका यह अन्तिम अभियान था।

पैगम्बर साहबकी अवस्था ६३ वर्षकी हो चुकी थी। विषने उन्हें कमजोर कर दिया था। वे प्रायः कुरान मजीदकी सूरा नस्र दुहराया

करते थे। कहते थे कि मेरा उद्देश्य पूर्ण हो चुका है।

बीमारीने आक्रमण किया तो एक दिन वे कब्रिस्तानमें गये। उन्हें जोरोंसे बुखार चढ़ा, उनकी सौम्यता बढ़ गयी थी। उनकी चेष्टा गम्भीर एवं दार्शनिकोंसी थी। भगवान्‌की भक्तिमें उनकी वृत्तियाँ लवलीन थीं। उनके श्रीमुखसे पवित्र वाणी मुखरित हुई,—"हमने और तुमने उसे पूर्ण किया जिसके निमित्त भगवान्‌ने हमें प्रतिज्ञाबद्ध किया था। तुम धन्य हो! तुम्हारा कर्म उनसे अच्छा है जो तुम्हारे पीछे पड़े हैं। लोभ एवं परीक्षण अन्धकारमय रात्रि तुल्य आते हैं, एक दूसरेका अनुकरण करते हैं, उनमें प्रत्येक अपने पूर्वकी अपेक्षा अधिक अन्धकारमय होता है। भगवान् उनपर दया करे जो यहाँ अपनी चिरशांतिमें आराम कर रहे हैं।" पैगम्बर शांत भावसे घरकी ओर चल पड़े।

उन्हें बुखार चढ़ा था। आयशाके घरमें वे आ गये। सात या आठ दिनके ज्वर-कालमें भी वे नमाज पढ़ते रहे। सात जलाशयोंसे सात मशक पानी मँगाया गया। उनके शिरोभागपर जल डाला गया। वे मसजिदमें नमाज पढ़ने चले।

प्रथम खलीफा अबू बक्र

कमजोरी बढ़नेके कारण उन्होंने अबू बक्रको नमाज पढ़ानेके लिए आदेश दिया। शनिवार ८ जून, सन् ६३२ को उनकी बीमारी बढ़ गयी। गरीबोंको दान दिया गया।

आयशाके पास केवल ६ सोनेके दीनार थे। यही कुल सम्पत्ति थी। उन्होंने आज्ञा दी—गरीबोंमें बाँट दो। सम्पत्तियोंसे उन्हें मुक्ति मिली। वे आत्मविसर्जनकी तैयारीमें लग गये।

रविवारकी रात्रिमें उनकी तबीयत बहुत खराब हो गयी। वे बोल उठे—"मन! तू भगवान्‌का पवित्र ध्यान त्याग अन्य स्थानोंपर क्यों भटकता है?"

नमाजके समय मसजिदमें पहुँचे। अबू बक्रके बगलमें खड़े हो गये। अबू बक्र पीछे हटने लगे। उन्होंने रोका। बगलमें खड़े होकर

नमाज पढ़ी। मसजिदके प्रांगणमें बैठ गये। एकत्र जनसमुदायसे स्नेहपूर्ण बातचीत की। वे प्रसन्न थे। लोग भी यह समझकर प्रसन्न थे कि बीमारी शायद पीछा छोड़ रही है। कुछ शिथिलताका अनुभव कर वे लौट पड़े।

अन्तकाल

वह मध्याह्नकाल था। सोमवार का दिन था और जून सन् ६३२ की ७वीं तारीख।

उन्हें थका देख आयशाने उनका मस्तक अपनी गोदमें रख लिया। वे लेट गये। उस समय एक आदमी हरी दातुन लेकर आया। उन्हें हरी दातुन पसन्द थी। उनके दिव्य लोचन दातुनकी ओर जैसे उठे। आयशाने पूछा—"दातुन कीजियेगा।" उनका मस्तक हिल गया। आयशाने दातुन हाथोंमें थमा दी। उन्होंने उसे मुखसे लगाया। फिर रख दिया।

मृत्युकी छाया शनैः-शनैः गम्भीर हो रही थी। शांति बढ़ती जाती थी। उन्होंने जल माँगा, मुख धोया। भगवान्‌का स्मरण किया—"हे भगवन्! मृत्युकी वेदनामें मेरी सहायता कर! मैं तेरी प्रार्थना करता हू।"

वे तीन बार बोल उठे—"जिबरील हमारे समीप आओ!"

आयशा भगवान्‌की स्तुति कर रही थी। उनकी अत्यन्त क्षीणावस्था देखकर दाहिना हाथ लेकर सहलाने लगी। उन्होंने शान्तिपूर्वक कहा—"हाथ हटा लो! वे मेरी सहायता करनेमें असमर्थ हैं।"

अन्तिम वचन मुखरित हुआ—"स्वर्गमें! अमृतत्व!! क्षमा!!!"

उन्होंने अपना शरीर किंचित् सीधा किया। और—शान्त।

आज मसजिदमें आनन्दमुख गये थे, आनन्दित लौटे थे और आनन्दसे उन्होंने जीवनलीला समाप्त की। आयशाने पवित्र मस्तक धीरेसे तकियापर रख दिया।

द्वारका परदा धीरे-धीरे एक ओर खसका।

हजरत अबू बक्रने अन्दर आनेकी इजाजत माँगी। उनके पवित्र

शरीरपर पड़े हुए ओरवा यमनके वस्त्रोंको उठाते हुए झुक गये। उनका पवित्र मुख चूमते हुए बोले—"जीवनकालमें तुम मधुर थे। मृत्यूपरान्त मधुर हो।" उनके मस्तकको दोनों हाथोंमें लेते हुए पुनः बोले—"ओह! सचमुच शान्त हो गये? मुझे पितासे मातासे अधिक प्रिय थे।" उनका मस्तक धीरेसे तकियापर रख दिया। मुख चूमकर मुसलिम जगत्का पहला खलीफा अबू बक्र परदा उठाते हुए विश्वको सूचना देने निकला।

मदीनाके नरनारी एकत्र हुए। हजरत अली, ओसमा तथा अब्बासके पुत्र फ़ज़्लने जहाँ शरीरान्त हुआ था उसी स्थानपर स्नान कराया। दो महीन वस्त्रोंमें लपेटा। शरीरपर धारीदार वस्त्र डाल दिया गया। उनका शरीर रात्रिपर्यन्त वहीं रखा रहा। उनके लिए जहाँ शरीर छूटा था बगली कब्र खोदी गयी। सन्ध्यामें अन्तिम कृत्य किये गये। वह वस्त्र जिसे वह ओढ़ते थे कब्रमें बिछा दिया गया। शरीर कब्रमें उतारा गया। कच्ची ईंटोंसे कब्र बन्द की गयी। उन्हींके हाथोंने मिट्टी डाली जो उनके जीवनपर्यन्त साथी थे।

वे न रहे। लेकिन उन्होंने एक विश्वधर्मकी नींव डाली। असभ्य प्राणहीन अरबोंको जीवित जाति बनाया। उनका धर्म साम्य, भ्रातृत्व एवं लोकतान्त्रिक सिद्धान्त पर आधारित था। उन्होंने जनजीवनके अन्तरालमें प्रवेश किया। दर्शनों, सिद्धान्तोंकी उछल-कूदसे दूर रहने वाली जनताने उसे एक सीधा मार्ग समझा। उसपर विश्वास किया। उसका वह विश्वास ही मुसलिम जगत्की अतुलनीय शक्ति है।